

विदेह VIDEHA

विदेह-सदेह १-३७ विस्तृत अध्ययन

Videha Sadeha 1-37 Detailed Study

विदेह ई-लर्निङ्ग प्रश्नोत्तरी शृंखला · Videha eLearning Quiz Book Series

खण्ड १८ / २२ · Volume 18 of 22

सम्पादक / लेखक: गजेन्द्र ठाकुर

VIDEHA — प्रथम मैथिली पाक्षिक ई-पत्रिका | ISSN 2229-547X | www.videha.co.in

विदेह ई-लर्निङ्ग: <https://www.videha.co.in/videha-elearning.htm>

© Gajendra Thakur, Editor — Videha eJournal [Beta Version; suggestions invited]

विषय-सूची / Contents

१. विदेह-सदेह ३० — विस्तृत अध्ययन	३०० प्रश्न
२. विदेह-सदेह ३१ — विस्तृत अध्ययन	९०९ प्रश्न
३. विदेह-सदेह ३२ — विस्तृत अध्ययन	६९६ प्रश्न
४. विदेह-सदेह ३३ — विस्तृत अध्ययन	५१० प्रश्न
५. विदेह-सदेह ३४ — विस्तृत अध्ययन	७७ प्रश्न

प्रत्येक अध्यायक प्रश्न-खण्डक बाद ओहि अध्यायक उत्तरमाला (उत्तर ओ व्याख्या) देल गेल अछि।

In each chapter, the answer key with explanations (उत्तरमाला) follows the questions.

अध्याय १ : विदेह-सदेह ३० — विस्तृत अध्ययन

खण्ड 4050 : विदेह-सदेह 30 — फूल चन्द्र झा 'प्रवीण': मैथिली शिशु साहित्य लोक

१. खण्ड 4050, सूचकांक पंक्ति 2741: फूल चन्द्र झा 'प्रवीण'क “मैथिली शिशु साहित्य लोक” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?
- (A) मैथिली शिशु साहित्य लोक
(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
२. खण्ड 4050, सूचकांक पंक्ति 2741: फूल चन्द्र झा 'प्रवीण'क “मैथिली शिशु साहित्य लोक”क मुख्य विधा कोन अछि?
- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
(B) गद्य
(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
३. खण्ड 4050, सूचकांक पंक्ति 2741: फूल चन्द्र झा 'प्रवीण'क “मैथिली शिशु साहित्य लोक”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?
- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
(C) अनुसन्धान
(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
४. खण्ड 4050, सूचकांक पंक्ति 2741: फूल चन्द्र झा 'प्रवीण'क “मैथिली शिशु साहित्य लोक” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?
- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
(C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
(D) बाल साहित्य सर्वेक्षण
५. खण्ड 4050, सूचकांक पंक्ति 2741: फूल चन्द्र झा 'प्रवीण'क “मैथिली शिशु साहित्य लोक” प्रविष्टि विदेह-सदेह 30मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?
- (A) बाल साहित्य सर्वेक्षण
(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
६. खण्ड 4050, सूचकांक पंक्ति 2741: फूल चन्द्र झा 'प्रवीण'क “मैथिली शिशु साहित्य लोक”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?
- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
(B) लेखक फूल चन्द्र झा 'प्रवीण', विधा गद्य, उप-विधा अनुसन्धान
(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
७. खण्ड 4050, सूचकांक पंक्ति 2741: फूल चन्द्र झा 'प्रवीण'क “मैथिली शिशु साहित्य लोक” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?
- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
(C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

८. खण्ड 4050, सूचकांक पंक्ति 2741: फूल चन्द्र झा 'प्रवीण'क “मैथिली शिशु साहित्य लोक”कें विदेह-सदेह 30क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ अनुसन्धानक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

९. खण्ड 4050, सूचकांक पंक्ति 2741: फूल चन्द्र झा 'प्रवीण'क “मैथिली शिशु साहित्य लोक” प्रविष्टि विदेह-सदेह 30क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१०. खण्ड 4050, सूचकांक पंक्ति 2741: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 4050, सूचकांक पंक्ति 2741मे फूल चन्द्र झा 'प्रवीण'क “मैथिली शिशु साहित्य लोक” प्रविष्टि गद्य, अनुसन्धान आ “बाल साहित्य सर्वेक्षण” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 4052 : विदेह-सदेह 30 — रमेश: प्रो. मायानन्द मिश्रक रमनगर कथामे लागल “मुदा”...

११. खण्ड 4052, सूचकांक पंक्ति 2743: रमेशक “प्रो. मायानन्द मिश्रक रमनगर कथामे लागल “मुदा”...” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) प्रो. मायानन्द मिश्रक रमनगर कथामे लागल “मुदा”...
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१२. खण्ड 4052, सूचकांक पंक्ति 2743: रमेशक “प्रो. मायानन्द मिश्रक रमनगर कथामे लागल “मुदा”...”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) गद्य
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१३. खण्ड 4052, सूचकांक पंक्ति 2743: रमेशक “प्रो. मायानन्द मिश्रक रमनगर कथामे लागल “मुदा”...”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) आलोचना
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१४. खण्ड 4052, सूचकांक पंक्ति 2743: रमेशक “प्रो. मायानन्द मिश्रक रमनगर कथामे लागल “मुदा”...” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) भाषागत समीक्षा

१५. खण्ड 4052, सूचकांक पंक्ति 2743: रमेशक “प्रो. मायानन्द मिश्रक रमनगर कथामे लागल “मुदा” ...” प्रविष्टि विदेह-सदेह 30मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) भाषागत समीक्षा
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१६. खण्ड 4052, सूचकांक पंक्ति 2743: रमेशक “प्रो. मायानन्द मिश्रक रमनगर कथामे लागल “मुदा” ...”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककें की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक रमेश, विधा गद्य, उप-विधा आलोचना
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१७. खण्ड 4052, सूचकांक पंक्ति 2743: रमेशक “प्रो. मायानन्द मिश्रक रमनगर कथामे लागल “मुदा” ...” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१८. खण्ड 4052, सूचकांक पंक्ति 2743: रमेशक “प्रो. मायानन्द मिश्रक रमनगर कथामे लागल “मुदा” ...”कें विदेह-सदेह 30क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ आलोचनाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

१९. खण्ड 4052, सूचकांक पंक्ति 2743: रमेशक “प्रो. मायानन्द मिश्रक रमनगर कथामे लागल “मुदा” ...” प्रविष्टि विदेह-सदेह 30क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२०. खण्ड 4052, सूचकांक पंक्ति 2743: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 4052, सूचकांक पंक्ति 2743मे रमेशक “प्रो. मायानन्द मिश्रक रमनगर कथामे लागल “मुदा” ...” प्रविष्टि गद्य, आलोचना आ “भाषागत समीक्षा” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 4053 : विदेह-सदेह 30 — मन्त्रेश्वर झा: चरित्र चित्रणक वाजीगर- जगदीश प्रसाद मंडल

२१. खण्ड 4053, सूचकांक पंक्ति 2744: मन्त्रेश्वर झाक “चरित्र चित्रणक वाजीगर- जगदीश प्रसाद मंडल” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) चरित्र चित्रणक वाजीगर- जगदीश प्रसाद मंडल
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२२. खण्ड 4053, सूचकांक पंक्ति 2744: मन्त्रेश्वर झाक “चरित्र चित्रणक वाजीगर- जगदीश प्रसाद मंडल”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) गद्य
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२३. खण्ड 4053, सूचकांक पंक्ति 2744: मन्त्रेश्वर झाक “चरित्र चित्रणक वाजीगर- जगदीश प्रसाद मंडल”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समीक्षा
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२४. खण्ड 4053, सूचकांक पंक्ति 2744: मन्त्रेश्वर झाक “चरित्र चित्रणक वाजीगर- जगदीश प्रसाद मंडल” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) चरित्र चित्रण कला

२५. खण्ड 4053, सूचकांक पंक्ति 2744: मन्त्रेश्वर झाक “चरित्र चित्रणक वाजीगर- जगदीश प्रसाद मंडल” प्रविष्टि विदेह-सदेह 30मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) चरित्र चित्रण कला
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२६. खण्ड 4053, सूचकांक पंक्ति 2744: मन्त्रेश्वर झाक “चरित्र चित्रणक वाजीगर- जगदीश प्रसाद मंडल”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककें की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक मन्त्रेश्वर झा, विधा गद्य, उप-विधा समीक्षा
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२७. खण्ड 4053, सूचकांक पंक्ति 2744: मन्त्रेश्वर झाक “चरित्र चित्रणक वाजीगर- जगदीश प्रसाद मंडल” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२८. खण्ड 4053, सूचकांक पंक्ति 2744: मन्त्रेश्वर झाक “चरित्र चित्रणक वाजीगर- जगदीश प्रसाद मंडल”कें विदेह-सदेह 30क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ समीक्षाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

२९. खण्ड 4053, सूचकांक पंक्ति 2744: मन्त्रेश्वर झाक “चरित्र चित्रणक वाजीगर- जगदीश प्रसाद मंडल” प्रविष्टि विदेह-सदेह 30क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३०. खण्ड 4053, सूचकांक पंक्ति 2744: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 4053, सूचकांक पंक्ति 2744मे मन्त्रेश्वर झाक “चरित्र चित्रणक वाजीगर- जगदीश प्रसाद मंडल” प्रविष्टि गद्य, समीक्षा आ “चरित्र चित्रण कला” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 4054 : विदेह-सदेह 30 — सुभाष चन्द्र यादव: रचनाक पाठ आ लेखक

३१. खण्ड 4054, सूचकांक पंक्ति 2745: सुभाष चन्द्र यादवक “रचनाक पाठ आ लेखक” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) रचनाक पाठ आ लेखक
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३२. खण्ड 4054, सूचकांक पंक्ति 2745: सुभाष चन्द्र यादवक “रचनाक पाठ आ लेखक”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) गद्य
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३३. खण्ड 4054, सूचकांक पंक्ति 2745: सुभाष चन्द्र यादवक “रचनाक पाठ आ लेखक”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) निबन्ध
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३४. खण्ड 4054, सूचकांक पंक्ति 2745: सुभाष चन्द्र यादवक “रचनाक पाठ आ लेखक” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ओबीसी आख्यान

३५. खण्ड 4054, सूचकांक पंक्ति 2745: सुभाष चन्द्र यादवक “रचनाक पाठ आ लेखक” प्रविष्टि विदेह-सदेह 30मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) ओबीसी आख्यान
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३६. खण्ड 4054, सूचकांक पंक्ति 2745: सुभाष चन्द्र यादवक “रचनाक पाठ आ लेखक”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक सुभाष चन्द्र यादव, विधा गद्य, उप-विधा निबन्ध
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३७. खण्ड 4054, सूचकांक पंक्ति 2745: सुभाष चन्द्र यादवक “रचनाक पाठ आ लेखक” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३८. खण्ड 4054, सूचकांक पंक्ति 2745: सुभाष चन्द्र यादवक “रचनाक पाठ आ लेखक”केँ विदेह-सदेह 30क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ निबन्धक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

३९. खण्ड 4054, सूचकांक पंक्ति 2745: सुभाष चन्द्र यादवक “रचनाक पाठ आ लेखक” प्रविष्टि विदेह-सदेह 30क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४०. खण्ड 4054, सूचकांक पंक्ति 2745: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 4054, सूचकांक पंक्ति 2745मे सुभाष चन्द्र यादवक “रचनाक पाठ आ लेखक” प्रविष्टि गद्य, निबन्ध आ “ओबीसी आख्यान” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 4055 : विदेह-सदेह 30 — सुभाष चन्द्र यादव: जगदीश प्रसाद मंडल

४१. खण्ड 4055, सूचकांक पंक्ति 2746: सुभाष चन्द्र यादवक “जगदीश प्रसाद मंडल” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) जगदीश प्रसाद मंडल
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४२. खण्ड 4055, सूचकांक पंक्ति 2746: सुभाष चन्द्र यादवक “जगदीश प्रसाद मंडल”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) गद्य
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४३. खण्ड 4055, सूचकांक पंक्ति 2746: सुभाष चन्द्र यादवक “जगदीश प्रसाद मंडल”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समीक्षा
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४४. खण्ड 4055, सूचकांक पंक्ति 2746: सुभाष चन्द्र यादवक “जगदीश प्रसाद मंडल” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) यथार्थवाद

४५. खण्ड 4055, सूचकांक पंक्ति 2746: सुभाष चन्द्र यादवक “जगदीश प्रसाद मंडल” प्रविष्टि विदेह-सदेह 30मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) यथार्थवाद
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४६. खण्ड 4055, सूचकांक पंक्ति 2746: सुभाष चन्द्र यादवक “जगदीश प्रसाद मंडल”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककें की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक सुभाष चन्द्र यादव, विधा गद्य, उप-विधा समीक्षा
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४७. खण्ड 4055, सूचकांक पंक्ति 2746: सुभाष चन्द्र यादवक “जगदीश प्रसाद मंडल” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४८. खण्ड 4055, सूचकांक पंक्ति 2746: सुभाष चन्द्र यादवक “जगदीश प्रसाद मंडल”कें विदेह-सदेह 30क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ समीक्षाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

४९. खण्ड 4055, सूचकांक पंक्ति 2746: सुभाष चन्द्र यादवक “जगदीश प्रसाद मंडल” प्रविष्टि विदेह-सदेह 30क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

५०. खण्ड 4055, सूचकांक पंक्ति 2746: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 4055, सूचकांक पंक्ति 2746मे सुभाष चन्द्र यादवक “जगदीश प्रसाद मंडल” प्रविष्टि गद्य, समीक्षा आ “यथार्थवाद” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 4056 : विदेह-सदेह 30 — सुभाष चन्द्र यादव: मैथिली लोक-कथा

५१. खण्ड 4056, सूचकांक पंक्ति 2747: सुभाष चन्द्र यादवक “मैथिली लोक-कथा” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) मैथिली लोक-कथा
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

५२. खण्ड 4056, सूचकांक पंक्ति 2747: सुभाष चन्द्र यादवक “मैथिली लोक-कथा”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) गद्य
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

५३. खण्ड 4056, सूचकांक पंक्ति 2747: सुभाष चन्द्र यादवक “मैथिली लोक-कथा”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) निबन्ध
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

५४. खण्ड 4056, सूचकांक पंक्ति 2747: सुभाष चन्द्र यादवक “मैथिली लोक-कथा” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) लोक कथा परम्परा

५५. खण्ड 4056, सूचकांक पंक्ति 2747: सुभाष चन्द्र यादवक “मैथिली लोक-कथा” प्रविष्टि विदेह-सदेह 30मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) लोक कथा परम्परा
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

५६. खण्ड 4056, सूचकांक पंक्ति 2747: सुभाष चन्द्र यादवक “मैथिली लोक-कथा”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककें की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक सुभाष चन्द्र यादव, विधा गद्य, उप-विधा निबन्ध
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

५७. खण्ड 4056, सूचकांक पंक्ति 2747: सुभाष चन्द्र यादवक “मैथिली लोक-कथा” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

५८. खण्ड 4056, सूचकांक पंक्ति 2747: सुभाष चन्द्र यादवक “मैथिली लोक-कथा”कें विदेह-सदेह 30क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ निबन्धक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

५९. खण्ड 4056, सूचकांक पंक्ति 2747: सुभाष चन्द्र यादवक “मैथिली लोक-कथा” प्रविष्टि विदेह-सदेह 30क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

६०. खण्ड 4056, सूचकांक पंक्ति 2747: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 4056, सूचकांक पंक्ति 2747मे सुभाष चन्द्र यादवक “मैथिली लोक-कथा” प्रविष्टि गद्य, निबन्ध आ “लोक कथा परम्परा” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 4057 : विदेह-सदेह 30 — अच्छेलाल शास्त्री: रणभूमि आ कविता नामक शीर्षक कवितापर दू शब्द

६१. खण्ड 4057, सूचकांक पंक्ति 2748: अच्छेलाल शास्त्रीक “रणभूमि आ कविता नामक शीर्षक कवितापर दू शब्द” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) रणभूमि आ कविता नामक शीर्षक कवितापर दू शब्द
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

६२. खण्ड 4057, सूचकांक पंक्ति 2748: अच्छेलाल शास्त्रीक “रणभूमि आ कविता नामक शीर्षक कवितापर दू शब्द”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) गद्य
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

६३. खण्ड 4057, सूचकांक पंक्ति 2748: अच्छेलाल शास्त्रीक “रणभूमि आ कविता नामक शीर्षक कवितापर दू शब्द”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समीक्षा
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

६४. खण्ड 4057, सूचकांक पंक्ति 2748: अच्छेलाल शास्त्रीक “रणभूमि आ कविता नामक शीर्षक कवितापर दू शब्द” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) कविता टिप्पणी

६५. खण्ड 4057, सूचकांक पंक्ति 2748: अच्छेलाल शास्त्रीक “रणभूमि आ कविता नामक शीर्षक कवितापर दू शब्द” प्रविष्टि विदेह-सदेह 30मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) कविता टिप्पणी
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

६६. खण्ड 4057, सूचकांक पंक्ति 2748: अच्छेलाल शास्त्रीक “रणभूमि आ कविता नामक शीर्षक कवितापर दू शब्द”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक अच्छेलाल शास्त्री, विधा गद्य, उप-विधा समीक्षा
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

६७. खण्ड 4057, सूचकांक पंक्ति 2748: अच्छेलाल शास्त्रीक “रणभूमि आ कविता नामक शीर्षक कवितापर दू शब्द” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

६८. खण्ड 4057, सूचकांक पंक्ति 2748: अच्छेलाल शास्त्रीक “रणभूमि आ कविता नामक शीर्षक कवितापर दू शब्द”केँ विदेह-सदेह 30क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ समीक्षाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

६९. खण्ड 4057, सूचकांक पंक्ति 2748: अच्छेलाल शास्त्रीक “रणभूमि आ कविता नामक शीर्षक कवितापर दू शब्द” प्रविष्टि विदेह-सदेह 30क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

७०. खण्ड 4057, सूचकांक पंक्ति 2748: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 4057, सूचकांक पंक्ति 2748मे अच्छेलाल शास्त्रीक “रणभूमि आ कविता नामक शीर्षक कवितापर दू शब्द” प्रविष्टि गद्य, समीक्षा आ “कविता टिप्पणी” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 4058 : विदेह-सदेह 30 — दुर्गानन्द मंडल: शिव कुमार झा टिल्लू जीक लिखल खोंछक लेल साड़ी- कथापर दू शब्द

७१. खण्ड 4058, सूचकांक पंक्ति 2749: दुर्गानन्द मंडलक “शिव कुमार झा टिल्लू जीक लिखल खोंछक लेल साड़ी- कथापर दू शब्द” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) शिव कुमार झा टिल्लू जीक लिखल खोंछक लेल साड़ी- कथापर दू शब्द
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

७२. खण्ड 4058, सूचकांक पंक्ति 2749: दुर्गानन्द मंडलक “शिव कुमार झा टिल्लू जीक लिखल खोंछक लेल साड़ी- कथापर दू शब्द”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) गद्य
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

७३. खण्ड 4058, सूचकांक पंक्ति 2749: दुर्गानन्द मंडलक “शिव कुमार झा टिल्लू जीक लिखल खोंइछक लेल साड़ी- कथापर दू शब्द”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समीक्षा
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

७४. खण्ड 4058, सूचकांक पंक्ति 2749: दुर्गानन्द मंडलक “शिव कुमार झा टिल्लू जीक लिखल खोंइछक लेल साड़ी- कथापर दू शब्द” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) कथा समीक्षा

७५. खण्ड 4058, सूचकांक पंक्ति 2749: दुर्गानन्द मंडलक “शिव कुमार झा टिल्लू जीक लिखल खोंइछक लेल साड़ी- कथापर दू शब्द” प्रविष्टि विदेह-सदेह 30मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) कथा समीक्षा
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

७६. खण्ड 4058, सूचकांक पंक्ति 2749: दुर्गानन्द मंडलक “शिव कुमार झा टिल्लू जीक लिखल खोंइछक लेल साड़ी- कथापर दू शब्द”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक दुर्गानन्द मंडल, विधा गद्य, उप-विधा समीक्षा
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

७७. खण्ड 4058, सूचकांक पंक्ति 2749: दुर्गानन्द मंडलक “शिव कुमार झा टिल्लू जीक लिखल खोंइछक लेल साड़ी- कथापर दू शब्द” रचना/लेखकक कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

७८. खण्ड 4058, सूचकांक पंक्ति 2749: दुर्गानन्द मंडलक “शिव कुमार झा टिल्लू जीक लिखल खोंइछक लेल साड़ी- कथापर दू शब्द”केँ विदेह-सदेह 30क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ समीक्षाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

७९. खण्ड 4058, सूचकांक पंक्ति 2749: दुर्गानन्द मंडलक “शिव कुमार झा टिल्लू जीक लिखल खोंइछक लेल साड़ी- कथापर दू शब्द” प्रविष्टि विदेह-सदेह 30क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

८०. खण्ड 4058, सूचकांक पंक्ति 2749: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 4058, सूचकांक पंक्ति 2749मे दुर्गानन्द मंडलक “शिव कुमार झा टिल्लू जीक लिखल खोंड़क लेल साड़ी- कथापर दू शब्द” प्रविष्टि गद्य, समीक्षा आ “कथा समीक्षा” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 4059 : विदेह-सदेह 30 — दुर्गानन्द मंडल: नाटक बेटीक अपमानपर एक नजरि

८१. खण्ड 4059, सूचकांक पंक्ति 2750: दुर्गानन्द मंडलक “नाटक बेटीक अपमानपर एक नजरि” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) नाटक बेटीक अपमानपर एक नजरि
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

८२. खण्ड 4059, सूचकांक पंक्ति 2750: दुर्गानन्द मंडलक “नाटक बेटीक अपमानपर एक नजरि”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) गद्य
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

८३. खण्ड 4059, सूचकांक पंक्ति 2750: दुर्गानन्द मंडलक “नाटक बेटीक अपमानपर एक नजरि”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समीक्षा
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

८४. खण्ड 4059, सूचकांक पंक्ति 2750: दुर्गानन्द मंडलक “नाटक बेटीक अपमानपर एक नजरि” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) नाटक समीक्षा

८५. खण्ड 4059, सूचकांक पंक्ति 2750: दुर्गानन्द मंडलक “नाटक बेटीक अपमानपर एक नजरि” प्रविष्टि विदेह-सदेह 30मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) नाटक समीक्षा
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

८६. खण्ड 4059, सूचकांक पंक्ति 2750: दुर्गानन्द मंडलक “नाटक बेटीक अपमानपर एक नजरि”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक दुर्गानन्द मंडल, विधा गद्य, उप-विधा समीक्षा
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

८७. खण्ड 4059, सूचकांक पंक्ति 2750: दुर्गानन्द मंडलक “नाटक बेटीक अपमानपर एक नजरि” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

८८. खण्ड 4059, सूचकांक पंक्ति 2750: दुर्गानन्द मंडलक “नाटक बेटीक अपमानपर एक नजरि”कँ विदेह-सदेह 30क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ समीक्षाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

८९. खण्ड 4059, सूचकांक पंक्ति 2750: दुर्गानन्द मंडलक “नाटक बेटीक अपमानपर एक नजरि” प्रविष्टि विदेह-सदेह 30क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

९०. खण्ड 4059, सूचकांक पंक्ति 2750: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 4059, सूचकांक पंक्ति 2750मे दुर्गानन्द मंडलक “नाटक बेटीक अपमानपर एक नजरि” प्रविष्टि गद्य, समीक्षा आ “नाटक समीक्षा” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकँ व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 4060 : विदेह-सदेह 30 — दुर्गानन्द मंडल: जीवन-मरण

९१. खण्ड 4060, सूचकांक पंक्ति 2751: दुर्गानन्द मंडलक “जीवन-मरण” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) जीवन-मरण
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

९२. खण्ड 4060, सूचकांक पंक्ति 2751: दुर्गानन्द मंडलक “जीवन-मरण”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) गद्य
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

९३. खण्ड 4060, सूचकांक पंक्ति 2751: दुर्गानन्द मंडलक “जीवन-मरण”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) निबन्ध
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१४. खण्ड 4060, सूचकांक पंक्ति 2751: दुर्गानन्द मंडलक “जीवन-मरण” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) दार्शनिक निबन्ध

१५. खण्ड 4060, सूचकांक पंक्ति 2751: दुर्गानन्द मंडलक “जीवन-मरण” प्रविष्टि विदेह-सदेह 30मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) दार्शनिक निबन्ध
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१६. खण्ड 4060, सूचकांक पंक्ति 2751: दुर्गानन्द मंडलक “जीवन-मरण”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककें की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक दुर्गानन्द मंडल, विधा गद्य, उप-विधा निबन्ध
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१७. खण्ड 4060, सूचकांक पंक्ति 2751: दुर्गानन्द मंडलक “जीवन-मरण” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१८. खण्ड 4060, सूचकांक पंक्ति 2751: दुर्गानन्द मंडलक “जीवन-मरण”कें विदेह-सदेह 30क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ निबन्धक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

१९. खण्ड 4060, सूचकांक पंक्ति 2751: दुर्गानन्द मंडलक “जीवन-मरण” प्रविष्टि विदेह-सदेह 30क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१००. खण्ड 4060, सूचकांक पंक्ति 2751: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 4060, सूचकांक पंक्ति 2751मे दुर्गानन्द मंडलक “जीवन-मरण” प्रविष्टि गद्य, निबन्ध आ “दार्शनिक निबन्ध” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 4061 : विदेह-सदेह 30 — दुर्गानन्द मंडल: पोथी समीक्षा-मौलाइल गाछक फूल

१०१. खण्ड 4061, सूचकांक पंक्ति 2752: दुर्गानन्द मंडलक “पोथी समीक्षा-मौलाइल गाछक फूल” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) पोथी समीक्षा-मौलाइल गाछक फूल
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१०२. खण्ड 4061, सूचकांक पंक्ति 2752: दुर्गानन्द मंडलक “पोथी समीक्षा-मौलाइल गाछक फूल”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) गद्य
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१०३. खण्ड 4061, सूचकांक पंक्ति 2752: दुर्गानन्द मंडलक “पोथी समीक्षा-मौलाइल गाछक फूल”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समीक्षा
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१०४. खण्ड 4061, सूचकांक पंक्ति 2752: दुर्गानन्द मंडलक “पोथी समीक्षा-मौलाइल गाछक फूल” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) कृति समीक्षा

१०५. खण्ड 4061, सूचकांक पंक्ति 2752: दुर्गानन्द मंडलक “पोथी समीक्षा-मौलाइल गाछक फूल” प्रविष्टि विदेह-सदेह 30मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) कृति समीक्षा
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१०६. खण्ड 4061, सूचकांक पंक्ति 2752: दुर्गानन्द मंडलक “पोथी समीक्षा-मौलाइल गाछक फूल”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककें की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक दुर्गानन्द मंडल, विधा गद्य, उप-विधा समीक्षा
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१०७. खण्ड 4061, सूचकांक पंक्ति 2752: दुर्गानन्द मंडलक “पोथी समीक्षा-मौलाइल गाछक फूल” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१०८. खण्ड 4061, सूचकांक पंक्ति 2752: दुर्गानन्द मंडलक “पोथी समीक्षा-मौलाइल गाछक फूल”कें विदेह-सदेह 30क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ समीक्षाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

१०९. खण्ड 4061, सूचकांक पंक्ति 2752: दुर्गानन्द मंडलक “पोथी समीक्षा-मौलाइल गाछक फूल” प्रविष्टि विदेह-सदेह 30क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

११०. खण्ड 4061, सूचकांक पंक्ति 2752: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 4061, सूचकांक पंक्ति 2752मे दुर्गानन्द मंडलक “पोथी समीक्षा-मौलाइल गाछक फूल” प्रविष्टि गद्य, समीक्षा आ “कृति समीक्षा” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 4062 : विदेह-सदेह 30 — दुर्गानन्द मंडलक: टैगोर साहित्य पुरस्कारक बहन्ने- यात्रा वृत्तान्त

१११. खण्ड 4062, सूचकांक पंक्ति 2753: दुर्गानन्द मंडलक “टैगोर साहित्य पुरस्कारक बहन्ने- यात्रा वृत्तान्त” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) टैगोर साहित्य पुरस्कारक बहन्ने- यात्रा वृत्तान्त
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

११२. खण्ड 4062, सूचकांक पंक्ति 2753: दुर्गानन्द मंडलक “टैगोर साहित्य पुरस्कारक बहन्ने- यात्रा वृत्तान्त”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) गद्य
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

११३. खण्ड 4062, सूचकांक पंक्ति 2753: दुर्गानन्द मंडलक “टैगोर साहित्य पुरस्कारक बहन्ने- यात्रा वृत्तान्त”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) यात्रा-वृत्तान्त
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

११४. खण्ड 4062, सूचकांक पंक्ति 2753: दुर्गानन्द मंडलक “टैगोर साहित्य पुरस्कारक बहन्ने- यात्रा वृत्तान्त” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) पुरस्कार यात्रा

११५. खण्ड 4062, सूचकांक पंक्ति 2753: दुर्गानन्द मंडलक “टैगोर साहित्य पुरस्कारक बहन्ने- यात्रा वृत्तान्त” प्रविष्टि विदेह-सदेह 30मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) पुरस्कार यात्रा
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

११६. खण्ड 4062, सूचकांक पंक्ति 2753: दुर्गानन्द मंडलक “टैगोर साहित्य पुरस्कारक बहन्ने- यात्रा वृत्तान्त”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक दुर्गानन्द मंडल, विधा गद्य, उप-विधा यात्रा-वृत्तान्त
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

११७. खण्ड 4062, सूचकांक पंक्ति 2753: दुर्गानन्द मंडलक “टैगोर साहित्य पुरस्कारक बहन्ने- यात्रा वृत्तान्त” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

११८. खण्ड 4062, सूचकांक पंक्ति 2753: दुर्गानन्द मंडलक “टैगोर साहित्य पुरस्कारक बहन्ने- यात्रा वृत्तान्त”केँ विदेह-सदेह 30क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ यात्रा-वृत्तान्तक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

११९. खण्ड 4062, सूचकांक पंक्ति 2753: दुर्गानन्द मंडलक “टैगोर साहित्य पुरस्कारक बहन्ने- यात्रा वृत्तान्त” प्रविष्टि विदेह-सदेह 30क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१२०. खण्ड 4062, सूचकांक पंक्ति 2753: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 4062, सूचकांक पंक्ति 2753मे दुर्गानन्द मंडलक “टैगोर साहित्य पुरस्कारक बहन्ने- यात्रा वृत्तान्त” प्रविष्टि गद्य, यात्रा-वृत्तान्त आ “पुरस्कार यात्रा” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 4063 : विदेह-सदेह 30 — प्रो. वीणा ठाकुर: प्राचीन भारतीय संस्कृतिमे मिथिलाक योगदान

१२१. खण्ड 4063, सूचकांक पंक्ति 2754: प्रो. वीणा ठाकुरक “प्राचीन भारतीय संस्कृतिमे मिथिलाक योगदान” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) प्राचीन भारतीय संस्कृतिमे मिथिलाक योगदान
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१२२. खण्ड 4063, सूचकांक पंक्ति 2754: प्रो. वीणा ठाकुरक “प्राचीन भारतीय संस्कृतिमे मिथिलाक योगदान”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) गद्य
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१२३. खण्ड 4063, सूचकांक पंक्ति 2754: प्रो. वीणा ठाकुरक “प्राचीन भारतीय संस्कृतिमे मिथिलाक योगदान”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) शोध
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१२४. खण्ड 4063, सूचकांक पंक्ति 2754: प्रो. वीणा ठाकुरक “प्राचीन भारतीय संस्कृतिमे मिथिलाक योगदान” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) सांस्कृतिक इतिहास

१२५. खण्ड 4063, सूचकांक पंक्ति 2754: प्रो. वीणा ठाकुरक “प्राचीन भारतीय संस्कृतिमे मिथिलाक योगदान” प्रविष्टि विदेह-सदेह 30मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) सांस्कृतिक इतिहास
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१२६. खण्ड 4063, सूचकांक पंक्ति 2754: प्रो. वीणा ठाकुरक “प्राचीन भारतीय संस्कृतिमे मिथिलाक योगदान”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक प्रो. वीणा ठाकुर, विधा गद्य, उप-विधा शोध
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१२७. खण्ड 4063, सूचकांक पंक्ति 2754: प्रो. वीणा ठाकुरक “प्राचीन भारतीय संस्कृतिमे मिथिलाक योगदान” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१२८. खण्ड 4063, सूचकांक पंक्ति 2754: प्रो. वीणा ठाकुरक “प्राचीन भारतीय संस्कृतिमे मिथिलाक योगदान”केँ विदेह-सदेह 30क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ शोधक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

१२९. खण्ड 4063, सूचकांक पंक्ति 2754: प्रो. वीणा ठाकुरक “प्राचीन भारतीय संस्कृतिमे मिथिलाक योगदान” प्रविष्टि विदेह-सदेह 30क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१३०. खण्ड 4063, सूचकांक पंक्ति 2754: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 4063, सूचकांक पंक्ति 2754मे प्रो. वीणा ठाकुरक “प्राचीन भारतीय संस्कृतिमे मिथिलाक योगदान” प्रविष्टि गद्य, शोध आ “सांस्कृतिक इतिहास” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 4064 : विदेह-सदेह 30 — प्रो. वीणा ठाकुर: गोनू झा आ आन मैथिली चित्रकथा

१३१. खण्ड 4064, सूचकांक पंक्ति 2755: प्रो. वीणा ठाकुरक “गोनू झा आ आन मैथिली चित्रकथा” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) गोनू झा आ आन मैथिली चित्रकथा
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१३२. खण्ड 4064, सूचकांक पंक्ति 2755: प्रो. वीणा ठाकुरक “गोनू झा आ आन मैथिली चित्रकथा”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) गद्य
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१३३. खण्ड 4064, सूचकांक पंक्ति 2755: प्रो. वीणा ठाकुरक “गोनू झा आ आन मैथिली चित्रकथा”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समीक्षा
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१३४. खण्ड 4064, सूचकांक पंक्ति 2755: प्रो. वीणा ठाकुरक “गोनू झा आ आन मैथिली चित्रकथा” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) चित्रकथा समीक्षा

१३५. खण्ड 4064, सूचकांक पंक्ति 2755: प्रो. वीणा ठाकुरक “गोनू झा आ आन मैथिली चित्रकथा” प्रविष्टि विदेह-सदेह 30मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) चित्रकथा समीक्षा
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१३६. खण्ड 4064, सूचकांक पंक्ति 2755: प्रो. वीणा ठाकुरक “गोनू झा आ आन मैथिली चित्रकथा”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक प्रो. वीणा ठाकुर, विधा गद्य, उप-विधा समीक्षा
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१३७. खण्ड 4064, सूचकांक पंक्ति 2755: प्रो. वीणा ठाकुरक “गोनू झा आ आन मैथिली चित्रकथा” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१३८. खण्ड 4064, सूचकांक पंक्ति 2755: प्रो. वीणा ठाकुरक “गोनू झा आ आन मैथिली चित्रकथा”क विदेह-सदेह 30क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ समीक्षाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

१३९. खण्ड 4064, सूचकांक पंक्ति 2755: प्रो. वीणा ठाकुरक “गोनू झा आ आन मैथिली चित्रकथा” प्रविष्टि विदेह-सदेह 30क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१४०. खण्ड 4064, सूचकांक पंक्ति 2755: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 4064, सूचकांक पंक्ति 2755मे प्रो. वीणा ठाकुरक “गोनू झा आ आन मैथिली चित्रकथा” प्रविष्टि गद्य, समीक्षा आ “चित्रकथा समीक्षा” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 4065 : विदेह-सदेह 30 — प्रो. वीणा ठाकुर: जिनगीक जीत उपन्यासक समीक्षा

१४१. खण्ड 4065, सूचकांक पंक्ति 2756: प्रो. वीणा ठाकुरक “जिनगीक जीत उपन्यासक समीक्षा” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) जिनगीक जीत उपन्यासक समीक्षा
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१४२. खण्ड 4065, सूचकांक पंक्ति 2756: प्रो. वीणा ठाकुरक “जिनगीक जीत उपन्यासक समीक्षा”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) गद्य
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१४३. खण्ड 4065, सूचकांक पंक्ति 2756: प्रो. वीणा ठाकुरक “जिनगीक जीत उपन्यासक समीक्षा”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समीक्षा
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१४४. खण्ड 4065, सूचकांक पंक्ति 2756: प्रो. वीणा ठाकुरक “जिनगीक जीत उपन्यासक समीक्षा” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) उपन्यास समीक्षा

१४५. खण्ड 4065, सूचकांक पंक्ति 2756: प्रो. वीणा ठाकुरक “जिनगीक जीत उपन्यासक समीक्षा” प्रविष्टि विदेह-सदेह 30मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) उपन्यास समीक्षा
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१४६. खण्ड 4065, सूचकांक पंक्ति 2756: प्रो. वीणा ठाकुरक “जिनगीक जीत उपन्यासक समीक्षा”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककें की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक प्रो. वीणा ठाकुर, विधा गद्य, उप-विधा समीक्षा
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१४७. खण्ड 4065, सूचकांक पंक्ति 2756: प्रो. वीणा ठाकुरक “जिनगीक जीत उपन्यासक समीक्षा” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१४८. खण्ड 4065, सूचकांक पंक्ति 2756: प्रो. वीणा ठाकुरक “जिनगीक जीत उपन्यासक समीक्षा”कें विदेह-सदेह 30क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ समीक्षाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

१४९. खण्ड 4065, सूचकांक पंक्ति 2756: प्रो. वीणा ठाकुरक “जिनगीक जीत उपन्यासक समीक्षा” प्रविष्टि विदेह-सदेह 30क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१५०. खण्ड 4065, सूचकांक पंक्ति 2756: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 4065, सूचकांक पंक्ति 2756मे प्रो. वीणा ठाकुरक “जिनगीक जीत उपन्यासक समीक्षा” प्रविष्टि गद्य, समीक्षा आ “उपन्यास समीक्षा” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 4066 : विदेह-सदेह 30 — प्रो. वीणा ठाकुर: महाकवि मार्कण्डेय प्रवासी

१५१. खण्ड 4066, सूचकांक पंक्ति 2757: प्रो. वीणा ठाकुरक “महाकवि मार्कण्डेय प्रवासी” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) महाकवि मार्कण्डेय प्रवासी
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१५२. खण्ड 4066, सूचकांक पंक्ति 2757: प्रो. वीणा ठाकुरक “महाकवि मार्कण्डेय प्रवासी”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) गद्य
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१५३. खण्ड 4066, सूचकांक पंक्ति 2757: प्रो. वीणा ठाकुरक “महाकवि मार्कण्डेय प्रवासी”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समीक्षा
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१५४. खण्ड 4066, सूचकांक पंक्ति 2757: प्रो. वीणा ठाकुरक “महाकवि मार्कण्डेय प्रवासी” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) कवि व्यक्तित्व

१५५. खण्ड 4066, सूचकांक पंक्ति 2757: प्रो. वीणा ठाकुरक “महाकवि मार्कण्डेय प्रवासी” प्रविष्टि विदेह-सदेह 30मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) कवि व्यक्तित्व
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१५६. खण्ड 4066, सूचकांक पंक्ति 2757: प्रो. वीणा ठाकुरक “महाकवि मार्कण्डेय प्रवासी”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककें की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक प्रो. वीणा ठाकुर, विधा गद्य, उप-विधा समीक्षा
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१५७. खण्ड 4066, सूचकांक पंक्ति 2757: प्रो. वीणा ठाकुरक “महाकवि मार्कण्डेय प्रवासी” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१५८. खण्ड 4066, सूचकांक पंक्ति 2757: प्रो. वीणा ठाकुरक “महाकवि मार्कण्डेय प्रवासी”कें विदेह-सदेह 30क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ समीक्षाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

१५९. खण्ड 4066, सूचकांक पंक्ति 2757: प्रो. वीणा ठाकुरक “महाकवि मार्कण्डेय प्रवासी” प्रविष्टि विदेह-सदेह 30क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१६०. खण्ड 4066, सूचकांक पंक्ति 2757: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 4066, सूचकांक पंक्ति 2757मे प्रो. वीणा ठाकुरक “महाकवि मार्कण्डेय प्रवासी” प्रविष्टि गद्य, समीक्षा आ “कवि व्यक्तित्व” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 4067 : विदेह-सदेह 30 — अशोक: बनैत कम बिगड़ैत बेसी-सुभाष चन्द्र यादवक दोसर कथा संग्रह

१६१. खण्ड 4067, सूचकांक पंक्ति 2758: अशोकक “बनैत कम बिगड़ैत बेसी-सुभाष चन्द्र यादवक दोसर कथा संग्रह” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) बनैत कम बिगड़ैत बेसी-सुभाष चन्द्र यादवक दोसर कथा संग्रह
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१६२. खण्ड 4067, सूचकांक पंक्ति 2758: अशोकक “बनैत कम बिगड़ैत बेसी-सुभाष चन्द्र यादवक दोसर कथा संग्रह”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) गद्य
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१६३. खण्ड 4067, सूचकांक पंक्ति 2758: अशोकक “बनैत कम बिगड़ैत बेसी-सुभाष चन्द्र यादवक दोसर कथा संग्रह”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समीक्षा
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१६४. खण्ड 4067, सूचकांक पंक्ति 2758: अशोकक “बनैत कम बिगड़ैत बेसी-सुभाष चन्द्र यादवक दोसर कथा संग्रह” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) कथा संग्रह समीक्षा

१६५. खण्ड 4067, सूचकांक पंक्ति 2758: अशोकक “बनैत कम बिगड़ैत बेसी-सुभाष चन्द्र यादवक दोसर कथा संग्रह” प्रविष्टि विदेह-सदेह 30मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) कथा संग्रह समीक्षा
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१६६. खण्ड 4067, सूचकांक पंक्ति 2758: अशोकक “बनैत कम बिगड़ैत बेसी-सुभाष चन्द्र यादवक दोसर कथा संग्रह”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक अशोक, विधा गद्य, उप-विधा समीक्षा
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१६७. खण्ड 4067, सूचकांक पंक्ति 2758: अशोकक “बनैत कम बिगड़ैत बेसी-सुभाष चन्द्र यादवक दोसर कथा संग्रह” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१६८. खण्ड 4067, सूचकांक पंक्ति 2758: अशोकक “बनैत कम बिगड़ैत बेसी-सुभाष चन्द्र यादवक दोसर कथा संग्रह”केँ विदेह-सदेह 30क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ समीक्षाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

१६९. खण्ड 4067, सूचकांक पंक्ति 2758: अशोकक “बनैत कम बिगड़ैत बेसी-सुभाष चन्द्र यादवक दोसर कथा संग्रह” प्रविष्टि विदेह-सदेह 30क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१७०. खण्ड 4067, सूचकांक पंक्ति 2758: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 4067, सूचकांक पंक्ति 2758मे अशोकक “बनैत कम बिगड़ैत बेसी-सुभाष चन्द्र यादवक दोसर कथा संग्रह” प्रविष्टि गद्य, समीक्षा आ “कथा संग्रह समीक्षा” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 4068 : विदेह-सदेह 30 — उषाकिरण खान: अनुभूति: एकटा पाठकीय प्रतिक्रिया

१७१. खण्ड 4068, सूचकांक पंक्ति 2759: उषाकिरण खानक “अनुभूति: एकटा पाठकीय प्रतिक्रिया” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) अनुभूति: एकटा पाठकीय प्रतिक्रिया
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१७२. खण्ड 4068, सूचकांक पंक्ति 2759: उषाकिरण खानक “अनुभूति: एकटा पाठकीय प्रतिक्रिया”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) गद्य
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१७३. खण्ड 4068, सूचकांक पंक्ति 2759: उषाकिरण खानक “अनुभूति: एकटा पाठकीय प्रतिक्रिया”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) प्रतिक्रिया
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१७४. खण्ड 4068, सूचकांक पंक्ति 2759: उषाकिरण खानक “अनुभूति: एकटा पाठकीय प्रतिक्रिया” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) पाठकीय प्रतिक्रिया

१७५. खण्ड 4068, सूचकांक पंक्ति 2759: उषाकिरण खानक “अनुभूति: एकटा पाठकीय प्रतिक्रिया” प्रविष्टि विदेह-सदेह 30मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) पाठकीय प्रतिक्रिया
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१७६. खण्ड 4068, सूचकांक पंक्ति 2759: उषाकिरण खानक “अनुभूति: एकटा पाठकीय प्रतिक्रिया”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककें की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक उषाकिरण खान, विधा गद्य, उप-विधा प्रतिक्रिया
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१७७. खण्ड 4068, सूचकांक पंक्ति 2759: उषाकिरण खानक “अनुभूति: एकटा पाठकीय प्रतिक्रिया” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१७८. खण्ड 4068, सूचकांक पंक्ति 2759: उषाकिरण खानक “अनुभूति: एकटा पाठकीय प्रतिक्रिया”कें विदेह-सदेह 30क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ प्रतिक्रियाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

१७९. खण्ड 4068, सूचकांक पंक्ति 2759: उषाकिरण खानक “अनुभूति: एकटा पाठकीय प्रतिक्रिया” प्रविष्टि विदेह-सदेह 30क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१८०. खण्ड 4068, सूचकांक पंक्ति 2759: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 4068, सूचकांक पंक्ति 2759मे उपाकिरण खानक “अनुभूति: एकटा पाठकीय प्रतिक्रिया” प्रविष्टि गद्य, प्रतिक्रिया आ “पाठकीय प्रतिक्रिया” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 4069 : विदेह-सदेह 30 — नागेन्द्र कुमार कर्ण: मिथिला पञ्चकोशी परिक्रमा

१८१. खण्ड 4069, सूचकांक पंक्ति 2760: नागेन्द्र कुमार कर्णक “मिथिला पञ्चकोशी परिक्रमा” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) मिथिला पञ्चकोशी परिक्रमा
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१८२. खण्ड 4069, सूचकांक पंक्ति 2760: नागेन्द्र कुमार कर्णक “मिथिला पञ्चकोशी परिक्रमा”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) गद्य
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१८३. खण्ड 4069, सूचकांक पंक्ति 2760: नागेन्द्र कुमार कर्णक “मिथिला पञ्चकोशी परिक्रमा”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) यात्रा-वृत्तान्त
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१८४. खण्ड 4069, सूचकांक पंक्ति 2760: नागेन्द्र कुमार कर्णक “मिथिला पञ्चकोशी परिक्रमा” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) धार्मिक यात्रा

१८५. खण्ड 4069, सूचकांक पंक्ति 2760: नागेन्द्र कुमार कर्णक “मिथिला पञ्चकोशी परिक्रमा” प्रविष्टि विदेह-सदेह 30मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) धार्मिक यात्रा
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१८६. खण्ड 4069, सूचकांक पंक्ति 2760: नागेन्द्र कुमार कर्णक “मिथिला पञ्चकोशी परिक्रमा”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक नागेन्द्र कुमार कर्ण, विधा गद्य, उप-विधा यात्रा-वृत्तान्त
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१८७. खण्ड 4069, सूचकांक पंक्ति 2760: नागेन्द्र कुमार कर्णक “मिथिला पञ्चकोशी परिक्रमा” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१८८. खण्ड 4069, सूचकांक पंक्ति 2760: नागेन्द्र कुमार कर्णक “मिथिला पञ्चकोशी परिक्रमा”कें विदेह-सदेह 30क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ यात्रा-वृत्तान्तक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

१८९. खण्ड 4069, सूचकांक पंक्ति 2760: नागेन्द्र कुमार कर्णक “मिथिला पञ्चकोशी परिक्रमा” प्रविष्टि विदेह-सदेह 30क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१९०. खण्ड 4069, सूचकांक पंक्ति 2760: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 4069, सूचकांक पंक्ति 2760मे नागेन्द्र कुमार कर्णक “मिथिला पञ्चकोशी परिक्रमा” प्रविष्टि गद्य, यात्रा-वृत्तान्त आ “धार्मिक यात्रा” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 4070 : विदेह-सदेह 30 — नागेन्द्र कुमार कर्ण: सुजित कुमार झा पर

१९१. खण्ड 4070, सूचकांक पंक्ति 2761: नागेन्द्र कुमार कर्णक “सुजित कुमार झा पर” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) सुजित कुमार झा पर
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१९२. खण्ड 4070, सूचकांक पंक्ति 2761: नागेन्द्र कुमार कर्णक “सुजित कुमार झा पर”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) गद्य
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१९३. खण्ड 4070, सूचकांक पंक्ति 2761: नागेन्द्र कुमार कर्णक “सुजित कुमार झा पर”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समीक्षा
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१९४. खण्ड 4070, सूचकांक पंक्ति 2761: नागेन्द्र कुमार कर्णक “सुजित कुमार झा पर” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?
- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
 (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
 (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
 (D) लेखक परिचय
१९५. खण्ड 4070, सूचकांक पंक्ति 2761: नागेन्द्र कुमार कर्णक “सुजित कुमार झा पर” प्रविष्टि विदेह-सदेह 30मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?
- (A) लेखक परिचय
 (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
 (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
 (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
१९६. खण्ड 4070, सूचकांक पंक्ति 2761: नागेन्द्र कुमार कर्णक “सुजित कुमार झा पर”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककें की मुख्य सूचना दैत अछि?
- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
 (B) लेखक नागेन्द्र कुमार कर्ण, विधा गद्य, उप-विधा समीक्षा
 (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
 (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
१९७. खण्ड 4070, सूचकांक पंक्ति 2761: नागेन्द्र कुमार कर्णक “सुजित कुमार झा पर” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?
- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
 (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
 (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
 (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
१९८. खण्ड 4070, सूचकांक पंक्ति 2761: नागेन्द्र कुमार कर्णक “सुजित कुमार झा पर”कें विदेह-सदेह 30क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?
- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
 (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
 (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
 (D) ई पाठ समीक्षाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।
१९९. खण्ड 4070, सूचकांक पंक्ति 2761: नागेन्द्र कुमार कर्णक “सुजित कुमार झा पर” प्रविष्टि विदेह-सदेह 30क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?
- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
 (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
 (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
 (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
२००. खण्ड 4070, सूचकांक पंक्ति 2761: एहि खण्डक सार की अछि?
- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
 (B) खण्ड 4070, सूचकांक पंक्ति 2761मे नागेन्द्र कुमार कर्णक “सुजित कुमार झा पर” प्रविष्टि गद्य, समीक्षा आ “लेखक परिचय” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि।
 (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
 (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 4071 : विदेह-सदेह 30 — भालचन्द्र झा: बाल-शिक्षणपर निबन्ध- हमर शिक्षण-यात्रा

२०१. खण्ड 4071, सूचकांक पंक्ति 2762: भालचन्द्र झाक “बाल-शिक्षणपर निबन्ध- हमर शिक्षण-यात्रा” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) बाल-शिक्षणपर निबन्ध- हमर शिक्षण-यात्रा
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२०२. खण्ड 4071, सूचकांक पंक्ति 2762: भालचन्द्र झाक “बाल-शिक्षणपर निबन्ध- हमर शिक्षण-यात्रा”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) गद्य
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२०३. खण्ड 4071, सूचकांक पंक्ति 2762: भालचन्द्र झाक “बाल-शिक्षणपर निबन्ध- हमर शिक्षण-यात्रा”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) निबन्ध
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२०४. खण्ड 4071, सूचकांक पंक्ति 2762: भालचन्द्र झाक “बाल-शिक्षणपर निबन्ध- हमर शिक्षण-यात्रा” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) शिक्षा दर्शन

२०५. खण्ड 4071, सूचकांक पंक्ति 2762: भालचन्द्र झाक “बाल-शिक्षणपर निबन्ध- हमर शिक्षण-यात्रा” प्रविष्टि विदेह-सदेह 30मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) शिक्षा दर्शन
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२०६. खण्ड 4071, सूचकांक पंक्ति 2762: भालचन्द्र झाक “बाल-शिक्षणपर निबन्ध- हमर शिक्षण-यात्रा”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककें की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक भालचन्द्र झा, विधा गद्य, उप-विधा निबन्ध
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२०७. खण्ड 4071, सूचकांक पंक्ति 2762: भालचन्द्र झाक “बाल-शिक्षणपर निबन्ध- हमर शिक्षण-यात्रा” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२०८. खण्ड 4071, सूचकांक पंक्ति 2762: भालचन्द्र झाक “बाल-शिक्षणपर निबन्ध- हमर शिक्षण-यात्रा”कें विदेह-सदेह 30क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ निबन्धक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

२०९. खण्ड 4071, सूचकांक पंक्ति 2762: भालचन्द्र झाक “बाल-शिक्षणपर निबन्ध- हमर शिक्षण-यात्रा” प्रविष्टि विदेह-सदेह 30क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२१०. खण्ड 4071, सूचकांक पंक्ति 2762: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 4071, सूचकांक पंक्ति 2762मे भालचन्द्र झाक “बाल-शिक्षणपर निबन्ध- हमर शिक्षण-यात्रा” प्रविष्टि गद्य, निबन्ध आ “शिक्षा दर्शन” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 4072 : विदेह-सदेह 30 — ब्युटी कुमारी: राहुलजी एक नजरिमे

२११. खण्ड 4072, सूचकांक पंक्ति 2763: ब्युटी कुमारीक “राहुलजी एक नजरिमे” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) राहुलजी एक नजरिमे
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२१२. खण्ड 4072, सूचकांक पंक्ति 2763: ब्युटी कुमारीक “राहुलजी एक नजरिमे”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) गद्य
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२१३. खण्ड 4072, सूचकांक पंक्ति 2763: ब्युटी कुमारीक “राहुलजी एक नजरिमे”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) व्यक्तित्व रेखांकन
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२१४. खण्ड 4072, सूचकांक पंक्ति 2763: ब्युटी कुमारीक “राहुलजी एक नजरिमे” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) व्यक्ति परिचय

२१५. खण्ड 4072, सूचकांक पंक्ति 2763: ब्युटी कुमारीक “राहुलजी एक नजरिमे” प्रविष्टि विदेह-सदेह 30मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) व्यक्ति परिचय
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२१६. खण्ड 4072, सूचकांक पंक्ति 2763: ब्युटी कुमारीक “राहुलजी एक नजरिमे”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककें की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक ब्युटी कुमारी, विधा गद्य, उप-विधा व्यक्तित्व रेखांकन
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२१७. खण्ड 4072, सूचकांक पंक्ति 2763: ब्युटी कुमारीक “राहुलजी एक नजरिमे” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२१८. खण्ड 4072, सूचकांक पंक्ति 2763: ब्युटी कुमारीक “राहुलजी एक नजरिमे”कें विदेह-सदेह 30क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ व्यक्तित्व रेखांकनक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

२१९. खण्ड 4072, सूचकांक पंक्ति 2763: ब्युटी कुमारीक “राहुलजी एक नजरिमे” प्रविष्टि विदेह-सदेह 30क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२२०. खण्ड 4072, सूचकांक पंक्ति 2763: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 4072, सूचकांक पंक्ति 2763मे ब्युटी कुमारीक “राहुलजी एक नजरिमे” प्रविष्टि गद्य, व्यक्तित्व रेखांकन आ “व्यक्ति परिचय” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 4073 : विदेह-सदेह 30 — बसन्त झा: उगना

२२१. खण्ड 4073, सूचकांक पंक्ति 2764: बसन्त झाक “उगना” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) उगना
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२२२. खण्ड 4073, सूचकांक पंक्ति 2764: बसन्त झाक “उगना”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) गद्य
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२२३. खण्ड 4073, सूचकांक पंक्ति 2764: बसन्त झाक “उगना”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) निबन्ध/कथा
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२२४. खण्ड 4073, सूचकांक पंक्ति 2764: बसन्त झाक “उगना” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) सृजनात्मक गद्य

२२५. खण्ड 4073, सूचकांक पंक्ति 2764: बसन्त झाक “उगना” प्रविष्टि विदेह-सदेह 30मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) सृजनात्मक गद्य
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२२६. खण्ड 4073, सूचकांक पंक्ति 2764: बसन्त झाक “उगना”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककें की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक बसन्त झा, विधा गद्य, उप-विधा निबन्ध/कथा
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२२७. खण्ड 4073, सूचकांक पंक्ति 2764: बसन्त झाक “उगना” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२२८. खण्ड 4073, सूचकांक पंक्ति 2764: बसन्त झाक “उगना”कें विदेह-सदेह 30क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ निबन्ध/कथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

२२९. खण्ड 4073, सूचकांक पंक्ति 2764: बसन्त झाक “उगना” प्रविष्टि विदेह-सदेह 30क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२३०. खण्ड 4073, सूचकांक पंक्ति 2764: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 4073, सूचकांक पंक्ति 2764मे बसन्त झाक “उगना” प्रविष्टि गद्य, निबन्ध/कथा आ “सृजनात्मक गद्य” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 4074 : विदेह-सदेह 30 — धीरेन्द्र कुमार: नो एंट्री : मा प्रविश- (उदय नारायण सिंह 'नचिकेता')

२३१. खण्ड 4074, सूचकांक पंक्ति 2765: धीरेन्द्र कुमारक “नो एंट्री : मा प्रविश- (उदय नारायण सिंह 'नचिकेता')” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) नो एंट्री : मा प्रविश- (उदय नारायण सिंह 'नचिकेता')
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२३२. खण्ड 4074, सूचकांक पंक्ति 2765: धीरेन्द्र कुमारक “नो एंट्री : मा प्रविश- (उदय नारायण सिंह 'नचिकेता')”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) गद्य
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२३३. खण्ड 4074, सूचकांक पंक्ति 2765: धीरेन्द्र कुमारक “नो एंट्री : मा प्रविश- (उदय नारायण सिंह 'नचिकेता')”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समीक्षा
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२३४. खण्ड 4074, सूचकांक पंक्ति 2765: धीरेन्द्र कुमारक “नो एंट्री : मा प्रविश- (उदय नारायण सिंह 'नचिकेता')” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) नाटक समीक्षा

२३५. खण्ड 4074, सूचकांक पंक्ति 2765: धीरेन्द्र कुमारक “नो एंट्री : मा प्रविश- (उदय नारायण सिंह 'नचिकेता')” प्रविष्टि विदेह-सदेह 30मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) नाटक समीक्षा
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२३६. खण्ड 4074, सूचकांक पंक्ति 2765: धीरेन्द्र कुमारक “नो एंट्री : मा प्रविश- (उदय नारायण सिंह 'नचिकेता')”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक धीरेन्द्र कुमार, विधा गद्य, उप-विधा समीक्षा
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२३७. खण्ड 4074, सूचकांक पंक्ति 2765: धीरेन्द्र कुमारक “नो एंट्री : मा प्रविश- (उदय नारायण सिंह 'नचिकेता')” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२३८. खण्ड 4074, सूचकांक पंक्ति 2765: धीरेन्द्र कुमारक “नो एंट्री : मा प्रविश- (उदय नारायण सिंह 'नचिकेता')”कें विदेह-सदेह 30क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ समीक्षाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

२३९. खण्ड 4074, सूचकांक पंक्ति 2765: धीरेन्द्र कुमारक “नो एंट्री : मा प्रविश- (उदय नारायण सिंह 'नचिकेता')” प्रविष्टि विदेह-सदेह 30क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२४०. खण्ड 4074, सूचकांक पंक्ति 2765: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 4074, सूचकांक पंक्ति 2765मे धीरेन्द्र कुमारक “नो एंट्री : मा प्रविश- (उदय नारायण सिंह 'नचिकेता')” प्रविष्टि गद्य, समीक्षा आ “नाटक समीक्षा” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 4075 : विदेह-सदेह 30 — धीरेन्द्र कुमार: प्रीति ठाकुरक दुनू चित्रकथापर धीरेन्द्र कुमार एक नजरि

२४१. खण्ड 4075, सूचकांक पंक्ति 2766: धीरेन्द्र कुमारक “प्रीति ठाकुरक दुनू चित्रकथापर धीरेन्द्र कुमार एक नजरि” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) प्रीति ठाकुरक दुनू चित्रकथापर धीरेन्द्र कुमार एक नजरि
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२४२. खण्ड 4075, सूचकांक पंक्ति 2766: धीरेन्द्र कुमारक “प्रीति ठाकुरक दुनू चित्रकथापर धीरेन्द्र कुमार एक नजरि”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) गद्य
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२४३. खण्ड 4075, सूचकांक पंक्ति 2766: धीरेन्द्र कुमारक “प्रीति ठाकुरक दुनू चित्रकथापर धीरेन्द्र कुमार एक नजरि”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समीक्षा
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२४४. खण्ड 4075, सूचकांक पंक्ति 2766: धीरेन्द्र कुमारक “प्रीति ठाकुरक दुनू चित्रकथापर धीरेन्द्र कुमार एक नजरि” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) चित्रकथा समीक्षा

२४५. खण्ड 4075, सूचकांक पंक्ति 2766: धीरेन्द्र कुमारक “प्रीति ठाकुरक दुनू चित्रकथापर धीरेन्द्र कुमार एक नजरि” प्रविष्टि विदेह-सदेह 30मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) चित्रकथा समीक्षा
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२४६. खण्ड 4075, सूचकांक पंक्ति 2766: धीरेन्द्र कुमारक “प्रीति ठाकुरक दुनू चित्रकथापर धीरेन्द्र कुमार एक नजरि”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक धीरेन्द्र कुमार, विधा गद्य, उप-विधा समीक्षा
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२४७. खण्ड 4075, सूचकांक पंक्ति 2766: धीरेन्द्र कुमारक “प्रीति ठाकुरक दुनू चित्रकथापर धीरेन्द्र कुमार एक नजरि” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२४८. खण्ड 4075, सूचकांक पंक्ति 2766: धीरेन्द्र कुमारक “प्रीति ठाकुरक दुनू चित्रकथापर धीरेन्द्र कुमार एक नजरि”केँ विदेह-सदेह 30क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ समीक्षाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

२४९. खण्ड 4075, सूचकांक पंक्ति 2766: धीरेन्द्र कुमारक “प्रीति ठाकुरक दुनू चित्रकथापर धीरेन्द्र कुमार एक नजरि” प्रविष्टि विदेह-सदेह 30क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२५०. खण्ड 4075, सूचकांक पंक्ति 2766: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 4075, सूचकांक पंक्ति 2766मे धीरेन्द्र कुमारक “प्रीति ठाकुरक दुनू चित्रकथापर धीरेन्द्र कुमार एक नजरि” प्रविष्टि गद्य, समीक्षा आ “चित्रकथा समीक्षा” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 4076 : विदेह-सदेह 30 — डॉ. शेफालिका वर्मा: प्रीति ठाकुर क मैथिली चित्रकथा

२५१. खण्ड 4076, सूचकांक पंक्ति 2767: डॉ. शेफालिका वर्माक “प्रीति ठाकुर क मैथिली चित्रकथा” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) प्रीति ठाकुर क मैथिली चित्रकथा
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२५२. खण्ड 4076, सूचकांक पंक्ति 2767: डॉ. शेफालिका वर्माक “प्रीति ठाकुर क मैथिली चित्रकथा”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) गद्य
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२५३. खण्ड 4076, सूचकांक पंक्ति 2767: डॉ. शेफालिका वर्माक “प्रीति ठाकुर क मैथिली चित्रकथा”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समीक्षा
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२५४. खण्ड 4076, सूचकांक पंक्ति 2767: डॉ. शेफालिका वर्माक “प्रीति ठाकुर क मैथिली चित्रकथा” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) चित्रकथा विधा समीक्षा

२५५. खण्ड 4076, सूचकांक पंक्ति 2767: डॉ. शेफालिका वर्माक “प्रीति ठाकुर क मैथिली चित्रकथा” प्रविष्टि विदेह-सदेह 30मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) चित्रकथा विधा समीक्षा
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२५६. खण्ड 4076, सूचकांक पंक्ति 2767: डॉ. शेफालिका वर्माक “प्रीति ठाकुर क मैथिली चित्रकथा”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककें की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक डॉ. शेफालिका वर्मा, विधा गद्य, उप-विधा समीक्षा
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२५७. खण्ड 4076, सूचकांक पंक्ति 2767: डॉ. शेफालिका वर्माक “प्रीति ठाकुर क मैथिली चित्रकथा” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२५८. खण्ड 4076, सूचकांक पंक्ति 2767: डॉ. शेफालिका वर्माक “प्रीति ठाकुर क मैथिली चित्रकथा”कें विदेह-सदेह 30क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ समीक्षाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

२५९. खण्ड 4076, सूचकांक पंक्ति 2767: डॉ. शेफालिका वर्माक “प्रीति ठाकुर क मैथिली चित्रकथा” प्रविष्टि विदेह-सदेह 30क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२६०. खण्ड 4076, सूचकांक पंक्ति 2767: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 4076, सूचकांक पंक्ति 2767मे डॉ. शेफालिका वर्माक “प्रीति ठाकुर क मैथिली चित्रकथा” प्रविष्टि गद्य, समीक्षा आ “चित्रकथा विधा समीक्षा” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 4077 : विदेह-सदेह 30 — गजेन्द्र ठाकुर: मिथिलाक ध्वज गीत

२६१. खण्ड 4077, सूचकांक पंक्ति 2768: गजेन्द्र ठाकुरक “मिथिलाक ध्वज गीत” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) मिथिलाक ध्वज गीत
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२६२. खण्ड 4077, सूचकांक पंक्ति 2768: गजेन्द्र ठाकुरक “मिथिलाक ध्वज गीत”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) पद्य
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२६३. खण्ड 4077, सूचकांक पंक्ति 2768: गजेन्द्र ठाकुरक “मिथिलाक ध्वज गीत”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) गीत
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२६४. खण्ड 4077, सूचकांक पंक्ति 2768: गजेन्द्र ठाकुरक “मिथिलाक ध्वज गीत” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) मिथिला पहचानक प्रतीक गीत

२६५. खण्ड 4077, सूचकांक पंक्ति 2768: गजेन्द्र ठाकुरक “मिथिलाक ध्वज गीत” प्रविष्टि विदेह-सदेह 30मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) मिथिला पहचानक प्रतीक गीत
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२६६. खण्ड 4077, सूचकांक पंक्ति 2768: गजेन्द्र ठाकुरक “मिथिलाक ध्वज गीत”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककें की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक गजेन्द्र ठाकुर, विधा पद्य, उप-विधा गीत
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२६७. खण्ड 4077, सूचकांक पंक्ति 2768: गजेन्द्र ठाकुरक “मिथिलाक ध्वज गीत” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२६८. खण्ड 4077, सूचकांक पंक्ति 2768: गजेन्द्र ठाकुरक “मिथिलाक ध्वज गीत”कें विदेह-सदेह 30क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ गीतक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

२६९. खण्ड 4077, सूचकांक पंक्ति 2768: गजेन्द्र ठाकुरक “मिथिलाक ध्वज गीत” प्रविष्टि विदेह-सदेह 30क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२७०. खण्ड 4077, सूचकांक पंक्ति 2768: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 4077, सूचकांक पंक्ति 2768मे गजेन्द्र ठाकुरक “मिथिलाक ध्वज गीत” प्रविष्टि पद्य, गीत आ “मिथिला पहचानक प्रतीक गीत” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 4078 : विदेह-सदेह 30 — (सम्पादक संकलन): किछु संस्कृत सुभाषितक संकलन

२७१. खण्ड 4078, सूचकांक पंक्ति 2769: (सम्पादक संकलन)क “किछु संस्कृत सुभाषितक संकलन” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) किछु संस्कृत सुभाषितक संकलन
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२७२. खण्ड 4078, सूचकांक पंक्ति 2769: (सम्पादक संकलन)क “किछु संस्कृत सुभाषितक संकलन”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) पद्य
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२७३. खण्ड 4078, सूचकांक पंक्ति 2769: (सम्पादक संकलन)क “किछु संस्कृत सुभाषितक संकलन”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) सुभाषित
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२७४. खण्ड 4078, सूचकांक पंक्ति 2769: (सम्पादक संकलन)क “किछु संस्कृत सुभाषितक संकलन” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) संस्कृत मैथिली ज्ञान परम्पराक संकलन

२७५. खण्ड 4078, सूचकांक पंक्ति 2769: (सम्पादक संकलन)क “किछु संस्कृत सुभाषितक संकलन” प्रविष्टि विदेह-सदेह 30मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) संस्कृत मैथिली ज्ञान परम्पराक संकलन
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२७६. खण्ड 4078, सूचकांक पंक्ति 2769: (सम्पादक संकलन)क “किछु संस्कृत सुभाषितक संकलन”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक (सम्पादक संकलन), विधा पद्य, उप-विधा सुभाषित
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२७७. खण्ड 4078, सूचकांक पंक्ति 2769: (सम्पादक संकलन)क “किछु संस्कृत सुभाषितक संकलन” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२७८. खण्ड 4078, सूचकांक पंक्ति 2769: (सम्पादक संकलन)क “किछु संस्कृत सुभाषितक संकलन”केँ विदेह-सदेह 30क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ सुभाषितक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

२७९. खण्ड 4078, सूचकांक पंक्ति 2769: (सम्पादक संकलन)क “किछु संस्कृत सुभाषितक संकलन” प्रविष्टि विदेह-सदेह 30क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२८०. खण्ड 4078, सूचकांक पंक्ति 2769: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 4078, सूचकांक पंक्ति 2769मे (सम्पादक संकलन)क “किछु संस्कृत सुभाषितक संकलन” प्रविष्टि पद्य, सुभाषित आ “संस्कृत मैथिली ज्ञान परम्पराक संकलन” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 4079 : विदेह-सदेह 30 — (सम्पादक संकलन): बच्चा लोकनि द्वारा स्मरणीय श्लोक

२८१. खण्ड 4079, सूचकांक पंक्ति 2770: (सम्पादक संकलन)क “बच्चा लोकनि द्वारा स्मरणीय श्लोक” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) बच्चा लोकनि द्वारा स्मरणीय श्लोक
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२८२. खण्ड 4079, सूचकांक पंक्ति 2770: (सम्पादक संकलन)क “बच्चा लोकनि द्वारा स्मरणीय श्लोक”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) पद्य
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२८३. खण्ड 4079, सूचकांक पंक्ति 2770: (सम्पादक संकलन)क “बच्चा लोकनि द्वारा स्मरणीय श्लोक”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) श्लोक
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२८४. खण्ड 4079, सूचकांक पंक्ति 2770: (सम्पादक संकलन)क “बच्चा लोकनि द्वारा स्मरणीय श्लोक” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) शिक्षाप्रद श्लोक संकलन

२८५. खण्ड 4079, सूचकांक पंक्ति 2770: (सम्पादक संकलन)क “बच्चा लोकनि द्वारा स्मरणीय श्लोक” प्रविष्टि विदेह-सदेह 30मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) शिक्षाप्रद श्लोक संकलन
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२८६. खण्ड 4079, सूचकांक पंक्ति 2770: (सम्पादक संकलन)क “बच्चा लोकनि द्वारा स्मरणीय श्लोक”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठकर्त्तों की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक (सम्पादक संकलन), विधा पद्य, उप-विधा श्लोक
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२८७. खण्ड 4079, सूचकांक पंक्ति 2770: (सम्पादक संकलन)क “बच्चा लोकनि द्वारा स्मरणीय श्लोक” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२८८. खण्ड 4079, सूचकांक पंक्ति 2770: (सम्पादक संकलन)क “बच्चा लोकनि द्वारा स्मरणीय श्लोक”क विदेह-सदेह 30क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ श्लोकक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

२८९. खण्ड 4079, सूचकांक पंक्ति 2770: (सम्पादक संकलन)क “बच्चा लोकनि द्वारा स्मरणीय श्लोक” प्रविष्टि विदेह-सदेह 30क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२९०. खण्ड 4079, सूचकांक पंक्ति 2770: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 4079, सूचकांक पंक्ति 2770मे (सम्पादक संकलन)क “बच्चा लोकनि द्वारा स्मरणीय श्लोक” प्रविष्टि पद्य, श्लोक आ “शिक्षाप्रद श्लोक संकलन” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 4080 : विदेह-सदेह 30 — (सम्पादक संकलन): संदेश

२९१. खण्ड 4080, सूचकांक पंक्ति 2771: (सम्पादक संकलन)क “संदेश” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) संदेश
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२९२. खण्ड 4080, सूचकांक पंक्ति 2771: (सम्पादक संकलन)क “संदेश”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) पद्य
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२९३. खण्ड 4080, सूचकांक पंक्ति 2771: (सम्पादक संकलन)क “संदेश”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) गीत/कविता
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२९४. खण्ड 4080, सूचकांक पंक्ति 2771: (सम्पादक संकलन)क “संदेश” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) शिक्षाप्रद कविता

२९५. खण्ड 4080, सूचकांक पंक्ति 2771: (सम्पादक संकलन)क “संदेश” प्रविष्टि विदेह-सदेह 30मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) शिक्षाप्रद कविता
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२९६. खण्ड 4080, सूचकांक पंक्ति 2771: (सम्पादक संकलन)क “संदेश”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक (सम्पादक संकलन), विधा पद्य, उप-विधा गीत/कविता
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२९७. खण्ड 4080, सूचकांक पंक्ति 2771: (सम्पादक संकलन)क “संदेश” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२९८. खण्ड 4080, सूचकांक पंक्ति 2771: (सम्पादक संकलन)क “संदेश”केँ विदेह-सदेह 30क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ गीत/कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

२९९. खण्ड 4080, सूचकांक पंक्ति 2771: (सम्पादक संकलन)क “संदेश” प्रविष्टि विदेह-सदेह 30क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३००. खण्ड 4080, सूचकांक पंक्ति 2771: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 4080, सूचकांक पंक्ति 2771मे (सम्पादक संकलन)क “संदेश” प्रविष्टि पद्य, गीत/कविता आ “शिक्षाप्रद कविता” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१. (A) मैथिली शिशु साहित्य लोक — सूचकांक पंक्ति 2741मे फूल चन्द्र झा 'प्रवीण'क प्रविष्टि “मैथिली शिशु साहित्य लोक” रूपमे देल अछि।
२. (B) गद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।
३. (C) अनुसन्धान — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “अनुसन्धान” अछि।
४. (D) बाल साहित्य सर्वेक्षण — टिप्पणीक पहिल संकेत “बाल साहित्य सर्वेक्षण” अछि।
५. (A) बाल साहित्य सर्वेक्षण — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “बाल साहित्य सर्वेक्षण” रूपमे देखाइत अछि।
६. (B) लेखक फूल चन्द्र झा 'प्रवीण', विधा गद्य, उप-विधा अनुसन्धान — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।
७. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।
८. (D) ई पाठ अनुसन्धानक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।
९. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।
१०. (B) खण्ड 4050, सूचकांक पंक्ति 2741मे फूल चन्द्र झा 'प्रवीण'क “मैथिली शिशु साहित्य लोक” प्रविष्टि गद्य, अनुसन्धान आ “बाल साहित्य सर्वेक्षण” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।
११. (A) प्रो. मायानन्द मिश्रक रमनगर कथामे लागल “मुदा”... — सूचकांक पंक्ति 2743मे रमेशक प्रविष्टि “प्रो. मायानन्द मिश्रक रमनगर कथामे लागल “मुदा”...” रूपमे देल अछि।
१२. (B) गद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।
१३. (C) आलोचना — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “आलोचना” अछि।
१४. (D) भाषागत समीक्षा — टिप्पणीक पहिल संकेत “भाषागत समीक्षा” अछि।
१५. (A) भाषागत समीक्षा — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “भाषागत समीक्षा” रूपमे देखाइत अछि।
१६. (B) लेखक रमेश, विधा गद्य, उप-विधा आलोचना — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।
१७. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।
१८. (D) ई पाठ आलोचनाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।
१९. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।
२०. (B) खण्ड 4052, सूचकांक पंक्ति 2743मे रमेशक “प्रो. मायानन्द मिश्रक रमनगर कथामे लागल “मुदा”...” प्रविष्टि गद्य, आलोचना आ “भाषागत समीक्षा” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।
२१. (A) चरित्र चित्रणक वाजीगर- जगदीश प्रसाद मंडल — सूचकांक पंक्ति 2744मे मन्त्रेश्वर झाक प्रविष्टि “चरित्र चित्रणक वाजीगर- जगदीश प्रसाद मंडल” रूपमे देल अछि।
२२. (B) गद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।
२३. (C) समीक्षा — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “समीक्षा” अछि।
२४. (D) चरित्र चित्रण कला — टिप्पणीक पहिल संकेत “चरित्र चित्रण कला” अछि।
२५. (A) चरित्र चित्रण कला — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “चरित्र चित्रण कला” रूपमे देखाइत अछि।
२६. (B) लेखक मन्त्रेश्वर झा, विधा गद्य, उप-विधा समीक्षा — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।
२७. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।
२८. (D) ई पाठ समीक्षाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

३९. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।
३०. (B) खण्ड 4053, सूचकांक पंक्ति 2744मे मन्त्रेश्वर झाक “चरित्र चित्रणक वाजीगर- जगदीश प्रसाद मंडल” प्रविष्टि गद्य, समीक्षा आ “चरित्र चित्रण कला” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।
३१. (A) रचनाक पाठ आ लेखक — सूचकांक पंक्ति 2745मे सुभाष चन्द्र यादवक प्रविष्टि “रचनाक पाठ आ लेखक” रूपमे देल अछि।
३२. (B) गद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।
३३. (C) निबन्ध — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “निबन्ध” अछि।
३४. (D) ओबीसी आख्यान — टिप्पणीक पहिल संकेत “ओबीसी आख्यान” अछि।
३५. (A) ओबीसी आख्यान — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “ओबीसी आख्यान” रूपमे देखाइत अछि।
३६. (B) लेखक सुभाष चन्द्र यादव, विधा गद्य, उप-विधा निबन्ध — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।
३७. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।
३८. (D) ई पाठ निबन्धक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।
३९. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।
४०. (B) खण्ड 4054, सूचकांक पंक्ति 2745मे सुभाष चन्द्र यादवक “रचनाक पाठ आ लेखक” प्रविष्टि गद्य, निबन्ध आ “ओबीसी आख्यान” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।
४१. (A) जगदीश प्रसाद मंडल — सूचकांक पंक्ति 2746मे सुभाष चन्द्र यादवक प्रविष्टि “जगदीश प्रसाद मंडल” रूपमे देल अछि।
४२. (B) गद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।
४३. (C) समीक्षा — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “समीक्षा” अछि।
४४. (D) यथार्थवाद — टिप्पणीक पहिल संकेत “यथार्थवाद” अछि।
४५. (A) यथार्थवाद — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “यथार्थवाद” रूपमे देखाइत अछि।
४६. (B) लेखक सुभाष चन्द्र यादव, विधा गद्य, उप-विधा समीक्षा — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।
४७. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।
४८. (D) ई पाठ समीक्षाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।
४९. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।
५०. (B) खण्ड 4055, सूचकांक पंक्ति 2746मे सुभाष चन्द्र यादवक “जगदीश प्रसाद मंडल” प्रविष्टि गद्य, समीक्षा आ “यथार्थवाद” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।
५१. (A) मैथिली लोक-कथा — सूचकांक पंक्ति 2747मे सुभाष चन्द्र यादवक प्रविष्टि “मैथिली लोक-कथा” रूपमे देल अछि।
५२. (B) गद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।
५३. (C) निबन्ध — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “निबन्ध” अछि।
५४. (D) लोक कथा परम्परा — टिप्पणीक पहिल संकेत “लोक कथा परम्परा” अछि।
५५. (A) लोक कथा परम्परा — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “लोक कथा परम्परा” रूपमे देखाइत अछि।
५६. (B) लेखक सुभाष चन्द्र यादव, विधा गद्य, उप-विधा निबन्ध — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।
५७. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।
५८. (D) ई पाठ निबन्धक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

६९. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।
६०. (B) खण्ड 4056, सूचकांक पंक्ति 2747मे सुभाष चन्द्र यादवक “मैथिली लोक-कथा” प्रविष्टि गद्य, निबन्ध आ “लोक कथा परम्परा” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।
६१. (A) रणभूमि आ कविता नामक शीर्षक कवितापर दू शब्द — सूचकांक पंक्ति 2748मे अच्छेलाल शास्त्रीक प्रविष्टि “रणभूमि आ कविता नामक शीर्षक कवितापर दू शब्द” रूपमे देल अछि।
६२. (B) गद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।
६३. (C) समीक्षा — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “समीक्षा” अछि।
६४. (D) कविता टिप्पणी — टिप्पणीक पहिल संकेत “कविता टिप्पणी” अछि।
६५. (A) कविता टिप्पणी — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “कविता टिप्पणी” रूपमे देखाइत अछि।
६६. (B) लेखक अच्छेलाल शास्त्री, विधा गद्य, उप-विधा समीक्षा — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।
६७. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।
६८. (D) ई पाठ समीक्षाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।
६९. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।
७०. (B) खण्ड 4057, सूचकांक पंक्ति 2748मे अच्छेलाल शास्त्रीक “रणभूमि आ कविता नामक शीर्षक कवितापर दू शब्द” प्रविष्टि गद्य, समीक्षा आ “कविता टिप्पणी” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।
७१. (A) शिव कुमार झा टिल्लू जीक लिखल खोंछक लेल साड़ी- कथापर दू शब्द — सूचकांक पंक्ति 2749मे दुर्गानन्द मंडलक प्रविष्टि “शिव कुमार झा टिल्लू जीक लिखल खोंछक लेल साड़ी- कथापर दू शब्द” रूपमे देल अछि।
७२. (B) गद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।
७३. (C) समीक्षा — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “समीक्षा” अछि।
७४. (D) कथा समीक्षा — टिप्पणीक पहिल संकेत “कथा समीक्षा” अछि।
७५. (A) कथा समीक्षा — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “कथा समीक्षा” रूपमे देखाइत अछि।
७६. (B) लेखक दुर्गानन्द मंडल, विधा गद्य, उप-विधा समीक्षा — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।
७७. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।
७८. (D) ई पाठ समीक्षाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।
७९. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।
८०. (B) खण्ड 4058, सूचकांक पंक्ति 2749मे दुर्गानन्द मंडलक “शिव कुमार झा टिल्लू जीक लिखल खोंछक लेल साड़ी- कथापर दू शब्द” प्रविष्टि गद्य, समीक्षा आ “कथा समीक्षा” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।
८१. (A) नाटक बेटीक अपमानपर एक नजरि — सूचकांक पंक्ति 2750मे दुर्गानन्द मंडलक प्रविष्टि “नाटक बेटीक अपमानपर एक नजरि” रूपमे देल अछि।
८२. (B) गद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।
८३. (C) समीक्षा — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “समीक्षा” अछि।
८४. (D) नाटक समीक्षा — टिप्पणीक पहिल संकेत “नाटक समीक्षा” अछि।
८५. (A) नाटक समीक्षा — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “नाटक समीक्षा” रूपमे देखाइत अछि।
८६. (B) लेखक दुर्गानन्द मंडल, विधा गद्य, उप-विधा समीक्षा — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

८७. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठकके केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

८८. (D) ई पाठ समीक्षाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

८९. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

९०. (B) खण्ड 4059, सूचकांक पंक्ति 2750मे दुर्गानन्द मंडलक “नाटक बेटीक अपमानपर एक नजरि” प्रविष्टि गद्य, समीक्षा आ “नाटक समीक्षा” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

९१. (A) जीवन-मरण — सूचकांक पंक्ति 2751मे दुर्गानन्द मंडलक प्रविष्टि “जीवन-मरण” रूपमे देल अछि।

९२. (B) गद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

९३. (C) निबन्ध — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “निबन्ध” अछि।

९४. (D) दार्शनिक निबन्ध — टिप्पणीक पहिल संकेत “दार्शनिक निबन्ध” अछि।

९५. (A) दार्शनिक निबन्ध — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “दार्शनिक निबन्ध” रूपमे देखाइत अछि।

९६. (B) लेखक दुर्गानन्द मंडल, विधा गद्य, उप-विधा निबन्ध — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

९७. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

९८. (D) ई पाठ निबन्धक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

९९. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

१००. (B) खण्ड 4060, सूचकांक पंक्ति 2751मे दुर्गानन्द मंडलक “जीवन-मरण” प्रविष्टि गद्य, निबन्ध आ “दार्शनिक निबन्ध” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

१०१. (A) पोथी समीक्षा-मौलाइल गाछक फूल — सूचकांक पंक्ति 2752मे दुर्गानन्द मंडलक प्रविष्टि “पोथी समीक्षा-मौलाइल गाछक फूल” रूपमे देल अछि।

१०२. (B) गद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

१०३. (C) समीक्षा — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “समीक्षा” अछि।

१०४. (D) कृति समीक्षा — टिप्पणीक पहिल संकेत “कृति समीक्षा” अछि।

१०५. (A) कृति समीक्षा — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “कृति समीक्षा” रूपमे देखाइत अछि।

१०६. (B) लेखक दुर्गानन्द मंडल, विधा गद्य, उप-विधा समीक्षा — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

१०७. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

१०८. (D) ई पाठ समीक्षाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

१०९. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

११०. (B) खण्ड 4061, सूचकांक पंक्ति 2752मे दुर्गानन्द मंडलक “पोथी समीक्षा-मौलाइल गाछक फूल” प्रविष्टि गद्य, समीक्षा आ “कृति समीक्षा” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

१११. (A) टैगोर साहित्य पुरस्कारक बहन्ने- यात्रा वृत्तान्त — सूचकांक पंक्ति 2753मे दुर्गानन्द मंडलक प्रविष्टि “टैगोर साहित्य पुरस्कारक बहन्ने- यात्रा वृत्तान्त” रूपमे देल अछि।

११२. (B) गद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

११३. (C) यात्रा-वृत्तान्त — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “यात्रा-वृत्तान्त” अछि।

११४. (D) पुरस्कार यात्रा — टिप्पणीक पहिल संकेत “पुरस्कार यात्रा” अछि।

११५. (A) पुरस्कार यात्रा — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “पुरस्कार यात्रा” रूपमे देखाइत अछि।

११६. (B) लेखक दुर्गानन्द मंडल, विधा गद्य, उप-विधा यात्रा-वृत्तान्त — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

११७. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककें केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।
११८. (D) ई पाठ यात्रा-वृत्तान्तक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकें स्पष्ट करैत अछि।
११९. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।
१२०. (B) खण्ड 4062, सूचकांक पंक्ति 2753मे दुर्गानन्द मंडलक “टैगोर साहित्य पुरस्कारक बहन्ने- यात्रा वृत्तान्त” प्रविष्टि गद्य, यात्रा-वृत्तान्त आ “पुरस्कार यात्रा” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकें प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।
१२१. (A) प्राचीन भारतीय संस्कृतिमे मिथिलाक योगदान — सूचकांक पंक्ति 2754मे प्रो. वीणा ठाकुरक प्रविष्टि “प्राचीन भारतीय संस्कृतिमे मिथिलाक योगदान” रूपमे देल अछि।
१२२. (B) गद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकें “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।
१२३. (C) शोध — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “शोध” अछि।
१२४. (D) सांस्कृतिक इतिहास — टिप्पणीक पहिल संकेत “सांस्कृतिक इतिहास” अछि।
१२५. (A) सांस्कृतिक इतिहास — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “सांस्कृतिक इतिहास” रूपमे देखाइत अछि।
१२६. (B) लेखक प्रो. वीणा ठाकुर, विधा गद्य, उप-विधा शोध — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकें एक साथ रखैत अछि।
१२७. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककें केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।
१२८. (D) ई पाठ शोधक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकें स्पष्ट करैत अछि।
१२९. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।
१३०. (B) खण्ड 4063, सूचकांक पंक्ति 2754मे प्रो. वीणा ठाकुरक “प्राचीन भारतीय संस्कृतिमे मिथिलाक योगदान” प्रविष्टि गद्य, शोध आ “सांस्कृतिक इतिहास” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकें प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।
१३१. (A) गोनू झा आ आन मैथिली चित्रकथा — सूचकांक पंक्ति 2755मे प्रो. वीणा ठाकुरक प्रविष्टि “गोनू झा आ आन मैथिली चित्रकथा” रूपमे देल अछि।
१३२. (B) गद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकें “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।
१३३. (C) समीक्षा — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “समीक्षा” अछि।
१३४. (D) चित्रकथा समीक्षा — टिप्पणीक पहिल संकेत “चित्रकथा समीक्षा” अछि।
१३५. (A) चित्रकथा समीक्षा — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “चित्रकथा समीक्षा” रूपमे देखाइत अछि।
१३६. (B) लेखक प्रो. वीणा ठाकुर, विधा गद्य, उप-विधा समीक्षा — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकें एक साथ रखैत अछि।
१३७. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककें केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।
१३८. (D) ई पाठ समीक्षाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकें स्पष्ट करैत अछि।
१३९. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।
१४०. (B) खण्ड 4064, सूचकांक पंक्ति 2755मे प्रो. वीणा ठाकुरक “गोनू झा आ आन मैथिली चित्रकथा” प्रविष्टि गद्य, समीक्षा आ “चित्रकथा समीक्षा” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकें प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।
१४१. (A) जिनगीक जीत उपन्यासक समीक्षा — सूचकांक पंक्ति 2756मे प्रो. वीणा ठाकुरक प्रविष्टि “जिनगीक जीत उपन्यासक समीक्षा” रूपमे देल अछि।
१४२. (B) गद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकें “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।
१४३. (C) समीक्षा — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “समीक्षा” अछि।
१४४. (D) उपन्यास समीक्षा — टिप्पणीक पहिल संकेत “उपन्यास समीक्षा” अछि।

१४५. (A) उपन्यास समीक्षा — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “उपन्यास समीक्षा” रूपमे देखाइत अछि।
१४६. (B) लेखक प्रो. वीणा ठाकुर, विधा गद्य, उप-विधा समीक्षा — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।
१४७. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।
१४८. (D) ई पाठ समीक्षाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।
१४९. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।
१५०. (B) खण्ड 4065, सूचकांक पंक्ति 2756मे प्रो. वीणा ठाकुरक “जिनगीक जीत उपन्यासक समीक्षा” प्रविष्टि गद्य, समीक्षा आ “उपन्यास समीक्षा” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।
१५१. (A) महाकवि मार्कण्डेय प्रवासी — सूचकांक पंक्ति 2757मे प्रो. वीणा ठाकुरक प्रविष्टि “महाकवि मार्कण्डेय प्रवासी” रूपमे देल अछि।
१५२. (B) गद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।
१५३. (C) समीक्षा — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “समीक्षा” अछि।
१५४. (D) कवि व्यक्तित्व — टिप्पणीक पहिल संकेत “कवि व्यक्तित्व” अछि।
१५५. (A) कवि व्यक्तित्व — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “कवि व्यक्तित्व” रूपमे देखाइत अछि।
१५६. (B) लेखक प्रो. वीणा ठाकुर, विधा गद्य, उप-विधा समीक्षा — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।
१५७. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।
१५८. (D) ई पाठ समीक्षाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।
१५९. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।
१६०. (B) खण्ड 4066, सूचकांक पंक्ति 2757मे प्रो. वीणा ठाकुरक “महाकवि मार्कण्डेय प्रवासी” प्रविष्टि गद्य, समीक्षा आ “कवि व्यक्तित्व” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।
१६१. (A) बनैत कम बिगड़ैत बेसी-सुभाष चन्द्र यादवक दोसर कथा संग्रह — सूचकांक पंक्ति 2758मे अशोकक प्रविष्टि “बनैत कम बिगड़ैत बेसी-सुभाष चन्द्र यादवक दोसर कथा संग्रह” रूपमे देल अछि।
१६२. (B) गद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।
१६३. (C) समीक्षा — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “समीक्षा” अछि।
१६४. (D) कथा संग्रह समीक्षा — टिप्पणीक पहिल संकेत “कथा संग्रह समीक्षा” अछि।
१६५. (A) कथा संग्रह समीक्षा — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “कथा संग्रह समीक्षा” रूपमे देखाइत अछि।
१६६. (B) लेखक अशोक, विधा गद्य, उप-विधा समीक्षा — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।
१६७. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।
१६८. (D) ई पाठ समीक्षाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।
१६९. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।
१७०. (B) खण्ड 4067, सूचकांक पंक्ति 2758मे अशोकक “बनैत कम बिगड़ैत बेसी-सुभाष चन्द्र यादवक दोसर कथा संग्रह” प्रविष्टि गद्य, समीक्षा आ “कथा संग्रह समीक्षा” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।
१७१. (A) अनुभूति: एकटा पाठकीय प्रतिक्रिया — सूचकांक पंक्ति 2759मे उषाकिरण खानक प्रविष्टि “अनुभूति: एकटा पाठकीय प्रतिक्रिया” रूपमे देल अछि।
१७२. (B) गद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।
१७३. (C) प्रतिक्रिया — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “प्रतिक्रिया” अछि।

१७४. (D) पाठकीय प्रतिक्रिया — टिप्पणीक पहिल संकेत “पाठकीय प्रतिक्रिया” अछि।
१७५. (A) पाठकीय प्रतिक्रिया — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “पाठकीय प्रतिक्रिया” रूपमे देखाइत अछि।
१७६. (B) लेखक उषाकिरण खान, विधा गद्य, उप-विधा प्रतिक्रिया — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकें एक साथ रखैत अछि।
१७७. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककें केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।
१७८. (D) ई पाठ प्रतिक्रियाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकें स्पष्ट करैत अछि।
१७९. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।
१८०. (B) खण्ड 4068, सूचकांक पंक्ति 2759मे उषाकिरण खानक “अनुभूति: एकटा पाठकीय प्रतिक्रिया” प्रविष्टि गद्य, प्रतिक्रिया आ “पाठकीय प्रतिक्रिया” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकें प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।
१८१. (A) मिथिला पञ्चकोशी परिक्रमा — सूचकांक पंक्ति 2760मे नागेन्द्र कुमार कर्णक प्रविष्टि “मिथिला पञ्चकोशी परिक्रमा” रूपमे देल अछि।
१८२. (B) गद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकें “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।
१८३. (C) यात्रा-वृत्तान्त — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “यात्रा-वृत्तान्त” अछि।
१८४. (D) धार्मिक यात्रा — टिप्पणीक पहिल संकेत “धार्मिक यात्रा” अछि।
१८५. (A) धार्मिक यात्रा — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “धार्मिक यात्रा” रूपमे देखाइत अछि।
१८६. (B) लेखक नागेन्द्र कुमार कर्ण, विधा गद्य, उप-विधा यात्रा-वृत्तान्त — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकें एक साथ रखैत अछि।
१८७. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककें केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।
१८८. (D) ई पाठ यात्रा-वृत्तान्तक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकें स्पष्ट करैत अछि।
१८९. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।
१९०. (B) खण्ड 4069, सूचकांक पंक्ति 2760मे नागेन्द्र कुमार कर्णक “मिथिला पञ्चकोशी परिक्रमा” प्रविष्टि गद्य, यात्रा-वृत्तान्त आ “धार्मिक यात्रा” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकें प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।
१९१. (A) सुजित कुमार झा पर — सूचकांक पंक्ति 2761मे नागेन्द्र कुमार कर्णक प्रविष्टि “सुजित कुमार झा पर” रूपमे देल अछि।
१९२. (B) गद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकें “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।
१९३. (C) समीक्षा — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “समीक्षा” अछि।
१९४. (D) लेखक परिचय — टिप्पणीक पहिल संकेत “लेखक परिचय” अछि।
१९५. (A) लेखक परिचय — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “लेखक परिचय” रूपमे देखाइत अछि।
१९६. (B) लेखक नागेन्द्र कुमार कर्ण, विधा गद्य, उप-विधा समीक्षा — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकें एक साथ रखैत अछि।
१९७. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककें केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।
१९८. (D) ई पाठ समीक्षाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकें स्पष्ट करैत अछि।
१९९. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।
२००. (B) खण्ड 4070, सूचकांक पंक्ति 2761मे नागेन्द्र कुमार कर्णक “सुजित कुमार झा पर” प्रविष्टि गद्य, समीक्षा आ “लेखक परिचय” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकें प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।
२०१. (A) बाल-शिक्षणपर निबन्ध- हमर शिक्षण-यात्रा — सूचकांक पंक्ति 2762मे भालचन्द्र झाक प्रविष्टि “बाल-शिक्षणपर निबन्ध- हमर शिक्षण-यात्रा” रूपमे देल अछि।
२०२. (B) गद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकें “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।
२०३. (C) निबन्ध — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “निबन्ध” अछि।

२०४. (D) शिक्षा दर्शन — टिप्पणीक पहिल संकेत “शिक्षा दर्शन” अछि।
२०५. (A) शिक्षा दर्शन — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “शिक्षा दर्शन” रूपमे देखाइत अछि।
२०६. (B) लेखक भालचन्द्र झा, विधा गद्य, उप-विधा निबन्ध — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकें एक साथ रखैत अछि।
२०७. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककें केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।
२०८. (D) ई पाठ निबन्धक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकें स्पष्ट करैत अछि।
२०९. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।
२१०. (B) खण्ड 4071, सूचकांक पंक्ति 2762मे भालचन्द्र झाक “बाल-शिक्षणपर निबन्ध- हमर शिक्षण-यात्रा” प्रविष्टि गद्य, निबन्ध आ “शिक्षा दर्शन” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकें प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।
२११. (A) राहुलजी एक नजरिमे — सूचकांक पंक्ति 2763मे ब्युटी कुमारीक प्रविष्टि “राहुलजी एक नजरिमे” रूपमे देल अछि।
२१२. (B) गद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकें “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।
२१३. (C) व्यक्तित्व रेखांकन — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “व्यक्तित्व रेखांकन” अछि।
२१४. (D) व्यक्ति परिचय — टिप्पणीक पहिल संकेत “व्यक्ति परिचय” अछि।
२१५. (A) व्यक्ति परिचय — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “व्यक्ति परिचय” रूपमे देखाइत अछि।
२१६. (B) लेखक ब्युटी कुमारी, विधा गद्य, उप-विधा व्यक्तित्व रेखांकन — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकें एक साथ रखैत अछि।
२१७. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककें केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।
२१८. (D) ई पाठ व्यक्तित्व रेखांकनक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकें स्पष्ट करैत अछि।
२१९. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।
२२०. (B) खण्ड 4072, सूचकांक पंक्ति 2763मे ब्युटी कुमारीक “राहुलजी एक नजरिमे” प्रविष्टि गद्य, व्यक्तित्व रेखांकन आ “व्यक्ति परिचय” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकें प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।
२२१. (A) उगना — सूचकांक पंक्ति 2764मे बसन्त झाक प्रविष्टि “उगना” रूपमे देल अछि।
२२२. (B) गद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकें “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।
२२३. (C) निबन्ध/कथा — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “निबन्ध/कथा” अछि।
२२४. (D) सृजनात्मक गद्य — टिप्पणीक पहिल संकेत “सृजनात्मक गद्य” अछि।
२२५. (A) सृजनात्मक गद्य — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “सृजनात्मक गद्य” रूपमे देखाइत अछि।
२२६. (B) लेखक बसन्त झा, विधा गद्य, उप-विधा निबन्ध/कथा — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकें एक साथ रखैत अछि।
२२७. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककें केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।
२२८. (D) ई पाठ निबन्ध/कथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकें स्पष्ट करैत अछि।
२२९. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।
२३०. (B) खण्ड 4073, सूचकांक पंक्ति 2764मे बसन्त झाक “उगना” प्रविष्टि गद्य, निबन्ध/कथा आ “सृजनात्मक गद्य” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकें प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।
२३१. (A) नो एंट्री : मा प्रविश- (उदय नारायण सिंह 'नचिकेता') — सूचकांक पंक्ति 2765मे धीरेन्द्र कुमारक प्रविष्टि “नो एंट्री : मा प्रविश- (उदय नारायण सिंह 'नचिकेता')” रूपमे देल अछि।
२३२. (B) गद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकें “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।
२३३. (C) समीक्षा — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “समीक्षा” अछि।

२३४. (D) नाटक समीक्षा — टिप्पणीक पहिल संकेत “नाटक समीक्षा” अछि।
२३५. (A) नाटक समीक्षा — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “नाटक समीक्षा” रूपमे देखाइत अछि।
२३६. (B) लेखक धीरेन्द्र कुमार, विधा गद्य, उप-विधा समीक्षा — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।
२३७. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।
२३८. (D) ई पाठ समीक्षाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।
२३९. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।
२४०. (B) खण्ड 4074, सूचकांक पंक्ति 2765मे धीरेन्द्र कुमारक “नो एंटी : मा प्रविश- (उदय नारायण सिंह 'नचिकेता')” प्रविष्टि गद्य, समीक्षा आ “नाटक समीक्षा” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।
२४१. (A) प्रीति ठाकुरक दुनू चित्रकथापर धीरेन्द्र कुमार एक नजरि — सूचकांक पंक्ति 2766मे धीरेन्द्र कुमारक प्रविष्टि “प्रीति ठाकुरक दुनू चित्रकथापर धीरेन्द्र कुमार एक नजरि” रूपमे देल अछि।
२४२. (B) गद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।
२४३. (C) समीक्षा — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “समीक्षा” अछि।
२४४. (D) चित्रकथा समीक्षा — टिप्पणीक पहिल संकेत “चित्रकथा समीक्षा” अछि।
२४५. (A) चित्रकथा समीक्षा — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “चित्रकथा समीक्षा” रूपमे देखाइत अछि।
२४६. (B) लेखक धीरेन्द्र कुमार, विधा गद्य, उप-विधा समीक्षा — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।
२४७. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।
२४८. (D) ई पाठ समीक्षाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।
२४९. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।
२५०. (B) खण्ड 4075, सूचकांक पंक्ति 2766मे धीरेन्द्र कुमारक “प्रीति ठाकुरक दुनू चित्रकथापर धीरेन्द्र कुमार एक नजरि” प्रविष्टि गद्य, समीक्षा आ “चित्रकथा समीक्षा” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।
२५१. (A) प्रीति ठाकुर क मैथिली चित्रकथा — सूचकांक पंक्ति 2767मे डॉ. शेफालिका वर्माक प्रविष्टि “प्रीति ठाकुर क मैथिली चित्रकथा” रूपमे देल अछि।
२५२. (B) गद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।
२५३. (C) समीक्षा — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “समीक्षा” अछि।
२५४. (D) चित्रकथा विधा समीक्षा — टिप्पणीक पहिल संकेत “चित्रकथा विधा समीक्षा” अछि।
२५५. (A) चित्रकथा विधा समीक्षा — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “चित्रकथा विधा समीक्षा” रूपमे देखाइत अछि।
२५६. (B) लेखक डॉ. शेफालिका वर्मा, विधा गद्य, उप-विधा समीक्षा — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।
२५७. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।
२५८. (D) ई पाठ समीक्षाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।
२५९. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।
२६०. (B) खण्ड 4076, सूचकांक पंक्ति 2767मे डॉ. शेफालिका वर्माक “प्रीति ठाकुर क मैथिली चित्रकथा” प्रविष्टि गद्य, समीक्षा आ “चित्रकथा विधा समीक्षा” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।
२६१. (A) मिथिलाक ध्वज गीत — सूचकांक पंक्ति 2768मे गजेन्द्र ठाकुरक प्रविष्टि “मिथिलाक ध्वज गीत” रूपमे देल अछि।

२६२. (B) पद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।
२६३. (C) गीत — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “गीत” अछि।
२६४. (D) मिथिला पहचानक प्रतीक गीत — टिप्पणीक पहिल संकेत “मिथिला पहचानक प्रतीक गीत” अछि।
२६५. (A) मिथिला पहचानक प्रतीक गीत — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “मिथिला पहचानक प्रतीक गीत” रूपमे देखाइत अछि।
२६६. (B) लेखक गजेन्द्र ठाकुर, विधा पद्य, उप-विधा गीत — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।
२६७. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।
२६८. (D) ई पाठ गीतक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।
२६९. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।
२७०. (B) खण्ड 4077, सूचकांक पंक्ति 2768मे गजेन्द्र ठाकुरक “मिथिलाक ध्वज गीत” प्रविष्टि पद्य, गीत आ “मिथिला पहचानक प्रतीक गीत” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।
२७१. (A) किछु संस्कृत सुभाषितक संकलन — सूचकांक पंक्ति 2769मे (सम्पादक संकलन)क प्रविष्टि “किछु संस्कृत सुभाषितक संकलन” रूपमे देल अछि।
२७२. (B) पद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।
२७३. (C) सुभाषित — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “सुभाषित” अछि।
२७४. (D) संस्कृत मैथिली ज्ञान परम्पराक संकलन — टिप्पणीक पहिल संकेत “संस्कृत मैथिली ज्ञान परम्पराक संकलन” अछि।
२७५. (A) संस्कृत मैथिली ज्ञान परम्पराक संकलन — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “संस्कृत मैथिली ज्ञान परम्पराक संकलन” रूपमे देखाइत अछि।
२७६. (B) लेखक (सम्पादक संकलन), विधा पद्य, उप-विधा सुभाषित — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।
२७७. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।
२७८. (D) ई पाठ सुभाषितक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।
२७९. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।
२८०. (B) खण्ड 4078, सूचकांक पंक्ति 2769मे (सम्पादक संकलन)क “किछु संस्कृत सुभाषितक संकलन” प्रविष्टि पद्य, सुभाषित आ “संस्कृत मैथिली ज्ञान परम्पराक संकलन” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।
२८१. (A) बच्चा लोकनि द्वारा स्मरणीय श्लोक — सूचकांक पंक्ति 2770मे (सम्पादक संकलन)क प्रविष्टि “बच्चा लोकनि द्वारा स्मरणीय श्लोक” रूपमे देल अछि।
२८२. (B) पद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।
२८३. (C) श्लोक — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “श्लोक” अछि।
२८४. (D) शिक्षाप्रद श्लोक संकलन — टिप्पणीक पहिल संकेत “शिक्षाप्रद श्लोक संकलन” अछि।
२८५. (A) शिक्षाप्रद श्लोक संकलन — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “शिक्षाप्रद श्लोक संकलन” रूपमे देखाइत अछि।
२८६. (B) लेखक (सम्पादक संकलन), विधा पद्य, उप-विधा श्लोक — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।
२८७. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।
२८८. (D) ई पाठ श्लोकक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।
२८९. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

२९०. (B) खण्ड 4079, सूचकांक पंक्ति 2770मे (सम्पादक संकलन)क “बच्चा लोकनि द्वारा स्मरणीय श्लोक” प्रविष्टि पद्य, श्लोक आ “शिक्षाप्रद श्लोक संकलन” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

२९१. (A) संदेश — सूचकांक पंक्ति 2771मे (सम्पादक संकलन)क प्रविष्टि “संदेश” रूपमे देल अछि।

२९२. (B) पद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

२९३. (C) गीत/कविता — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “गीत/कविता” अछि।

२९४. (D) शिक्षाप्रद कविता — टिप्पणीक पहिल संकेत “शिक्षाप्रद कविता” अछि।

२९५. (A) शिक्षाप्रद कविता — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “शिक्षाप्रद कविता” रूपमे देखाइत अछि।

२९६. (B) लेखक (सम्पादक संकलन), विधा पद्य, उप-विधा गीत/कविता — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

२९७. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

२९८. (D) ई पाठ गीत/कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

२९९. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

३००. (B) खण्ड 4080, सूचकांक पंक्ति 2771मे (सम्पादक संकलन)क “संदेश” प्रविष्टि पद्य, गीत/कविता आ “शिक्षाप्रद कविता” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

अध्याय २ : विदेह-सदेह ३१ — विस्तृत अध्ययन

खण्ड १९ : विदेह-सदेह ३१ — यात्रा-वृत्तान्त (कम्बोडिया)

१. विदेह-सदेह ३१ में यात्रा-वृत्तान्तक लेखिका के छथि?
(A) डॉ. कामिनी कामायनी
(B) गजेन्द्र ठाकुर
(C) प्रीति ठाकुर
(D) कोनो नहि
२. 'नोम्पेह' कोन देशक राजधानी थिक?
(A) कम्बोडिया
(B) थाइलैण्ड
(C) वियतनाम
(D) कोनो नहि
३. नोम्पेह कोन नदीक तीरपर अछि, यात्रा-वृत्तान्त अनुसार?
(A) मेकोंग नदी
(B) गंगा
(C) ब्रह्मपुत्र
(D) कोनो नहि
४. नोम्पेहक स्थापत्य-कला कोन देशक प्रभावसँ युक्त अछि?
(A) फ्रांसीसी
(B) ब्रिटिश
(C) अमेरिकी
(D) कोनो नहि
५. नोम्पेहक संग्रहालय (म्यूजियम) में कोन-कोन कालक खमेर वस्तु-कलाकृति अछि?
(A) चौथी सदीसँ चौदहवीं सदी (अंकोर काल) धरि
(B) केवल आधुनिक
(C) केवल बीसम शताब्दी
(D) कोनो नहि
६. नोम्पेहक एक प्रसिद्ध बाजारक नाम की?
(A) सेंट्रल मार्केट आ टुओल टॉम पोंग मार्केट (रसियन बाजार)
(B) केवल एक बाजार
(C) विदेशी मॉल
(D) कोनो नहि
७. कम्बोडियाक स्थानीय करेंसी की थिक?
(A) रिएल
(B) डॉलर
(C) रुपया
(D) कोनो नहि
८. कम्बोडियाक 'किलिंग फील्ड' कोन कालखण्डसँ सम्बद्ध अछि?
(A) सन् १९७५ सँ १९७९ (खमेर रूज शासन)
(B) आधुनिक काल
(C) अंकोर काल
(D) कोनो नहि

१. किरीरोम नेशनल पार्क में कोन वार्षिक उत्सव होइत अछि?

- (A) जलोत्सव
- (B) दीपोत्सव
- (C) फूल-उत्सव
- (D) कोनो नहि

खण्ड 4081 : विदेह-सदेह 31 — डॉ. कामिनी कामायनी: डॉनोम्पेह (नोम्पेह)

१०. खण्ड 4081, सूचकांक पंक्ति 2772: डॉ. कामिनी कामायनीक “डॉनोम्पेह (नोम्पेह)” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) डॉनोम्पेह (नोम्पेह)
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

११. खण्ड 4081, सूचकांक पंक्ति 2772: डॉ. कामिनी कामायनीक “डॉनोम्पेह (नोम्पेह)”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) यात्रा-वृत्तान्त
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१२. खण्ड 4081, सूचकांक पंक्ति 2772: डॉ. कामिनी कामायनीक “डॉनोम्पेह (नोम्पेह)”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) प्रविष्टि
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१३. खण्ड 4081, सूचकांक पंक्ति 2772: डॉ. कामिनी कामायनीक “डॉनोम्पेह (नोम्पेह)” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) कम्बोडिया यात्रा

१४. खण्ड 4081, सूचकांक पंक्ति 2772: डॉ. कामिनी कामायनीक “डॉनोम्पेह (नोम्पेह)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 31मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) कम्बोडिया यात्रा
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१५. खण्ड 4081, सूचकांक पंक्ति 2772: डॉ. कामिनी कामायनीक “डॉनोम्पेह (नोम्पेह)”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककें की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक डॉ. कामिनी कामायनी, विधा यात्रा-वृत्तान्त, उप-विधा प्रविष्टि
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१६. खण्ड 4081, सूचकांक पंक्ति 2772: डॉ. कामिनी कामायनीक “डॉनोम्पेह (नोम्पेह)” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१७. खण्ड 4081, सूचकांक पंक्ति 2772: डॉ. कामिनी कामायनीक “डॉनोम्पेह (नोम्पेह)” के विदेह-सदेह 31क यात्रा-वृत्तान्त-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ प्रविष्टिक रूपमे यात्रा-वृत्तान्त-संसारसँ जुड़ल अछि।

१८. खण्ड 4081, सूचकांक पंक्ति 2772: डॉ. कामिनी कामायनीक “डॉनोम्पेह (नोम्पेह)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 31क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१९. खण्ड 4081, सूचकांक पंक्ति 2772: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 4081, सूचकांक पंक्ति 2772मे डॉ. कामिनी कामायनीक “डॉनोम्पेह (नोम्पेह)” प्रविष्टि यात्रा-वृत्तान्त, प्रविष्टि आ “कम्बोडिया यात्रा” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 31क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 4082 : विदेह-सदेह 31 — डॉ. कामिनी कामायनी: सेयाम रेयापक स्वर्णिम अतीत

२०. खण्ड 4082, सूचकांक पंक्ति 2773: डॉ. कामिनी कामायनीक “सेयाम रेयापक स्वर्णिम अतीत” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) सेयाम रेयापक स्वर्णिम अतीत
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२१. खण्ड 4082, सूचकांक पंक्ति 2773: डॉ. कामिनी कामायनीक “सेयाम रेयापक स्वर्णिम अतीत”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) यात्रा-वृत्तान्त
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२२. खण्ड 4082, सूचकांक पंक्ति 2773: डॉ. कामिनी कामायनीक “सेयाम रेयापक स्वर्णिम अतीत”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) प्रविष्टि
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२३. खण्ड 4082, सूचकांक पंक्ति 2773: डॉ. कामिनी कामायनीक “सेयाम रेयापक स्वर्णिम अतीत” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) अंकोरवाट केन्द्रित

२४. खण्ड 4082, सूचकांक पंक्ति 2773: डॉ. कामिनी कामायनीक “सेयाम रेयापक स्वर्णिम अतीत” प्रविष्टि विदेह-सदेह 31मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) अंकोरवाट केन्द्रित
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२५. खण्ड 4082, सूचकांक पंक्ति 2773: डॉ. कामिनी कामायनीक “सेयाम रेयापक स्वर्णिम अतीत”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककें की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक डॉ. कामिनी कामायनी, विधा यात्रा-वृत्तान्त, उप-विधा प्रविष्टि
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२६. खण्ड 4082, सूचकांक पंक्ति 2773: डॉ. कामिनी कामायनीक “सेयाम रेयापक स्वर्णिम अतीत” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२७. खण्ड 4082, सूचकांक पंक्ति 2773: डॉ. कामिनी कामायनीक “सेयाम रेयापक स्वर्णिम अतीत”कें विदेह-सदेह 31क यात्रा-वृत्तान्त-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ प्रविष्टिक रूपमे यात्रा-वृत्तान्त-संसारसँ जुड़ल अछि।

२८. खण्ड 4082, सूचकांक पंक्ति 2773: डॉ. कामिनी कामायनीक “सेयाम रेयापक स्वर्णिम अतीत” प्रविष्टि विदेह-सदेह 31क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२९. खण्ड 4082, सूचकांक पंक्ति 2773: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 4082, सूचकांक पंक्ति 2773मे डॉ. कामिनी कामायनीक “सेयाम रेयापक स्वर्णिम अतीत” प्रविष्टि यात्रा-वृत्तान्त, प्रविष्टि आ “अंकोरवाट केन्द्रित” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 31क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 4083 : विदेह-सदेह 31 — डॉ. कामिनी कामायनी: लघुकथा- भागमंती

३०. खण्ड 4083, सूचकांक पंक्ति 2774: डॉ. कामिनी कामायनीक “लघुकथा- भागमंती” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) लघुकथा- भागमंती
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३१. खण्ड 4083, सूचकांक पंक्ति 2774: डॉ. कामिनी कामायनीक “लघुकथा- भागमंती”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लघुकथा
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३२. खण्ड 4083, सूचकांक पंक्ति 2774: डॉ. कामिनी कामायनीक “लघुकथा- भागमंती”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) प्रविष्टि
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३३. खण्ड 4083, सूचकांक पंक्ति 2774: डॉ. कामिनी कामायनीक “लघुकथा- भागमंती” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ग्रामीण पारिवारिक कथा

३४. खण्ड 4083, सूचकांक पंक्ति 2774: डॉ. कामिनी कामायनीक “लघुकथा- भागमंती” प्रविष्टि विदेह-सदेह 31मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) ग्रामीण पारिवारिक कथा
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३५. खण्ड 4083, सूचकांक पंक्ति 2774: डॉ. कामिनी कामायनीक “लघुकथा- भागमंती”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककें की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक डॉ. कामिनी कामायनी, विधा लघुकथा, उप-विधा प्रविष्टि
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३६. खण्ड 4083, सूचकांक पंक्ति 2774: डॉ. कामिनी कामायनीक “लघुकथा- भागमंती” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३७. खण्ड 4083, सूचकांक पंक्ति 2774: डॉ. कामिनी कामायनीक “लघुकथा- भागमंती”कें विदेह-सदेह 31क लघुकथा-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ प्रविष्टिक रूपमे लघुकथा-संसारसँ जुड़ल अछि।

३८. खण्ड 4083, सूचकांक पंक्ति 2774: डॉ. कामिनी कामायनीक “लघुकथा- भागमंती” प्रविष्टि विदेह-सदेह 31क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३९. खण्ड 4083, सूचकांक पंक्ति 2774: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 4083, सूचकांक पंक्ति 2774मे डॉ. कामिनी कामायनीक “लघुकथा- भागमंती” प्रविष्टि लघुकथा, प्रविष्टि आ “ग्रामीण पारिवारिक कथा” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 31क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 4084 : विदेह-सदेह 31 — डॉ. कामिनी कामायनी: सोर

४०. खण्ड 4084, सूचकांक पंक्ति 2775: डॉ. कामिनी कामायनीक “सोर” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) सोर
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४१. खण्ड 4084, सूचकांक पंक्ति 2775: डॉ. कामिनी कामायनीक “सोर”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) कथा
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४२. खण्ड 4084, सूचकांक पंक्ति 2775: डॉ. कामिनी कामायनीक “सोर”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) प्रविष्टि
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४३. खण्ड 4084, सूचकांक पंक्ति 2775: डॉ. कामिनी कामायनीक “सोर” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) मानसिक संघर्ष

४४. खण्ड 4084, सूचकांक पंक्ति 2775: डॉ. कामिनी कामायनीक “सोर” प्रविष्टि विदेह-सदेह 31मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) मानसिक संघर्ष
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४५. खण्ड 4084, सूचकांक पंक्ति 2775: डॉ. कामिनी कामायनीक “सोर”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक डॉ. कामिनी कामायनी, विधा कथा, उप-विधा प्रविष्टि
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४६. खण्ड 4084, सूचकांक पंक्ति 2775: डॉ. कामिनी कामायनीक “सोर” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४७. खण्ड 4084, सूचकांक पंक्ति 2775: डॉ. कामिनी कामायनीक “सोर”कें विदेह-सदेह 31क कथा-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ प्रविष्टिक रूपमे कथा-संसारसँ जुड़ल अछि।

४८. खण्ड 4084, सूचकांक पंक्ति 2775: डॉ. कामिनी कामायनीक “सोर” प्रविष्टि विदेह-सदेह 31क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४९. खण्ड 4084, सूचकांक पंक्ति 2775: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 4084, सूचकांक पंक्ति 2775मे डॉ. कामिनी कामायनीक “सोर” प्रविष्टि कथा, प्रविष्टि आ “मानसिक संघर्ष” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 31क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 4085 : विदेह-सदेह 31 — डॉ. कामिनी कामायनी: कोन डार पर केकर खोता

५०. खण्ड 4085, सूचकांक पंक्ति 2776: डॉ. कामिनी कामायनीक “कोन डार पर केकर खोता” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) कोन डार पर केकर खोता
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

५१. खण्ड 4085, सूचकांक पंक्ति 2776: डॉ. कामिनी कामायनीक “कोन डार पर केकर खोता”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लघुकथा
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

५२. खण्ड 4085, सूचकांक पंक्ति 2776: डॉ. कामिनी कामायनीक “कोन डार पर केकर खोता”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) प्रविष्टि
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

५३. खण्ड 4085, सूचकांक पंक्ति 2776: डॉ. कामिनी कामायनीक “कोन डार पर केकर खोता” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) पारिवारिक सम्बन्धक जटिलता

५४. खण्ड 4085, सूचकांक पंक्ति 2776: डॉ. कामिनी कामायनीक “कोन डार पर केकर खोता” प्रविष्टि विदेह-सदेह 31मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) पारिवारिक सम्बन्धक जटिलता
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

५५. खण्ड 4085, सूचकांक पंक्ति 2776: डॉ. कामिनी कामायनीक “कोन डार पर केकर खोता”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक डॉ. कामिनी कामायनी, विधा लघुकथा, उप-विधा प्रविष्टि
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

५६. खण्ड 4085, सूचकांक पंक्ति 2776: डॉ. कामिनी कामायनीक “कोन डार पर केकर खोता” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

५७. खण्ड 4085, सूचकांक पंक्ति 2776: डॉ. कामिनी कामायनीक “कोन डार पर केकर खोता”केँ विदेह-सदेह 31क लघुकथा-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ प्रविष्टिक रूपमे लघुकथा-संसारसँ जुड़ल अछि।

५८. खण्ड 4085, सूचकांक पंक्ति 2776: डॉ. कामिनी कामायनीक “कोन डार पर केकर खोता” प्रविष्टि विदेह-सदेह 31क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

५९. खण्ड 4085, सूचकांक पंक्ति 2776: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 4085, सूचकांक पंक्ति 2776मे डॉ. कामिनी कामायनीक “कोन डार पर केकर खोता” प्रविष्टि लघुकथा, प्रविष्टि आ “पारिवारिक सम्बन्धक जटिलता” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 31क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 4086 : विदेह-सदेह 31 — डॉ. कामिनी कामायनी: घुहर ताकू

६०. खण्ड 4086, सूचकांक पंक्ति 2777: डॉ. कामिनी कामायनीक “घुहर ताकू” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) घुहर ताकू
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

६१. खण्ड 4086, सूचकांक पंक्ति 2777: डॉ. कामिनी कामायनीक “घुहर ताकू”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लघुकथा
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

६२. खण्ड 4086, सूचकांक पंक्ति 2777: डॉ. कामिनी कामायनीक “घुहर ताकू”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) प्रविष्टि
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

६३. खण्ड 4086, सूचकांक पंक्ति 2777: डॉ. कामिनी कामायनीक “घुहर ताकू” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ग्रामीण जीवन

६४. खण्ड 4086, सूचकांक पंक्ति 2777: डॉ. कामिनी कामायनीक “घुहर ताकू” प्रविष्टि विदेह-सदेह 31मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) ग्रामीण जीवन
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

६५. खण्ड 4086, सूचकांक पंक्ति 2777: डॉ. कामिनी कामायनीक “घुहर ताकू”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककें की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक डॉ. कामिनी कामायनी, विधा लघुकथा, उप-विधा प्रविष्टि
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

६६. खण्ड 4086, सूचकांक पंक्ति 2777: डॉ. कामिनी कामायनीक “घुहर ताकू” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

६७. खण्ड 4086, सूचकांक पंक्ति 2777: डॉ. कामिनी कामायनीक “घुहर ताकू”कें विदेह-सदेह 31क लघुकथा-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ प्रविष्टिक रूपमे लघुकथा-संसारसँ जुड़ल अछि।

६८. खण्ड 4086, सूचकांक पंक्ति 2777: डॉ. कामिनी कामायनीक “घुहर ताकू” प्रविष्टि विदेह-सदेह 31क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

६९. खण्ड 4086, सूचकांक पंक्ति 2777: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 4086, सूचकांक पंक्ति 2777मे डॉ. कामिनी कामायनीक “घुहर ताकू” प्रविष्टि लघुकथा, प्रविष्टि आ “ग्रामीण जीवन” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 31क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 4087 : विदेह-सदेह 31 — डॉ. कामिनी कामायनी: माटीक मुस्त

७०. खण्ड 4087, सूचकांक पंक्ति 2778: डॉ. कामिनी कामायनीक “माटीक मुस्त” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) माटीक मुस्त
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

७१. खण्ड 4087, सूचकांक पंक्ति 2778: डॉ. कामिनी कामायनीक “माटीक मुस्त”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लघुकथा
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

७२. खण्ड 4087, सूचकांक पंक्ति 2778: डॉ. कामिनी कामायनीक “माटीक मुस्त”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) प्रविष्टि
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

७३. खण्ड 4087, सूचकांक पंक्ति 2778: डॉ. कामिनी कामायनीक “माटीक मुस्त” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) नारीक संघर्ष

७४. खण्ड 4087, सूचकांक पंक्ति 2778: डॉ. कामिनी कामायनीक “माटीक मुस्त” प्रविष्टि विदेह-सदेह 31मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) नारीक संघर्ष
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

७५. खण्ड 4087, सूचकांक पंक्ति 2778: डॉ. कामिनी कामायनीक “माटीक मुस्त”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक डॉ. कामिनी कामायनी, विधा लघुकथा, उप-विधा प्रविष्टि
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

७६. खण्ड 4087, सूचकांक पंक्ति 2778: डॉ. कामिनी कामायनीक “माटीक मुस्त” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

७७. खण्ड 4087, सूचकांक पंक्ति 2778: डॉ. कामिनी कामायनीक “माटीक मुस्त”कें विदेह-सदेह 31क लघुकथा-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ प्रविष्टिक रूपमे लघुकथा-संसारसँ जुड़ल अछि।

७८. खण्ड 4087, सूचकांक पंक्ति 2778: डॉ. कामिनी कामायनीक “माटीक मुस्त” प्रविष्टि विदेह-सदेह 31क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

७९. खण्ड 4087, सूचकांक पंक्ति 2778: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 4087, सूचकांक पंक्ति 2778मे डॉ. कामिनी कामायनीक “माटीक मुस्त” प्रविष्टि लघुकथा, प्रविष्टि आ “नारीक संघर्ष” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 31क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 4088 : विदेह-सदेह 31 — डॉ. कामिनी कामायनी: विलायत वाली किनया

८०. खण्ड 4088, सूचकांक पंक्ति 2779: डॉ. कामिनी कामायनीक “विलायत वाली किनया” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) विलायत वाली किनया
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

८१. खण्ड 4088, सूचकांक पंक्ति 2779: डॉ. कामिनी कामायनीक “विलायत वाली किनया”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लघुकथा
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

८२. खण्ड 4088, सूचकांक पंक्ति 2779: डॉ. कामिनी कामायनीक “विलायत वाली किनया”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) प्रविष्टि
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

८३. खण्ड 4088, सूचकांक पंक्ति 2779: डॉ. कामिनी कामायनीक “विलायत वाली किनया” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) प्रवासी जीवन

८४. खण्ड 4088, सूचकांक पंक्ति 2779: डॉ. कामिनी कामायनीक “विलायत वाली किनया” प्रविष्टि विदेह-सदेह 31मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) प्रवासी जीवन
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

८५. खण्ड 4088, सूचकांक पंक्ति 2779: डॉ. कामिनी कामायनीक “विलायत वाली किनया”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक डॉ. कामिनी कामायनी, विधा लघुकथा, उप-विधा प्रविष्टि
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

८६. खण्ड 4088, सूचकांक पंक्ति 2779: डॉ. कामिनी कामायनीक “विलायत वाली किनया” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

८७. खण्ड 4088, सूचकांक पंक्ति 2779: डॉ. कामिनी कामायनीक “विलायत वाली किनया”केँ विदेह-सदेह 31क लघुकथा-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ प्रविष्टिक रूपमे लघुकथा-संसारसँ जुड़ल अछि।

८८. खण्ड 4088, सूचकांक पंक्ति 2779: डॉ. कामिनी कामायनीक “विलायत वाली किनया” प्रविष्टि विदेह-सदेह 31क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

८९. खण्ड 4088, सूचकांक पंक्ति 2779: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 4088, सूचकांक पंक्ति 2779मे डॉ. कामिनी कामायनीक “विलायत वाली किनया” प्रविष्टि लघुकथा, प्रविष्टि आ “प्रवासी जीवन” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 31क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 4089 : विदेह-सदेह 31 — डॉ. कामिनी कामायनी: सूटक कपडा

९०. खण्ड 4089, सूचकांक पंक्ति 2780: डॉ. कामिनी कामायनीक “सूटक कपडा” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) सूटक कपडा
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

९१. खण्ड 4089, सूचकांक पंक्ति 2780: डॉ. कामिनी कामायनीक “सूटक कपडा”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लघुकथा
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

९२. खण्ड 4089, सूचकांक पंक्ति 2780: डॉ. कामिनी कामायनीक “सूटक कपडा”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) प्रविष्टि
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

९३. खण्ड 4089, सूचकांक पंक्ति 2780: डॉ. कामिनी कामायनीक “सूटक कपडा” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) हास्य-व्यंग्य

९४. खण्ड 4089, सूचकांक पंक्ति 2780: डॉ. कामिनी कामायनीक “सूटक कपडा” प्रविष्टि विदेह-सदेह 31मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) हास्य-व्यंग्य
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

९५. खण्ड 4089, सूचकांक पंक्ति 2780: डॉ. कामिनी कामायनीक “सूटक कपडा”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककें की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक डॉ. कामिनी कामायनी, विधा लघुकथा, उप-विधा प्रविष्टि
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

९६. खण्ड 4089, सूचकांक पंक्ति 2780: डॉ. कामिनी कामायनीक “सूटक कपडा” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

९७. खण्ड 4089, सूचकांक पंक्ति 2780: डॉ. कामिनी कामायनीक “सूटक कपडा”कें विदेह-सदेह 31क लघुकथा-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ प्रविष्टिक रूपमे लघुकथा-संसारसँ जुड़ल अछि।

९८. खण्ड 4089, सूचकांक पंक्ति 2780: डॉ. कामिनी कामायनीक “सूटक कपडा” प्रविष्टि विदेह-सदेह 31क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१९. खण्ड 4089, सूचकांक पंक्ति 2780: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 4089, सूचकांक पंक्ति 2780मे डॉ. कामिनी कामायनीक “सूटक कपडा” प्रविष्टि लघुकथा, प्रविष्टि आ “हास्य-व्यंग्य” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 31क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 4090 : विदेह-सदेह 31 — डॉ. कामिनी कामायनी: घुमौन (चुमोन)

१००. खण्ड 4090, सूचकांक पंक्ति 2781: डॉ. कामिनी कामायनीक “घुमौन (चुमोन)” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) घुमौन (चुमोन)
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१०१. खण्ड 4090, सूचकांक पंक्ति 2781: डॉ. कामिनी कामायनीक “घुमौन (चुमोन)”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लघुकथा
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१०२. खण्ड 4090, सूचकांक पंक्ति 2781: डॉ. कामिनी कामायनीक “घुमौन (चुमोन)”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) प्रविष्टि
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१०३. खण्ड 4090, सूचकांक पंक्ति 2781: डॉ. कामिनी कामायनीक “घुमौन (चुमोन)” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) विवाह-रीति

१०४. खण्ड 4090, सूचकांक पंक्ति 2781: डॉ. कामिनी कामायनीक “घुमौन (चुमोन)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 31मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) विवाह-रीति
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१०५. खण्ड 4090, सूचकांक पंक्ति 2781: डॉ. कामिनी कामायनीक “घुमौन (चुमोन)”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक डॉ. कामिनी कामायनी, विधा लघुकथा, उप-विधा प्रविष्टि
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१०६. खण्ड 4090, सूचकांक पंक्ति 2781: डॉ. कामिनी कामायनीक “घुमौन (चुमोन)” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१०७. खण्ड 4090, सूचकांक पंक्ति 2781: डॉ. कामिनी कामायनीक “घुमौन (चुमोन)”कें विदेह-सदेह 31क लघुकथा-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ प्रविष्टिक रूपमे लघुकथा-संसारसँ जुड़ल अछि।

१०८. खण्ड 4090, सूचकांक पंक्ति 2781: डॉ. कामिनी कामायनीक “घुमौन (चुमोन)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 31क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१०९. खण्ड 4090, सूचकांक पंक्ति 2781: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 4090, सूचकांक पंक्ति 2781मे डॉ. कामिनी कामायनीक “घुमौन (चुमोन)” प्रविष्टि लघुकथा, प्रविष्टि आ “विवाह-रीति” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 31क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 4091 : विदेह-सदेह 31 — डॉ. कामिनी कामायनी: घुस्सा लेमे की घुस्सी (चूढ़ा लेमे की चूढ़ी)

११०. खण्ड 4091, सूचकांक पंक्ति 2782: डॉ. कामिनी कामायनीक “घुस्सा लेमे की घुस्सी (चूढ़ा लेमे की चूढ़ी)” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) घुस्सा लेमे की घुस्सी (चूढ़ा लेमे की चूढ़ी)
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१११. खण्ड 4091, सूचकांक पंक्ति 2782: डॉ. कामिनी कामायनीक “घुस्सा लेमे की घुस्सी (चूढ़ा लेमे की चूढ़ी)”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लघुकथा
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

११२. खण्ड 4091, सूचकांक पंक्ति 2782: डॉ. कामिनी कामायनीक “घुस्सा लेमे की घुस्सी (चूढ़ा लेमे की चूढ़ी)”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) प्रविष्टि
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

११३. खण्ड 4091, सूचकांक पंक्ति 2782: डॉ. कामिनी कामायनीक “घुस्सा लेमे की घुस्सी (चूढ़ा लेमे की चूढ़ी)” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) बाल्यकालीन स्मृति

११४. खण्ड 4091, सूचकांक पंक्ति 2782: डॉ. कामिनी कामायनीक “घुस्सा लेमे की घुस्सी (चूढ़ा लेमे की चूढ़ी)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 31मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) बाल्यकालीन स्मृति
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

११५. खण्ड 4091, सूचकांक पंक्ति 2782: डॉ. कामिनी कामायनीक “घुस्सा लेमे की घुस्सी (चूढ़ा लेमे की चूढ़ी)”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककें की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक डॉ. कामिनी कामायनी, विधा लघुकथा, उप-विधा प्रविष्टि
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

११६. खण्ड 4091, सूचकांक पंक्ति 2782: डॉ. कामिनी कामायनीक “घुस्सा लेमे की घुस्सी (चूढ़ा लेमे की चूढ़ी)” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

११७. खण्ड 4091, सूचकांक पंक्ति 2782: डॉ. कामिनी कामायनीक “घुस्सा लेमे की घुस्सी (चूढ़ा लेमे की चूढ़ी)”कें विदेह-सदेह 31क लघुकथा-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ प्रविष्टिक रूपमे लघुकथा-संसारसँ जुड़ल अछि।

११८. खण्ड 4091, सूचकांक पंक्ति 2782: डॉ. कामिनी कामायनीक “घुस्सा लेमे की घुस्सी (चूढ़ा लेमे की चूढ़ी)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 31क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

११९. खण्ड 4091, सूचकांक पंक्ति 2782: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 4091, सूचकांक पंक्ति 2782मे डॉ. कामिनी कामायनीक “घुस्सा लेमे की घुस्सी (चूढ़ा लेमे की चूढ़ी)” प्रविष्टि लघुकथा, प्रविष्टि आ “बाल्यकालीन स्मृति” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 31क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 4092 : विदेह-सदेह 31 — डॉ. कामिनी कामायनी: भरोस

१२०. खण्ड 4092, सूचकांक पंक्ति 2783: डॉ. कामिनी कामायनीक “भरोस” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) भरोस
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१२१. खण्ड 4092, सूचकांक पंक्ति 2783: डॉ. कामिनी कामायनीक “भरोस”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लघुकथा
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१२२. खण्ड 4092, सूचकांक पंक्ति 2783: डॉ. कामिनी कामायनीक “भरोस”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) प्रविष्टि
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१२३. खण्ड 4092, सूचकांक पंक्ति 2783: डॉ. कामिनी कामायनीक “भरोस” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ग्रामीण जीवन

१२४. खण्ड 4092, सूचकांक पंक्ति 2783: डॉ. कामिनी कामायनीक “भरोस” प्रविष्टि विदेह-सदेह 31मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) ग्रामीण जीवन
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१२५. खण्ड 4092, सूचकांक पंक्ति 2783: डॉ. कामिनी कामायनीक “भरोस”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककें की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक डॉ. कामिनी कामायनी, विधा लघुकथा, उप-विधा प्रविष्टि
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१२६. खण्ड 4092, सूचकांक पंक्ति 2783: डॉ. कामिनी कामायनीक “भरोस” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१२७. खण्ड 4092, सूचकांक पंक्ति 2783: डॉ. कामिनी कामायनीक “भरोस”कें विदेह-सदेह 31क लघुकथा-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ प्रविष्टिक रूपमे लघुकथा-संसारसँ जुड़ल अछि।

१२८. खण्ड 4092, सूचकांक पंक्ति 2783: डॉ. कामिनी कामायनीक “भरोस” प्रविष्टि विदेह-सदेह 31क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१२९. खण्ड 4092, सूचकांक पंक्ति 2783: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 4092, सूचकांक पंक्ति 2783मे डॉ. कामिनी कामायनीक “भरोस” प्रविष्टि लघुकथा, प्रविष्टि आ “ग्रामीण जीवन” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 31क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 4093 : विदेह-सदेह 31 — डॉ. कामिनी कामायनी: लाल काकी

१३०. खण्ड 4093, सूचकांक पंक्ति 2784: डॉ. कामिनी कामायनीक “लाल काकी” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) लाल काकी
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१३१. खण्ड 4093, सूचकांक पंक्ति 2784: डॉ. कामिनी कामायनीक “लाल काकी”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लघुकथा
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१३२. खण्ड 4093, सूचकांक पंक्ति 2784: डॉ. कामिनी कामायनीक “लाल काकी”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) प्रविष्टि
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१३३. खण्ड 4093, सूचकांक पंक्ति 2784: डॉ. कामिनी कामायनीक “लाल काकी” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) वृद्धा जीवन

१३४. खण्ड 4093, सूचकांक पंक्ति 2784: डॉ. कामिनी कामायनीक “लाल काकी” प्रविष्टि विदेह-सदेह 31मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) वृद्धा जीवन
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१३५. खण्ड 4093, सूचकांक पंक्ति 2784: डॉ. कामिनी कामायनीक “लाल काकी”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककें की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक डॉ. कामिनी कामायनी, विधा लघुकथा, उप-विधा प्रविष्टि
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१३६. खण्ड 4093, सूचकांक पंक्ति 2784: डॉ. कामिनी कामायनीक “लाल काकी” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१३७. खण्ड 4093, सूचकांक पंक्ति 2784: डॉ. कामिनी कामायनीक “लाल काकी”कें विदेह-सदेह 31क लघुकथा-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ प्रविष्टिक रूपमे लघुकथा-संसारसँ जुड़ल अछि।

१३८. खण्ड 4093, सूचकांक पंक्ति 2784: डॉ. कामिनी कामायनीक “लाल काकी” प्रविष्टि विदेह-सदेह 31क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१३९. खण्ड 4093, सूचकांक पंक्ति 2784: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 4093, सूचकांक पंक्ति 2784मे डॉ. कामिनी कामायनीक “लाल काकी” प्रविष्टि लघुकथा, प्रविष्टि आ “वृद्धा जीवन” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 31क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 4094 : विदेह-सदेह 31 — डॉ. कामिनी कामायनी: अभिशप्त

१४०. खण्ड 4094, सूचकांक पंक्ति 2785: डॉ. कामिनी कामायनीक “अभिशप्त” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) अभिशप्त
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१४१. खण्ड 4094, सूचकांक पंक्ति 2785: डॉ. कामिनी कामायनीक “अभिशप्त”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) कथा
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१४२. खण्ड 4094, सूचकांक पंक्ति 2785: डॉ. कामिनी कामायनीक “अभिशप्त”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) प्रविष्टि
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१४३. खण्ड 4094, सूचकांक पंक्ति 2785: डॉ. कामिनी कामायनीक “अभिषप्त” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) नारी-पुरुष सम्बन्ध

१४४. खण्ड 4094, सूचकांक पंक्ति 2785: डॉ. कामिनी कामायनीक “अभिषप्त” प्रविष्टि विदेह-सदेह 31मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) नारी-पुरुष सम्बन्ध
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१४५. खण्ड 4094, सूचकांक पंक्ति 2785: डॉ. कामिनी कामायनीक “अभिषप्त”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककें की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक डॉ. कामिनी कामायनी, विधा कथा, उप-विधा प्रविष्टि
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१४६. खण्ड 4094, सूचकांक पंक्ति 2785: डॉ. कामिनी कामायनीक “अभिषप्त” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१४७. खण्ड 4094, सूचकांक पंक्ति 2785: डॉ. कामिनी कामायनीक “अभिषप्त”कें विदेह-सदेह 31क कथा-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ प्रविष्टिक रूपमे कथा-संसारसँ जुड़ल अछि।

१४८. खण्ड 4094, सूचकांक पंक्ति 2785: डॉ. कामिनी कामायनीक “अभिषप्त” प्रविष्टि विदेह-सदेह 31क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१४९. खण्ड 4094, सूचकांक पंक्ति 2785: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 4094, सूचकांक पंक्ति 2785मे डॉ. कामिनी कामायनीक “अभिषप्त” प्रविष्टि कथा, प्रविष्टि आ “नारी-पुरुष सम्बन्ध” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 31क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 4095 : विदेह-सदेह 31 — डॉ. कामिनी कामायनी: समय काल

१५०. खण्ड 4095, सूचकांक पंक्ति 2786: डॉ. कामिनी कामायनीक “समय काल” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) समय काल
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१५१. खण्ड 4095, सूचकांक पंक्ति 2786: डॉ. कामिनी कामायनीक “समय काल”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लघुकथा
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१५२. खण्ड 4095, सूचकांक पंक्ति 2786: डॉ. कामिनी कामायनीक “समय काल”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) प्रविष्टि
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१५३. खण्ड 4095, सूचकांक पंक्ति 2786: डॉ. कामिनी कामायनीक “समय काल” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) परिवार

१५४. खण्ड 4095, सूचकांक पंक्ति 2786: डॉ. कामिनी कामायनीक “समय काल” प्रविष्टि विदेह-सदेह 31मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) परिवार
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१५५. खण्ड 4095, सूचकांक पंक्ति 2786: डॉ. कामिनी कामायनीक “समय काल”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककें की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक डॉ. कामिनी कामायनी, विधा लघुकथा, उप-विधा प्रविष्टि
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१५६. खण्ड 4095, सूचकांक पंक्ति 2786: डॉ. कामिनी कामायनीक “समय काल” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१५७. खण्ड 4095, सूचकांक पंक्ति 2786: डॉ. कामिनी कामायनीक “समय काल”कें विदेह-सदेह 31क लघुकथा-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ प्रविष्टिक रूपमे लघुकथा-संसारसँ जुड़ल अछि।

१५८. खण्ड 4095, सूचकांक पंक्ति 2786: डॉ. कामिनी कामायनीक “समय काल” प्रविष्टि विदेह-सदेह 31क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१५९. खण्ड 4095, सूचकांक पंक्ति 2786: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 4095, सूचकांक पंक्ति 2786मे डॉ. कामिनी कामायनीक “समय काल” प्रविष्टि लघुकथा, प्रविष्टि आ “परिवार” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 31क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 4096 : विदेह-सदेह 31 — डॉ. कामिनी कामायनी: कठजीब (पुरनी दाय)

१६०. खण्ड 4096, सूचकांक पंक्ति 2787: डॉ. कामिनी कामायनीक “कठजीब (पुरनी दाय)” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) कठजीब (पुरनी दाय)
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१६१. खण्ड 4096, सूचकांक पंक्ति 2787: डॉ. कामिनी कामायनीक “कठजीब (पुरनी दाय)”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लघुकथा
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१६२. खण्ड 4096, सूचकांक पंक्ति 2787: डॉ. कामिनी कामायनीक “कठजीब (पुरनी दाय)”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) प्रविष्टि
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१६३. खण्ड 4096, सूचकांक पंक्ति 2787: डॉ. कामिनी कामायनीक “कठजीब (पुरनी दाय)” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) सामाजिक शोषण

१६४. खण्ड 4096, सूचकांक पंक्ति 2787: डॉ. कामिनी कामायनीक “कठजीब (पुरनी दाय)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 31मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) सामाजिक शोषण
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१६५. खण्ड 4096, सूचकांक पंक्ति 2787: डॉ. कामिनी कामायनीक “कठजीब (पुरनी दाय)”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक डॉ. कामिनी कामायनी, विधा लघुकथा, उप-विधा प्रविष्टि
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१६६. खण्ड 4096, सूचकांक पंक्ति 2787: डॉ. कामिनी कामायनीक “कठजीब (पुरनी दाय)” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१६७. खण्ड 4096, सूचकांक पंक्ति 2787: डॉ. कामिनी कामायनीक “कठजीब (पुरनी दाय)”केँ विदेह-सदेह 31क लघुकथा-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ प्रविष्टिक रूपमे लघुकथा-संसारसँ जुड़ल अछि।

१६८. खण्ड 4096, सूचकांक पंक्ति 2787: डॉ. कामिनी कामायनीक “कठजीब (पुरनी दाय)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 31क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१६९. खण्ड 4096, सूचकांक पंक्ति 2787: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 4096, सूचकांक पंक्ति 2787मे डॉ. कामिनी कामायनीक “कठजीब (पुरनी दाय)” प्रविष्टि लघुकथा, प्रविष्टि आ “सामाजिक शोषण” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 31क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 4097 : विदेह-सदेह 31 — डॉ. कामिनी कामायनी: कलंकित चान

१७०. खण्ड 4097, सूचकांक पंक्ति 2788: डॉ. कामिनी कामायनीक “कलंकित चान” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) कलंकित चान
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१७१. खण्ड 4097, सूचकांक पंक्ति 2788: डॉ. कामिनी कामायनीक “कलंकित चान”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) कथा
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१७२. खण्ड 4097, सूचकांक पंक्ति 2788: डॉ. कामिनी कामायनीक “कलंकित चान”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) प्रविष्टि
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१७३. खण्ड 4097, सूचकांक पंक्ति 2788: डॉ. कामिनी कामायनीक “कलंकित चान” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ग्रामीण प्रेम

१७४. खण्ड 4097, सूचकांक पंक्ति 2788: डॉ. कामिनी कामायनीक “कलंकित चान” प्रविष्टि विदेह-सदेह 31मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) ग्रामीण प्रेम
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१७५. खण्ड 4097, सूचकांक पंक्ति 2788: डॉ. कामिनी कामायनीक “कलंकित चान”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककें की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक डॉ. कामिनी कामायनी, विधा कथा, उप-विधा प्रविष्टि
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१७६. खण्ड 4097, सूचकांक पंक्ति 2788: डॉ. कामिनी कामायनीक “कलंकित चान” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१७७. खण्ड 4097, सूचकांक पंक्ति 2788: डॉ. कामिनी कामायनीक “कलंकित चान”कें विदेह-सदेह 31क कथा-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ प्रविष्टिक रूपमे कथा-संसारसँ जुड़ल अछि।

१७८. खण्ड 4097, सूचकांक पंक्ति 2788: डॉ. कामिनी कामायनीक “कलंकित चान” प्रविष्टि विदेह-सदेह 31क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१७९. खण्ड 4097, सूचकांक पंक्ति 2788: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 4097, सूचकांक पंक्ति 2788मे डॉ. कामिनी कामायनीक “कलंकित चान” प्रविष्टि कथा, प्रविष्टि आ “ग्रामीण प्रेम” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 31क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 4098 : विदेह-सदेह 31 — डॉ. कामिनी कामायनी: उत्तराक नोर

१८०. खण्ड 4098, सूचकांक पंक्ति 2789: डॉ. कामिनी कामायनीक “उत्तराक नोर” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) उत्तराक नोर
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१८१. खण्ड 4098, सूचकांक पंक्ति 2789: डॉ. कामिनी कामायनीक “उत्तराक नोर”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) कथा
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१८२. खण्ड 4098, सूचकांक पंक्ति 2789: डॉ. कामिनी कामायनीक “उत्तराक नोर”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) प्रविष्टि
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१८३. खण्ड 4098, सूचकांक पंक्ति 2789: डॉ. कामिनी कामायनीक “उत्तराक नोर” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) प्रेम

१८४. खण्ड 4098, सूचकांक पंक्ति 2789: डॉ. कामिनी कामायनीक “उत्तराक नोर” प्रविष्टि विदेह-सदेह 31मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) प्रेम
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१८५. खण्ड 4098, सूचकांक पंक्ति 2789: डॉ. कामिनी कामायनीक “उत्तराक नोर”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककें की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक डॉ. कामिनी कामायनी, विधा कथा, उप-विधा प्रविष्टि
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१८६. खण्ड 4098, सूचकांक पंक्ति 2789: डॉ. कामिनी कामायनीक “उत्तराक नोर” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१८७. खण्ड 4098, सूचकांक पंक्ति 2789: डॉ. कामिनी कामायनीक “उत्तराक नोर”कें विदेह-सदेह 31क कथा-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ प्रविष्टिक रूपमे कथा-संसारसँ जुड़ल अछि।

१८८. खण्ड 4098, सूचकांक पंक्ति 2789: डॉ. कामिनी कामायनीक “उत्तराक नोर” प्रविष्टि विदेह-सदेह 31क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१८९. खण्ड 4098, सूचकांक पंक्ति 2789: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 4098, सूचकांक पंक्ति 2789मे डॉ. कामिनी कामायनीक “उत्तराक नोर” प्रविष्टि कथा, प्रविष्टि आ “प्रेम” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 31क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 4099 : विदेह-सदेह 31 — डॉ. कामिनी कामायनी: महानगर मे सुनीता

१९०. खण्ड 4099, सूचकांक पंक्ति 2790: डॉ. कामिनी कामायनीक “महानगर मे सुनीता” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) महानगर मे सुनीता
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१९१. खण्ड 4099, सूचकांक पंक्ति 2790: डॉ. कामिनी कामायनीक “महानगर मे सुनीता”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) कथा
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१९२. खण्ड 4099, सूचकांक पंक्ति 2790: डॉ. कामिनी कामायनीक “महानगर मे सुनीता”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) प्रविष्टि
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१९३. खण्ड 4099, सूचकांक पंक्ति 2790: डॉ. कामिनी कामायनीक “महानगर मे सुनीता” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) शहरी गरीबी

१९४. खण्ड 4099, सूचकांक पंक्ति 2790: डॉ. कामिनी कामायनीक “महानगर मे सुनीता” प्रविष्टि विदेह-सदेह 31मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) शहरी गरीबी
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१९५. खण्ड 4099, सूचकांक पंक्ति 2790: डॉ. कामिनी कामायनीक “महानगर मे सुनीता”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककें की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक डॉ. कामिनी कामायनी, विधा कथा, उप-विधा प्रविष्टि
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१९६. खण्ड 4099, सूचकांक पंक्ति 2790: डॉ. कामिनी कामायनीक “महानगर मे सुनीता” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१९७. खण्ड 4099, सूचकांक पंक्ति 2790: डॉ. कामिनी कामायनीक “महानगर मे सुनीता”कें विदेह-सदेह 31क कथा-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ प्रविष्टिक रूपमे कथा-संसारसँ जुड़ल अछि।

१९८. खण्ड 4099, सूचकांक पंक्ति 2790: डॉ. कामिनी कामायनीक “महानगर मे सुनीता” प्रविष्टि विदेह-सदेह 31क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१९९. खण्ड 4099, सूचकांक पंक्ति 2790: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 4099, सूचकांक पंक्ति 2790मे डॉ. कामिनी कामायनीक “महानगर मे सुनीता” प्रविष्टि कथा, प्रविष्टि आ “शहरी गरीबी” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 31क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 4100 : विदेह-सदेह 31 — डॉ. कामिनी कामायनी: संदूक उपनैन

२००. खण्ड 4100, सूचकांक पंक्ति 2791: डॉ. कामिनी कामायनीक “संदूक उपनैन” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) संदूक उपनैन
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२०१. खण्ड 4100, सूचकांक पंक्ति 2791: डॉ. कामिनी कामायनीक “संदूक उपनैन”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) कथा
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२०२. खण्ड 4100, सूचकांक पंक्ति 2791: डॉ. कामिनी कामायनीक “संदूक उपनैन”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) प्रविष्टि
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२०३. खण्ड 4100, सूचकांक पंक्ति 2791: डॉ. कामिनी कामायनीक “संदूक उपनैन” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) पारिवारिक आयोजन

२०४. खण्ड 4100, सूचकांक पंक्ति 2791: डॉ. कामिनी कामायनीक “संदूक उपनैन” प्रविष्टि विदेह-सदेह 31मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) पारिवारिक आयोजन
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२०५. खण्ड 4100, सूचकांक पंक्ति 2791: डॉ. कामिनी कामायनीक “संदूक उपनैन”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककें की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक डॉ. कामिनी कामायनी, विधा कथा, उप-विधा प्रविष्टि
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२०६. खण्ड 4100, सूचकांक पंक्ति 2791: डॉ. कामिनी कामायनीक “संदूक उपनैन” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२०७. खण्ड 4100, सूचकांक पंक्ति 2791: डॉ. कामिनी कामायनीक “संदूक उपनैन”कें विदेह-सदेह 31क कथा-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ प्रविष्टिक रूपमे कथा-संसारसँ जुड़ल अछि।

२०८. खण्ड 4100, सूचकांक पंक्ति 2791: डॉ. कामिनी कामायनीक “संदूक उपनैन” प्रविष्टि विदेह-सदेह 31क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२०९. खण्ड 4100, सूचकांक पंक्ति 2791: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 4100, सूचकांक पंक्ति 2791मे डॉ. कामिनी कामायनीक “संदूक उपनैन” प्रविष्टि कथा, प्रविष्टि आ “पारिवारिक आयोजन” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 31क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 4101 : विदेह-सदेह 31 — डॉ. कामिनी कामायनी: शाश्वत कथा

२१०. खण्ड 4101, सूचकांक पंक्ति 2792: डॉ. कामिनी कामायनीक “शाश्वत कथा” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) शाश्वत कथा
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२११. खण्ड 4101, सूचकांक पंक्ति 2792: डॉ. कामिनी कामायनीक “शाश्वत कथा”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) कथा
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२१२. खण्ड 4101, सूचकांक पंक्ति 2792: डॉ. कामिनी कामायनीक “शाश्वत कथा”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) प्रविष्टि
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२१३. खण्ड 4101, सूचकांक पंक्ति 2792: डॉ. कामिनी कामायनीक “शाश्वत कथा” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) स्त्री-जीवनक शाश्वतता

२१४. खण्ड 4101, सूचकांक पंक्ति 2792: डॉ. कामिनी कामायनीक “शाश्वत कथा” प्रविष्टि विदेह-सदेह 31मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) स्त्री-जीवनक शाश्वतता
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२१५. खण्ड 4101, सूचकांक पंक्ति 2792: डॉ. कामिनी कामायनीक “शाश्वत कथा”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककें की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक डॉ. कामिनी कामायनी, विधा कथा, उप-विधा प्रविष्टि
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२१६. खण्ड 4101, सूचकांक पंक्ति 2792: डॉ. कामिनी कामायनीक “शाश्वत कथा” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२१७. खण्ड 4101, सूचकांक पंक्ति 2792: डॉ. कामिनी कामायनीक “शाश्वत कथा”कें विदेह-सदेह 31क कथा-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ प्रविष्टिक रूपमे कथा-संसारसँ जुड़ल अछि।

२१८. खण्ड 4101, सूचकांक पंक्ति 2792: डॉ. कामिनी कामायनीक “शाश्वत कथा” प्रविष्टि विदेह-सदेह 31क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२१९. खण्ड 4101, सूचकांक पंक्ति 2792: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 4101, सूचकांक पंक्ति 2792मे डॉ. कामिनी कामायनीक “शाश्वत कथा” प्रविष्टि कथा, प्रविष्टि आ “स्त्री-जीवनक शाश्वतता” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 31क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 4102 : विदेह-सदेह 31 — डॉ. कामिनी कामायनी: किनया पूतरा के विवाह

२२०. खण्ड 4102, सूचकांक पंक्ति 2793: डॉ. कामिनी कामायनीक “किनया पूतरा के विवाह” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) किनया पूतरा के विवाह
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२२१. खण्ड 4102, सूचकांक पंक्ति 2793: डॉ. कामिनी कामायनीक “किनया पूतरा के विवाह”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) कथा
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२२२. खण्ड 4102, सूचकांक पंक्ति 2793: डॉ. कामिनी कामायनीक “किनया पूतरा के विवाह”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) प्रविष्टि
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२२३. खण्ड 4102, सूचकांक पंक्ति 2793: डॉ. कामिनी कामायनीक “किनया पूतरा के विवाह” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) बाल-मनोविज्ञान

२२४. खण्ड 4102, सूचकांक पंक्ति 2793: डॉ. कामिनी कामायनीक “किनया पूतरा के विवाह” प्रविष्टि विदेह-सदेह 31मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) बाल-मनोविज्ञान
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२२५. खण्ड 4102, सूचकांक पंक्ति 2793: डॉ. कामिनी कामायनीक “किनया पूतरा के विवाह”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक डॉ. कामिनी कामायनी, विधा कथा, उप-विधा प्रविष्टि
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२२६. खण्ड 4102, सूचकांक पंक्ति 2793: डॉ. कामिनी कामायनीक “किनया पूतरा के विवाह” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२२७. खण्ड 4102, सूचकांक पंक्ति 2793: डॉ. कामिनी कामायनीक “किनया पूतरा के विवाह”केँ विदेह-सदेह 31क कथा-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ प्रविष्टिक रूपमे कथा-संसारसँ जुड़ल अछि।

२२८. खण्ड 4102, सूचकांक पंक्ति 2793: डॉ. कामिनी कामायनीक “किनया पूतरा के विवाह” प्रविष्टि विदेह-सदेह 31क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२२९. खण्ड 4102, सूचकांक पंक्ति 2793: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 4102, सूचकांक पंक्ति 2793मे डॉ. कामिनी कामायनीक “किनया पूतरा के विवाह” प्रविष्टि कथा, प्रविष्टि आ “बाल-मनोविज्ञान” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 31क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 4103 : विदेह-सदेह 31 — डॉ. कामिनी कामायनी: डाइवनिक बानर

२३०. खण्ड 4103, सूचकांक पंक्ति 2794: डॉ. कामिनी कामायनीक “डाइवनिक बानर” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) डाइवनिक बानर
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२३१. खण्ड 4103, सूचकांक पंक्ति 2794: डॉ. कामिनी कामायनीक “डाइवनिक बानर”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) कथा
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२३२. खण्ड 4103, सूचकांक पंक्ति 2794: डॉ. कामिनी कामायनीक “डाइवनिक् बानर”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) प्रविष्टि
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२३३. खण्ड 4103, सूचकांक पंक्ति 2794: डॉ. कामिनी कामायनीक “डाइवनिक् बानर” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) मनोवैज्ञानिक

२३४. खण्ड 4103, सूचकांक पंक्ति 2794: डॉ. कामिनी कामायनीक “डाइवनिक् बानर” प्रविष्टि विदेह-सदेह 31मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) मनोवैज्ञानिक
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२३५. खण्ड 4103, सूचकांक पंक्ति 2794: डॉ. कामिनी कामायनीक “डाइवनिक् बानर”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककें की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक डॉ. कामिनी कामायनी, विधा कथा, उप-विधा प्रविष्टि
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२३६. खण्ड 4103, सूचकांक पंक्ति 2794: डॉ. कामिनी कामायनीक “डाइवनिक् बानर” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२३७. खण्ड 4103, सूचकांक पंक्ति 2794: डॉ. कामिनी कामायनीक “डाइवनिक् बानर”कें विदेह-सदेह 31क कथा-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ प्रविष्टिक रूपमे कथा-संसारसँ जुड़ल अछि।

२३८. खण्ड 4103, सूचकांक पंक्ति 2794: डॉ. कामिनी कामायनीक “डाइवनिक् बानर” प्रविष्टि विदेह-सदेह 31क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२३९. खण्ड 4103, सूचकांक पंक्ति 2794: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 4103, सूचकांक पंक्ति 2794मे डॉ. कामिनी कामायनीक “डाइवनिक् बानर” प्रविष्टि कथा, प्रविष्टि आ “मनोवैज्ञानिक” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 31क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 4104 : विदेह-सदेह 31 — डॉ. कामिनी कामायनी: टूटल तारा

२४०. खण्ड 4104, सूचकांक पंक्ति 2795: डॉ. कामिनी कामायनीक “टूटल तारा” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) टूटल तारा
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२४१. खण्ड 4104, सूचकांक पंक्ति 2795: डॉ. कामिनी कामायनीक “टूटल तारा”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) कथा
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२४२. खण्ड 4104, सूचकांक पंक्ति 2795: डॉ. कामिनी कामायनीक “टूटल तारा”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) प्रविष्टि
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२४३. खण्ड 4104, सूचकांक पंक्ति 2795: डॉ. कामिनी कामायनीक “टूटल तारा” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ऐतिहासिक पृष्ठभूमि

२४४. खण्ड 4104, सूचकांक पंक्ति 2795: डॉ. कामिनी कामायनीक “टूटल तारा” प्रविष्टि विदेह-सदेह 31मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) ऐतिहासिक पृष्ठभूमि
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२४५. खण्ड 4104, सूचकांक पंक्ति 2795: डॉ. कामिनी कामायनीक “टूटल तारा”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककें की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक डॉ. कामिनी कामायनी, विधा कथा, उप-विधा प्रविष्टि
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२४६. खण्ड 4104, सूचकांक पंक्ति 2795: डॉ. कामिनी कामायनीक “टूटल तारा” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२४७. खण्ड 4104, सूचकांक पंक्ति 2795: डॉ. कामिनी कामायनीक “टूटल तारा”कें विदेह-सदेह 31क कथा-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ प्रविष्टिक रूपमे कथा-संसारसँ जुड़ल अछि।

२४८. खण्ड 4104, सूचकांक पंक्ति 2795: डॉ. कामिनी कामायनीक “टूटल तारा” प्रविष्टि विदेह-सदेह 31क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२४९. खण्ड 4104, सूचकांक पंक्ति 2795: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 4104, सूचकांक पंक्ति 2795मे डॉ. कामिनी कामायनीक “टूटल तारा” प्रविष्टि कथा, प्रविष्टि आ “ऐतिहासिक पृष्ठभूमि” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 31क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 4105 : विदेह-सदेह 31 — डॉ. कामिनी कामायनी: अपन राज्य

२५०. खण्ड 4105, सूचकांक पंक्ति 2796: डॉ. कामिनी कामायनीक “अपन राज्य” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) अपन राज्य
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२५१. खण्ड 4105, सूचकांक पंक्ति 2796: डॉ. कामिनी कामायनीक “अपन राज्य”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) व्यंग्य-कथा
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२५२. खण्ड 4105, सूचकांक पंक्ति 2796: डॉ. कामिनी कामायनीक “अपन राज्य”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) प्रविष्टि
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२५३. खण्ड 4105, सूचकांक पंक्ति 2796: डॉ. कामिनी कामायनीक “अपन राज्य” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) राजनीतिक व्यंग्य

२५४. खण्ड 4105, सूचकांक पंक्ति 2796: डॉ. कामिनी कामायनीक “अपन राज्य” प्रविष्टि विदेह-सदेह 31मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) राजनीतिक व्यंग्य
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२५५. खण्ड 4105, सूचकांक पंक्ति 2796: डॉ. कामिनी कामायनीक “अपन राज्य”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक डॉ. कामिनी कामायनी, विधा व्यंग्य-कथा, उप-विधा प्रविष्टि
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२५६. खण्ड 4105, सूचकांक पंक्ति 2796: डॉ. कामिनी कामायनीक “अपन राज्य” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२५७. खण्ड 4105, सूचकांक पंक्ति 2796: डॉ. कामिनी कामायनीक “अपन राज्य”कें विदेह-सदेह 31क व्यंग्य-कथा-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ प्रविष्टिक रूपमे व्यंग्य-कथा-संसारसँ जुड़ल अछि।

२५८. खण्ड 4105, सूचकांक पंक्ति 2796: डॉ. कामिनी कामायनीक “अपन राज्य” प्रविष्टि विदेह-सदेह 31क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२५९. खण्ड 4105, सूचकांक पंक्ति 2796: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 4105, सूचकांक पंक्ति 2796मे डॉ. कामिनी कामायनीक “अपन राज्य” प्रविष्टि व्यंग्य-कथा, प्रविष्टि आ “राजनीतिक व्यंग्य” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 31क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 4106 : विदेह-सदेह 31 — कुमार मनोज कश्यप: विवसता

२६०. खण्ड 4106, सूचकांक पंक्ति 2797: कुमार मनोज कश्यपक “विवसता” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) विवसता
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२६१. खण्ड 4106, सूचकांक पंक्ति 2797: कुमार मनोज कश्यपक “विवसता”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) कथा/लघुकथा
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२६२. खण्ड 4106, सूचकांक पंक्ति 2797: कुमार मनोज कश्यपक “विवसता”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) प्रविष्टि
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२६३. खण्ड 4106, सूचकांक पंक्ति 2797: कुमार मनोज कश्यपक “विवसता” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ग्रामीण जीवन

२६४. खण्ड 4106, सूचकांक पंक्ति 2797: कुमार मनोज कश्यपक “विवसता” प्रविष्टि विदेह-सदेह 31मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) ग्रामीण जीवन
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२६५. खण्ड 4106, सूचकांक पंक्ति 2797: कुमार मनोज कश्यपक “विवसता”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक कुमार मनोज कश्यप, विधा कथा/लघुकथा, उप-विधा प्रविष्टि
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२६६. खण्ड 4106, सूचकांक पंक्ति 2797: कुमार मनोज कश्यपक “विवसता” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२६७. खण्ड 4106, सूचकांक पंक्ति 2797: कुमार मनोज कश्यपक “विवसता”केँ विदेह-सदेह 31क कथा/लघुकथा-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ प्रविष्टिक रूपमे कथा/लघुकथा-संसारसँ जुड़ल अछि।

२६८. खण्ड 4106, सूचकांक पंक्ति 2797: कुमार मनोज कश्यपक “विवसता” प्रविष्टि विदेह-सदेह 31क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२६९. खण्ड 4106, सूचकांक पंक्ति 2797: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 4106, सूचकांक पंक्ति 2797मे कुमार मनोज कश्यपक “विवसता” प्रविष्टि कथा/लघुकथा, प्रविष्टि आ “ग्रामीण जीवन” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 31क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 4107 : विदेह-सदेह 31 — कुमार मनोज कश्यप: मरीचका

२७०. खण्ड 4107, सूचकांक पंक्ति 2798: कुमार मनोज कश्यपक “मरीचका” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) मरीचका
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२७१. खण्ड 4107, सूचकांक पंक्ति 2798: कुमार मनोज कश्यपक “मरीचका”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लघुकथा
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२७२. खण्ड 4107, सूचकांक पंक्ति 2798: कुमार मनोज कश्यपक “मरीचका”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) प्रविष्टि
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२७३. खण्ड 4107, सूचकांक पंक्ति 2798: कुमार मनोज कश्यपक “मरीचका” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) वृद्धावस्था

२७४. खण्ड 4107, सूचकांक पंक्ति 2798: कुमार मनोज कश्यपक “मरीचका” प्रविष्टि विदेह-सदेह 31मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) वृद्धावस्था
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२७५. खण्ड 4107, सूचकांक पंक्ति 2798: कुमार मनोज कश्यपक “मरीचका”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक कुमार मनोज कश्यप, विधा लघुकथा, उप-विधा प्रविष्टि
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२७६. खण्ड 4107, सूचकांक पंक्ति 2798: कुमार मनोज कश्यपक “मरीचका” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२७७. खण्ड 4107, सूचकांक पंक्ति 2798: कुमार मनोज कश्यपक “मरीचका”केँ विदेह-सदेह 31क लघुकथा-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ प्रविष्टिक रूपमे लघुकथा-संसारसँ जुड़ल अछि।

२७८. खण्ड 4107, सूचकांक पंक्ति 2798: कुमार मनोज कश्यपक “मरीचका” प्रविष्टि विदेह-सदेह 31क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२७९. खण्ड 4107, सूचकांक पंक्ति 2798: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 4107, सूचकांक पंक्ति 2798मे कुमार मनोज कश्यपक “मरीचका” प्रविष्टि लघुकथा, प्रविष्टि आ “वृद्धावस्था” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 31क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 4108 : विदेह-सदेह 31 — कुमार मनोज कश्यप: परजा

२८०. खण्ड 4108, सूचकांक पंक्ति 2799: कुमार मनोज कश्यपक “परजा” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) परजा
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२८१. खण्ड 4108, सूचकांक पंक्ति 2799: कुमार मनोज कश्यपक “परजा”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) कथा
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२८२. खण्ड 4108, सूचकांक पंक्ति 2799: कुमार मनोज कश्यपक “परजा”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) प्रविष्टि
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२८३. खण्ड 4108, सूचकांक पंक्ति 2799: कुमार मनोज कश्यपक “परजा” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) राजनीतिक चेतना

२८४. खण्ड 4108, सूचकांक पंक्ति 2799: कुमार मनोज कश्यपक “परजा” प्रविष्टि विदेह-सदेह 31मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) राजनीतिक चेतना
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२८५. खण्ड 4108, सूचकांक पंक्ति 2799: कुमार मनोज कश्यपक “परजा”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक कुमार मनोज कश्यप, विधा कथा, उप-विधा प्रविष्टि
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२८६. खण्ड 4108, सूचकांक पंक्ति 2799: कुमार मनोज कश्यपक “परजा” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२८७. खण्ड 4108, सूचकांक पंक्ति 2799: कुमार मनोज कश्यपक “परजा”कें विदेह-सदेह 31क कथा-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ प्रविष्टिक रूपमे कथा-संसारसँ जुड़ल अछि।

२८८. खण्ड 4108, सूचकांक पंक्ति 2799: कुमार मनोज कश्यपक “परजा” प्रविष्टि विदेह-सदेह 31क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२८९. खण्ड 4108, सूचकांक पंक्ति 2799: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 4108, सूचकांक पंक्ति 2799मे कुमार मनोज कश्यपक “परजा” प्रविष्टि कथा, प्रविष्टि आ “राजनीतिक चेतना” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 31क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 4109 : विदेह-सदेह 31 — कुमार मनोज कश्यप: मर्यादाक हनन

२९०. खण्ड 4109, सूचकांक पंक्ति 2800: कुमार मनोज कश्यपक “मर्यादाक हनन” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) मर्यादाक हनन
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२९१. खण्ड 4109, सूचकांक पंक्ति 2800: कुमार मनोज कश्यपक “मर्यादाक हनन”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) कथा
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२९२. खण्ड 4109, सूचकांक पंक्ति 2800: कुमार मनोज कश्यपक “मर्यादाक हनन”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) प्रविष्टि
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२९३. खण्ड 4109, सूचकांक पंक्ति 2800: कुमार मनोज कश्यपक “मर्यादाक हनन” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) पिता-पुत्र सम्बन्ध

२९४. खण्ड 4109, सूचकांक पंक्ति 2800: कुमार मनोज कश्यपक “मर्यादाक हनन” प्रविष्टि विदेह-सदेह 31मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) पिता-पुत्र सम्बन्ध
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२९५. खण्ड 4109, सूचकांक पंक्ति 2800: कुमार मनोज कश्यपक “मर्यादाक हनन”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक कुमार मनोज कश्यप, विधा कथा, उप-विधा प्रविष्टि
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२९६. खण्ड 4109, सूचकांक पंक्ति 2800: कुमार मनोज कश्यपक “मर्यादाक हनन” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२९७. खण्ड 4109, सूचकांक पंक्ति 2800: कुमार मनोज कश्यपक “मर्यादाक हनन”केँ विदेह-सदेह 31क कथा-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ प्रविष्टिक रूपमे कथा-संसारसँ जुड़ल अछि।

२९८. खण्ड 4109, सूचकांक पंक्ति 2800: कुमार मनोज कश्यपक “मर्यादाक हनन” प्रविष्टि विदेह-सदेह 31क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२९९. खण्ड 4109, सूचकांक पंक्ति 2800: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 4109, सूचकांक पंक्ति 2800मे कुमार मनोज कश्यपक “मर्यादाक हनन” प्रविष्टि कथा, प्रविष्टि आ “पिता-पुत्र सम्बन्ध” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 31क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 4110 : विदेह-सदेह 31 — कुमार मनोज कश्यप: प्रतिरोध

३००. खण्ड 4110, सूचकांक पंक्ति 2801: कुमार मनोज कश्यपक “प्रतिरोध” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) प्रतिरोध
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३०१. खण्ड 4110, सूचकांक पंक्ति 2801: कुमार मनोज कश्यपक “प्रतिरोध”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लघुकथा
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३०२. खण्ड 4110, सूचकांक पंक्ति 2801: कुमार मनोज कश्यपक “प्रतिरोध”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) प्रविष्टि
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३०३. खण्ड 4110, सूचकांक पंक्ति 2801: कुमार मनोज कश्यपक “प्रतिरोध” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) प्रतीकात्मक

३०४. खण्ड 4110, सूचकांक पंक्ति 2801: कुमार मनोज कश्यपक “प्रतिरोध” प्रविष्टि विदेह-सदेह 31मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) प्रतीकात्मक
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३०५. खण्ड 4110, सूचकांक पंक्ति 2801: कुमार मनोज कश्यपक “प्रतिरोध”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककें की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक कुमार मनोज कश्यप, विधा लघुकथा, उप-विधा प्रविष्टि
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३०६. खण्ड 4110, सूचकांक पंक्ति 2801: कुमार मनोज कश्यपक “प्रतिरोध” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३०७. खण्ड 4110, सूचकांक पंक्ति 2801: कुमार मनोज कश्यपक “प्रतिरोध”कें विदेह-सदेह 31क लघुकथा-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ प्रविष्टिक रूपमे लघुकथा-संसारसँ जुड़ल अछि।

३०८. खण्ड 4110, सूचकांक पंक्ति 2801: कुमार मनोज कश्यपक “प्रतिरोध” प्रविष्टि विदेह-सदेह 31क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३०९. खण्ड 4110, सूचकांक पंक्ति 2801: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 4110, सूचकांक पंक्ति 2801मे कुमार मनोज कश्यपक “प्रतिरोध” प्रविष्टि लघुकथा, प्रविष्टि आ “प्रतीकात्मक” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 31क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 4111 : विदेह-सदेह 31 — कुमार मनोज कश्यप: दृष्टिकोण

३१०. खण्ड 4111, सूचकांक पंक्ति 2802: कुमार मनोज कश्यपक “दृष्टिकोण” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) दृष्टिकोण
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३११. खण्ड 4111, सूचकांक पंक्ति 2802: कुमार मनोज कश्यपक “दृष्टिकोण”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) कथा
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३१२. खण्ड 4111, सूचकांक पंक्ति 2802: कुमार मनोज कश्यपक “दृष्टिकोण”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) प्रविष्टि
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३१३. खण्ड 4111, सूचकांक पंक्ति 2802: कुमार मनोज कश्यपक “दृष्टिकोण” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) सरकारी सेवा

३१४. खण्ड 4111, सूचकांक पंक्ति 2802: कुमार मनोज कश्यपक “दृष्टिकोण” प्रविष्टि विदेह-सदेह 31मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) सरकारी सेवा
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३१५. खण्ड 4111, सूचकांक पंक्ति 2802: कुमार मनोज कश्यपक “दृष्टिकोण”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक कुमार मनोज कश्यप, विधा कथा, उप-विधा प्रविष्टि
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३१६. खण्ड 4111, सूचकांक पंक्ति 2802: कुमार मनोज कश्यपक “दृष्टिकोण” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३१७. खण्ड 4111, सूचकांक पंक्ति 2802: कुमार मनोज कश्यपक “दृष्टिकोण”कें विदेह-सदेह 31क कथा-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ प्रविष्टिक रूपमे कथा-संसारसँ जुड़ल अछि।

३१८. खण्ड 4111, सूचकांक पंक्ति 2802: कुमार मनोज कश्यपक “दृष्टिकोण” प्रविष्टि विदेह-सदेह 31क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३१९. खण्ड 4111, सूचकांक पंक्ति 2802: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 4111, सूचकांक पंक्ति 2802मे कुमार मनोज कश्यपक “दृष्टिकोण” प्रविष्टि कथा, प्रविष्टि आ “सरकारी सेवा” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 31क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 4112 : विदेह-सदेह 31 — कुमार मनोज कश्यप: ओ तड बताह अछि

३२०. खण्ड 4112, सूचकांक पंक्ति 2803: कुमार मनोज कश्यपक “ओ तड बताह अछि” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) ओ तड बताह अछि
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३२१. खण्ड 4112, सूचकांक पंक्ति 2803: कुमार मनोज कश्यपक “ओ तड बताह अछि”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) कथा
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३२२. खण्ड 4112, सूचकांक पंक्ति 2803: कुमार मनोज कश्यपक “ओ तड बताह अछि”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) प्रविष्टि
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३२३. खण्ड 4112, सूचकांक पंक्ति 2803: कुमार मनोज कश्यपक “ओ तड बताह अछि” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) मानसिक अस्वस्थता

३२४. खण्ड 4112, सूचकांक पंक्ति 2803: कुमार मनोज कश्यपक “ओ तड बताह अछि” प्रविष्टि विदेह-सदेह 31मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) मानसिक अस्वस्थता
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३२५. खण्ड 4112, सूचकांक पंक्ति 2803: कुमार मनोज कश्यपक “ओ तड बताह अछि”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककें की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक कुमार मनोज कश्यप, विधा कथा, उप-विधा प्रविष्टि
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३२६. खण्ड 4112, सूचकांक पंक्ति 2803: कुमार मनोज कश्यपक “ओ तड बताह अछि” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३२७. खण्ड 4112, सूचकांक पंक्ति 2803: कुमार मनोज कश्यपक “ओ तड बताह अछि”कें विदेह-सदेह 31क कथा-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ प्रविष्टिक रूपमे कथा-संसारसँ जुड़ल अछि।

३२८. खण्ड 4112, सूचकांक पंक्ति 2803: कुमार मनोज कश्यपक “ओ तड बताह अछि” प्रविष्टि विदेह-सदेह 31क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३२९. खण्ड 4112, सूचकांक पंक्ति 2803: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 4112, सूचकांक पंक्ति 2803मे कुमार मनोज कश्यपक “ओ तड बताह अछि” प्रविष्टि कथा, प्रविष्टि आ “मानसिक अस्वस्थता” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 31क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 4113 : विदेह-सदेह 31 — कुमार मनोज कश्यप: धर्मात्मा

३३०. खण्ड 4113, सूचकांक पंक्ति 2804: कुमार मनोज कश्यपक “धर्मात्मा” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) धर्मात्मा
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३३१. खण्ड 4113, सूचकांक पंक्ति 2804: कुमार मनोज कश्यपक “धर्मात्मा”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लघुकथा
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३३२. खण्ड 4113, सूचकांक पंक्ति 2804: कुमार मनोज कश्यपक “धर्मात्मा”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) प्रविष्टि
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३३३. खण्ड 4113, सूचकांक पंक्ति 2804: कुमार मनोज कश्यपक “धर्मात्मा” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) धार्मिक पाखण्ड

३३४. खण्ड 4113, सूचकांक पंक्ति 2804: कुमार मनोज कश्यपक “धर्मात्मा” प्रविष्टि विदेह-सदेह 31मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) धार्मिक पाखण्ड
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३३५. खण्ड 4113, सूचकांक पंक्ति 2804: कुमार मनोज कश्यपक “धर्मात्मा”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककें की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक कुमार मनोज कश्यप, विधा लघुकथा, उप-विधा प्रविष्टि
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३३६. खण्ड 4113, सूचकांक पंक्ति 2804: कुमार मनोज कश्यपक “धर्मात्मा” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३३७. खण्ड 4113, सूचकांक पंक्ति 2804: कुमार मनोज कश्यपक “धर्मात्मा”कें विदेह-सदेह 31क लघुकथा-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ प्रविष्टिक रूपमे लघुकथा-संसारसँ जुड़ल अछि।

३३८. खण्ड 4113, सूचकांक पंक्ति 2804: कुमार मनोज कश्यपक “धर्मात्मा” प्रविष्टि विदेह-सदेह 31क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३३९. खण्ड 4113, सूचकांक पंक्ति 2804: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 4113, सूचकांक पंक्ति 2804मे कुमार मनोज कश्यपक “धर्मात्मा” प्रविष्टि लघुकथा, प्रविष्टि आ “धार्मिक पाखण्ड” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 31क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 4114 : विदेह-सदेह 31 — कुमार मनोज कश्यप: मनस्ताप

३४०. खण्ड 4114, सूचकांक पंक्ति 2805: कुमार मनोज कश्यपक “मनस्ताप” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) मनस्ताप
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३४१. खण्ड 4114, सूचकांक पंक्ति 2805: कुमार मनोज कश्यपक “मनस्ताप”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) कथा
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३४२. खण्ड 4114, सूचकांक पंक्ति 2805: कुमार मनोज कश्यपक “मनस्ताप”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) प्रविष्टि
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३४३. खण्ड 4114, सूचकांक पंक्ति 2805: कुमार मनोज कश्यपक “मनस्ताप” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) भ्रष्टाचार

३४४. खण्ड 4114, सूचकांक पंक्ति 2805: कुमार मनोज कश्यपक “मनस्ताप” प्रविष्टि विदेह-सदेह 31मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) भ्रष्टाचार
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३४५. खण्ड 4114, सूचकांक पंक्ति 2805: कुमार मनोज कश्यपक “मनस्ताप”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककें की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक कुमार मनोज कश्यप, विधा कथा, उप-विधा प्रविष्टि
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३४६. खण्ड 4114, सूचकांक पंक्ति 2805: कुमार मनोज कश्यपक “मनस्ताप” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३४७. खण्ड 4114, सूचकांक पंक्ति 2805: कुमार मनोज कश्यपक “मनस्ताप”कें विदेह-सदेह 31क कथा-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ प्रविष्टिक रूपमे कथा-संसारसँ जुड़ल अछि।

३४८. खण्ड 4114, सूचकांक पंक्ति 2805: कुमार मनोज कश्यपक “मनस्ताप” प्रविष्टि विदेह-सदेह 31क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३४९. खण्ड 4114, सूचकांक पंक्ति 2805: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 4114, सूचकांक पंक्ति 2805मे कुमार मनोज कश्यपक “मनस्ताप” प्रविष्टि कथा, प्रविष्टि आ “भ्रष्टाचार” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 31क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 4115 : विदेह-सदेह 31 — कुमार मनोज कश्यप: गिरैत देवाल

३५०. खण्ड 4115, सूचकांक पंक्ति 2806: कुमार मनोज कश्यपक “गिरैत देवाल” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) गिरैत देवाल
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३५१. खण्ड 4115, सूचकांक पंक्ति 2806: कुमार मनोज कश्यपक “गिरैत देवाल”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) कथा
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३५२. खण्ड 4115, सूचकांक पंक्ति 2806: कुमार मनोज कश्यपक “गिरैत देवाल”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) प्रविष्टि
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३५३. खण्ड 4115, सूचकांक पंक्ति 2806: कुमार मनोज कश्यपक “गिरैत देवाल” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) गरीबी

३५४. खण्ड 4115, सूचकांक पंक्ति 2806: कुमार मनोज कश्यपक “गिरैत देवाल” प्रविष्टि विदेह-सदेह 31मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) गरीबी
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३५५. खण्ड 4115, सूचकांक पंक्ति 2806: कुमार मनोज कश्यपक “गिरैत देवाल”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक कुमार मनोज कश्यप, विधा कथा, उप-विधा प्रविष्टि
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३५६. खण्ड 4115, सूचकांक पंक्ति 2806: कुमार मनोज कश्यपक “गिरैत देवाल” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३५७. खण्ड 4115, सूचकांक पंक्ति 2806: कुमार मनोज कश्यपक “गिरैत देवाल”कें विदेह-सदेह 31क कथा-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ प्रविष्टिक रूपमे कथा-संसारसँ जुड़ल अछि।

३५८. खण्ड 4115, सूचकांक पंक्ति 2806: कुमार मनोज कश्यपक “गिरैत देवाल” प्रविष्टि विदेह-सदेह 31क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३५९. खण्ड 4115, सूचकांक पंक्ति 2806: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 4115, सूचकांक पंक्ति 2806मे कुमार मनोज कश्यपक “गिरैत देवाल” प्रविष्टि कथा, प्रविष्टि आ “गरीबी” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 31क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 4116 : विदेह-सदेह 31 — कुमार मनोज कश्यप: कलाकार

३६०. खण्ड 4116, सूचकांक पंक्ति 2807: कुमार मनोज कश्यपक “कलाकार” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) कलाकार
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३६१. खण्ड 4116, सूचकांक पंक्ति 2807: कुमार मनोज कश्यपक “कलाकार”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लघुकथा
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३६२. खण्ड 4116, सूचकांक पंक्ति 2807: कुमार मनोज कश्यपक “कलाकार”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) प्रविष्टि
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३६३. खण्ड 4116, सूचकांक पंक्ति 2807: कुमार मनोज कश्यपक “कलाकार” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) बाल-श्रम

३६४. खण्ड 4116, सूचकांक पंक्ति 2807: कुमार मनोज कश्यपक “कलाकार” प्रविष्टि विदेह-सदेह 31मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) बाल-श्रम
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३६५. खण्ड 4116, सूचकांक पंक्ति 2807: कुमार मनोज कश्यपक “कलाकार”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक कुमार मनोज कश्यप, विधा लघुकथा, उप-विधा प्रविष्टि
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३६६. खण्ड 4116, सूचकांक पंक्ति 2807: कुमार मनोज कश्यपक “कलाकार” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३६७. खण्ड 4116, सूचकांक पंक्ति 2807: कुमार मनोज कश्यपक “कलाकार”केँ विदेह-सदेह 31क लघुकथा-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ प्रविष्टिक रूपमे लघुकथा-संसारसँ जुड़ल अछि।

३६८. खण्ड 4116, सूचकांक पंक्ति 2807: कुमार मनोज कश्यपक “कलाकार” प्रविष्टि विदेह-सदेह 31क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३६९. खण्ड 4116, सूचकांक पंक्ति 2807: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 4116, सूचकांक पंक्ति 2807मे कुमार मनोज कश्यपक “कलाकार” प्रविष्टि लघुकथा, प्रविष्टि आ “बाल-श्रम” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 31क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 4117 : विदेह-सदेह 31 — कुमार मनोज कश्यप: नोर अंगोर

३७०. खण्ड 4117, सूचकांक पंक्ति 2808: कुमार मनोज कश्यपक “नोर अंगोर” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) नोर अंगोर
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३७१. खण्ड 4117, सूचकांक पंक्ति 2808: कुमार मनोज कश्यपक “नोर अंगोर”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) कथा
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३७२. खण्ड 4117, सूचकांक पंक्ति 2808: कुमार मनोज कश्यपक “नोर अंगोर”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) प्रविष्टि
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३७३. खण्ड 4117, सूचकांक पंक्ति 2808: कुमार मनोज कश्यपक “नोर अंगोर” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ग्रामीण समाज

३७४. खण्ड 4117, सूचकांक पंक्ति 2808: कुमार मनोज कश्यपक “नोर अंगोर” प्रविष्टि विदेह-सदेह 31मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) ग्रामीण समाज
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३७५. खण्ड 4117, सूचकांक पंक्ति 2808: कुमार मनोज कश्यपक “नोर अंगोर”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककें की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक कुमार मनोज कश्यप, विधा कथा, उप-विधा प्रविष्टि
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३७६. खण्ड 4117, सूचकांक पंक्ति 2808: कुमार मनोज कश्यपक “नोर अंगोर” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३७७. खण्ड 4117, सूचकांक पंक्ति 2808: कुमार मनोज कश्यपक “नोर अंगोर”कें विदेह-सदेह 31क कथा-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ प्रविष्टिक रूपमे कथा-संसारसँ जुड़ल अछि।

३७८. खण्ड 4117, सूचकांक पंक्ति 2808: कुमार मनोज कश्यपक “नोर अंगोर” प्रविष्टि विदेह-सदेह 31क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३७९. खण्ड 4117, सूचकांक पंक्ति 2808: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 4117, सूचकांक पंक्ति 2808मे कुमार मनोज कश्यपक “नोर अंगोर” प्रविष्टि कथा, प्रविष्टि आ “ग्रामीण समाज” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 31क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 4118 : विदेह-सदेह 31 — कुमार मनोज कश्यप: फ्यूज बल्व

३८०. खण्ड 4118, सूचकांक पंक्ति 2809: कुमार मनोज कश्यपक “फ्यूज बल्व” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) फ्यूज बल्व
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३८१. खण्ड 4118, सूचकांक पंक्ति 2809: कुमार मनोज कश्यपक “फ्यूज बल्व”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) कथा
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३८२. खण्ड 4118, सूचकांक पंक्ति 2809: कुमार मनोज कश्यपक “फ्यूज बल्व”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) प्रविष्टि
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३८३. खण्ड 4118, सूचकांक पंक्ति 2809: कुमार मनोज कश्यपक “फ्यूज बल्व” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) सेवानिवृत्ति

३८४. खण्ड 4118, सूचकांक पंक्ति 2809: कुमार मनोज कश्यपक “फ्यूज बल्व” प्रविष्टि विदेह-सदेह 31मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) सेवानिवृत्ति
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३८५. खण्ड 4118, सूचकांक पंक्ति 2809: कुमार मनोज कश्यपक “फ्यूज बल्व”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककें की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक कुमार मनोज कश्यप, विधा कथा, उप-विधा प्रविष्टि
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३८६. खण्ड 4118, सूचकांक पंक्ति 2809: कुमार मनोज कश्यपक “फ्यूज बल्व” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३८७. खण्ड 4118, सूचकांक पंक्ति 2809: कुमार मनोज कश्यपक “फ्यूज बल्व”कें विदेह-सदेह 31क कथा-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ प्रविष्टिक रूपमे कथा-संसारसँ जुड़ल अछि।

३८८. खण्ड 4118, सूचकांक पंक्ति 2809: कुमार मनोज कश्यपक “फ्यूज बल्व” प्रविष्टि विदेह-सदेह 31क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३८९. खण्ड 4118, सूचकांक पंक्ति 2809: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 4118, सूचकांक पंक्ति 2809मे कुमार मनोज कश्यपक “फ्यूज बल्व” प्रविष्टि कथा, प्रविष्टि आ “सेवानिवृत्ति” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 31क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 4119 : विदेह-सदेह 31 — कुमार मनोज कश्यप: पहिल चिट्ठी

३९०. खण्ड 4119, सूचकांक पंक्ति 2810: कुमार मनोज कश्यपक “पहिल चिट्ठी” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) पहिल चिट्ठी
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३९१. खण्ड 4119, सूचकांक पंक्ति 2810: कुमार मनोज कश्यपक “पहिल चिट्ठी”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) कथा (पत्र-शैली)
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३९२. खण्ड 4119, सूचकांक पंक्ति 2810: कुमार मनोज कश्यपक “पहिल चिट्ठी”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) प्रविष्टि
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३९३. खण्ड 4119, सूचकांक पंक्ति 2810: कुमार मनोज कश्यपक “पहिल चिट्ठी” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) नारीवादी चेतना

३९४. खण्ड 4119, सूचकांक पंक्ति 2810: कुमार मनोज कश्यपक “पहिल चिट्ठी” प्रविष्टि विदेह-सदेह 31मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) नारीवादी चेतना
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३९५. खण्ड 4119, सूचकांक पंक्ति 2810: कुमार मनोज कश्यपक “पहिल चिट्ठी”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककें की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक कुमार मनोज कश्यप, विधा कथा (पत्र-शैली), उप-विधा प्रविष्टि
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३९६. खण्ड 4119, सूचकांक पंक्ति 2810: कुमार मनोज कश्यपक “पहिल चिट्ठी” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३९७. खण्ड 4119, सूचकांक पंक्ति 2810: कुमार मनोज कश्यपक “पहिल चिट्ठी”कें विदेह-सदेह 31क कथा (पत्र-शैली)-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ प्रविष्टिक रूपमे कथा (पत्र-शैली)-संसारसँ जुड़ल अछि।

३९८. खण्ड 4119, सूचकांक पंक्ति 2810: कुमार मनोज कश्यपक “पहिल चिट्ठी” प्रविष्टि विदेह-सदेह 31क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३९९. खण्ड 4119, सूचकांक पंक्ति 2810: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 4119, सूचकांक पंक्ति 2810मे कुमार मनोज कश्यपक “पहिल चिट्ठी” प्रविष्टि कथा (पत्र-शैली), प्रविष्टि आ “नारीवादी चेतना” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 31क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 4120 : विदेह-सदेह 31 — कुमार मनोज कश्यप: दिन धराबय तीन नाम

४००. खण्ड 4120, सूचकांक पंक्ति 2811: कुमार मनोज कश्यपक “दिन धराबय तीन नाम” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) दिन धराबय तीन नाम
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४०१. खण्ड 4120, सूचकांक पंक्ति 2811: कुमार मनोज कश्यपक “दिन धराबय तीन नाम”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) कथा
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४०२. खण्ड 4120, सूचकांक पंक्ति 2811: कुमार मनोज कश्यपक “दिन धराबय तीन नाम”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) प्रविष्टि
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४०३. खण्ड 4120, सूचकांक पंक्ति 2811: कुमार मनोज कश्यपक “दिन धराबय तीन नाम” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) दृष्टिकोणक भिन्नता

४०४. खण्ड 4120, सूचकांक पंक्ति 2811: कुमार मनोज कश्यपक “दिन धराबय तीन नाम” प्रविष्टि विदेह-सदेह 31मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) दृष्टिकोणक भिन्नता
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४०५. खण्ड 4120, सूचकांक पंक्ति 2811: कुमार मनोज कश्यपक “दिन धराबय तीन नाम”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककें की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक कुमार मनोज कश्यप, विधा कथा, उप-विधा प्रविष्टि
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४०६. खण्ड 4120, सूचकांक पंक्ति 2811: कुमार मनोज कश्यपक “दिन धराबय तीन नाम” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४०७. खण्ड 4120, सूचकांक पंक्ति 2811: कुमार मनोज कश्यपक “दिन धराबय तीन नाम”कें विदेह-सदेह 31क कथा-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ प्रविष्टिक रूपमे कथा-संसारसँ जुड़ल अछि।

४०८. खण्ड 4120, सूचकांक पंक्ति 2811: कुमार मनोज कश्यपक “दिन धराबय तीन नाम” प्रविष्टि विदेह-सदेह 31क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४०९. खण्ड 4120, सूचकांक पंक्ति 2811: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 4120, सूचकांक पंक्ति 2811मे कुमार मनोज कश्यपक “दिन धराबय तीन नाम” प्रविष्टि कथा, प्रविष्टि आ “दृष्टिकोणक भिन्नता” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 31क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 4121 : विदेह-सदेह 31 — कुमार मनोज कश्यप: घूरि आऊ निशा

४१०. खण्ड 4121, सूचकांक पंक्ति 2812: कुमार मनोज कश्यपक “घूरि आऊ निशा” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) घूरि आऊ निशा
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४११. खण्ड 4121, सूचकांक पंक्ति 2812: कुमार मनोज कश्यपक “घूरि आऊ निशा”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) कथा
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४१२. खण्ड 4121, सूचकांक पंक्ति 2812: कुमार मनोज कश्यपक “घूरि आऊ निशा”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) प्रविष्टि
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४१३. खण्ड 4121, सूचकांक पंक्ति 2812: कुमार मनोज कश्यपक “घूरि आऊ निशा” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) प्रेम

४१४. खण्ड 4121, सूचकांक पंक्ति 2812: कुमार मनोज कश्यपक “घूरि आऊ निशा” प्रविष्टि विदेह-सदेह 31मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) प्रेम
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४१५. खण्ड 4121, सूचकांक पंक्ति 2812: कुमार मनोज कश्यपक “घूरि आऊ निशा”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठकर्के की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक कुमार मनोज कश्यप, विधा कथा, उप-विधा प्रविष्टि
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४१६. खण्ड 4121, सूचकांक पंक्ति 2812: कुमार मनोज कश्यपक “घूरि आऊ निशा” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४१७. खण्ड 4121, सूचकांक पंक्ति 2812: कुमार मनोज कश्यपक “घूरि आऊ निशा”क विदेह-सदेह 31क कथा-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ प्रविष्टिक रूपमे कथा-संसारसँ जुड़ल अछि।

४१८. खण्ड 4121, सूचकांक पंक्ति 2812: कुमार मनोज कश्यपक “घूरि आऊ निशा” प्रविष्टि विदेह-सदेह 31क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४१९. खण्ड 4121, सूचकांक पंक्ति 2812: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 4121, सूचकांक पंक्ति 2812मे कुमार मनोज कश्यपक “घूरि आऊ निशा” प्रविष्टि कथा, प्रविष्टि आ “प्रेम” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 31क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 4122 : विदेह-सदेह 31 — कुमार मनोज कश्यप: अन्हेर

४२०. खण्ड 4122, सूचकांक पंक्ति 2813: कुमार मनोज कश्यपक “अन्हेर” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) अन्हेर
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४२१. खण्ड 4122, सूचकांक पंक्ति 2813: कुमार मनोज कश्यपक “अन्हेर”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) कथा
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४२२. खण्ड 4122, सूचकांक पंक्ति 2813: कुमार मनोज कश्यपक “अन्हेर”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) प्रविष्टि
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४२३. खण्ड 4122, सूचकांक पंक्ति 2813: कुमार मनोज कश्यपक “अन्हेर” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) पलायन

४२४. खण्ड 4122, सूचकांक पंक्ति 2813: कुमार मनोज कश्यपक “अन्हेर” प्रविष्टि विदेह-सदेह 31मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) पलायन
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४२५. खण्ड 4122, सूचकांक पंक्ति 2813: कुमार मनोज कश्यपक “अन्हेर”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककें की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक कुमार मनोज कश्यप, विधा कथा, उप-विधा प्रविष्टि
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४२६. खण्ड 4122, सूचकांक पंक्ति 2813: कुमार मनोज कश्यपक “अन्हेर” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४२७. खण्ड 4122, सूचकांक पंक्ति 2813: कुमार मनोज कश्यपक “अन्हेर”कें विदेह-सदेह 31क कथा-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ प्रविष्टिक रूपमे कथा-संसारसँ जुड़ल अछि।

४२८. खण्ड 4122, सूचकांक पंक्ति 2813: कुमार मनोज कश्यपक “अन्हेर” प्रविष्टि विदेह-सदेह 31क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४२९. खण्ड 4122, सूचकांक पंक्ति 2813: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 4122, सूचकांक पंक्ति 2813मे कुमार मनोज कश्यपक “अन्हेर” प्रविष्टि कथा, प्रविष्टि आ “पलायन” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 31क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 4123 : विदेह-सदेह 31 — कुमार मनोज कश्यप: सीमान

४३०. खण्ड 4123, सूचकांक पंक्ति 2814: कुमार मनोज कश्यपक “सीमान” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) सीमान
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४३१. खण्ड 4123, सूचकांक पंक्ति 2814: कुमार मनोज कश्यपक “सीमान”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) कथा
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४३२. खण्ड 4123, सूचकांक पंक्ति 2814: कुमार मनोज कश्यपक “सीमान”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) प्रविष्टि
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४३३. खण्ड 4123, सूचकांक पंक्ति 2814: कुमार मनोज कश्यपक “सीमान” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) दृष्टिकोण

४३४. खण्ड 4123, सूचकांक पंक्ति 2814: कुमार मनोज कश्यपक “सीमान” प्रविष्टि विदेह-सदेह 31मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) दृष्टिकोण
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४३५. खण्ड 4123, सूचकांक पंक्ति 2814: कुमार मनोज कश्यपक “सीमान”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककें की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक कुमार मनोज कश्यप, विधा कथा, उप-विधा प्रविष्टि
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४३६. खण्ड 4123, सूचकांक पंक्ति 2814: कुमार मनोज कश्यपक “सीमान” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४३७. खण्ड 4123, सूचकांक पंक्ति 2814: कुमार मनोज कश्यपक “सीमान”कें विदेह-सदेह 31क कथा-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ प्रविष्टिक रूपमे कथा-संसारसँ जुड़ल अछि।

४३८. खण्ड 4123, सूचकांक पंक्ति 2814: कुमार मनोज कश्यपक “सीमान” प्रविष्टि विदेह-सदेह 31क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४३९. खण्ड 4123, सूचकांक पंक्ति 2814: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 4123, सूचकांक पंक्ति 2814मे कुमार मनोज कश्यपक “सीमान” प्रविष्टि कथा, प्रविष्टि आ “दृष्टिकोण” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 31क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 4124 : विदेह-सदेह 31 — कुमार मनोज कश्यप: उजडल खोंता

४४०. खण्ड 4124, सूचकांक पंक्ति 2815: कुमार मनोज कश्यपक “उजडल खोंता” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) उजडल खोंता
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४४१. खण्ड 4124, सूचकांक पंक्ति 2815: कुमार मनोज कश्यपक “उजडल खोंता”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) कथा
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४४२. खण्ड 4124, सूचकांक पंक्ति 2815: कुमार मनोज कश्यपक “उजडल खोंता”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) प्रविष्टि
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४४३. खण्ड 4124, सूचकांक पंक्ति 2815: कुमार मनोज कश्यपक “उजडल खोंता” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) बाल-श्रम

४४४. खण्ड 4124, सूचकांक पंक्ति 2815: कुमार मनोज कश्यपक “उजडल खोंता” प्रविष्टि विदेह-सदेह 31मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) बाल-श्रम
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४४५. खण्ड 4124, सूचकांक पंक्ति 2815: कुमार मनोज कश्यपक “उजडल खोंता”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककें की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक कुमार मनोज कश्यप, विधा कथा, उप-विधा प्रविष्टि
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४४६. खण्ड 4124, सूचकांक पंक्ति 2815: कुमार मनोज कश्यपक “उजडल खोंता” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४४७. खण्ड 4124, सूचकांक पंक्ति 2815: कुमार मनोज कश्यपक “उजडल खोंता”क विदेह-सदेह 31क कथा-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ प्रविष्टिक रूपमे कथा-संसारसँ जुड़ल अछि।

४४८. खण्ड 4124, सूचकांक पंक्ति 2815: कुमार मनोज कश्यपक “उजडल खोंता” प्रविष्टि विदेह-सदेह 31क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४४९. खण्ड 4124, सूचकांक पंक्ति 2815: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 4124, सूचकांक पंक्ति 2815मे कुमार मनोज कश्यपक “उजडल खोंता” प्रविष्टि कथा, प्रविष्टि आ “बाल-श्रम” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 31क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 4125 : विदेह-सदेह 31 — कुमार मनोज कश्यप: मरिचिका (पुनः)

४५०. खण्ड 4125, सूचकांक पंक्ति 2816: कुमार मनोज कश्यपक “मरिचिका (पुनः)” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) मरिचिका (पुनः)
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४५१. खण्ड 4125, सूचकांक पंक्ति 2816: कुमार मनोज कश्यपक “मरिचिका (पुनः)”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लघुकथा
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४५२. खण्ड 4125, सूचकांक पंक्ति 2816: कुमार मनोज कश्यपक “मरिचिका (पुनः)”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) प्रविष्टि
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४५३. खण्ड 4125, सूचकांक पंक्ति 2816: कुमार मनोज कश्यपक “मरिचिका (पुनः)” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) वृद्धावस्था

४५४. खण्ड 4125, सूचकांक पंक्ति 2816: कुमार मनोज कश्यपक “मरिचिका (पुनः)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 31मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) वृद्धावस्था
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४५५. खण्ड 4125, सूचकांक पंक्ति 2816: कुमार मनोज कश्यपक “मरिचिका (पुनः)”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक कुमार मनोज कश्यप, विधा लघुकथा, उप-विधा प्रविष्टि
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४५६. खण्ड 4125, सूचकांक पंक्ति 2816: कुमार मनोज कश्यपक “मरिचिका (पुनः)” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४५७. खण्ड 4125, सूचकांक पंक्ति 2816: कुमार मनोज कश्यपक “मरिचिका (पुनः)”केँ विदेह-सदेह 31क लघुकथा-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ प्रविष्टिक रूपमे लघुकथा-संसारसँ जुड़ल अछि।

४५८. खण्ड 4125, सूचकांक पंक्ति 2816: कुमार मनोज कश्यपक “मरिचिका (पुनः)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 31क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४५९. खण्ड 4125, सूचकांक पंक्ति 2816: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 4125, सूचकांक पंक्ति 2816मे कुमार मनोज कश्यपक “मरिचिका (पुनः)” प्रविष्टि लघुकथा, प्रविष्टि आ “वृद्धावस्था” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 31क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 4126 : विदेह-सदेह 31 — कुमार मनोज कश्यप: परजा (पुनः)

४६०. खण्ड 4126, सूचकांक पंक्ति 2817: कुमार मनोज कश्यपक “परजा (पुनः)” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) परजा (पुनः)
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४६१. खण्ड 4126, सूचकांक पंक्ति 2817: कुमार मनोज कश्यपक “परजा (पुनः)”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) कथा
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४६२. खण्ड 4126, सूचकांक पंक्ति 2817: कुमार मनोज कश्यपक “परजा (पुनः)”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) प्रविष्टि
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४६३. खण्ड 4126, सूचकांक पंक्ति 2817: कुमार मनोज कश्यपक “परजा (पुनः)” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) राजनीतिक चेतना

४६४. खण्ड 4126, सूचकांक पंक्ति 2817: कुमार मनोज कश्यपक “परजा (पुनः)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 31मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) राजनीतिक चेतना
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४६५. खण्ड 4126, सूचकांक पंक्ति 2817: कुमार मनोज कश्यपक “परजा (पुनः)”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककें की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक कुमार मनोज कश्यप, विधा कथा, उप-विधा प्रविष्टि
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४६६. खण्ड 4126, सूचकांक पंक्ति 2817: कुमार मनोज कश्यपक “परजा (पुनः)” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४६७. खण्ड 4126, सूचकांक पंक्ति 2817: कुमार मनोज कश्यपक “परजा (पुनः)”कें विदेह-सदेह 31क कथा-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ प्रविष्टिक रूपमे कथा-संसारसँ जुड़ल अछि।

४६८. खण्ड 4126, सूचकांक पंक्ति 2817: कुमार मनोज कश्यपक “परजा (पुनः)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 31क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४६९. खण्ड 4126, सूचकांक पंक्ति 2817: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 4126, सूचकांक पंक्ति 2817मे कुमार मनोज कश्यपक “परजा (पुनः)” प्रविष्टि कथा, प्रविष्टि आ “राजनीतिक चेतना” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 31क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 4127 : विदेह-सदेह 31 — कुमार मनोज कश्यप: बदलेत समय

४७०. खण्ड 4127, सूचकांक पंक्ति 2818: कुमार मनोज कश्यपक “बदलेत समय” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) बदलेत समय
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४७१. खण्ड 4127, सूचकांक पंक्ति 2818: कुमार मनोज कश्यपक “बदलेत समय”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लघुकथा
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४७२. खण्ड 4127, सूचकांक पंक्ति 2818: कुमार मनोज कश्यपक “बदलेत समय”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) प्रविष्टि
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४७३. खण्ड 4127, सूचकांक पंक्ति 2818: कुमार मनोज कश्यपक “बदलेत समय” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) परिवर्तन

४७४. खण्ड 4127, सूचकांक पंक्ति 2818: कुमार मनोज कश्यपक “बदलेत समय” प्रविष्टि विदेह-सदेह 31मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) परिवर्तन
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४७५. खण्ड 4127, सूचकांक पंक्ति 2818: कुमार मनोज कश्यपक “बदलेत समय”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककें की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक कुमार मनोज कश्यप, विधा लघुकथा, उप-विधा प्रविष्टि
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४७६. खण्ड 4127, सूचकांक पंक्ति 2818: कुमार मनोज कश्यपक “बदलेत समय” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४७७. खण्ड 4127, सूचकांक पंक्ति 2818: कुमार मनोज कश्यपक “बदलेत समय”कें विदेह-सदेह 31क लघुकथा-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ प्रविष्टिक रूपमे लघुकथा-संसारसँ जुड़ल अछि।

४७८. खण्ड 4127, सूचकांक पंक्ति 2818: कुमार मनोज कश्यपक “बदलेत समय” प्रविष्टि विदेह-सदेह 31क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४७९. खण्ड 4127, सूचकांक पंक्ति 2818: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 4127, सूचकांक पंक्ति 2818मे कुमार मनोज कश्यपक “बदलेत समय” प्रविष्टि लघुकथा, प्रविष्टि आ “परिवर्तन” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 31क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 4128 : विदेह-सदेह 31 — कुमार मनोज कश्यप: जरल पेट

४८०. खण्ड 4128, सूचकांक पंक्ति 2819: कुमार मनोज कश्यपक “जरल पेट” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) जरल पेट
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४८१. खण्ड 4128, सूचकांक पंक्ति 2819: कुमार मनोज कश्यपक “जरल पेट”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लघुकथा
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४८२. खण्ड 4128, सूचकांक पंक्ति 2819: कुमार मनोज कश्यपक “जरल पेट”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) प्रविष्टि
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४८३. खण्ड 4128, सूचकांक पंक्ति 2819: कुमार मनोज कश्यपक “जरल पेट” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) भूख

४८४. खण्ड 4128, सूचकांक पंक्ति 2819: कुमार मनोज कश्यपक “जरल पेट” प्रविष्टि विदेह-सदेह 31मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) भूख
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४८५. खण्ड 4128, सूचकांक पंक्ति 2819: कुमार मनोज कश्यपक “जरल पेट”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक कुमार मनोज कश्यप, विधा लघुकथा, उप-विधा प्रविष्टि
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४८६. खण्ड 4128, सूचकांक पंक्ति 2819: कुमार मनोज कश्यपक “जरल पेट” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४८७. खण्ड 4128, सूचकांक पंक्ति 2819: कुमार मनोज कश्यपक “जरल पेट”केँ विदेह-सदेह 31क लघुकथा-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ प्रविष्टिक रूपमे लघुकथा-संसारसँ जुड़ल अछि।

४८८. खण्ड 4128, सूचकांक पंक्ति 2819: कुमार मनोज कश्यपक “जरल पेट” प्रविष्टि विदेह-सदेह 31क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४८९. खण्ड 4128, सूचकांक पंक्ति 2819: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 4128, सूचकांक पंक्ति 2819मे कुमार मनोज कश्यपक “जरल पेट” प्रविष्टि लघुकथा, प्रविष्टि आ “भूख” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 31क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 4129 : विदेह-सदेह 31 — कुमार मनोज कश्यप: जीतक आगू

४९०. खण्ड 4129, सूचकांक पंक्ति 2820: कुमार मनोज कश्यपक “जीतक आगू” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) जीतक आगू
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४९१. खण्ड 4129, सूचकांक पंक्ति 2820: कुमार मनोज कश्यपक “जीतक आगू”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) कथा
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४९२. खण्ड 4129, सूचकांक पंक्ति 2820: कुमार मनोज कश्यपक “जीतक आगू”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) प्रविष्टि
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४९३. खण्ड 4129, सूचकांक पंक्ति 2820: कुमार मनोज कश्यपक “जीतक आगू” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) बाढ़ि

४९४. खण्ड 4129, सूचकांक पंक्ति 2820: कुमार मनोज कश्यपक “जीतक आगू” प्रविष्टि विदेह-सदेह 31मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) बाढ़ि
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४९५. खण्ड 4129, सूचकांक पंक्ति 2820: कुमार मनोज कश्यपक “जीतक आगू”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककें की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक कुमार मनोज कश्यप, विधा कथा, उप-विधा प्रविष्टि
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४९६. खण्ड 4129, सूचकांक पंक्ति 2820: कुमार मनोज कश्यपक “जीतक आगू” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४९७. खण्ड 4129, सूचकांक पंक्ति 2820: कुमार मनोज कश्यपक “जीतक आगू”कें विदेह-सदेह 31क कथा-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ प्रविष्टिक रूपमे कथा-संसारसँ जुड़ल अछि।

४९८. खण्ड 4129, सूचकांक पंक्ति 2820: कुमार मनोज कश्यपक “जीतक आगू” प्रविष्टि विदेह-सदेह 31क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४९९. खण्ड 4129, सूचकांक पंक्ति 2820: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 4129, सूचकांक पंक्ति 2820मे कुमार मनोज कश्यपक “जीतक आगू” प्रविष्टि कथा, प्रविष्टि आ “बाढ़ि” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 31क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 4130 : विदेह-सदेह 31 — कुमार मनोज कश्यप: माता कुमाता न भवति

५००. खण्ड 4130, सूचकांक पंक्ति 2821: कुमार मनोज कश्यपक “माता कुमाता न भवति” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) माता कुमाता न भवति
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

५०१. खण्ड 4130, सूचकांक पंक्ति 2821: कुमार मनोज कश्यपक “माता कुमाता न भवति”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) कथा
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

५०२. खण्ड 4130, सूचकांक पंक्ति 2821: कुमार मनोज कश्यपक “माता कुमाता न भवति”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) प्रविष्टि
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

५०३. खण्ड 4130, सूचकांक पंक्ति 2821: कुमार मनोज कश्यपक “माता कुमाता न भवति” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) पारिवारिक सम्बन्ध

५०४. खण्ड 4130, सूचकांक पंक्ति 2821: कुमार मनोज कश्यपक “माता कुमाता न भवति” प्रविष्टि विदेह-सदेह 31मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) पारिवारिक सम्बन्ध
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

५०५. खण्ड 4130, सूचकांक पंक्ति 2821: कुमार मनोज कश्यपक “माता कुमाता न भवति”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठकर्त्तों की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक कुमार मनोज कश्यप, विधा कथा, उप-विधा प्रविष्टि
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

५०६. खण्ड 4130, सूचकांक पंक्ति 2821: कुमार मनोज कश्यपक “माता कुमाता न भवति” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

५०७. खण्ड 4130, सूचकांक पंक्ति 2821: कुमार मनोज कश्यपक “माता कुमाता न भवति”क विदेह-सदेह 31क कथा-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ प्रविष्टिक रूपमे कथा-संसारसँ जुड़ल अछि।

५०८. खण्ड 4130, सूचकांक पंक्ति 2821: कुमार मनोज कश्यपक “माता कुमाता न भवति” प्रविष्टि विदेह-सदेह 31क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

५०९. खण्ड 4130, सूचकांक पंक्ति 2821: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 4130, सूचकांक पंक्ति 2821मे कुमार मनोज कश्यपक “माता कुमाता न भवति” प्रविष्टि कथा, प्रविष्टि आ “पारिवारिक सम्बन्ध” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 31क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 4131 : विदेह-सदेह 31 — कुमार मनोज कश्यप: ईमानदार

५१०. खण्ड 4131, सूचकांक पंक्ति 2822: कुमार मनोज कश्यपक “ईमानदार” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) ईमानदार
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

५११. खण्ड 4131, सूचकांक पंक्ति 2822: कुमार मनोज कश्यपक “ईमानदार”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) कथा
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

५१२. खण्ड 4131, सूचकांक पंक्ति 2822: कुमार मनोज कश्यपक “ईमानदार”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) प्रविष्टि
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

५१३. खण्ड 4131, सूचकांक पंक्ति 2822: कुमार मनोज कश्यपक “ईमानदार” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) भ्रष्टाचार

५१४. खण्ड 4131, सूचकांक पंक्ति 2822: कुमार मनोज कश्यपक “ईमानदार” प्रविष्टि विदेह-सदेह 31मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) भ्रष्टाचार
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

५१५. खण्ड 4131, सूचकांक पंक्ति 2822: कुमार मनोज कश्यपक “ईमानदार”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककें की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक कुमार मनोज कश्यप, विधा कथा, उप-विधा प्रविष्टि
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

५१६. खण्ड 4131, सूचकांक पंक्ति 2822: कुमार मनोज कश्यपक “ईमानदार” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

५१७. खण्ड 4131, सूचकांक पंक्ति 2822: कुमार मनोज कश्यपक “ईमानदार”कें विदेह-सदेह 31क कथा-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ प्रविष्टिक रूपमे कथा-संसारसँ जुड़ल अछि।

५१८. खण्ड 4131, सूचकांक पंक्ति 2822: कुमार मनोज कश्यपक “ईमानदार” प्रविष्टि विदेह-सदेह 31क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

५१९. खण्ड 4131, सूचकांक पंक्ति 2822: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 4131, सूचकांक पंक्ति 2822मे कुमार मनोज कश्यपक “ईमानदार” प्रविष्टि कथा, प्रविष्टि आ “भ्रष्टाचार” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 31क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 4132 : विदेह-सदेह 31 — कुमार मनोज कश्यप: मास्टर साहेब

५२०. खण्ड 4132, सूचकांक पंक्ति 2823: कुमार मनोज कश्यपक “मास्टर साहेब” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) मास्टर साहेब
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

५२१. खण्ड 4132, सूचकांक पंक्ति 2823: कुमार मनोज कश्यपक “मास्टर साहेब”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) कथा
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

५२२. खण्ड 4132, सूचकांक पंक्ति 2823: कुमार मनोज कश्यपक “मास्टर साहेब”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) प्रविष्टि
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

५२३. खण्ड 4132, सूचकांक पंक्ति 2823: कुमार मनोज कश्यपक “मास्टर साहेब” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) शिक्षक जीवन

५२४. खण्ड 4132, सूचकांक पंक्ति 2823: कुमार मनोज कश्यपक “मास्टर साहेब” प्रविष्टि विदेह-सदेह 31मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) शिक्षक जीवन
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

५२५. खण्ड 4132, सूचकांक पंक्ति 2823: कुमार मनोज कश्यपक “मास्टर साहेब”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककें की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक कुमार मनोज कश्यप, विधा कथा, उप-विधा प्रविष्टि
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

५२६. खण्ड 4132, सूचकांक पंक्ति 2823: कुमार मनोज कश्यपक “मास्टर साहेब” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

५२७. खण्ड 4132, सूचकांक पंक्ति 2823: कुमार मनोज कश्यपक “मास्टर साहेब”कें विदेह-सदेह 31क कथा-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ प्रविष्टिक रूपमे कथा-संसारसँ जुड़ल अछि।

५२८. खण्ड 4132, सूचकांक पंक्ति 2823: कुमार मनोज कश्यपक “मास्टर साहेब” प्रविष्टि विदेह-सदेह 31क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

५२९. खण्ड 4132, सूचकांक पंक्ति 2823: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 4132, सूचकांक पंक्ति 2823मे कुमार मनोज कश्यपक “मास्टर साहेब” प्रविष्टि कथा, प्रविष्टि आ “शिक्षक जीवन” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 31क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 4133 : विदेह-सदेह 31 — कुमार मनोज कश्यप: कचोट

५३०. खण्ड 4133, सूचकांक पंक्ति 2824: कुमार मनोज कश्यपक “कचोट” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) कचोट
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

५३१. खण्ड 4133, सूचकांक पंक्ति 2824: कुमार मनोज कश्यपक “कचोट”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) कथा
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

५३२. खण्ड 4133, सूचकांक पंक्ति 2824: कुमार मनोज कश्यपक “कचोट”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) प्रविष्टि
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

५३३. खण्ड 4133, सूचकांक पंक्ति 2824: कुमार मनोज कश्यपक “कचोट” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) वैवाहिक सम्बन्ध

५३४. खण्ड 4133, सूचकांक पंक्ति 2824: कुमार मनोज कश्यपक “कचोट” प्रविष्टि विदेह-सदेह 31मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) वैवाहिक सम्बन्ध
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

५३५. खण्ड 4133, सूचकांक पंक्ति 2824: कुमार मनोज कश्यपक “कचोट”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककें की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक कुमार मनोज कश्यप, विधा कथा, उप-विधा प्रविष्टि
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

५३६. खण्ड 4133, सूचकांक पंक्ति 2824: कुमार मनोज कश्यपक “कचोट” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

५३७. खण्ड 4133, सूचकांक पंक्ति 2824: कुमार मनोज कश्यपक “कचोट”कें विदेह-सदेह 31क कथा-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ प्रविष्टिक रूपमे कथा-संसारसँ जुड़ल अछि।

५३८. खण्ड 4133, सूचकांक पंक्ति 2824: कुमार मनोज कश्यपक “कचोट” प्रविष्टि विदेह-सदेह 31क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

५३९. खण्ड 4133, सूचकांक पंक्ति 2824: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 4133, सूचकांक पंक्ति 2824मे कुमार मनोज कश्यपक “कचोट” प्रविष्टि कथा, प्रविष्टि आ “वैवाहिक सम्बन्ध” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 31क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 4134 : विदेह-सदेह 31 — कुमार मनोज कश्यप: नव-वर्ष

५४०. खण्ड 4134, सूचकांक पंक्ति 2825: कुमार मनोज कश्यपक “नव-वर्ष” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) नव-वर्ष
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

५४१. खण्ड 4134, सूचकांक पंक्ति 2825: कुमार मनोज कश्यपक “नव-वर्ष”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लघुकथा
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

५४२. खण्ड 4134, सूचकांक पंक्ति 2825: कुमार मनोज कश्यपक “नव-वर्ष”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) प्रविष्टि
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

५४३. खण्ड 4134, सूचकांक पंक्ति 2825: कुमार मनोज कश्यपक “नव-वर्ष” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) गरीबी

५४४. खण्ड 4134, सूचकांक पंक्ति 2825: कुमार मनोज कश्यपक “नव-वर्ष” प्रविष्टि विदेह-सदेह 31मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) गरीबी
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

५४५. खण्ड 4134, सूचकांक पंक्ति 2825: कुमार मनोज कश्यपक “नव-वर्ष”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककें की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक कुमार मनोज कश्यप, विधा लघुकथा, उप-विधा प्रविष्टि
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

५४६. खण्ड 4134, सूचकांक पंक्ति 2825: कुमार मनोज कश्यपक “नव-वर्ष” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

५४७. खण्ड 4134, सूचकांक पंक्ति 2825: कुमार मनोज कश्यपक “नव-वर्ष”कें विदेह-सदेह 31क लघुकथा-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ प्रविष्टिक रूपमे लघुकथा-संसारसँ जुड़ल अछि।

५४८. खण्ड 4134, सूचकांक पंक्ति 2825: कुमार मनोज कश्यपक “नव-वर्ष” प्रविष्टि विदेह-सदेह 31क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

५४९. खण्ड 4134, सूचकांक पंक्ति 2825: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 4134, सूचकांक पंक्ति 2825मे कुमार मनोज कश्यपक “नव-वर्ष” प्रविष्टि लघुकथा, प्रविष्टि आ “गरीबी” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 31क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 4135 : विदेह-सदेह 31 — कुमार मनोज कश्यप: थाकल बाट

५५०. खण्ड 4135, सूचकांक पंक्ति 2826: कुमार मनोज कश्यपक “थाकल बाट” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) थाकल बाट
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

५५१. खण्ड 4135, सूचकांक पंक्ति 2826: कुमार मनोज कश्यपक “थाकल बाट”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लघुकथा
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

५५२. खण्ड 4135, सूचकांक पंक्ति 2826: कुमार मनोज कश्यपक “थाकल बाट”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) प्रविष्टि
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

५५३. खण्ड 4135, सूचकांक पंक्ति 2826: कुमार मनोज कश्यपक “थाकल बाट” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) सरकारी सेवा

५५४. खण्ड 4135, सूचकांक पंक्ति 2826: कुमार मनोज कश्यपक “थाकल बाट” प्रविष्टि विदेह-सदेह 31मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) सरकारी सेवा
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

५५५. खण्ड 4135, सूचकांक पंक्ति 2826: कुमार मनोज कश्यपक “थाकल बाट”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककें की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक कुमार मनोज कश्यप, विधा लघुकथा, उप-विधा प्रविष्टि
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

५५६. खण्ड 4135, सूचकांक पंक्ति 2826: कुमार मनोज कश्यपक “थाकल बाट” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

५५७. खण्ड 4135, सूचकांक पंक्ति 2826: कुमार मनोज कश्यपक “थाकल बाट”कें विदेह-सदेह 31क लघुकथा-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ प्रविष्टिक रूपमे लघुकथा-संसारसँ जुड़ल अछि।

५५८. खण्ड 4135, सूचकांक पंक्ति 2826: कुमार मनोज कश्यपक “थाकल बाट” प्रविष्टि विदेह-सदेह 31क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

५५९. खण्ड 4135, सूचकांक पंक्ति 2826: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 4135, सूचकांक पंक्ति 2826मे कुमार मनोज कश्यपक “थाकल बाट” प्रविष्टि लघुकथा, प्रविष्टि आ “सरकारी सेवा” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 31क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 4136 : विदेह-सदेह 31 — कुमार मनोज कश्यप: हारल मनुक्ख

५६०. खण्ड 4136, सूचकांक पंक्ति 2827: कुमार मनोज कश्यपक “हारल मनुक्ख” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) हारल मनुक्ख
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

५६१. खण्ड 4136, सूचकांक पंक्ति 2827: कुमार मनोज कश्यपक “हारल मनुक्ख”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लघुकथा
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

५६२. खण्ड 4136, सूचकांक पंक्ति 2827: कुमार मनोज कश्यपक “हारल मनुक्ख”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) प्रविष्टि
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

५६३. खण्ड 4136, सूचकांक पंक्ति 2827: कुमार मनोज कश्यपक “हारल मनुक्ख” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) मानवता

५६४. खण्ड 4136, सूचकांक पंक्ति 2827: कुमार मनोज कश्यपक “हारल मनुक्ख” प्रविष्टि विदेह-सदेह 31मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) मानवता
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

५६५. खण्ड 4136, सूचकांक पंक्ति 2827: कुमार मनोज कश्यपक “हारल मनुक्ख”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककें की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक कुमार मनोज कश्यप, विधा लघुकथा, उप-विधा प्रविष्टि
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

५६६. खण्ड 4136, सूचकांक पंक्ति 2827: कुमार मनोज कश्यपक “हारल मनुक्ख” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगौं बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

५६७. खण्ड 4136, सूचकांक पंक्ति 2827: कुमार मनोज कश्यपक “हारल मनुक्ख”कें विदेह-सदेह 31क लघुकथा-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ प्रविष्टिक रूपमे लघुकथा-संसारसँ जुड़ल अछि।

५६८. खण्ड 4136, सूचकांक पंक्ति 2827: कुमार मनोज कश्यपक “हारल मनुक्ख” प्रविष्टि विदेह-सदेह 31क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

५६९. खण्ड 4136, सूचकांक पंक्ति 2827: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 4136, सूचकांक पंक्ति 2827मे कुमार मनोज कश्यपक “हारल मनुक्ख” प्रविष्टि लघुकथा, प्रविष्टि आ “मानवता” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 31क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 4137 : विदेह-सदेह 31 — कुमार मनोज कश्यप: भावना

५७०. खण्ड 4137, सूचकांक पंक्ति 2828: कुमार मनोज कश्यपक “भावना” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) भावना
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

५७१. खण्ड 4137, सूचकांक पंक्ति 2828: कुमार मनोज कश्यपक “भावना”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लघुकथा
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

५७२. खण्ड 4137, सूचकांक पंक्ति 2828: कुमार मनोज कश्यपक “भावना”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) प्रविष्टि
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

५७३. खण्ड 4137, सूचकांक पंक्ति 2828: कुमार मनोज कश्यपक “भावना” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) वर्ग-भेद

५७४. खण्ड 4137, सूचकांक पंक्ति 2828: कुमार मनोज कश्यपक “भावना” प्रविष्टि विदेह-सदेह 31मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) वर्ग-भेद
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

५७५. खण्ड 4137, सूचकांक पंक्ति 2828: कुमार मनोज कश्यपक “भावना”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक कुमार मनोज कश्यप, विधा लघुकथा, उप-विधा प्रविष्टि
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

५७६. खण्ड 4137, सूचकांक पंक्ति 2828: कुमार मनोज कश्यपक “भावना” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

५७७. खण्ड 4137, सूचकांक पंक्ति 2828: कुमार मनोज कश्यपक “भावना”केँ विदेह-सदेह 31क लघुकथा-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ प्रविष्टिक रूपमे लघुकथा-संसारसँ जुड़ल अछि।

५७८. खण्ड 4137, सूचकांक पंक्ति 2828: कुमार मनोज कश्यपक “भावना” प्रविष्टि विदेह-सदेह 31क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

५७९. खण्ड 4137, सूचकांक पंक्ति 2828: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 4137, सूचकांक पंक्ति 2828मे कुमार मनोज कश्यपक “भावना” प्रविष्टि लघुकथा, प्रविष्टि आ “वर्ग-भेद” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 31क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 4138 : विदेह-सदेह 31 — कुमार मनोज कश्यप: बी०डी०ओ०

५८०. खण्ड 4138, सूचकांक पंक्ति 2829: कुमार मनोज कश्यपक “बी०डी०ओ०” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) बी०डी०ओ०
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

५८१. खण्ड 4138, सूचकांक पंक्ति 2829: कुमार मनोज कश्यपक “बी०डी०ओ०”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लघुकथा
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

५८२. खण्ड 4138, सूचकांक पंक्ति 2829: कुमार मनोज कश्यपक “बी०डी०ओ०”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) प्रविष्टि
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

५८३. खण्ड 4138, सूचकांक पंक्ति 2829: कुमार मनोज कश्यपक “बी०डी०ओ०” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ग्रामीण राजनीति

५८४. खण्ड 4138, सूचकांक पंक्ति 2829: कुमार मनोज कश्यपक “बी०डी०ओ०” प्रविष्टि विदेह-सदेह 31मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) ग्रामीण राजनीति
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

५८५. खण्ड 4138, सूचकांक पंक्ति 2829: कुमार मनोज कश्यपक “बी०डी०ओ०”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककें की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक कुमार मनोज कश्यप, विधा लघुकथा, उप-विधा प्रविष्टि
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

५८६. खण्ड 4138, सूचकांक पंक्ति 2829: कुमार मनोज कश्यपक “बी०डी०ओ०” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

५८७. खण्ड 4138, सूचकांक पंक्ति 2829: कुमार मनोज कश्यपक “बी०डी०ओ०”कें विदेह-सदेह 31क लघुकथा-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ प्रविष्टिक रूपमे लघुकथा-संसारसँ जुड़ल अछि।

५८८. खण्ड 4138, सूचकांक पंक्ति 2829: कुमार मनोज कश्यपक “बी०डी०ओ०” प्रविष्टि विदेह-सदेह 31क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

५८९. खण्ड 4138, सूचकांक पंक्ति 2829: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 4138, सूचकांक पंक्ति 2829मे कुमार मनोज कश्यपक “बी०डी०ओ०” प्रविष्टि लघुकथा, प्रविष्टि आ “ग्रामीण राजनीति” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 31क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 4139 : विदेह-सदेह 31 — डॉ. कामिनी कामायनी: अंकोरवट मंदिर

५९०. खण्ड 4139, सूचकांक पंक्ति 2830: डॉ. कामिनी कामायनीक “अंकोरवट मंदिर” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) अंकोरवट मंदिर
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

५९१. खण्ड 4139, सूचकांक पंक्ति 2830: डॉ. कामिनी कामायनीक “अंकोरवट मंदिर”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) कविता
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

५९२. खण्ड 4139, सूचकांक पंक्ति 2830: डॉ. कामिनी कामायनीक “अंकोरवट मंदिर”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) प्रविष्टि
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

५९३. खण्ड 4139, सूचकांक पंक्ति 2830: डॉ. कामिनी कामायनीक “अंकोरवट मंदिर” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) यात्रा-वर्णन

५९४. खण्ड 4139, सूचकांक पंक्ति 2830: डॉ. कामिनी कामायनीक “अंकोरवट मंदिर” प्रविष्टि विदेह-सदेह 31मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) यात्रा-वर्णन
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

५९५. खण्ड 4139, सूचकांक पंक्ति 2830: डॉ. कामिनी कामायनीक “अंकोरवट मंदिर”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककें की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक डॉ. कामिनी कामायनी, विधा कविता, उप-विधा प्रविष्टि
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

५९६. खण्ड 4139, सूचकांक पंक्ति 2830: डॉ. कामिनी कामायनीक “अंकोरवट मंदिर” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

५९७. खण्ड 4139, सूचकांक पंक्ति 2830: डॉ. कामिनी कामायनीक “अंकोरवट मंदिर”कें विदेह-सदेह 31क कविता-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ प्रविष्टिक रूपमे कविता-संसारसँ जुड़ल अछि।

५९८. खण्ड 4139, सूचकांक पंक्ति 2830: डॉ. कामिनी कामायनीक “अंकोरवट मंदिर” प्रविष्टि विदेह-सदेह 31क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

५९९. खण्ड 4139, सूचकांक पंक्ति 2830: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 4139, सूचकांक पंक्ति 2830मे डॉ. कामिनी कामायनीक “अंकोरवट मंदिर” प्रविष्टि कविता, प्रविष्टि आ “यात्रा-वर्णन” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 31क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 4140 : विदेह-सदेह 31 — डॉ. कामिनी कामायनी: जहिया ओ इतिहास सुनौलक

६००. खण्ड 4140, सूचकांक पंक्ति 2831: डॉ. कामिनी कामायनीक “जहिया ओ इतिहास सुनौलक” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) जहिया ओ इतिहास सुनौलक
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

६०१. खण्ड 4140, सूचकांक पंक्ति 2831: डॉ. कामिनी कामायनीक “जहिया ओ इतिहास सुनौलक”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) कविता
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

६०२. खण्ड 4140, सूचकांक पंक्ति 2831: डॉ. कामिनी कामायनीक “जहिया ओ इतिहास सुनौलक”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) प्रविष्टि
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

६०३. खण्ड 4140, सूचकांक पंक्ति 2831: डॉ. कामिनी कामायनीक “जहिया ओ इतिहास सुनौलक” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) इतिहास-दर्शन

६०४. खण्ड 4140, सूचकांक पंक्ति 2831: डॉ. कामिनी कामायनीक “जहिया ओ इतिहास सुनौलक” प्रविष्टि विदेह-सदेह 31मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) इतिहास-दर्शन
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

६०५. खण्ड 4140, सूचकांक पंक्ति 2831: डॉ. कामिनी कामायनीक “जहिया ओ इतिहास सुनौलक”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककें की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक डॉ. कामिनी कामायनी, विधा कविता, उप-विधा प्रविष्टि
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

६०६. खण्ड 4140, सूचकांक पंक्ति 2831: डॉ. कामिनी कामायनीक “जहिया ओ इतिहास सुनौलक” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

६०७. खण्ड 4140, सूचकांक पंक्ति 2831: डॉ. कामिनी कामायनीक “जहिया ओ इतिहास सुनौलक”कें विदेह-सदेह 31क कविता-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ प्रविष्टिक रूपमे कविता-संसारसँ जुड़ल अछि।

६०८. खण्ड 4140, सूचकांक पंक्ति 2831: डॉ. कामिनी कामायनीक “जहिया ओ इतिहास सुनौलक” प्रविष्टि विदेह-सदेह 31क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

६०९. खण्ड 4140, सूचकांक पंक्ति 2831: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 4140, सूचकांक पंक्ति 2831मे डॉ. कामिनी कामायनीक “जहिया ओ इतिहास सुनौलक” प्रविष्टि कविता, प्रविष्टि आ “इतिहास-दर्शन” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 31क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 4141 : विदेह-सदेह 31 — डॉ. कामिनी कामायनी: संग दिअ सदिखन अहिना

६१०. खण्ड 4141, सूचकांक पंक्ति 2832: डॉ. कामिनी कामायनीक “संग दिअ सदिखन अहिना” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) संग दिअ सदिखन अहिना
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

६११. खण्ड 4141, सूचकांक पंक्ति 2832: डॉ. कामिनी कामायनीक “संग दिअ सदिखन अहिना”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) कविता
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

६१२. खण्ड 4141, सूचकांक पंक्ति 2832: डॉ. कामिनी कामायनीक “संग दिअ सदिखन अहिना”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) प्रविष्टि
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

६१३. खण्ड 4141, सूचकांक पंक्ति 2832: डॉ. कामिनी कामायनीक “संग दिअ सदिखन अहिना” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) सहयात्री भाव

६१४. खण्ड 4141, सूचकांक पंक्ति 2832: डॉ. कामिनी कामायनीक “संग दिअ सदिखन अहिना” प्रविष्टि विदेह-सदेह 31मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) सहयात्री भाव
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

६१५. खण्ड 4141, सूचकांक पंक्ति 2832: डॉ. कामिनी कामायनीक “संग दिअ सदिखन अहिना”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककें की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक डॉ. कामिनी कामायनी, विधा कविता, उप-विधा प्रविष्टि
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

६१६. खण्ड 4141, सूचकांक पंक्ति 2832: डॉ. कामिनी कामायनीक “संग दिअ सदिखन अहिना” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

६१७. खण्ड 4141, सूचकांक पंक्ति 2832: डॉ. कामिनी कामायनीक “संग दिअ सदिखन अहिना”कें विदेह-सदेह 31क कविता-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ प्रविष्टिक रूपमे कविता-संसारसँ जुड़ल अछि।

६१८. खण्ड 4141, सूचकांक पंक्ति 2832: डॉ. कामिनी कामायनीक “संग दिअ सदिखन अहिना” प्रविष्टि विदेह-सदेह 31क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

६१९. खण्ड 4141, सूचकांक पंक्ति 2832: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 4141, सूचकांक पंक्ति 2832मे डॉ. कामिनी कामायनीक “संग दिअ सदिखन अहिना” प्रविष्टि कविता, प्रविष्टि आ “सहयात्री भाव” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 31क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 4142 : विदेह-सदेह 31 — डॉ. कामिनी कामायनी: वसंत

६२०. खण्ड 4142, सूचकांक पंक्ति 2833: डॉ. कामिनी कामायनीक “वसंत” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) वसंत
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

६२१. खण्ड 4142, सूचकांक पंक्ति 2833: डॉ. कामिनी कामायनीक “वसंत”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) कविता
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

६२२. खण्ड 4142, सूचकांक पंक्ति 2833: डॉ. कामिनी कामायनीक “वसंत”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) प्रविष्टि
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

६२३. खण्ड 4142, सूचकांक पंक्ति 2833: डॉ. कामिनी कामायनीक “वसंत” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) प्रकृति-वर्णन

६२४. खण्ड 4142, सूचकांक पंक्ति 2833: डॉ. कामिनी कामायनीक “वसंत” प्रविष्टि विदेह-सदेह 31मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) प्रकृति-वर्णन
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

६२५. खण्ड 4142, सूचकांक पंक्ति 2833: डॉ. कामिनी कामायनीक “वसंत”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक डॉ. कामिनी कामायनी, विधा कविता, उप-विधा प्रविष्टि
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

६२६. खण्ड 4142, सूचकांक पंक्ति 2833: डॉ. कामिनी कामायनीक “वसंत” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

६२७. खण्ड 4142, सूचकांक पंक्ति 2833: डॉ. कामिनी कामायनीक “वसंत”केँ विदेह-सदेह 31क कविता-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ प्रविष्टिक रूपमे कविता-संसारसँ जुड़ल अछि।

६२८. खण्ड 4142, सूचकांक पंक्ति 2833: डॉ. कामिनी कामायनीक “वसंत” प्रविष्टि विदेह-सदेह 31क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

६२९. खण्ड 4142, सूचकांक पंक्ति 2833: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 4142, सूचकांक पंक्ति 2833मे डॉ. कामिनी कामायनीक “वसंत” प्रविष्टि कविता, प्रविष्टि आ “प्रकृति-वर्णन” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 31क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 4143 : विदेह-सदेह 31 — डॉ. कामिनी कामायनी: बाजार मे स्त्री

६३०. खण्ड 4143, सूचकांक पंक्ति 2834: डॉ. कामिनी कामायनीक “बाजार मे स्त्री” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) बाजार मे स्त्री
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

६३१. खण्ड 4143, सूचकांक पंक्ति 2834: डॉ. कामिनी कामायनीक “बाजार मे स्त्री”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) कविता
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

६३२. खण्ड 4143, सूचकांक पंक्ति 2834: डॉ. कामिनी कामायनीक “बाजार मे स्त्री”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) प्रविष्टि
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

६३३. खण्ड 4143, सूचकांक पंक्ति 2834: डॉ. कामिनी कामायनीक “बाजार मे स्त्री” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) नारी-सशक्तिकरण

६३४. खण्ड 4143, सूचकांक पंक्ति 2834: डॉ. कामिनी कामायनीक “बाजार मे स्त्री” प्रविष्टि विदेह-सदेह 31मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) नारी-सशक्तिकरण
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

६३५. खण्ड 4143, सूचकांक पंक्ति 2834: डॉ. कामिनी कामायनीक “बाजार मे स्त्री”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककें की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक डॉ. कामिनी कामायनी, विधा कविता, उप-विधा प्रविष्टि
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

६३६. खण्ड 4143, सूचकांक पंक्ति 2834: डॉ. कामिनी कामायनीक “बाजार मे स्त्री” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

६३७. खण्ड 4143, सूचकांक पंक्ति 2834: डॉ. कामिनी कामायनीक “बाजार मे स्त्री”कें विदेह-सदेह 31क कविता-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ प्रविष्टिक रूपमे कविता-संसारसँ जुड़ल अछि।

६३८. खण्ड 4143, सूचकांक पंक्ति 2834: डॉ. कामिनी कामायनीक “बाजार मे स्त्री” प्रविष्टि विदेह-सदेह 31क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

६३९. खण्ड 4143, सूचकांक पंक्ति 2834: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 4143, सूचकांक पंक्ति 2834मे डॉ. कामिनी कामायनीक “बाजार मे स्त्री” प्रविष्टि कविता, प्रविष्टि आ “नारी-सशक्तिकरण” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 31क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 4144 : विदेह-सदेह 31 — डॉ. कामिनी कामायनी: बंजारा मोन

६४०. खण्ड 4144, सूचकांक पंक्ति 2835: डॉ. कामिनी कामायनीक “बंजारा मोन” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) बंजारा मोन
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

६४१. खण्ड 4144, सूचकांक पंक्ति 2835: डॉ. कामिनी कामायनीक “बंजारा मोन”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) कविता
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

६४२. खण्ड 4144, सूचकांक पंक्ति 2835: डॉ. कामिनी कामायनीक “बंजारा मोन”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) प्रविष्टि
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

६४३. खण्ड 4144, सूचकांक पंक्ति 2835: डॉ. कामिनी कामायनीक “बंजारा मोन” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) मनक चंचलता

६४४. खण्ड 4144, सूचकांक पंक्ति 2835: डॉ. कामिनी कामायनीक “बंजारा मोन” प्रविष्टि विदेह-सदेह 31मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) मनक चंचलता
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

६४५. खण्ड 4144, सूचकांक पंक्ति 2835: डॉ. कामिनी कामायनीक “बंजारा मोन”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककें की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक डॉ. कामिनी कामायनी, विधा कविता, उप-विधा प्रविष्टि
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

६४६. खण्ड 4144, सूचकांक पंक्ति 2835: डॉ. कामिनी कामायनीक “बंजारा मोन” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

६४७. खण्ड 4144, सूचकांक पंक्ति 2835: डॉ. कामिनी कामायनीक “बंजारा मोन”कें विदेह-सदेह 31क कविता-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ प्रविष्टिक रूपमे कविता-संसारसँ जुड़ल अछि।

६४८. खण्ड 4144, सूचकांक पंक्ति 2835: डॉ. कामिनी कामायनीक “बंजारा मोन” प्रविष्टि विदेह-सदेह 31क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

६४९. खण्ड 4144, सूचकांक पंक्ति 2835: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 4144, सूचकांक पंक्ति 2835मे डॉ. कामिनी कामायनीक “बंजारा मोन” प्रविष्टि कविता, प्रविष्टि आ “मनक चंचलता” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 31क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 4145 : विदेह-सदेह 31 — डॉ. कामिनी कामायनी: द्रौपदी

६५०. खण्ड 4145, सूचकांक पंक्ति 2836: डॉ. कामिनी कामायनीक “द्रौपदी” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) द्रौपदी
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

६५१. खण्ड 4145, सूचकांक पंक्ति 2836: डॉ. कामिनी कामायनीक “द्रौपदी”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) दीर्घ-कविता
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

६५२. खण्ड 4145, सूचकांक पंक्ति 2836: डॉ. कामिनी कामायनीक “द्रौपदी”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) प्रविष्टि
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

६५३. खण्ड 4145, सूचकांक पंक्ति 2836: डॉ. कामिनी कामायनीक “द्रौपदी” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) नारी-विमर्श

६५४. खण्ड 4145, सूचकांक पंक्ति 2836: डॉ. कामिनी कामायनीक “द्रौपदी” प्रविष्टि विदेह-सदेह 31मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) नारी-विमर्श
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

६५५. खण्ड 4145, सूचकांक पंक्ति 2836: डॉ. कामिनी कामायनीक “द्रौपदी”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक डॉ. कामिनी कामायनी, विधा दीर्घ-कविता, उप-विधा प्रविष्टि
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

६५६. खण्ड 4145, सूचकांक पंक्ति 2836: डॉ. कामिनी कामायनीक “द्रौपदी” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

६५७. खण्ड 4145, सूचकांक पंक्ति 2836: डॉ. कामिनी कामायनीक “द्रौपदी”कें विदेह-सदेह 31क दीर्घ-कविता-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ प्रविष्टिक रूपमे दीर्घ-कविता-संसारसँ जुड़ल अछि।

६५८. खण्ड 4145, सूचकांक पंक्ति 2836: डॉ. कामिनी कामायनीक “द्रौपदी” प्रविष्टि विदेह-सदेह 31क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

६५९. खण्ड 4145, सूचकांक पंक्ति 2836: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 4145, सूचकांक पंक्ति 2836मे डॉ. कामिनी कामायनीक “द्रौपदी” प्रविष्टि दीर्घ-कविता, प्रविष्टि आ “नारी-विमर्श” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 31क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 4146 : विदेह-सदेह 31 — डॉ. कामिनी कामायनी: यशोधरा

६६०. खण्ड 4146, सूचकांक पंक्ति 2837: डॉ. कामिनी कामायनीक “यशोधरा” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) यशोधरा
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

६६१. खण्ड 4146, सूचकांक पंक्ति 2837: डॉ. कामिनी कामायनीक “यशोधरा”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) दीर्घ-कविता
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

६६२. खण्ड 4146, सूचकांक पंक्ति 2837: डॉ. कामिनी कामायनीक “यशोधरा”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) प्रविष्टि
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

६६३. खण्ड 4146, सूचकांक पंक्ति 2837: डॉ. कामिनी कामायनीक “यशोधरा” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) बौद्ध-दर्शन

६६४. खण्ड 4146, सूचकांक पंक्ति 2837: डॉ. कामिनी कामायनीक “यशोधरा” प्रविष्टि विदेह-सदेह 31मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) बौद्ध-दर्शन
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

६६५. खण्ड 4146, सूचकांक पंक्ति 2837: डॉ. कामिनी कामायनीक “यशोधरा”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककें की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक डॉ. कामिनी कामायनी, विधा दीर्घ-कविता, उप-विधा प्रविष्टि
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

६६६. खण्ड 4146, सूचकांक पंक्ति 2837: डॉ. कामिनी कामायनीक “यशोधरा” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

६६७. खण्ड 4146, सूचकांक पंक्ति 2837: डॉ. कामिनी कामायनीक “यशोधरा”कें विदेह-सदेह 31क दीर्घ-कविता-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ प्रविष्टिक रूपमे दीर्घ-कविता-संसारसँ जुड़ल अछि।

६६८. खण्ड 4146, सूचकांक पंक्ति 2837: डॉ. कामिनी कामायनीक “यशोधरा” प्रविष्टि विदेह-सदेह 31क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

६६९. खण्ड 4146, सूचकांक पंक्ति 2837: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 4146, सूचकांक पंक्ति 2837मे डॉ. कामिनी कामायनीक “यशोधरा” प्रविष्टि दीर्घ-कविता, प्रविष्टि आ “बौद्ध-दर्शन” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 31क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 4147 : विदेह-सदेह 31 — डॉ. कामिनी कामायनी: गांधारी

६७०. खण्ड 4147, सूचकांक पंक्ति 2838: डॉ. कामिनी कामायनीक “गांधारी” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) गांधारी
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

६७१. खण्ड 4147, सूचकांक पंक्ति 2838: डॉ. कामिनी कामायनीक “गांधारी”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) दीर्घ-कविता
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

६७२. खण्ड 4147, सूचकांक पंक्ति 2838: डॉ. कामिनी कामायनीक “गांधारी”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) प्रविष्टि
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

६७३. खण्ड 4147, सूचकांक पंक्ति 2838: डॉ. कामिनी कामायनीक “गांधारी” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) महाभारत-पुनर्पाठ

६७४. खण्ड 4147, सूचकांक पंक्ति 2838: डॉ. कामिनी कामायनीक “गांधारी” प्रविष्टि विदेह-सदेह 31मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) महाभारत-पुनर्पाठ
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

६७५. खण्ड 4147, सूचकांक पंक्ति 2838: डॉ. कामिनी कामायनीक “गांधारी”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककें की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक डॉ. कामिनी कामायनी, विधा दीर्घ-कविता, उप-विधा प्रविष्टि
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

६७६. खण्ड 4147, सूचकांक पंक्ति 2838: डॉ. कामिनी कामायनीक “गांधारी” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

६७७. खण्ड 4147, सूचकांक पंक्ति 2838: डॉ. कामिनी कामायनीक “गांधारी”कें विदेह-सदेह 31क दीर्घ-कविता-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ प्रविष्टिक रूपमे दीर्घ-कविता-संसारसँ जुड़ल अछि।

६७८. खण्ड 4147, सूचकांक पंक्ति 2838: डॉ. कामिनी कामायनीक “गांधारी” प्रविष्टि विदेह-सदेह 31क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

६७९. खण्ड 4147, सूचकांक पंक्ति 2838: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 4147, सूचकांक पंक्ति 2838मे डॉ. कामिनी कामायनीक “गांधारी” प्रविष्टि दीर्घ-कविता, प्रविष्टि आ “महाभारत-पुनर्पाठ” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 31क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 4148 : विदेह-सदेह 31 — डॉ. कामिनी कामायनी: शकुनतला (सकुन)

६८०. खण्ड 4148, सूचकांक पंक्ति 2839: डॉ. कामिनी कामायनीक “शकुनतला (सकुन)” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) शकुनतला (सकुन)
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

६८१. खण्ड 4148, सूचकांक पंक्ति 2839: डॉ. कामिनी कामायनीक “शकुनतला (सकुन)”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) दीर्घ-कविता
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

६८२. खण्ड 4148, सूचकांक पंक्ति 2839: डॉ. कामिनी कामायनीक “शकुनतला (सकुन)”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) प्रविष्टि
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

६८३. खण्ड 4148, सूचकांक पंक्ति 2839: डॉ. कामिनी कामायनीक “शकुनतला (सकुन)” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) पौराणिक प्रेम

६८४. खण्ड 4148, सूचकांक पंक्ति 2839: डॉ. कामिनी कामायनीक “शकुनतला (सकुन)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 31मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) पौराणिक प्रेम
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

६८५. खण्ड 4148, सूचकांक पंक्ति 2839: डॉ. कामिनी कामायनीक “शकुनतला (सकुन)”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककें की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक डॉ. कामिनी कामायनी, विधा दीर्घ-कविता, उप-विधा प्रविष्टि
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

६८६. खण्ड 4148, सूचकांक पंक्ति 2839: डॉ. कामिनी कामायनीक “शकुनतला (सकुन)” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

६८७. खण्ड 4148, सूचकांक पंक्ति 2839: डॉ. कामिनी कामायनीक “शकुनतला (सकुन)”कें विदेह-सदेह 31क दीर्घ-कविता-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ प्रविष्टिक रूपमे दीर्घ-कविता-संसारसँ जुड़ल अछि।

६८८. खण्ड 4148, सूचकांक पंक्ति 2839: डॉ. कामिनी कामायनीक “शकुनतला (सकुन)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 31क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

६८९. खण्ड 4148, सूचकांक पंक्ति 2839: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 4148, सूचकांक पंक्ति 2839मे डॉ. कामिनी कामायनीक “शकुनतला (सकुन)” प्रविष्टि दीर्घ-कविता, प्रविष्टि आ “पौराणिक प्रेम” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 31क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 4149 : विदेह-सदेह 31 — डॉ. कामिनी कामायनी: फागुन राग

६९०. खण्ड 4149, सूचकांक पंक्ति 2840: डॉ. कामिनी कामायनीक “फागुन राग” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) फागुन राग
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

६९१. खण्ड 4149, सूचकांक पंक्ति 2840: डॉ. कामिनी कामायनीक “फागुन राग”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) कविता
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

६९२. खण्ड 4149, सूचकांक पंक्ति 2840: डॉ. कामिनी कामायनीक “फागुन राग”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) प्रविष्टि
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

६९३. खण्ड 4149, सूचकांक पंक्ति 2840: डॉ. कामिनी कामायनीक “फागुन राग” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) लोक-उत्सव

६९४. खण्ड 4149, सूचकांक पंक्ति 2840: डॉ. कामिनी कामायनीक “फागुन राग” प्रविष्टि विदेह-सदेह 31मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) लोक-उत्सव
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

६९५. खण्ड 4149, सूचकांक पंक्ति 2840: डॉ. कामिनी कामायनीक “फागुन राग”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक डॉ. कामिनी कामायनी, विधा कविता, उप-विधा प्रविष्टि
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

६९६. खण्ड 4149, सूचकांक पंक्ति 2840: डॉ. कामिनी कामायनीक “फागुन राग” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

६९७. खण्ड 4149, सूचकांक पंक्ति 2840: डॉ. कामिनी कामायनीक “फागुन राग”केँ विदेह-सदेह 31क कविता-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ प्रविष्टिक रूपमे कविता-संसारसँ जुड़ल अछि।

६९८. खण्ड 4149, सूचकांक पंक्ति 2840: डॉ. कामिनी कामायनीक “फागुन राग” प्रविष्टि विदेह-सदेह 31क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

६९९. खण्ड 4149, सूचकांक पंक्ति 2840: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 4149, सूचकांक पंक्ति 2840मे डॉ. कामिनी कामायनीक “फागुन राग” प्रविष्टि कविता, प्रविष्टि आ “लोक-उत्सव” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 31क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 4150 : विदेह-सदेह 31 — डॉ. कामिनी कामायनी: काशीक घाट

७००. खण्ड 4150, सूचकांक पंक्ति 2841: डॉ. कामिनी कामायनीक “काशीक घाट” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) काशीक घाट
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

७०१. खण्ड 4150, सूचकांक पंक्ति 2841: डॉ. कामिनी कामायनीक “काशीक घाट”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) कविता
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

७०२. खण्ड 4150, सूचकांक पंक्ति 2841: डॉ. कामिनी कामायनीक “काशीक घाट”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) प्रविष्टि
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

७०३. खण्ड 4150, सूचकांक पंक्ति 2841: डॉ. कामिनी कामायनीक “काशीक घाट” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) आध्यात्मिक

७०४. खण्ड 4150, सूचकांक पंक्ति 2841: डॉ. कामिनी कामायनीक “काशीक घाट” प्रविष्टि विदेह-सदेह 31मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) आध्यात्मिक
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

७०५. खण्ड 4150, सूचकांक पंक्ति 2841: डॉ. कामिनी कामायनीक “काशीक घाट”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककें की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक डॉ. कामिनी कामायनी, विधा कविता, उप-विधा प्रविष्टि
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

७०६. खण्ड 4150, सूचकांक पंक्ति 2841: डॉ. कामिनी कामायनीक “काशीक घाट” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

७०७. खण्ड 4150, सूचकांक पंक्ति 2841: डॉ. कामिनी कामायनीक “काशीक घाट”कें विदेह-सदेह 31क कविता-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ प्रविष्टिक रूपमे कविता-संसारसँ जुड़ल अछि।

७०८. खण्ड 4150, सूचकांक पंक्ति 2841: डॉ. कामिनी कामायनीक “काशीक घाट” प्रविष्टि विदेह-सदेह 31क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

७०९. खण्ड 4150, सूचकांक पंक्ति 2841: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 4150, सूचकांक पंक्ति 2841मे डॉ. कामिनी कामायनीक “काशीक घाट” प्रविष्टि कविता, प्रविष्टि आ “आध्यात्मिक” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 31क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 4151 : विदेह-सदेह 31 — डॉ. कामिनी कामायनी: चिडैक अभिलाष

७१०. खण्ड 4151, सूचकांक पंक्ति 2842: डॉ. कामिनी कामायनीक “चिडैक अभिलाष” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) चिडैक अभिलाष
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

७११. खण्ड 4151, सूचकांक पंक्ति 2842: डॉ. कामिनी कामायनीक “चिडैक अभिलाष”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) कविता
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

७१२. खण्ड 4151, सूचकांक पंक्ति 2842: डॉ. कामिनी कामायनीक “चिडैक अभिलाष”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) प्रविष्टि
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

७१३. खण्ड 4151, सूचकांक पंक्ति 2842: डॉ. कामिनी कामायनीक “चिडैक अभिलाष” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) प्रतीकात्मक

७१४. खण्ड 4151, सूचकांक पंक्ति 2842: डॉ. कामिनी कामायनीक “चिडैक अभिलाष” प्रविष्टि विदेह-सदेह 31मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) प्रतीकात्मक
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

७१५. खण्ड 4151, सूचकांक पंक्ति 2842: डॉ. कामिनी कामायनीक “चिडैक अभिलाष”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककें की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक डॉ. कामिनी कामायनी, विधा कविता, उप-विधा प्रविष्टि
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

७१६. खण्ड 4151, सूचकांक पंक्ति 2842: डॉ. कामिनी कामायनीक “चिडैक अभिलाष” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

७१७. खण्ड 4151, सूचकांक पंक्ति 2842: डॉ. कामिनी कामायनीक “चिडैक अभिलाष”कें विदेह-सदेह 31क कविता-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ प्रविष्टिक रूपमे कविता-संसारसँ जुड़ल अछि।

७१८. खण्ड 4151, सूचकांक पंक्ति 2842: डॉ. कामिनी कामायनीक “चिडैक अभिलाष” प्रविष्टि विदेह-सदेह 31क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

७१९. खण्ड 4151, सूचकांक पंक्ति 2842: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 4151, सूचकांक पंक्ति 2842मे डॉ. कामिनी कामायनीक “चिडैक अभिलाष” प्रविष्टि कविता, प्रविष्टि आ “प्रतीकात्मक” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 31क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 4152 : विदेह-सदेह 31 — डॉ. कामिनी कामायनी: भटकैत स्वप्न

७२०. खण्ड 4152, सूचकांक पंक्ति 2843: डॉ. कामिनी कामायनीक “भटकैत स्वप्न” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) भटकैत स्वप्न
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

७२१. खण्ड 4152, सूचकांक पंक्ति 2843: डॉ. कामिनी कामायनीक “भटकैत स्वप्न”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) कविता
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

७२२. खण्ड 4152, सूचकांक पंक्ति 2843: डॉ. कामिनी कामायनीक “भटकैत स्वप्न”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) प्रविष्टि
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

७२३. खण्ड 4152, सूचकांक पंक्ति 2843: डॉ. कामिनी कामायनीक “भटकैत स्वप्न” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?
- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
 (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
 (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
 (D) आधुनिक जीवन
७२४. खण्ड 4152, सूचकांक पंक्ति 2843: डॉ. कामिनी कामायनीक “भटकैत स्वप्न” प्रविष्टि विदेह-सदेह 31मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?
- (A) आधुनिक जीवन
 (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
 (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
 (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
७२५. खण्ड 4152, सूचकांक पंक्ति 2843: डॉ. कामिनी कामायनीक “भटकैत स्वप्न”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककें की मुख्य सूचना दैत अछि?
- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
 (B) लेखक डॉ. कामिनी कामायनी, विधा कविता, उप-विधा प्रविष्टि
 (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
 (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
७२६. खण्ड 4152, सूचकांक पंक्ति 2843: डॉ. कामिनी कामायनीक “भटकैत स्वप्न” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?
- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
 (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
 (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
 (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
७२७. खण्ड 4152, सूचकांक पंक्ति 2843: डॉ. कामिनी कामायनीक “भटकैत स्वप्न”कें विदेह-सदेह 31क कविता-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?
- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
 (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
 (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
 (D) ई पाठ प्रविष्टिक रूपमे कविता-संसारसँ जुड़ल अछि।
७२८. खण्ड 4152, सूचकांक पंक्ति 2843: डॉ. कामिनी कामायनीक “भटकैत स्वप्न” प्रविष्टि विदेह-सदेह 31क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?
- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
 (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
 (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
 (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
७२९. खण्ड 4152, सूचकांक पंक्ति 2843: एहि खण्डक सार की अछि?
- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
 (B) खण्ड 4152, सूचकांक पंक्ति 2843मे डॉ. कामिनी कामायनीक “भटकैत स्वप्न” प्रविष्टि कविता, प्रविष्टि आ “आधुनिक जीवन” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 31क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि।
 (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
 (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 4153 : विदेह-सदेह 31 — डॉ. कामिनी कामायनी: आजुक विद्यार्थी

७३०. खण्ड 4153, सूचकांक पंक्ति 2844: डॉ. कामिनी कामायनीक “आजुक विद्यार्थी” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) आजुक विद्यार्थी
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

७३१. खण्ड 4153, सूचकांक पंक्ति 2844: डॉ. कामिनी कामायनीक “आजुक विद्यार्थी”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) कविता
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

७३२. खण्ड 4153, सूचकांक पंक्ति 2844: डॉ. कामिनी कामायनीक “आजुक विद्यार्थी”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) प्रविष्टि
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

७३३. खण्ड 4153, सूचकांक पंक्ति 2844: डॉ. कामिनी कामायनीक “आजुक विद्यार्थी” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) शिक्षा-व्यवस्था

७३४. खण्ड 4153, सूचकांक पंक्ति 2844: डॉ. कामिनी कामायनीक “आजुक विद्यार्थी” प्रविष्टि विदेह-सदेह 31मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) शिक्षा-व्यवस्था
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

७३५. खण्ड 4153, सूचकांक पंक्ति 2844: डॉ. कामिनी कामायनीक “आजुक विद्यार्थी”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककें की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक डॉ. कामिनी कामायनी, विधा कविता, उप-विधा प्रविष्टि
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

७३६. खण्ड 4153, सूचकांक पंक्ति 2844: डॉ. कामिनी कामायनीक “आजुक विद्यार्थी” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

७३७. खण्ड 4153, सूचकांक पंक्ति 2844: डॉ. कामिनी कामायनीक “आजुक विद्यार्थी”कें विदेह-सदेह 31क कविता-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ प्रविष्टिक रूपमे कविता-संसारसँ जुड़ल अछि।

७३८. खण्ड 4153, सूचकांक पंक्ति 2844: डॉ. कामिनी कामायनीक “आजुक विद्यार्थी” प्रविष्टि विदेह-सदेह 31क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

७३९. खण्ड 4153, सूचकांक पंक्ति 2844: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 4153, सूचकांक पंक्ति 2844मे डॉ. कामिनी कामायनीक “आजुक विद्यार्थी” प्रविष्टि कविता, प्रविष्टि आ “शिक्षा-व्यवस्था” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 31क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 4154 : विदेह-सदेह 31 — डॉ. कामिनी कामायनी: असमंजस

७४०. खण्ड 4154, सूचकांक पंक्ति 2845: डॉ. कामिनी कामायनीक “असमंजस” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) असमंजस
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

७४१. खण्ड 4154, सूचकांक पंक्ति 2845: डॉ. कामिनी कामायनीक “असमंजस”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) कविता
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

७४२. खण्ड 4154, सूचकांक पंक्ति 2845: डॉ. कामिनी कामायनीक “असमंजस”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) प्रविष्टि
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

७४३. खण्ड 4154, सूचकांक पंक्ति 2845: डॉ. कामिनी कामायनीक “असमंजस” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) प्रेरणा

७४४. खण्ड 4154, सूचकांक पंक्ति 2845: डॉ. कामिनी कामायनीक “असमंजस” प्रविष्टि विदेह-सदेह 31मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) प्रेरणा
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

७४५. खण्ड 4154, सूचकांक पंक्ति 2845: डॉ. कामिनी कामायनीक “असमंजस”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक डॉ. कामिनी कामायनी, विधा कविता, उप-विधा प्रविष्टि
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

७४६. खण्ड 4154, सूचकांक पंक्ति 2845: डॉ. कामिनी कामायनीक “असमंजस” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

७४७. खण्ड 4154, सूचकांक पंक्ति 2845: डॉ. कामिनी कामायनीक “असमंजस”क विदेह-सदेह 31क कविता-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ प्रविष्टिक रूपमे कविता-संसारसँ जुड़ल अछि।

७४८. खण्ड 4154, सूचकांक पंक्ति 2845: डॉ. कामिनी कामायनीक “असमंजस” प्रविष्टि विदेह-सदेह 31क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

७४९. खण्ड 4154, सूचकांक पंक्ति 2845: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 4154, सूचकांक पंक्ति 2845मे डॉ. कामिनी कामायनीक “असमंजस” प्रविष्टि कविता, प्रविष्टि आ “प्रेरणा” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 31क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 4155 : विदेह-सदेह 31 — डॉ. कामिनी कामायनी: आतंकी गाम

७५०. खण्ड 4155, सूचकांक पंक्ति 2846: डॉ. कामिनी कामायनीक “आतंकी गाम” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) आतंकी गाम
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

७५१. खण्ड 4155, सूचकांक पंक्ति 2846: डॉ. कामिनी कामायनीक “आतंकी गाम”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) कविता
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

७५२. खण्ड 4155, सूचकांक पंक्ति 2846: डॉ. कामिनी कामायनीक “आतंकी गाम”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) प्रविष्टि
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

७५३. खण्ड 4155, सूचकांक पंक्ति 2846: डॉ. कामिनी कामायनीक “आतंकी गाम” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) सामाजिक बदलाव

७५४. खण्ड 4155, सूचकांक पंक्ति 2846: डॉ. कामिनी कामायनीक “आतंकी गाम” प्रविष्टि विदेह-सदेह 31मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) सामाजिक बदलाव
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

७५५. खण्ड 4155, सूचकांक पंक्ति 2846: डॉ. कामिनी कामायनीक “आतंकी गाम”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककें की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक डॉ. कामिनी कामायनी, विधा कविता, उप-विधा प्रविष्टि
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

७५६. खण्ड 4155, सूचकांक पंक्ति 2846: डॉ. कामिनी कामायनीक “आतंकी गाम” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

७५७. खण्ड 4155, सूचकांक पंक्ति 2846: डॉ. कामिनी कामायनीक “आतंकी गाम”कें विदेह-सदेह 31क कविता-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ प्रविष्टिक रूपमे कविता-संसारसँ जुड़ल अछि।

७५८. खण्ड 4155, सूचकांक पंक्ति 2846: डॉ. कामिनी कामायनीक “आतंकी गाम” प्रविष्टि विदेह-सदेह 31क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

७५९. खण्ड 4155, सूचकांक पंक्ति 2846: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 4155, सूचकांक पंक्ति 2846मे डॉ. कामिनी कामायनीक “आतंकी गाम” प्रविष्टि कविता, प्रविष्टि आ “सामाजिक बदलाव” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 31क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 4156 : विदेह-सदेह 31 — डॉ. कामिनी कामायनी: लिखत के प्रेम गीत

७६०. खण्ड 4156, सूचकांक पंक्ति 2847: डॉ. कामिनी कामायनीक “लिखत के प्रेम गीत” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) लिखत के प्रेम गीत
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

७६१. खण्ड 4156, सूचकांक पंक्ति 2847: डॉ. कामिनी कामायनीक “लिखत के प्रेम गीत”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) कविता
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

७६२. खण्ड 4156, सूचकांक पंक्ति 2847: डॉ. कामिनी कामायनीक “लिखत के प्रेम गीत”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) प्रविष्टि
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

७६३. खण्ड 4156, सूचकांक पंक्ति 2847: डॉ. कामिनी कामायनीक “लिखत के प्रेम गीत” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) प्रेम

७६४. खण्ड 4156, सूचकांक पंक्ति 2847: डॉ. कामिनी कामायनीक “लिखत के प्रेम गीत” प्रविष्टि विदेह-सदेह 31मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) प्रेम
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

७६५. खण्ड 4156, सूचकांक पंक्ति 2847: डॉ. कामिनी कामायनीक “लिखत के प्रेम गीत”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककें की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक डॉ. कामिनी कामायनी, विधा कविता, उप-विधा प्रविष्टि
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

७६६. खण्ड 4156, सूचकांक पंक्ति 2847: डॉ. कामिनी कामायनीक “लिखत के प्रेम गीत” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

७६७. खण्ड 4156, सूचकांक पंक्ति 2847: डॉ. कामिनी कामायनीक “लिखत के प्रेम गीत”कें विदेह-सदेह 31क कविता-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ प्रविष्टिक रूपमे कविता-संसारसँ जुड़ल अछि।

७६८. खण्ड 4156, सूचकांक पंक्ति 2847: डॉ. कामिनी कामायनीक “लिखत के प्रेम गीत” प्रविष्टि विदेह-सदेह 31क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

७६९. खण्ड 4156, सूचकांक पंक्ति 2847: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 4156, सूचकांक पंक्ति 2847मे डॉ. कामिनी कामायनीक “लिखत के प्रेम गीत” प्रविष्टि कविता, प्रविष्टि आ “प्रेम” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 31क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 4157 : विदेह-सदेह 31 — डॉ. कामिनी कामायनी: आखिर कहिया धरि

७७०. खण्ड 4157, सूचकांक पंक्ति 2848: डॉ. कामिनी कामायनीक “आखिर कहिया धरि” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) आखिर कहिया धरि
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

७७१. खण्ड 4157, सूचकांक पंक्ति 2848: डॉ. कामिनी कामायनीक “आखिर कहिया धरि”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) कविता
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

७७२. खण्ड 4157, सूचकांक पंक्ति 2848: डॉ. कामिनी कामायनीक “आखिर कहिया धरि”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) प्रविष्टि
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

७७३. खण्ड 4157, सूचकांक पंक्ति 2848: डॉ. कामिनी कामायनीक “आखिर कहिया धरि” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) सामाजिक आलोचना

७७४. खण्ड 4157, सूचकांक पंक्ति 2848: डॉ. कामिनी कामायनीक “आखिर कहिया धरि” प्रविष्टि विदेह-सदेह 31मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) सामाजिक आलोचना
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

७७५. खण्ड 4157, सूचकांक पंक्ति 2848: डॉ. कामिनी कामायनीक “आखिर कहिया धरि”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक डॉ. कामिनी कामायनी, विधा कविता, उप-विधा प्रविष्टि
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

७७६. खण्ड 4157, सूचकांक पंक्ति 2848: डॉ. कामिनी कामायनीक “आखिर कहिया धरि” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

७७७. खण्ड 4157, सूचकांक पंक्ति 2848: डॉ. कामिनी कामायनीक “आखिर कहिया धरि”केँ विदेह-सदेह 31क कविता-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ प्रविष्टिक रूपमे कविता-संसारसँ जुड़ल अछि।

७७८. खण्ड 4157, सूचकांक पंक्ति 2848: डॉ. कामिनी कामायनीक “आखिर कहिया धरि” प्रविष्टि विदेह-सदेह 31क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

७७९. खण्ड 4157, सूचकांक पंक्ति 2848: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 4157, सूचकांक पंक्ति 2848मे डॉ. कामिनी कामायनीक “आखिर कहिया धरि” प्रविष्टि कविता, प्रविष्टि आ “सामाजिक आलोचना” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 31क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 4158 : विदेह-सदेह 31 — डॉ. कामिनी कामायनी: भाषा

७८०. खण्ड 4158, सूचकांक पंक्ति 2849: डॉ. कामिनी कामायनीक “भाषा” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) भाषा
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

७८१. खण्ड 4158, सूचकांक पंक्ति 2849: डॉ. कामिनी कामायनीक “भाषा”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) कविता
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

७८२. खण्ड 4158, सूचकांक पंक्ति 2849: डॉ. कामिनी कामायनीक “भाषा”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) प्रविष्टि
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

७८३. खण्ड 4158, सूचकांक पंक्ति 2849: डॉ. कामिनी कामायनीक “भाषा” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) मातृभाषा-प्रेम

७८४. खण्ड 4158, सूचकांक पंक्ति 2849: डॉ. कामिनी कामायनीक “भाषा” प्रविष्टि विदेह-सदेह 31मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) मातृभाषा-प्रेम
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

७८५. खण्ड 4158, सूचकांक पंक्ति 2849: डॉ. कामिनी कामायनीक “भाषा”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककें की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक डॉ. कामिनी कामायनी, विधा कविता, उप-विधा प्रविष्टि
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

७८६. खण्ड 4158, सूचकांक पंक्ति 2849: डॉ. कामिनी कामायनीक “भाषा” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

७८७. खण्ड 4158, सूचकांक पंक्ति 2849: डॉ. कामिनी कामायनीक “भाषा”कें विदेह-सदेह 31क कविता-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ प्रविष्टिक रूपमे कविता-संसारसँ जुड़ल अछि।

७८८. खण्ड 4158, सूचकांक पंक्ति 2849: डॉ. कामिनी कामायनीक “भाषा” प्रविष्टि विदेह-सदेह 31क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

७८९. खण्ड 4158, सूचकांक पंक्ति 2849: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 4158, सूचकांक पंक्ति 2849मे डॉ. कामिनी कामायनीक “भाषा” प्रविष्टि कविता, प्रविष्टि आ “मातृभाषा-प्रेम” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 31क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 4159 : विदेह-सदेह 31 — डॉ. कामिनी कामायनी: चक्का

७९०. खण्ड 4159, सूचकांक पंक्ति 2850: डॉ. कामिनी कामायनीक “चक्का” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) चक्का
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

७९१. खण्ड 4159, सूचकांक पंक्ति 2850: डॉ. कामिनी कामायनीक “चक्का”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) कविता
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

७९२. खण्ड 4159, सूचकांक पंक्ति 2850: डॉ. कामिनी कामायनीक “चक्का”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) प्रविष्टि
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

७९३. खण्ड 4159, सूचकांक पंक्ति 2850: डॉ. कामिनी कामायनीक “चक्का” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) आधुनिकताक प्रभाव

७९४. खण्ड 4159, सूचकांक पंक्ति 2850: डॉ. कामिनी कामायनीक “चक्का” प्रविष्टि विदेह-सदेह 31मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) आधुनिकताक प्रभाव
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

७९५. खण्ड 4159, सूचकांक पंक्ति 2850: डॉ. कामिनी कामायनीक “चक्का”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक डॉ. कामिनी कामायनी, विधा कविता, उप-विधा प्रविष्टि
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

७९६. खण्ड 4159, सूचकांक पंक्ति 2850: डॉ. कामिनी कामायनीक “चक्का” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

७९७. खण्ड 4159, सूचकांक पंक्ति 2850: डॉ. कामिनी कामायनीक “चक्का”केँ विदेह-सदेह 31क कविता-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ प्रविष्टिक रूपमे कविता-संसारसँ जुड़ल अछि।

७९८. खण्ड 4159, सूचकांक पंक्ति 2850: डॉ. कामिनी कामायनीक “चक्का” प्रविष्टि विदेह-सदेह 31क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

७९९. खण्ड 4159, सूचकांक पंक्ति 2850: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 4159, सूचकांक पंक्ति 2850मे डॉ. कामिनी कामायनीक “चक्का” प्रविष्टि कविता, प्रविष्टि आ “आधुनिकताक प्रभाव” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 31क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 4160 : विदेह-सदेह 31 — डॉ. कामिनी कामायनी: ई केकर शोणित?

८००. खण्ड 4160, सूचकांक पंक्ति 2851: डॉ. कामिनी कामायनीक “ई केकर शोणित?” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) ई केकर शोणित?
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

८०१. खण्ड 4160, सूचकांक पंक्ति 2851: डॉ. कामिनी कामायनीक “ई केकर शोणित?”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) कविता
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

८०२. खण्ड 4160, सूचकांक पंक्ति 2851: डॉ. कामिनी कामायनीक “ई केकर शोणित?”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) प्रविष्टि
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

८०३. खण्ड 4160, सूचकांक पंक्ति 2851: डॉ. कामिनी कामायनीक “ई केकर शोणित?” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) प्रवासी श्रमिक

८०४. खण्ड 4160, सूचकांक पंक्ति 2851: डॉ. कामिनी कामायनीक “ई केकर शोणित?” प्रविष्टि विदेह-सदेह 31मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) प्रवासी श्रमिक
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

८०५. खण्ड 4160, सूचकांक पंक्ति 2851: डॉ. कामिनी कामायनीक “ई केकर शोणित?”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक डॉ. कामिनी कामायनी, विधा कविता, उप-विधा प्रविष्टि
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

८०६. खण्ड 4160, सूचकांक पंक्ति 2851: डॉ. कामिनी कामायनीक “ई केकर शोणित?” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

८०७. खण्ड 4160, सूचकांक पंक्ति 2851: डॉ. कामिनी कामायनीक “ई केकर शोणित?”कें विदेह-सदेह 31क कविता-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ प्रविष्टिक रूपमे कविता-संसारसँ जुड़ल अछि।

८०८. खण्ड 4160, सूचकांक पंक्ति 2851: डॉ. कामिनी कामायनीक “ई केकर शोणित?” प्रविष्टि विदेह-सदेह 31क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

८०९. खण्ड 4160, सूचकांक पंक्ति 2851: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 4160, सूचकांक पंक्ति 2851मे डॉ. कामिनी कामायनीक “ई केकर शोणित?” प्रविष्टि कविता, प्रविष्टि आ “प्रवासी श्रमिक” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 31क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 4161 : विदेह-सदेह 31 — डॉ. कामिनी कामायनी: खिडकी

८१०. खण्ड 4161, सूचकांक पंक्ति 2852: डॉ. कामिनी कामायनीक “खिडकी” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) खिडकी
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

८११. खण्ड 4161, सूचकांक पंक्ति 2852: डॉ. कामिनी कामायनीक “खिडकी”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) कविता
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

८१२. खण्ड 4161, सूचकांक पंक्ति 2852: डॉ. कामिनी कामायनीक “खिडकी”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) प्रविष्टि
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

८१३. खण्ड 4161, सूचकांक पंक्ति 2852: डॉ. कामिनी कामायनीक “खिडकी” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) दृष्टिकोण

८१४. खण्ड 4161, सूचकांक पंक्ति 2852: डॉ. कामिनी कामायनीक “खिडकी” प्रविष्टि विदेह-सदेह 31मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) दृष्टिकोण
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

८१५. खण्ड 4161, सूचकांक पंक्ति 2852: डॉ. कामिनी कामायनीक “खिडकी”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक डॉ. कामिनी कामायनी, विधा कविता, उप-विधा प्रविष्टि
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

८१६. खण्ड 4161, सूचकांक पंक्ति 2852: डॉ. कामिनी कामायनीक “खिडकी” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

८१७. खण्ड 4161, सूचकांक पंक्ति 2852: डॉ. कामिनी कामायनीक “खिडकी”केँ विदेह-सदेह 31क कविता-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ प्रविष्टिक रूपमे कविता-संसारसँ जुड़ल अछि।

८१८. खण्ड 4161, सूचकांक पंक्ति 2852: डॉ. कामिनी कामायनीक “खिडकी” प्रविष्टि विदेह-सदेह 31क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

८१९. खण्ड 4161, सूचकांक पंक्ति 2852: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 4161, सूचकांक पंक्ति 2852मे डॉ. कामिनी कामायनीक “खिडकी” प्रविष्टि कविता, प्रविष्टि आ “दृष्टिकोण” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 31क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 4162 : विदेह-सदेह 31 — डॉ. कामिनी कामायनी: भरोस (कविता)

८२०. खण्ड 4162, सूचकांक पंक्ति 2853: डॉ. कामिनी कामायनीक “भरोस (कविता)” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) भरोस (कविता)
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

८२१. खण्ड 4162, सूचकांक पंक्ति 2853: डॉ. कामिनी कामायनीक “भरोस (कविता)”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) कविता
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

८२२. खण्ड 4162, सूचकांक पंक्ति 2853: डॉ. कामिनी कामायनीक “भरोस (कविता)”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) प्रविष्टि
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

८२३. खण्ड 4162, सूचकांक पंक्ति 2853: डॉ. कामिनी कामायनीक “भरोस (कविता)” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) विश्वास-भंग

८२४. खण्ड 4162, सूचकांक पंक्ति 2853: डॉ. कामिनी कामायनीक “भरोस (कविता)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 31मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) विश्वास-भंग
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

८२५. खण्ड 4162, सूचकांक पंक्ति 2853: डॉ. कामिनी कामायनीक “भरोस (कविता)”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककें की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक डॉ. कामिनी कामायनी, विधा कविता, उप-विधा प्रविष्टि
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

८२६. खण्ड 4162, सूचकांक पंक्ति 2853: डॉ. कामिनी कामायनीक “भरोस (कविता)” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

८२७. खण्ड 4162, सूचकांक पंक्ति 2853: डॉ. कामिनी कामायनीक “भरोस (कविता)”कें विदेह-सदेह 31क कविता-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ प्रविष्टिक रूपमे कविता-संसारसँ जुड़ल अछि।

८२८. खण्ड 4162, सूचकांक पंक्ति 2853: डॉ. कामिनी कामायनीक “भरोस (कविता)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 31क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

८२९. खण्ड 4162, सूचकांक पंक्ति 2853: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 4162, सूचकांक पंक्ति 2853मे डॉ. कामिनी कामायनीक “भरोस (कविता)” प्रविष्टि कविता, प्रविष्टि आ “विश्वास-भंग” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 31क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 4163 : विदेह-सदेह 31 — डॉ. कामिनी कामायनी: पुष्पांजलि

८३०. खण्ड 4163, सूचकांक पंक्ति 2854: डॉ. कामिनी कामायनीक “पुष्पांजलि” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) पुष्पांजलि
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

८३१. खण्ड 4163, सूचकांक पंक्ति 2854: डॉ. कामिनी कामायनीक “पुष्पांजलि”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) कविता
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

८३२. खण्ड 4163, सूचकांक पंक्ति 2854: डॉ. कामिनी कामायनीक “पुष्पांजलि”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) प्रविष्टि
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

८३३. खण्ड 4163, सूचकांक पंक्ति 2854: डॉ. कामिनी कामायनीक “पुष्पांजलि” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) प्रकृति

८३४. खण्ड 4163, सूचकांक पंक्ति 2854: डॉ. कामिनी कामायनीक “पुष्पांजलि” प्रविष्टि विदेह-सदेह 31मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) प्रकृति
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

८३५. खण्ड 4163, सूचकांक पंक्ति 2854: डॉ. कामिनी कामायनीक “पुष्पांजलि”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककें की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक डॉ. कामिनी कामायनी, विधा कविता, उप-विधा प्रविष्टि
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

८३६. खण्ड 4163, सूचकांक पंक्ति 2854: डॉ. कामिनी कामायनीक “पुष्पांजलि” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

८३७. खण्ड 4163, सूचकांक पंक्ति 2854: डॉ. कामिनी कामायनीक “पुष्पांजलि”कें विदेह-सदेह 31क कविता-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ प्रविष्टिक रूपमे कविता-संसारसँ जुड़ल अछि।

८३८. खण्ड 4163, सूचकांक पंक्ति 2854: डॉ. कामिनी कामायनीक “पुष्पांजलि” प्रविष्टि विदेह-सदेह 31क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

८३९. खण्ड 4163, सूचकांक पंक्ति 2854: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 4163, सूचकांक पंक्ति 2854मे डॉ. कामिनी कामायनीक “पुष्पांजलि” प्रविष्टि कविता, प्रविष्टि आ “प्रकृति” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 31क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 4164 : विदेह-सदेह 31 — डॉ. कामिनी कामायनी: आस्थाक पूर्ण कलश

८४०. खण्ड 4164, सूचकांक पंक्ति 2855: डॉ. कामिनी कामायनीक “आस्थाक पूर्ण कलश” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) आस्थाक पूर्ण कलश
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

८४१. खण्ड 4164, सूचकांक पंक्ति 2855: डॉ. कामिनी कामायनीक “आस्थाक पूर्ण कलश”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) कविता
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

८४२. खण्ड 4164, सूचकांक पंक्ति 2855: डॉ. कामिनी कामायनीक “आस्थाक पूर्ण कलश”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) प्रविष्टि
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

८४३. खण्ड 4164, सूचकांक पंक्ति 2855: डॉ. कामिनी कामायनीक “आस्थाक पूर्ण कलश” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) तीर्थ-यात्रा

८४४. खण्ड 4164, सूचकांक पंक्ति 2855: डॉ. कामिनी कामायनीक “आस्थाक पूर्ण कलश” प्रविष्टि विदेह-सदेह 31मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) तीर्थ-यात्रा
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

८४५. खण्ड 4164, सूचकांक पंक्ति 2855: डॉ. कामिनी कामायनीक “आस्थाक पूर्ण कलश”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक डॉ. कामिनी कामायनी, विधा कविता, उप-विधा प्रविष्टि
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

८४६. खण्ड 4164, सूचकांक पंक्ति 2855: डॉ. कामिनी कामायनीक “आस्थाक पूर्ण कलश” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

८४७. खण्ड 4164, सूचकांक पंक्ति 2855: डॉ. कामिनी कामायनीक “आस्थाक पूर्ण कलश”केँ विदेह-सदेह 31क कविता-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ प्रविष्टिक रूपमे कविता-संसारसँ जुड़ल अछि।

८४८. खण्ड 4164, सूचकांक पंक्ति 2855: डॉ. कामिनी कामायनीक “आस्थाक पूर्ण कलश” प्रविष्टि विदेह-सदेह 31क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

८४९. खण्ड 4164, सूचकांक पंक्ति 2855: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 4164, सूचकांक पंक्ति 2855मे डॉ. कामिनी कामायनीक “आस्थाक पूर्ण कलश” प्रविष्टि कविता, प्रविष्टि आ “तीर्थ-यात्रा” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 31क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 4165 : विदेह-सदेह 31 — डॉ. कामिनी कामायनी: खिलैत पलास वन

८५०. खण्ड 4165, सूचकांक पंक्ति 2856: डॉ. कामिनी कामायनीक “खिलैत पलास वन” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) खिलैत पलास वन
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

८५१. खण्ड 4165, सूचकांक पंक्ति 2856: डॉ. कामिनी कामायनीक “खिलैत पलास वन”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) कविता
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

८५२. खण्ड 4165, सूचकांक पंक्ति 2856: डॉ. कामिनी कामायनीक “खिलैत पलास वन”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) प्रविष्टि
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

८५३. खण्ड 4165, सूचकांक पंक्ति 2856: डॉ. कामिनी कामायनीक “खिलैत पलास वन” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) प्रकृति

८५४. खण्ड 4165, सूचकांक पंक्ति 2856: डॉ. कामिनी कामायनीक “खिलैत पलास वन” प्रविष्टि विदेह-सदेह 31मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) प्रकृति
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

८५५. खण्ड 4165, सूचकांक पंक्ति 2856: डॉ. कामिनी कामायनीक “खिलैत पलास वन”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककें की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक डॉ. कामिनी कामायनी, विधा कविता, उप-विधा प्रविष्टि
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

८५६. खण्ड 4165, सूचकांक पंक्ति 2856: डॉ. कामिनी कामायनीक “खिलैत पलास वन” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

८५७. खण्ड 4165, सूचकांक पंक्ति 2856: डॉ. कामिनी कामायनीक “खिलैत पलास वन”कें विदेह-सदेह 31क कविता-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ प्रविष्टिक रूपमे कविता-संसारसँ जुड़ल अछि।

८५८. खण्ड 4165, सूचकांक पंक्ति 2856: डॉ. कामिनी कामायनीक “खिलैत पलास वन” प्रविष्टि विदेह-सदेह 31क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

८५९. खण्ड 4165, सूचकांक पंक्ति 2856: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 4165, सूचकांक पंक्ति 2856मे डॉ. कामिनी कामायनीक “खिलैत पलास वन” प्रविष्टि कविता, प्रविष्टि आ “प्रकृति” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 31क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 4166 : विदेह-सदेह 31 — डॉ. कामिनी कामायनी: आधुनिक स्त्रीगण १-५

८६०. खण्ड 4166, सूचकांक पंक्ति 2857: डॉ. कामिनी कामायनीक “आधुनिक स्त्रीगण १-५” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) आधुनिक स्त्रीगण १-५
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

८६१. खण्ड 4166, सूचकांक पंक्ति 2857: डॉ. कामिनी कामायनीक “आधुनिक स्त्रीगण १-५”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) कविता (श्रृंखला)
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

८६२. खण्ड 4166, सूचकांक पंक्ति 2857: डॉ. कामिनी कामायनीक “आधुनिक स्त्रीगण १-५”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) प्रविष्टि
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

८६३. खण्ड 4166, सूचकांक पंक्ति 2857: डॉ. कामिनी कामायनीक “आधुनिक स्त्रीगण १-५” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) नारी-सशक्तिकरण

८६४. खण्ड 4166, सूचकांक पंक्ति 2857: डॉ. कामिनी कामायनीक “आधुनिक स्त्रीगण १-५” प्रविष्टि विदेह-सदेह 31मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) नारी-सशक्तिकरण
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

८६५. खण्ड 4166, सूचकांक पंक्ति 2857: डॉ. कामिनी कामायनीक “आधुनिक स्त्रीगण १-५”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठकर्तों की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक डॉ. कामिनी कामायनी, विधा कविता (शृंखला), उप-विधा प्रविष्टि
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

८६६. खण्ड 4166, सूचकांक पंक्ति 2857: डॉ. कामिनी कामायनीक “आधुनिक स्त्रीगण १-५” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

८६७. खण्ड 4166, सूचकांक पंक्ति 2857: डॉ. कामिनी कामायनीक “आधुनिक स्त्रीगण १-५”क विदेह-सदेह 31क कविता (शृंखला)-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ प्रविष्टिक रूपमे कविता (शृंखला)-संसारसँ जुड़ल अछि।

८६८. खण्ड 4166, सूचकांक पंक्ति 2857: डॉ. कामिनी कामायनीक “आधुनिक स्त्रीगण १-५” प्रविष्टि विदेह-सदेह 31क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

८६९. खण्ड 4166, सूचकांक पंक्ति 2857: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 4166, सूचकांक पंक्ति 2857मे डॉ. कामिनी कामायनीक “आधुनिक स्त्रीगण १-५” प्रविष्टि कविता (शृंखला), प्रविष्टि आ “नारी-सशक्तिकरण” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 31क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 4167 : विदेह-सदेह 31 — कुमार मनोज कश्यप: वसंती दोहा

८७०. खण्ड 4167, सूचकांक पंक्ति 2858: कुमार मनोज कश्यपक “वसंती दोहा” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) वसंती दोहा
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

८७१. खण्ड 4167, सूचकांक पंक्ति 2858: कुमार मनोज कश्यपक “वसंती दोहा”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) दोहा
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

८७२. खण्ड 4167, सूचकांक पंक्ति 2858: कुमार मनोज कश्यपक “वसंती दोहा”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) प्रविष्टि
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

८७३. खण्ड 4167, सूचकांक पंक्ति 2858: कुमार मनोज कश्यपक “वसंती दोहा” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) दोहा परम्परा

८७४. खण्ड 4167, सूचकांक पंक्ति 2858: कुमार मनोज कश्यपक “वसंती दोहा” प्रविष्टि विदेह-सदेह 31मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) दोहा परम्परा
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

८७५. खण्ड 4167, सूचकांक पंक्ति 2858: कुमार मनोज कश्यपक “वसंती दोहा”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककें की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक कुमार मनोज कश्यप, विधा दोहा, उप-विधा प्रविष्टि
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

८७६. खण्ड 4167, सूचकांक पंक्ति 2858: कुमार मनोज कश्यपक “वसंती दोहा” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

८७७. खण्ड 4167, सूचकांक पंक्ति 2858: कुमार मनोज कश्यपक “वसंती दोहा”कें विदेह-सदेह 31क दोहा-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ प्रविष्टिक रूपमे दोहा-संसारसँ जुड़ल अछि।

८७८. खण्ड 4167, सूचकांक पंक्ति 2858: कुमार मनोज कश्यपक “वसंती दोहा” प्रविष्टि विदेह-सदेह 31क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

८७९. खण्ड 4167, सूचकांक पंक्ति 2858: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 4167, सूचकांक पंक्ति 2858मे कुमार मनोज कश्यपक “वसंती दोहा” प्रविष्टि दोहा, प्रविष्टि आ “दोहा परम्परा” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 31क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 4168 : विदेह-सदेह 31 — कुमार मनोज कश्यप: नहीं सुति रहब आहाँ चदरि तानि

८८०. खण्ड 4168, सूचकांक पंक्ति 2859: कुमार मनोज कश्यपक “नहीं सुति रहब आहाँ चदरि तानि” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) नहीं सुति रहब आहाँ चदरि तानि
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

८८१. खण्ड 4168, सूचकांक पंक्ति 2859: कुमार मनोज कश्यपक “नहीं सुति रहब आहाँ चदरि तानि”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) देशभक्ति गीत
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

८८२. खण्ड 4168, सूचकांक पंक्ति 2859: कुमार मनोज कश्यपक “नहीं सुति रहब आहाँ चदरि तानि”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) प्रविष्टि
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

८८३. खण्ड 4168, सूचकांक पंक्ति 2859: कुमार मनोज कश्यपक “नहीं सुति रहब आहाँ चदरि तानि” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) राष्ट्रीय चेतना

८८४. खण्ड 4168, सूचकांक पंक्ति 2859: कुमार मनोज कश्यपक “नहीं सुति रहब आहाँ चदरि तानि” प्रविष्टि विदेह-सदेह 31मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) राष्ट्रीय चेतना
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

८८५. खण्ड 4168, सूचकांक पंक्ति 2859: कुमार मनोज कश्यपक “नहीं सुति रहब आहाँ चदरि तानि”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककें की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक कुमार मनोज कश्यप, विधा देशभक्ति गीत, उप-विधा प्रविष्टि
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

८८६. खण्ड 4168, सूचकांक पंक्ति 2859: कुमार मनोज कश्यपक “नहीं सुति रहब आहाँ चदरि तानि” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

८८७. खण्ड 4168, सूचकांक पंक्ति 2859: कुमार मनोज कश्यपक “नहिं सुति रहब आहाँ चदरि तानि”कें विदेह-सदेह 31क देशभक्ति गीत-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ प्रविष्टिक रूपमे देशभक्ति गीत-संसारसँ जुड़ल अछि।

८८८. खण्ड 4168, सूचकांक पंक्ति 2859: कुमार मनोज कश्यपक “नहिं सुति रहब आहाँ चदरि तानि” प्रविष्टि विदेह-सदेह 31क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

८८९. खण्ड 4168, सूचकांक पंक्ति 2859: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 4168, सूचकांक पंक्ति 2859मे कुमार मनोज कश्यपक “नहिं सुति रहब आहाँ चदरि तानि” प्रविष्टि देशभक्ति गीत, प्रविष्टि आ “राष्ट्रीय चेतना” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 31क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 4169 : विदेह-सदेह 31 — कुमार मनोज कश्यप: किछु गजल (गजल १)

८९०. खण्ड 4169, सूचकांक पंक्ति 2860: कुमार मनोज कश्यपक “किछु गजल (गजल १)” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) किछु गजल (गजल १)
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

८९१. खण्ड 4169, सूचकांक पंक्ति 2860: कुमार मनोज कश्यपक “किछु गजल (गजल १)”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) गजल
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

८९२. खण्ड 4169, सूचकांक पंक्ति 2860: कुमार मनोज कश्यपक “किछु गजल (गजल १)”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) प्रविष्टि
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

८९३. खण्ड 4169, सूचकांक पंक्ति 2860: कुमार मनोज कश्यपक “किछु गजल (गजल १)” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) गजल परम्परा

८९४. खण्ड 4169, सूचकांक पंक्ति 2860: कुमार मनोज कश्यपक “किछु गजल (गजल १)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 31मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) गजल परम्परा
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

८९५. खण्ड 4169, सूचकांक पंक्ति 2860: कुमार मनोज कश्यपक “किछु गजल (गजल १)”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककें की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक कुमार मनोज कश्यप, विधा गजल, उप-विधा प्रविष्टि
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

८९६. खण्ड 4169, सूचकांक पंक्ति 2860: कुमार मनोज कश्यपक “किछु गजल (गजल १)” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

८९७. खण्ड 4169, सूचकांक पंक्ति 2860: कुमार मनोज कश्यपक “किछु गजल (गजल १)”कें विदेह-सदेह 31क गजल-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ प्रविष्टिक रूपमे गजल-संसारसँ जुड़ल अछि।

८९८. खण्ड 4169, सूचकांक पंक्ति 2860: कुमार मनोज कश्यपक “किछु गजल (गजल १)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 31क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

८९९. खण्ड 4169, सूचकांक पंक्ति 2860: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 4169, सूचकांक पंक्ति 2860मे कुमार मनोज कश्यपक “किछु गजल (गजल १)” प्रविष्टि गजल, प्रविष्टि आ “गजल परम्परा” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 31क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 4170 : विदेह-सदेह 31 — कुमार मनोज कश्यप: किछु गजल (गजल २)

९००. खण्ड 4170, सूचकांक पंक्ति 2861: कुमार मनोज कश्यपक “किछु गजल (गजल २)” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) किछु गजल (गजल २)
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१०१. खण्ड 4170, सूचकांक पंक्ति 2861: कुमार मनोज कश्यपक “किछु गजल (गजल २)”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) गजल
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१०२. खण्ड 4170, सूचकांक पंक्ति 2861: कुमार मनोज कश्यपक “किछु गजल (गजल २)”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) प्रविष्टि
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१०३. खण्ड 4170, सूचकांक पंक्ति 2861: कुमार मनोज कश्यपक “किछु गजल (गजल २)” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) दार्शनिक

१०४. खण्ड 4170, सूचकांक पंक्ति 2861: कुमार मनोज कश्यपक “किछु गजल (गजल २)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 31मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) दार्शनिक
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१०५. खण्ड 4170, सूचकांक पंक्ति 2861: कुमार मनोज कश्यपक “किछु गजल (गजल २)”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककें की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक कुमार मनोज कश्यप, विधा गजल, उप-विधा प्रविष्टि
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१०६. खण्ड 4170, सूचकांक पंक्ति 2861: कुमार मनोज कश्यपक “किछु गजल (गजल २)” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१०७. खण्ड 4170, सूचकांक पंक्ति 2861: कुमार मनोज कश्यपक “किछु गजल (गजल २)”कें विदेह-सदेह 31क गजल-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ प्रविष्टिक रूपमे गजल-संसारसँ जुड़ल अछि।

१०८. खण्ड 4170, सूचकांक पंक्ति 2861: कुमार मनोज कश्यपक “किछु गजल (गजल २)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 31क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१०९. खण्ड 4170, सूचकांक पंक्ति 2861: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 4170, सूचकांक पंक्ति 2861मे कुमार मनोज कश्यपक “किछु गजल (गजल २)” प्रविष्टि गजल, प्रविष्टि आ “दार्शनिक” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 31क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तरमाला — अध्याय २ (उत्तर ओ व्याख्या / Answers & Explanations)

१. (A) डॉ. कामिनी कामायनी — विदेह-सदेह ३१ मे यात्रा-वृत्तान्त ‘नोम्पेह’ डॉ. कामिनी कामायनी लिखलीह।
२. (A) कम्बोडिया — नोम्पेह (Phnom Penh) कम्बोडियाक राजधानी थिक।
३. (A) मेकॉग नदी — यात्रा-वृत्तान्त अनुसार लेखिका भोरे मेकॉग नदीक तीरपर ठाढ़ पाओल अपनाकें।
४. (A) फ्रांसीसी — यात्रा-वृत्तान्त अनुसार नोम्पेहक स्थापत्य-कला फ्रांसीसी प्रभावसँ युक्त अछि।
५. (A) चौथी सदीसँ चौदहवीं सदी (अंकोर काल) धरि — म्यूजियममे चौथी सदीसँ अंकोर काल (चौदहवीं सदी) धरिक प्रमुख खमेर इतिहास-कलाकृति अछि।
६. (A) सेंट्रल मार्केट आ दुओल टॉम पोंग मार्केट (रसियन बाजार) — नोम्पेहमे सेंट्रल मार्केट (पीयर रंगक) आ दुओल टॉम पोंग मार्केट (रसियन बाजारक नामसँ जानल) प्रसिद्ध अछि।
७. (A) रिएल — कम्बोडियाक स्थानीय करेंसी रिएल थिक, यद्यपि यू.एस. डॉलर सेहो सहजहि चलैत अछि।
८. (A) सन् १९७५ सँ १९७९ (खमेर रूज शासन) — किलिंग फील्ड कम्बोडियाक भीषण तानाशाही (खमेर रूज) शासनक नरसंहारक जीवित दस्तावेज थिक, जे सन् १९७५ क बादक कालसँ सम्बद्ध अछि।
९. (A) जलोत्सव — किरीरोम नेशनल पार्कक निकट प्रत्येक वर्ष एकटा भव्य जलोत्सव होइत अछि।
१०. (A) डॉनोम्पेह (नोम्पेह) — सूचकांक पंक्ति 2772मे डॉ. कामिनी कामायनीक प्रविष्टि “डॉनोम्पेह (नोम्पेह)” रूपमे देल अछि।
११. (B) यात्रा-वृत्तान्त — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकें “यात्रा-वृत्तान्त” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।
१२. (C) प्रविष्टि — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “प्रविष्टि” अछि।
१३. (D) कम्बोडिया यात्रा — टिप्पणीक पहिल संकेत “कम्बोडिया यात्रा” अछि।
१४. (A) कम्बोडिया यात्रा — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “कम्बोडिया यात्रा” रूपमे देखाइत अछि।
१५. (B) लेखक डॉ. कामिनी कामायनी, विधा यात्रा-वृत्तान्त, उप-विधा प्रविष्टि — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकें एक साथ रखैत अछि।
१६. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककें केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।
१७. (D) ई पाठ प्रविष्टिक रूपमे यात्रा-वृत्तान्त-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकें स्पष्ट करैत अछि।
१८. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।
१९. (B) खण्ड 4081, सूचकांक पंक्ति 2772मे डॉ. कामिनी कामायनीक “डॉनोम्पेह (नोम्पेह)” प्रविष्टि यात्रा-वृत्तान्त, प्रविष्टि आ “कम्बोडिया यात्रा” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 31क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकें प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।
२०. (A) सेयाम रेयापक स्वर्णिम अतीत — सूचकांक पंक्ति 2773मे डॉ. कामिनी कामायनीक प्रविष्टि “सेयाम रेयापक स्वर्णिम अतीत” रूपमे देल अछि।

२१. (B) यात्रा-वृत्तान्त — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “यात्रा-वृत्तान्त” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।
२२. (C) प्रविष्टि — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “प्रविष्टि” अछि।
२३. (D) अंकोरवाट केन्द्रित — टिप्पणीक पहिल संकेत “अंकोरवाट केन्द्रित” अछि।
२४. (A) अंकोरवाट केन्द्रित — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “अंकोरवाट केन्द्रित” रूपमे देखाइत अछि।
२५. (B) लेखक डॉ. कामिनी कामायनी, विधा यात्रा-वृत्तान्त, उप-विधा प्रविष्टि — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।
२६. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।
२७. (D) ई पाठ प्रविष्टिक रूपमे यात्रा-वृत्तान्त-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।
२८. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।
२९. (B) खण्ड 4082, सूचकांक पंक्ति 2773मे डॉ. कामिनी कामायनीक “सेयाम रेयापक स्वर्णिम अतीत” प्रविष्टि यात्रा-वृत्तान्त, प्रविष्टि आ “अंकोरवाट केन्द्रित” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 31क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।
३०. (A) लघुकथा- भागमंती — सूचकांक पंक्ति 2774मे डॉ. कामिनी कामायनीक प्रविष्टि “लघुकथा- भागमंती” रूपमे देल अछि।
३१. (B) लघुकथा — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “लघुकथा” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।
३२. (C) प्रविष्टि — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “प्रविष्टि” अछि।
३३. (D) ग्रामीण पारिवारिक कथा — टिप्पणीक पहिल संकेत “ग्रामीण पारिवारिक कथा” अछि।
३४. (A) ग्रामीण पारिवारिक कथा — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “ग्रामीण पारिवारिक कथा” रूपमे देखाइत अछि।
३५. (B) लेखक डॉ. कामिनी कामायनी, विधा लघुकथा, उप-विधा प्रविष्टि — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।
३६. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।
३७. (D) ई पाठ प्रविष्टिक रूपमे लघुकथा-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।
३८. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।
३९. (B) खण्ड 4083, सूचकांक पंक्ति 2774मे डॉ. कामिनी कामायनीक “लघुकथा- भागमंती” प्रविष्टि लघुकथा, प्रविष्टि आ “ग्रामीण पारिवारिक कथा” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 31क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।
४०. (A) सोर — सूचकांक पंक्ति 2775मे डॉ. कामिनी कामायनीक प्रविष्टि “सोर” रूपमे देल अछि।
४१. (B) कथा — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “कथा” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।
४२. (C) प्रविष्टि — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “प्रविष्टि” अछि।
४३. (D) मानसिक संघर्ष — टिप्पणीक पहिल संकेत “मानसिक संघर्ष” अछि।
४४. (A) मानसिक संघर्ष — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “मानसिक संघर्ष” रूपमे देखाइत अछि।
४५. (B) लेखक डॉ. कामिनी कामायनी, विधा कथा, उप-विधा प्रविष्टि — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।
४६. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।
४७. (D) ई पाठ प्रविष्टिक रूपमे कथा-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।
४८. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।
४९. (B) खण्ड 4084, सूचकांक पंक्ति 2775मे डॉ. कामिनी कामायनीक “सोर” प्रविष्टि कथा, प्रविष्टि आ “मानसिक संघर्ष” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 31क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।
५०. (A) कोन डार पर केकर खोता — सूचकांक पंक्ति 2776मे डॉ. कामिनी कामायनीक प्रविष्टि “कोन डार पर केकर खोता” रूपमे देल अछि।

५१. (B) लघुकथा — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “लघुकथा” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।
५२. (C) प्रविष्टि — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “प्रविष्टि” अछि।
५३. (D) पारिवारिक सम्बन्धक जटिलता — टिप्पणीक पहिल संकेत “पारिवारिक सम्बन्धक जटिलता” अछि।
५४. (A) पारिवारिक सम्बन्धक जटिलता — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “पारिवारिक सम्बन्धक जटिलता” रूपमे देखाइत अछि।
५५. (B) लेखक डॉ. कामिनी कामायनी, विधा लघुकथा, उप-विधा प्रविष्टि — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।
५६. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।
५७. (D) ई पाठ प्रविष्टिक रूपमे लघुकथा-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।
५८. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।
५९. (B) खण्ड 4085, सूचकांक पंक्ति 2776मे डॉ. कामिनी कामायनीक “कोन डार पर केकर खोता” प्रविष्टि लघुकथा, प्रविष्टि आ “पारिवारिक सम्बन्धक जटिलता” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 31क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।
६०. (A) घुहर ताकू — सूचकांक पंक्ति 2777मे डॉ. कामिनी कामायनीक प्रविष्टि “घुहर ताकू” रूपमे देल अछि।
६१. (B) लघुकथा — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “लघुकथा” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।
६२. (C) प्रविष्टि — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “प्रविष्टि” अछि।
६३. (D) ग्रामीण जीवन — टिप्पणीक पहिल संकेत “ग्रामीण जीवन” अछि।
६४. (A) ग्रामीण जीवन — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “ग्रामीण जीवन” रूपमे देखाइत अछि।
६५. (B) लेखक डॉ. कामिनी कामायनी, विधा लघुकथा, उप-विधा प्रविष्टि — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।
६६. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।
६७. (D) ई पाठ प्रविष्टिक रूपमे लघुकथा-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।
६८. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।
६९. (B) खण्ड 4086, सूचकांक पंक्ति 2777मे डॉ. कामिनी कामायनीक “घुहर ताकू” प्रविष्टि लघुकथा, प्रविष्टि आ “ग्रामीण जीवन” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 31क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।
७०. (A) माटीक मुस्त — सूचकांक पंक्ति 2778मे डॉ. कामिनी कामायनीक प्रविष्टि “माटीक मुस्त” रूपमे देल अछि।
७१. (B) लघुकथा — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “लघुकथा” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।
७२. (C) प्रविष्टि — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “प्रविष्टि” अछि।
७३. (D) नारीक संघर्ष — टिप्पणीक पहिल संकेत “नारीक संघर्ष” अछि।
७४. (A) नारीक संघर्ष — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “नारीक संघर्ष” रूपमे देखाइत अछि।
७५. (B) लेखक डॉ. कामिनी कामायनी, विधा लघुकथा, उप-विधा प्रविष्टि — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।
७६. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।
७७. (D) ई पाठ प्रविष्टिक रूपमे लघुकथा-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।
७८. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।
७९. (B) खण्ड 4087, सूचकांक पंक्ति 2778मे डॉ. कामिनी कामायनीक “माटीक मुस्त” प्रविष्टि लघुकथा, प्रविष्टि आ “नारीक संघर्ष” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 31क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।
८०. (A) विलायत वाली किनया — सूचकांक पंक्ति 2779मे डॉ. कामिनी कामायनीक प्रविष्टि “विलायत वाली किनया” रूपमे देल अछि।

८१. (B) लघुकथा — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “लघुकथा” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।
८२. (C) प्रविष्टि — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “प्रविष्टि” अछि।
८३. (D) प्रवासी जीवन — टिप्पणीक पहिल संकेत “प्रवासी जीवन” अछि।
८४. (A) प्रवासी जीवन — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “प्रवासी जीवन” रूपमे देखाइत अछि।
८५. (B) लेखक डॉ. कामिनी कामायनी, विधा लघुकथा, उप-विधा प्रविष्टि — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।
८६. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।
८७. (D) ई पाठ प्रविष्टिक रूपमे लघुकथा-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।
८८. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।
८९. (B) खण्ड 4088, सूचकांक पंक्ति 2779मे डॉ. कामिनी कामायनीक “विलायत वाली किनया” प्रविष्टि लघुकथा, प्रविष्टि आ “प्रवासी जीवन” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 31क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।
९०. (A) सूटक कपडा — सूचकांक पंक्ति 2780मे डॉ. कामिनी कामायनीक प्रविष्टि “सूटक कपडा” रूपमे देल अछि।
९१. (B) लघुकथा — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “लघुकथा” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।
९२. (C) प्रविष्टि — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “प्रविष्टि” अछि।
९३. (D) हास्य-व्यंग्य — टिप्पणीक पहिल संकेत “हास्य-व्यंग्य” अछि।
९४. (A) हास्य-व्यंग्य — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “हास्य-व्यंग्य” रूपमे देखाइत अछि।
९५. (B) लेखक डॉ. कामिनी कामायनी, विधा लघुकथा, उप-विधा प्रविष्टि — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।
९६. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।
९७. (D) ई पाठ प्रविष्टिक रूपमे लघुकथा-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।
९८. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।
९९. (B) खण्ड 4089, सूचकांक पंक्ति 2780मे डॉ. कामिनी कामायनीक “सूटक कपडा” प्रविष्टि लघुकथा, प्रविष्टि आ “हास्य-व्यंग्य” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 31क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।
१००. (A) घुमौन (चुमोन) — सूचकांक पंक्ति 2781मे डॉ. कामिनी कामायनीक प्रविष्टि “घुमौन (चुमोन)” रूपमे देल अछि।
१०१. (B) लघुकथा — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “लघुकथा” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।
१०२. (C) प्रविष्टि — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “प्रविष्टि” अछि।
१०३. (D) विवाह-रीति — टिप्पणीक पहिल संकेत “विवाह-रीति” अछि।
१०४. (A) विवाह-रीति — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “विवाह-रीति” रूपमे देखाइत अछि।
१०५. (B) लेखक डॉ. कामिनी कामायनी, विधा लघुकथा, उप-विधा प्रविष्टि — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।
१०६. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।
१०७. (D) ई पाठ प्रविष्टिक रूपमे लघुकथा-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।
१०८. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।
१०९. (B) खण्ड 4090, सूचकांक पंक्ति 2781मे डॉ. कामिनी कामायनीक “घुमौन (चुमोन)” प्रविष्टि लघुकथा, प्रविष्टि आ “विवाह-रीति” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 31क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।
११०. (A) घुस्सा लेमे की घुस्सी (चूढ़ा लेमे की चूढ़ी) — सूचकांक पंक्ति 2782मे डॉ. कामिनी कामायनीक प्रविष्टि “घुस्सा लेमे की घुस्सी (चूढ़ा लेमे की चूढ़ी)” रूपमे देल अछि।

१११. (B) लघुकथा — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “लघुकथा” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।
११२. (C) प्रविष्टि — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “प्रविष्टि” अछि।
११३. (D) बाल्यकालीन स्मृति — टिप्पणीक पहिल संकेत “बाल्यकालीन स्मृति” अछि।
११४. (A) बाल्यकालीन स्मृति — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “बाल्यकालीन स्मृति” रूपमे देखाइत अछि।
११५. (B) लेखक डॉ. कामिनी कामायनी, विधा लघुकथा, उप-विधा प्रविष्टि — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।
११६. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।
११७. (D) ई पाठ प्रविष्टिक रूपमे लघुकथा-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।
११८. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।
११९. (B) खण्ड 4091, सूचकांक पंक्ति 2782मे डॉ. कामिनी कामायनीक “घुस्सा लेमे की घुस्सी (चूड़ा लेमे की चूड़ी)” प्रविष्टि लघुकथा, प्रविष्टि आ “बाल्यकालीन स्मृति” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 31क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।
१२०. (A) भरोस — सूचकांक पंक्ति 2783मे डॉ. कामिनी कामायनीक प्रविष्टि “भरोस” रूपमे देल अछि।
१२१. (B) लघुकथा — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “लघुकथा” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।
१२२. (C) प्रविष्टि — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “प्रविष्टि” अछि।
१२३. (D) ग्रामीण जीवन — टिप्पणीक पहिल संकेत “ग्रामीण जीवन” अछि।
१२४. (A) ग्रामीण जीवन — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “ग्रामीण जीवन” रूपमे देखाइत अछि।
१२५. (B) लेखक डॉ. कामिनी कामायनी, विधा लघुकथा, उप-विधा प्रविष्टि — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।
१२६. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।
१२७. (D) ई पाठ प्रविष्टिक रूपमे लघुकथा-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।
१२८. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।
१२९. (B) खण्ड 4092, सूचकांक पंक्ति 2783मे डॉ. कामिनी कामायनीक “भरोस” प्रविष्टि लघुकथा, प्रविष्टि आ “ग्रामीण जीवन” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 31क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।
१३०. (A) लाल काकी — सूचकांक पंक्ति 2784मे डॉ. कामिनी कामायनीक प्रविष्टि “लाल काकी” रूपमे देल अछि।
१३१. (B) लघुकथा — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “लघुकथा” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।
१३२. (C) प्रविष्टि — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “प्रविष्टि” अछि।
१३३. (D) वृद्धा जीवन — टिप्पणीक पहिल संकेत “वृद्धा जीवन” अछि।
१३४. (A) वृद्धा जीवन — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “वृद्धा जीवन” रूपमे देखाइत अछि।
१३५. (B) लेखक डॉ. कामिनी कामायनी, विधा लघुकथा, उप-विधा प्रविष्टि — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।
१३६. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।
१३७. (D) ई पाठ प्रविष्टिक रूपमे लघुकथा-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।
१३८. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।
१३९. (B) खण्ड 4093, सूचकांक पंक्ति 2784मे डॉ. कामिनी कामायनीक “लाल काकी” प्रविष्टि लघुकथा, प्रविष्टि आ “वृद्धा जीवन” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 31क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।
१४०. (A) अभिशप्त — सूचकांक पंक्ति 2785मे डॉ. कामिनी कामायनीक प्रविष्टि “अभिशप्त” रूपमे देल अछि।

१४१. (B) कथा — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “कथा” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।
१४२. (C) प्रविष्टि — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “प्रविष्टि” अछि।
१४३. (D) नारी-पुरुष सम्बन्ध — टिप्पणीक पहिल संकेत “नारी-पुरुष सम्बन्ध” अछि।
१४४. (A) नारी-पुरुष सम्बन्ध — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “नारी-पुरुष सम्बन्ध” रूपमे देखाइत अछि।
१४५. (B) लेखक डॉ. कामिनी कामायनी, विधा कथा, उप-विधा प्रविष्टि — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।
१४६. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।
१४७. (D) ई पाठ प्रविष्टिक रूपमे कथा-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।
१४८. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।
१४९. (B) खण्ड 4094, सूचकांक पंक्ति 2785मे डॉ. कामिनी कामायनीक “अभिशप्त” प्रविष्टि कथा, प्रविष्टि आ “नारी-पुरुष सम्बन्ध” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 31क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।
१५०. (A) समय काल — सूचकांक पंक्ति 2786मे डॉ. कामिनी कामायनीक प्रविष्टि “समय काल” रूपमे देल अछि।
१५१. (B) लघुकथा — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “लघुकथा” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।
१५२. (C) प्रविष्टि — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “प्रविष्टि” अछि।
१५३. (D) परिवार — टिप्पणीक पहिल संकेत “परिवार” अछि।
१५४. (A) परिवार — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “परिवार” रूपमे देखाइत अछि।
१५५. (B) लेखक डॉ. कामिनी कामायनी, विधा लघुकथा, उप-विधा प्रविष्टि — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।
१५६. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।
१५७. (D) ई पाठ प्रविष्टिक रूपमे लघुकथा-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।
१५८. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।
१५९. (B) खण्ड 4095, सूचकांक पंक्ति 2786मे डॉ. कामिनी कामायनीक “समय काल” प्रविष्टि लघुकथा, प्रविष्टि आ “परिवार” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 31क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।
१६०. (A) कठजीब (पुरनी दाय) — सूचकांक पंक्ति 2787मे डॉ. कामिनी कामायनीक प्रविष्टि “कठजीब (पुरनी दाय)” रूपमे देल अछि।
१६१. (B) लघुकथा — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “लघुकथा” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।
१६२. (C) प्रविष्टि — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “प्रविष्टि” अछि।
१६३. (D) सामाजिक शोषण — टिप्पणीक पहिल संकेत “सामाजिक शोषण” अछि।
१६४. (A) सामाजिक शोषण — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “सामाजिक शोषण” रूपमे देखाइत अछि।
१६५. (B) लेखक डॉ. कामिनी कामायनी, विधा लघुकथा, उप-विधा प्रविष्टि — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।
१६६. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।
१६७. (D) ई पाठ प्रविष्टिक रूपमे लघुकथा-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।
१६८. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।
१६९. (B) खण्ड 4096, सूचकांक पंक्ति 2787मे डॉ. कामिनी कामायनीक “कठजीब (पुरनी दाय)” प्रविष्टि लघुकथा, प्रविष्टि आ “सामाजिक शोषण” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 31क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।
१७०. (A) कलंकित चान — सूचकांक पंक्ति 2788मे डॉ. कामिनी कामायनीक प्रविष्टि “कलंकित चान” रूपमे देल अछि।
१७१. (B) कथा — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “कथा” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

१७२. (C) प्रविष्टि — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “प्रविष्टि” अछि।
१७३. (D) ग्रामीण प्रेम — टिप्पणीक पहिल संकेत “ग्रामीण प्रेम” अछि।
१७४. (A) ग्रामीण प्रेम — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “ग्रामीण प्रेम” रूपमे देखाइत अछि।
१७५. (B) लेखक डॉ. कामिनी कामायनी, विधा कथा, उप-विधा प्रविष्टि — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकें एक साथ रखैत अछि।
१७६. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककें केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।
१७७. (D) ई पाठ प्रविष्टिक रूपमे कथा-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकें स्पष्ट करैत अछि।
१७८. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।
१७९. (B) खण्ड 4097, सूचकांक पंक्ति 2788मे डॉ. कामिनी कामायनीक “कलंकित चान” प्रविष्टि कथा, प्रविष्टि आ “ग्रामीण प्रेम” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 31क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकें प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।
१८०. (A) उत्तराक नोर — सूचकांक पंक्ति 2789मे डॉ. कामिनी कामायनीक प्रविष्टि “उत्तराक नोर” रूपमे देल अछि।
१८१. (B) कथा — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकें “कथा” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।
१८२. (C) प्रविष्टि — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “प्रविष्टि” अछि।
१८३. (D) प्रेम — टिप्पणीक पहिल संकेत “प्रेम” अछि।
१८४. (A) प्रेम — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “प्रेम” रूपमे देखाइत अछि।
१८५. (B) लेखक डॉ. कामिनी कामायनी, विधा कथा, उप-विधा प्रविष्टि — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकें एक साथ रखैत अछि।
१८६. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककें केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।
१८७. (D) ई पाठ प्रविष्टिक रूपमे कथा-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकें स्पष्ट करैत अछि।
१८८. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।
१८९. (B) खण्ड 4098, सूचकांक पंक्ति 2789मे डॉ. कामिनी कामायनीक “उत्तराक नोर” प्रविष्टि कथा, प्रविष्टि आ “प्रेम” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 31क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकें प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।
१९०. (A) महानगर मे सुनीता — सूचकांक पंक्ति 2790मे डॉ. कामिनी कामायनीक प्रविष्टि “महानगर मे सुनीता” रूपमे देल अछि।
१९१. (B) कथा — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकें “कथा” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।
१९२. (C) प्रविष्टि — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “प्रविष्टि” अछि।
१९३. (D) शहरी गरीबी — टिप्पणीक पहिल संकेत “शहरी गरीबी” अछि।
१९४. (A) शहरी गरीबी — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “शहरी गरीबी” रूपमे देखाइत अछि।
१९५. (B) लेखक डॉ. कामिनी कामायनी, विधा कथा, उप-विधा प्रविष्टि — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकें एक साथ रखैत अछि।
१९६. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककें केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।
१९७. (D) ई पाठ प्रविष्टिक रूपमे कथा-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकें स्पष्ट करैत अछि।
१९८. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।
१९९. (B) खण्ड 4099, सूचकांक पंक्ति 2790मे डॉ. कामिनी कामायनीक “महानगर मे सुनीता” प्रविष्टि कथा, प्रविष्टि आ “शहरी गरीबी” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 31क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकें प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।
२००. (A) संदूक उपनैन — सूचकांक पंक्ति 2791मे डॉ. कामिनी कामायनीक प्रविष्टि “संदूक उपनैन” रूपमे देल अछि।
२०१. (B) कथा — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकें “कथा” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।
२०२. (C) प्रविष्टि — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “प्रविष्टि” अछि।

२०३. (D) पारिवारिक आयोजन — टिप्पणीक पहिल संकेत “पारिवारिक आयोजन” अछि।
२०४. (A) पारिवारिक आयोजन — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “पारिवारिक आयोजन” रूपमे देखाइत अछि।
२०५. (B) लेखक डॉ. कामिनी कामायनी, विधा कथा, उप-विधा प्रविष्टि — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकें एक साथ रखैत अछि।
२०६. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककें केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।
२०७. (D) ई पाठ प्रविष्टिक रूपमे कथा-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकें स्पष्ट करैत अछि।
२०८. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।
२०९. (B) खण्ड 4100, सूचकांक पंक्ति 2791मे डॉ. कामिनी कामायनीक “संदूक उपनैन” प्रविष्टि कथा, प्रविष्टि आ “पारिवारिक आयोजन” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 31क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकें प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।
२१०. (A) शाश्वत कथा — सूचकांक पंक्ति 2792मे डॉ. कामिनी कामायनीक प्रविष्टि “शाश्वत कथा” रूपमे देल अछि।
२११. (B) कथा — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकें “कथा” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।
२१२. (C) प्रविष्टि — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “प्रविष्टि” अछि।
२१३. (D) स्त्री-जीवनक शाश्वतता — टिप्पणीक पहिल संकेत “स्त्री-जीवनक शाश्वतता” अछि।
२१४. (A) स्त्री-जीवनक शाश्वतता — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “स्त्री-जीवनक शाश्वतता” रूपमे देखाइत अछि।
२१५. (B) लेखक डॉ. कामिनी कामायनी, विधा कथा, उप-विधा प्रविष्टि — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकें एक साथ रखैत अछि।
२१६. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककें केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।
२१७. (D) ई पाठ प्रविष्टिक रूपमे कथा-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकें स्पष्ट करैत अछि।
२१८. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।
२१९. (B) खण्ड 4101, सूचकांक पंक्ति 2792मे डॉ. कामिनी कामायनीक “शाश्वत कथा” प्रविष्टि कथा, प्रविष्टि आ “स्त्री-जीवनक शाश्वतता” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 31क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकें प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।
२२०. (A) किनया पूतरा के विवाह — सूचकांक पंक्ति 2793मे डॉ. कामिनी कामायनीक प्रविष्टि “किनया पूतरा के विवाह” रूपमे देल अछि।
२२१. (B) कथा — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकें “कथा” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।
२२२. (C) प्रविष्टि — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “प्रविष्टि” अछि।
२२३. (D) बाल-मनोविज्ञान — टिप्पणीक पहिल संकेत “बाल-मनोविज्ञान” अछि।
२२४. (A) बाल-मनोविज्ञान — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “बाल-मनोविज्ञान” रूपमे देखाइत अछि।
२२५. (B) लेखक डॉ. कामिनी कामायनी, विधा कथा, उप-विधा प्रविष्टि — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकें एक साथ रखैत अछि।
२२६. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककें केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।
२२७. (D) ई पाठ प्रविष्टिक रूपमे कथा-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकें स्पष्ट करैत अछि।
२२८. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।
२२९. (B) खण्ड 4102, सूचकांक पंक्ति 2793मे डॉ. कामिनी कामायनीक “किनया पूतरा के विवाह” प्रविष्टि कथा, प्रविष्टि आ “बाल-मनोविज्ञान” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 31क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकें प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।
२३०. (A) डाइवनि क बानर — सूचकांक पंक्ति 2794मे डॉ. कामिनी कामायनीक प्रविष्टि “डाइवनि क बानर” रूपमे देल अछि।
२३१. (B) कथा — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकें “कथा” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।
२३२. (C) प्रविष्टि — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “प्रविष्टि” अछि।
२३३. (D) मनोवैज्ञानिक — टिप्पणीक पहिल संकेत “मनोवैज्ञानिक” अछि।

२३४. (A) मनोवैज्ञानिक — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “मनोवैज्ञानिक” रूपमे देखाइत अछि।
२३५. (B) लेखक डॉ. कामिनी कामायनी, विधा कथा, उप-विधा प्रविष्टि — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।
२३६. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।
२३७. (D) ई पाठ प्रविष्टिक रूपमे कथा-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।
२३८. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।
२३९. (B) खण्ड 4103, सूचकांक पंक्ति 2794मे डॉ. कामिनी कामायनीक “डाइवनि कानर” प्रविष्टि कथा, प्रविष्टि आ “मनोवैज्ञानिक” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 31क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।
२४०. (A) टूटल तारा — सूचकांक पंक्ति 2795मे डॉ. कामिनी कामायनीक प्रविष्टि “टूटल तारा” रूपमे देल अछि।
२४१. (B) कथा — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “कथा” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।
२४२. (C) प्रविष्टि — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “प्रविष्टि” अछि।
२४३. (D) ऐतिहासिक पृष्ठभूमि — टिप्पणीक पहिल संकेत “ऐतिहासिक पृष्ठभूमि” अछि।
२४४. (A) ऐतिहासिक पृष्ठभूमि — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “ऐतिहासिक पृष्ठभूमि” रूपमे देखाइत अछि।
२४५. (B) लेखक डॉ. कामिनी कामायनी, विधा कथा, उप-विधा प्रविष्टि — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।
२४६. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।
२४७. (D) ई पाठ प्रविष्टिक रूपमे कथा-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।
२४८. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।
२४९. (B) खण्ड 4104, सूचकांक पंक्ति 2795मे डॉ. कामिनी कामायनीक “टूटल तारा” प्रविष्टि कथा, प्रविष्टि आ “ऐतिहासिक पृष्ठभूमि” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 31क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।
२५०. (A) अपन राज्य — सूचकांक पंक्ति 2796मे डॉ. कामिनी कामायनीक प्रविष्टि “अपन राज्य” रूपमे देल अछि।
२५१. (B) व्यंग्य-कथा — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “व्यंग्य-कथा” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।
२५२. (C) प्रविष्टि — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “प्रविष्टि” अछि।
२५३. (D) राजनीतिक व्यंग्य — टिप्पणीक पहिल संकेत “राजनीतिक व्यंग्य” अछि।
२५४. (A) राजनीतिक व्यंग्य — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “राजनीतिक व्यंग्य” रूपमे देखाइत अछि।
२५५. (B) लेखक डॉ. कामिनी कामायनी, विधा व्यंग्य-कथा, उप-विधा प्रविष्टि — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।
२५६. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।
२५७. (D) ई पाठ प्रविष्टिक रूपमे व्यंग्य-कथा-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।
२५८. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।
२५९. (B) खण्ड 4105, सूचकांक पंक्ति 2796मे डॉ. कामिनी कामायनीक “अपन राज्य” प्रविष्टि व्यंग्य-कथा, प्रविष्टि आ “राजनीतिक व्यंग्य” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 31क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।
२६०. (A) विवसता — सूचकांक पंक्ति 2797मे कुमार मनोज कश्यपक प्रविष्टि “विवसता” रूपमे देल अछि।
२६१. (B) कथा/लघुकथा — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “कथा/लघुकथा” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।
२६२. (C) प्रविष्टि — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “प्रविष्टि” अछि।
२६३. (D) ग्रामीण जीवन — टिप्पणीक पहिल संकेत “ग्रामीण जीवन” अछि।
२६४. (A) ग्रामीण जीवन — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “ग्रामीण जीवन” रूपमे देखाइत अछि।

२६५. (B) लेखक कुमार मनोज कश्यप, विधा कथा/लघुकथा, उप-विधा प्रविष्टि — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।
२६६. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।
२६७. (D) ई पाठ प्रविष्टिक रूपमे कथा/लघुकथा-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।
२६८. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।
२६९. (B) खण्ड 4106, सूचकांक पंक्ति 2797मे कुमार मनोज कश्यपक “विवसता” प्रविष्टि कथा/लघुकथा, प्रविष्टि आ “ग्रामीण जीवन” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 31क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।
२७०. (A) मरीचका — सूचकांक पंक्ति 2798मे कुमार मनोज कश्यपक प्रविष्टि “मरीचका” रूपमे देल अछि।
२७१. (B) लघुकथा — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “लघुकथा” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।
२७२. (C) प्रविष्टि — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “प्रविष्टि” अछि।
२७३. (D) वृद्धावस्था — टिप्पणीक पहिल संकेत “वृद्धावस्था” अछि।
२७४. (A) वृद्धावस्था — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “वृद्धावस्था” रूपमे देखाइत अछि।
२७५. (B) लेखक कुमार मनोज कश्यप, विधा लघुकथा, उप-विधा प्रविष्टि — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।
२७६. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।
२७७. (D) ई पाठ प्रविष्टिक रूपमे लघुकथा-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।
२७८. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।
२७९. (B) खण्ड 4107, सूचकांक पंक्ति 2798मे कुमार मनोज कश्यपक “मरीचका” प्रविष्टि लघुकथा, प्रविष्टि आ “वृद्धावस्था” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 31क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।
२८०. (A) परजा — सूचकांक पंक्ति 2799मे कुमार मनोज कश्यपक प्रविष्टि “परजा” रूपमे देल अछि।
२८१. (B) कथा — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “कथा” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।
२८२. (C) प्रविष्टि — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “प्रविष्टि” अछि।
२८३. (D) राजनीतिक चेतना — टिप्पणीक पहिल संकेत “राजनीतिक चेतना” अछि।
२८४. (A) राजनीतिक चेतना — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “राजनीतिक चेतना” रूपमे देखाइत अछि।
२८५. (B) लेखक कुमार मनोज कश्यप, विधा कथा, उप-विधा प्रविष्टि — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।
२८६. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।
२८७. (D) ई पाठ प्रविष्टिक रूपमे कथा-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।
२८८. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।
२८९. (B) खण्ड 4108, सूचकांक पंक्ति 2799मे कुमार मनोज कश्यपक “परजा” प्रविष्टि कथा, प्रविष्टि आ “राजनीतिक चेतना” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 31क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।
२९०. (A) मर्यादाक हनन — सूचकांक पंक्ति 2800मे कुमार मनोज कश्यपक प्रविष्टि “मर्यादाक हनन” रूपमे देल अछि।
२९१. (B) कथा — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “कथा” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।
२९२. (C) प्रविष्टि — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “प्रविष्टि” अछि।
२९३. (D) पिता-पुत्र सम्बन्ध — टिप्पणीक पहिल संकेत “पिता-पुत्र सम्बन्ध” अछि।
२९४. (A) पिता-पुत्र सम्बन्ध — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “पिता-पुत्र सम्बन्ध” रूपमे देखाइत अछि।
२९५. (B) लेखक कुमार मनोज कश्यप, विधा कथा, उप-विधा प्रविष्टि — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

२९६. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठकके केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।
२९७. (D) ई पाठ प्रविष्टिक रूपमे कथा-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।
२९८. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।
२९९. (B) खण्ड 4109, सूचकांक पंक्ति 2800मे कुमार मनोज कश्यपक “मर्यादाक हनन” प्रविष्टि कथा, प्रविष्टि आ “पिता-पुत्र सम्बन्ध” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 31क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।
३००. (A) प्रतिरोध — सूचकांक पंक्ति 2801मे कुमार मनोज कश्यपक प्रविष्टि “प्रतिरोध” रूपमे देल अछि।
३०१. (B) लघुकथा — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “लघुकथा” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।
३०२. (C) प्रविष्टि — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “प्रविष्टि” अछि।
३०३. (D) प्रतीकात्मक — टिप्पणीक पहिल संकेत “प्रतीकात्मक” अछि।
३०४. (A) प्रतीकात्मक — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “प्रतीकात्मक” रूपमे देखाइत अछि।
३०५. (B) लेखक कुमार मनोज कश्यप, विधा लघुकथा, उप-विधा प्रविष्टि — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।
३०६. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।
३०७. (D) ई पाठ प्रविष्टिक रूपमे लघुकथा-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।
३०८. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।
३०९. (B) खण्ड 4110, सूचकांक पंक्ति 2801मे कुमार मनोज कश्यपक “प्रतिरोध” प्रविष्टि लघुकथा, प्रविष्टि आ “प्रतीकात्मक” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 31क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।
३१०. (A) दृष्टिकोण — सूचकांक पंक्ति 2802मे कुमार मनोज कश्यपक प्रविष्टि “दृष्टिकोण” रूपमे देल अछि।
३११. (B) कथा — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “कथा” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।
३१२. (C) प्रविष्टि — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “प्रविष्टि” अछि।
३१३. (D) सरकारी सेवा — टिप्पणीक पहिल संकेत “सरकारी सेवा” अछि।
३१४. (A) सरकारी सेवा — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “सरकारी सेवा” रूपमे देखाइत अछि।
३१५. (B) लेखक कुमार मनोज कश्यप, विधा कथा, उप-विधा प्रविष्टि — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।
३१६. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।
३१७. (D) ई पाठ प्रविष्टिक रूपमे कथा-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।
३१८. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।
३१९. (B) खण्ड 4111, सूचकांक पंक्ति 2802मे कुमार मनोज कश्यपक “दृष्टिकोण” प्रविष्टि कथा, प्रविष्टि आ “सरकारी सेवा” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 31क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।
३२०. (A) ओ तड बताह अछि — सूचकांक पंक्ति 2803मे कुमार मनोज कश्यपक प्रविष्टि “ओ तड बताह अछि” रूपमे देल अछि।
३२१. (B) कथा — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “कथा” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।
३२२. (C) प्रविष्टि — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “प्रविष्टि” अछि।
३२३. (D) मानसिक अस्वस्थता — टिप्पणीक पहिल संकेत “मानसिक अस्वस्थता” अछि।
३२४. (A) मानसिक अस्वस्थता — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “मानसिक अस्वस्थता” रूपमे देखाइत अछि।
३२५. (B) लेखक कुमार मनोज कश्यप, विधा कथा, उप-विधा प्रविष्टि — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।
३२६. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

३२७. (D) ई पाठ प्रविष्टिक रूपमे कथा-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।
३२८. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।
३२९. (B) खण्ड 4112, सूचकांक पंक्ति 2803मे कुमार मनोज कश्यपक “ओ तड बताह अछि” प्रविष्टि कथा, प्रविष्टि आ “मानसिक अस्वस्थता” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 31क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।
३३०. (A) धर्मात्मा — सूचकांक पंक्ति 2804मे कुमार मनोज कश्यपक प्रविष्टि “धर्मात्मा” रूपमे देल अछि।
३३१. (B) लघुकथा — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “लघुकथा” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।
३३२. (C) प्रविष्टि — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “प्रविष्टि” अछि।
३३३. (D) धार्मिक पाखण्ड — टिप्पणीक पहिल संकेत “धार्मिक पाखण्ड” अछि।
३३४. (A) धार्मिक पाखण्ड — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “धार्मिक पाखण्ड” रूपमे देखाइत अछि।
३३५. (B) लेखक कुमार मनोज कश्यप, विधा लघुकथा, उप-विधा प्रविष्टि — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।
३३६. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।
३३७. (D) ई पाठ प्रविष्टिक रूपमे लघुकथा-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।
३३८. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।
३३९. (B) खण्ड 4113, सूचकांक पंक्ति 2804मे कुमार मनोज कश्यपक “धर्मात्मा” प्रविष्टि लघुकथा, प्रविष्टि आ “धार्मिक पाखण्ड” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 31क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।
३४०. (A) मनस्ताप — सूचकांक पंक्ति 2805मे कुमार मनोज कश्यपक प्रविष्टि “मनस्ताप” रूपमे देल अछि।
३४१. (B) कथा — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “कथा” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।
३४२. (C) प्रविष्टि — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “प्रविष्टि” अछि।
३४३. (D) भ्रष्टाचार — टिप्पणीक पहिल संकेत “भ्रष्टाचार” अछि।
३४४. (A) भ्रष्टाचार — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “भ्रष्टाचार” रूपमे देखाइत अछि।
३४५. (B) लेखक कुमार मनोज कश्यप, विधा कथा, उप-विधा प्रविष्टि — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।
३४६. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।
३४७. (D) ई पाठ प्रविष्टिक रूपमे कथा-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।
३४८. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।
३४९. (B) खण्ड 4114, सूचकांक पंक्ति 2805मे कुमार मनोज कश्यपक “मनस्ताप” प्रविष्टि कथा, प्रविष्टि आ “भ्रष्टाचार” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 31क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।
३५०. (A) गिरैत देवाल — सूचकांक पंक्ति 2806मे कुमार मनोज कश्यपक प्रविष्टि “गिरैत देवाल” रूपमे देल अछि।
३५१. (B) कथा — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “कथा” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।
३५२. (C) प्रविष्टि — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “प्रविष्टि” अछि।
३५३. (D) गरीबी — टिप्पणीक पहिल संकेत “गरीबी” अछि।
३५४. (A) गरीबी — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “गरीबी” रूपमे देखाइत अछि।
३५५. (B) लेखक कुमार मनोज कश्यप, विधा कथा, उप-विधा प्रविष्टि — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।
३५६. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।
३५७. (D) ई पाठ प्रविष्टिक रूपमे कथा-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

३५८. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।
३५९. (B) खण्ड 4115, सूचकांक पंक्ति 2806मे कुमार मनोज कश्यपक “गिरैत देवाल” प्रविष्टि कथा, प्रविष्टि आ “गरीबी” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 31क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकें प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।
३६०. (A) कलाकार — सूचकांक पंक्ति 2807मे कुमार मनोज कश्यपक प्रविष्टि “कलाकार” रूपमे देल अछि।
३६१. (B) लघुकथा — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकें “लघुकथा” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।
३६२. (C) प्रविष्टि — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “प्रविष्टि” अछि।
३६३. (D) बाल-श्रम — टिप्पणीक पहिल संकेत “बाल-श्रम” अछि।
३६४. (A) बाल-श्रम — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “बाल-श्रम” रूपमे देखाइत अछि।
३६५. (B) लेखक कुमार मनोज कश्यप, विधा लघुकथा, उप-विधा प्रविष्टि — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकें एक साथ रखैत अछि।
३६६. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककें केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।
३६७. (D) ई पाठ प्रविष्टिक रूपमे लघुकथा-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकें स्पष्ट करैत अछि।
३६८. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।
३६९. (B) खण्ड 4116, सूचकांक पंक्ति 2807मे कुमार मनोज कश्यपक “कलाकार” प्रविष्टि लघुकथा, प्रविष्टि आ “बाल-श्रम” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 31क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकें प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।
३७०. (A) नोर अंगोर — सूचकांक पंक्ति 2808मे कुमार मनोज कश्यपक प्रविष्टि “नोर अंगोर” रूपमे देल अछि।
३७१. (B) कथा — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकें “कथा” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।
३७२. (C) प्रविष्टि — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “प्रविष्टि” अछि।
३७३. (D) ग्रामीण समाज — टिप्पणीक पहिल संकेत “ग्रामीण समाज” अछि।
३७४. (A) ग्रामीण समाज — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “ग्रामीण समाज” रूपमे देखाइत अछि।
३७५. (B) लेखक कुमार मनोज कश्यप, विधा कथा, उप-विधा प्रविष्टि — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकें एक साथ रखैत अछि।
३७६. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककें केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।
३७७. (D) ई पाठ प्रविष्टिक रूपमे कथा-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकें स्पष्ट करैत अछि।
३७८. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।
३७९. (B) खण्ड 4117, सूचकांक पंक्ति 2808मे कुमार मनोज कश्यपक “नोर अंगोर” प्रविष्टि कथा, प्रविष्टि आ “ग्रामीण समाज” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 31क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकें प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।
३८०. (A) फ्यूज बल्ब — सूचकांक पंक्ति 2809मे कुमार मनोज कश्यपक प्रविष्टि “फ्यूज बल्ब” रूपमे देल अछि।
३८१. (B) कथा — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकें “कथा” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।
३८२. (C) प्रविष्टि — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “प्रविष्टि” अछि।
३८३. (D) सेवानिवृत्ति — टिप्पणीक पहिल संकेत “सेवानिवृत्ति” अछि।
३८४. (A) सेवानिवृत्ति — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “सेवानिवृत्ति” रूपमे देखाइत अछि।
३८५. (B) लेखक कुमार मनोज कश्यप, विधा कथा, उप-विधा प्रविष्टि — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकें एक साथ रखैत अछि।
३८६. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककें केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।
३८७. (D) ई पाठ प्रविष्टिक रूपमे कथा-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकें स्पष्ट करैत अछि।

३८८. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।
३८९. (B) खण्ड 4118, सूचकांक पंक्ति 2809मे कुमार मनोज कश्यपक “फ्यूज बल्व” प्रविष्टि कथा, प्रविष्टि आ “सेवानिवृत्ति” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 31क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।
३९०. (A) पहिल चिट्ठी — सूचकांक पंक्ति 2810मे कुमार मनोज कश्यपक प्रविष्टि “पहिल चिट्ठी” रूपमे देल अछि।
३९१. (B) कथा (पत्र-शैली) — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “कथा (पत्र-शैली)” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।
३९२. (C) प्रविष्टि — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “प्रविष्टि” अछि।
३९३. (D) नारीवादी चेतना — टिप्पणीक पहिल संकेत “नारीवादी चेतना” अछि।
३९४. (A) नारीवादी चेतना — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “नारीवादी चेतना” रूपमे देखाइत अछि।
३९५. (B) लेखक कुमार मनोज कश्यप, विधा कथा (पत्र-शैली), उप-विधा प्रविष्टि — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।
३९६. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।
३९७. (D) ई पाठ प्रविष्टिक रूपमे कथा (पत्र-शैली)-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।
३९८. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।
३९९. (B) खण्ड 4119, सूचकांक पंक्ति 2810मे कुमार मनोज कश्यपक “पहिल चिट्ठी” प्रविष्टि कथा (पत्र-शैली), प्रविष्टि आ “नारीवादी चेतना” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 31क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।
४००. (A) दिन धराबय तीन नाम — सूचकांक पंक्ति 2811मे कुमार मनोज कश्यपक प्रविष्टि “दिन धराबय तीन नाम” रूपमे देल अछि।
४०१. (B) कथा — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “कथा” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।
४०२. (C) प्रविष्टि — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “प्रविष्टि” अछि।
४०३. (D) दृष्टिकोणक भिन्नता — टिप्पणीक पहिल संकेत “दृष्टिकोणक भिन्नता” अछि।
४०४. (A) दृष्टिकोणक भिन्नता — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “दृष्टिकोणक भिन्नता” रूपमे देखाइत अछि।
४०५. (B) लेखक कुमार मनोज कश्यप, विधा कथा, उप-विधा प्रविष्टि — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।
४०६. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।
४०७. (D) ई पाठ प्रविष्टिक रूपमे कथा-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।
४०८. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।
४०९. (B) खण्ड 4120, सूचकांक पंक्ति 2811मे कुमार मनोज कश्यपक “दिन धराबय तीन नाम” प्रविष्टि कथा, प्रविष्टि आ “दृष्टिकोणक भिन्नता” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 31क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।
४१०. (A) घूरि आऊ निशा — सूचकांक पंक्ति 2812मे कुमार मनोज कश्यपक प्रविष्टि “घूरि आऊ निशा” रूपमे देल अछि।
४११. (B) कथा — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “कथा” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।
४१२. (C) प्रविष्टि — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “प्रविष्टि” अछि।
४१३. (D) प्रेम — टिप्पणीक पहिल संकेत “प्रेम” अछि।
४१४. (A) प्रेम — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “प्रेम” रूपमे देखाइत अछि।
४१५. (B) लेखक कुमार मनोज कश्यप, विधा कथा, उप-विधा प्रविष्टि — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।
४१६. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।
४१७. (D) ई पाठ प्रविष्टिक रूपमे कथा-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

४१८. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।
४१९. (B) खण्ड 4121, सूचकांक पंक्ति 2812मे कुमार मनोज कश्यपक “घूरि आऊ निशा” प्रविष्टि कथा, प्रविष्टि आ “प्रेम” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 31क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।
४२०. (A) अन्हेर — सूचकांक पंक्ति 2813मे कुमार मनोज कश्यपक प्रविष्टि “अन्हेर” रूपमे देल अछि।
४२१. (B) कथा — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “कथा” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।
४२२. (C) प्रविष्टि — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “प्रविष्टि” अछि।
४२३. (D) पलायन — टिप्पणीक पहिल संकेत “पलायन” अछि।
४२४. (A) पलायन — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “पलायन” रूपमे देखाइत अछि।
४२५. (B) लेखक कुमार मनोज कश्यप, विधा कथा, उप-विधा प्रविष्टि — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।
४२६. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।
४२७. (D) ई पाठ प्रविष्टिक रूपमे कथा-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।
४२८. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।
४२९. (B) खण्ड 4122, सूचकांक पंक्ति 2813मे कुमार मनोज कश्यपक “अन्हेर” प्रविष्टि कथा, प्रविष्टि आ “पलायन” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 31क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।
४३०. (A) सीमान — सूचकांक पंक्ति 2814मे कुमार मनोज कश्यपक प्रविष्टि “सीमान” रूपमे देल अछि।
४३१. (B) कथा — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “कथा” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।
४३२. (C) प्रविष्टि — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “प्रविष्टि” अछि।
४३३. (D) दृष्टिकोण — टिप्पणीक पहिल संकेत “दृष्टिकोण” अछि।
४३४. (A) दृष्टिकोण — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “दृष्टिकोण” रूपमे देखाइत अछि।
४३५. (B) लेखक कुमार मनोज कश्यप, विधा कथा, उप-विधा प्रविष्टि — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।
४३६. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।
४३७. (D) ई पाठ प्रविष्टिक रूपमे कथा-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।
४३८. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।
४३९. (B) खण्ड 4123, सूचकांक पंक्ति 2814मे कुमार मनोज कश्यपक “सीमान” प्रविष्टि कथा, प्रविष्टि आ “दृष्टिकोण” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 31क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।
४४०. (A) उजडल खोंता — सूचकांक पंक्ति 2815मे कुमार मनोज कश्यपक प्रविष्टि “उजडल खोंता” रूपमे देल अछि।
४४१. (B) कथा — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “कथा” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।
४४२. (C) प्रविष्टि — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “प्रविष्टि” अछि।
४४३. (D) बाल-श्रम — टिप्पणीक पहिल संकेत “बाल-श्रम” अछि।
४४४. (A) बाल-श्रम — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “बाल-श्रम” रूपमे देखाइत अछि।
४४५. (B) लेखक कुमार मनोज कश्यप, विधा कथा, उप-विधा प्रविष्टि — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।
४४६. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।
४४७. (D) ई पाठ प्रविष्टिक रूपमे कथा-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

४४८. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।
४४९. (B) खण्ड 4124, सूचकांक पंक्ति 2815मे कुमार मनोज कश्यपक “उजडल खोंता” प्रविष्टि कथा, प्रविष्टि आ “बाल-श्रम” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 31क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकें प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।
४५०. (A) मरिचिका (पुनः) — सूचकांक पंक्ति 2816मे कुमार मनोज कश्यपक प्रविष्टि “मरिचिका (पुनः)” रूपमे देल अछि।
४५१. (B) लघुकथा — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकें “लघुकथा” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।
४५२. (C) प्रविष्टि — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “प्रविष्टि” अछि।
४५३. (D) वृद्धावस्था — टिप्पणीक पहिल संकेत “वृद्धावस्था” अछि।
४५४. (A) वृद्धावस्था — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “वृद्धावस्था” रूपमे देखाइत अछि।
४५५. (B) लेखक कुमार मनोज कश्यप, विधा लघुकथा, उप-विधा प्रविष्टि — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकें एक साथ रखैत अछि।
४५६. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककें केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।
४५७. (D) ई पाठ प्रविष्टिक रूपमे लघुकथा-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकें स्पष्ट करैत अछि।
४५८. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।
४५९. (B) खण्ड 4125, सूचकांक पंक्ति 2816मे कुमार मनोज कश्यपक “मरिचिका (पुनः)” प्रविष्टि लघुकथा, प्रविष्टि आ “वृद्धावस्था” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 31क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकें प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।
४६०. (A) परजा (पुनः) — सूचकांक पंक्ति 2817मे कुमार मनोज कश्यपक प्रविष्टि “परजा (पुनः)” रूपमे देल अछि।
४६१. (B) कथा — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकें “कथा” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।
४६२. (C) प्रविष्टि — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “प्रविष्टि” अछि।
४६३. (D) राजनीतिक चेतना — टिप्पणीक पहिल संकेत “राजनीतिक चेतना” अछि।
४६४. (A) राजनीतिक चेतना — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “राजनीतिक चेतना” रूपमे देखाइत अछि।
४६५. (B) लेखक कुमार मनोज कश्यप, विधा कथा, उप-विधा प्रविष्टि — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकें एक साथ रखैत अछि।
४६६. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककें केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।
४६७. (D) ई पाठ प्रविष्टिक रूपमे कथा-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकें स्पष्ट करैत अछि।
४६८. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।
४६९. (B) खण्ड 4126, सूचकांक पंक्ति 2817मे कुमार मनोज कश्यपक “परजा (पुनः)” प्रविष्टि कथा, प्रविष्टि आ “राजनीतिक चेतना” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 31क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकें प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।
४७०. (A) बदलेत समय — सूचकांक पंक्ति 2818मे कुमार मनोज कश्यपक प्रविष्टि “बदलेत समय” रूपमे देल अछि।
४७१. (B) लघुकथा — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकें “लघुकथा” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।
४७२. (C) प्रविष्टि — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “प्रविष्टि” अछि।
४७३. (D) परिवर्तन — टिप्पणीक पहिल संकेत “परिवर्तन” अछि।
४७४. (A) परिवर्तन — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “परिवर्तन” रूपमे देखाइत अछि।
४७५. (B) लेखक कुमार मनोज कश्यप, विधा लघुकथा, उप-विधा प्रविष्टि — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकें एक साथ रखैत अछि।
४७६. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककें केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।
४७७. (D) ई पाठ प्रविष्टिक रूपमे लघुकथा-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकें स्पष्ट करैत अछि।

४७८. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।
४७९. (B) खण्ड 4127, सूचकांक पंक्ति 2818मे कुमार मनोज कश्यपक “बदलेत समय” प्रविष्टि लघुकथा, प्रविष्टि आ “परिवर्तन” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 31क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकें प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।
४८०. (A) जरल पेट — सूचकांक पंक्ति 2819मे कुमार मनोज कश्यपक प्रविष्टि “जरल पेट” रूपमे देल अछि।
४८१. (B) लघुकथा — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकें “लघुकथा” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।
४८२. (C) प्रविष्टि — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “प्रविष्टि” अछि।
४८३. (D) भूख — टिप्पणीक पहिल संकेत “भूख” अछि।
४८४. (A) भूख — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “भूख” रूपमे देखाइत अछि।
४८५. (B) लेखक कुमार मनोज कश्यप, विधा लघुकथा, उप-विधा प्रविष्टि — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकें एक साथ रखैत अछि।
४८६. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककें केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।
४८७. (D) ई पाठ प्रविष्टिक रूपमे लघुकथा-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकें स्पष्ट करैत अछि।
४८८. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।
४८९. (B) खण्ड 4128, सूचकांक पंक्ति 2819मे कुमार मनोज कश्यपक “जरल पेट” प्रविष्टि लघुकथा, प्रविष्टि आ “भूख” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 31क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकें प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।
४९०. (A) जीतक आगू — सूचकांक पंक्ति 2820मे कुमार मनोज कश्यपक प्रविष्टि “जीतक आगू” रूपमे देल अछि।
४९१. (B) कथा — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकें “कथा” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।
४९२. (C) प्रविष्टि — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “प्रविष्टि” अछि।
४९३. (D) बाढ़ि — टिप्पणीक पहिल संकेत “बाढ़ि” अछि।
४९४. (A) बाढ़ि — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “बाढ़ि” रूपमे देखाइत अछि।
४९५. (B) लेखक कुमार मनोज कश्यप, विधा कथा, उप-विधा प्रविष्टि — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकें एक साथ रखैत अछि।
४९६. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककें केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।
४९७. (D) ई पाठ प्रविष्टिक रूपमे कथा-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकें स्पष्ट करैत अछि।
४९८. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।
४९९. (B) खण्ड 4129, सूचकांक पंक्ति 2820मे कुमार मनोज कश्यपक “जीतक आगू” प्रविष्टि कथा, प्रविष्टि आ “बाढ़ि” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 31क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकें प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।
५००. (A) माता कुमाता न भवति — सूचकांक पंक्ति 2821मे कुमार मनोज कश्यपक प्रविष्टि “माता कुमाता न भवति” रूपमे देल अछि।
५०१. (B) कथा — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकें “कथा” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।
५०२. (C) प्रविष्टि — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “प्रविष्टि” अछि।
५०३. (D) पारिवारिक सम्बन्ध — टिप्पणीक पहिल संकेत “पारिवारिक सम्बन्ध” अछि।
५०४. (A) पारिवारिक सम्बन्ध — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “पारिवारिक सम्बन्ध” रूपमे देखाइत अछि।
५०५. (B) लेखक कुमार मनोज कश्यप, विधा कथा, उप-विधा प्रविष्टि — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकें एक साथ रखैत अछि।
५०६. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककें केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।
५०७. (D) ई पाठ प्रविष्टिक रूपमे कथा-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकें स्पष्ट करैत अछि।

५०८. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।
५०९. (B) खण्ड 4130, सूचकांक पंक्ति 2821मे कुमार मनोज कश्यपक “माता कुमाता न भवति” प्रविष्टि कथा, प्रविष्टि आ “पारिवारिक सम्बन्ध” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 31क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।
५१०. (A) ईमानदार — सूचकांक पंक्ति 2822मे कुमार मनोज कश्यपक प्रविष्टि “ईमानदार” रूपमे देल अछि।
५११. (B) कथा — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “कथा” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।
५१२. (C) प्रविष्टि — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “प्रविष्टि” अछि।
५१३. (D) भ्रष्टाचार — टिप्पणीक पहिल संकेत “भ्रष्टाचार” अछि।
५१४. (A) भ्रष्टाचार — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “भ्रष्टाचार” रूपमे देखाइत अछि।
५१५. (B) लेखक कुमार मनोज कश्यप, विधा कथा, उप-विधा प्रविष्टि — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।
५१६. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।
५१७. (D) ई पाठ प्रविष्टिक रूपमे कथा-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।
५१८. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।
५१९. (B) खण्ड 4131, सूचकांक पंक्ति 2822मे कुमार मनोज कश्यपक “ईमानदार” प्रविष्टि कथा, प्रविष्टि आ “भ्रष्टाचार” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 31क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।
५२०. (A) मास्टर साहेब — सूचकांक पंक्ति 2823मे कुमार मनोज कश्यपक प्रविष्टि “मास्टर साहेब” रूपमे देल अछि।
५२१. (B) कथा — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “कथा” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।
५२२. (C) प्रविष्टि — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “प्रविष्टि” अछि।
५२३. (D) शिक्षक जीवन — टिप्पणीक पहिल संकेत “शिक्षक जीवन” अछि।
५२४. (A) शिक्षक जीवन — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “शिक्षक जीवन” रूपमे देखाइत अछि।
५२५. (B) लेखक कुमार मनोज कश्यप, विधा कथा, उप-विधा प्रविष्टि — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।
५२६. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।
५२७. (D) ई पाठ प्रविष्टिक रूपमे कथा-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।
५२८. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।
५२९. (B) खण्ड 4132, सूचकांक पंक्ति 2823मे कुमार मनोज कश्यपक “मास्टर साहेब” प्रविष्टि कथा, प्रविष्टि आ “शिक्षक जीवन” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 31क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।
५३०. (A) कचोट — सूचकांक पंक्ति 2824मे कुमार मनोज कश्यपक प्रविष्टि “कचोट” रूपमे देल अछि।
५३१. (B) कथा — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “कथा” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।
५३२. (C) प्रविष्टि — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “प्रविष्टि” अछि।
५३३. (D) वैवाहिक सम्बन्ध — टिप्पणीक पहिल संकेत “वैवाहिक सम्बन्ध” अछि।
५३४. (A) वैवाहिक सम्बन्ध — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “वैवाहिक सम्बन्ध” रूपमे देखाइत अछि।
५३५. (B) लेखक कुमार मनोज कश्यप, विधा कथा, उप-विधा प्रविष्टि — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।
५३६. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।
५३७. (D) ई पाठ प्रविष्टिक रूपमे कथा-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

५३८. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।
५३९. (B) खण्ड 4133, सूचकांक पंक्ति 2824मे कुमार मनोज कश्यपक “कचोट” प्रविष्टि कथा, प्रविष्टि आ “वैवाहिक सम्बन्ध” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 31क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।
५४०. (A) नव-वर्ष — सूचकांक पंक्ति 2825मे कुमार मनोज कश्यपक प्रविष्टि “नव-वर्ष” रूपमे देल अछि।
५४१. (B) लघुकथा — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “लघुकथा” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।
५४२. (C) प्रविष्टि — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “प्रविष्टि” अछि।
५४३. (D) गरीबी — टिप्पणीक पहिल संकेत “गरीबी” अछि।
५४४. (A) गरीबी — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “गरीबी” रूपमे देखाइत अछि।
५४५. (B) लेखक कुमार मनोज कश्यप, विधा लघुकथा, उप-विधा प्रविष्टि — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।
५४६. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।
५४७. (D) ई पाठ प्रविष्टिक रूपमे लघुकथा-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।
५४८. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।
५४९. (B) खण्ड 4134, सूचकांक पंक्ति 2825मे कुमार मनोज कश्यपक “नव-वर्ष” प्रविष्टि लघुकथा, प्रविष्टि आ “गरीबी” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 31क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।
५५०. (A) थाकल बाट — सूचकांक पंक्ति 2826मे कुमार मनोज कश्यपक प्रविष्टि “थाकल बाट” रूपमे देल अछि।
५५१. (B) लघुकथा — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “लघुकथा” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।
५५२. (C) प्रविष्टि — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “प्रविष्टि” अछि।
५५३. (D) सरकारी सेवा — टिप्पणीक पहिल संकेत “सरकारी सेवा” अछि।
५५४. (A) सरकारी सेवा — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “सरकारी सेवा” रूपमे देखाइत अछि।
५५५. (B) लेखक कुमार मनोज कश्यप, विधा लघुकथा, उप-विधा प्रविष्टि — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।
५५६. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।
५५७. (D) ई पाठ प्रविष्टिक रूपमे लघुकथा-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।
५५८. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।
५५९. (B) खण्ड 4135, सूचकांक पंक्ति 2826मे कुमार मनोज कश्यपक “थाकल बाट” प्रविष्टि लघुकथा, प्रविष्टि आ “सरकारी सेवा” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 31क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।
५६०. (A) हारल मनुक्ख — सूचकांक पंक्ति 2827मे कुमार मनोज कश्यपक प्रविष्टि “हारल मनुक्ख” रूपमे देल अछि।
५६१. (B) लघुकथा — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “लघुकथा” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।
५६२. (C) प्रविष्टि — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “प्रविष्टि” अछि।
५६३. (D) मानवता — टिप्पणीक पहिल संकेत “मानवता” अछि।
५६४. (A) मानवता — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “मानवता” रूपमे देखाइत अछि।
५६५. (B) लेखक कुमार मनोज कश्यप, विधा लघुकथा, उप-विधा प्रविष्टि — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।
५६६. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।
५६७. (D) ई पाठ प्रविष्टिक रूपमे लघुकथा-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

५६८. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।
५६९. (B) खण्ड 4136, सूचकांक पंक्ति 2827मे कुमार मनोज कश्यपक “हारल मनुक्ख” प्रविष्टि लघुकथा, प्रविष्टि आ “मानवता” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 31क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकें प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।
५७०. (A) भावना — सूचकांक पंक्ति 2828मे कुमार मनोज कश्यपक प्रविष्टि “भावना” रूपमे देल अछि।
५७१. (B) लघुकथा — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकें “लघुकथा” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।
५७२. (C) प्रविष्टि — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “प्रविष्टि” अछि।
५७३. (D) वर्ग-भेद — टिप्पणीक पहिल संकेत “वर्ग-भेद” अछि।
५७४. (A) वर्ग-भेद — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “वर्ग-भेद” रूपमे देखाइत अछि।
५७५. (B) लेखक कुमार मनोज कश्यप, विधा लघुकथा, उप-विधा प्रविष्टि — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकें एक साथ रखैत अछि।
५७६. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककें केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।
५७७. (D) ई पाठ प्रविष्टिक रूपमे लघुकथा-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकें स्पष्ट करैत अछि।
५७८. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।
५७९. (B) खण्ड 4137, सूचकांक पंक्ति 2828मे कुमार मनोज कश्यपक “भावना” प्रविष्टि लघुकथा, प्रविष्टि आ “वर्ग-भेद” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 31क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकें प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।
५८०. (A) बी०डी०ओ० — सूचकांक पंक्ति 2829मे कुमार मनोज कश्यपक प्रविष्टि “बी०डी०ओ०” रूपमे देल अछि।
५८१. (B) लघुकथा — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकें “लघुकथा” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।
५८२. (C) प्रविष्टि — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “प्रविष्टि” अछि।
५८३. (D) ग्रामीण राजनीति — टिप्पणीक पहिल संकेत “ग्रामीण राजनीति” अछि।
५८४. (A) ग्रामीण राजनीति — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “ग्रामीण राजनीति” रूपमे देखाइत अछि।
५८५. (B) लेखक कुमार मनोज कश्यप, विधा लघुकथा, उप-विधा प्रविष्टि — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकें एक साथ रखैत अछि।
५८६. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककें केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।
५८७. (D) ई पाठ प्रविष्टिक रूपमे लघुकथा-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकें स्पष्ट करैत अछि।
५८८. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।
५८९. (B) खण्ड 4138, सूचकांक पंक्ति 2829मे कुमार मनोज कश्यपक “बी०डी०ओ०” प्रविष्टि लघुकथा, प्रविष्टि आ “ग्रामीण राजनीति” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 31क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकें प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।
५९०. (A) अंकोरवट मंदिर — सूचकांक पंक्ति 2830मे डॉ. कामिनी कामायनीक प्रविष्टि “अंकोरवट मंदिर” रूपमे देल अछि।
५९१. (B) कविता — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकें “कविता” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।
५९२. (C) प्रविष्टि — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “प्रविष्टि” अछि।
५९३. (D) यात्रा-वर्णन — टिप्पणीक पहिल संकेत “यात्रा-वर्णन” अछि।
५९४. (A) यात्रा-वर्णन — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “यात्रा-वर्णन” रूपमे देखाइत अछि।
५९५. (B) लेखक डॉ. कामिनी कामायनी, विधा कविता, उप-विधा प्रविष्टि — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकें एक साथ रखैत अछि।
५९६. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककें केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।
५९७. (D) ई पाठ प्रविष्टिक रूपमे कविता-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकें स्पष्ट करैत अछि।

५९८. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।
५९९. (B) खण्ड 4139, सूचकांक पंक्ति 2830मे डॉ. कामिनी कामायनीक “अंकोरवट मंदिर” प्रविष्टि कविता, प्रविष्टि आ “यात्रा-वर्णन” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 31क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।
६००. (A) जहिया ओ इतिहास सुनौलक — सूचकांक पंक्ति 2831मे डॉ. कामिनी कामायनीक प्रविष्टि “जहिया ओ इतिहास सुनौलक” रूपमे देल अछि।
६०१. (B) कविता — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “कविता” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।
६०२. (C) प्रविष्टि — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “प्रविष्टि” अछि।
६०३. (D) इतिहास-दर्शन — टिप्पणीक पहिल संकेत “इतिहास-दर्शन” अछि।
६०४. (A) इतिहास-दर्शन — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “इतिहास-दर्शन” रूपमे देखाइत अछि।
६०५. (B) लेखक डॉ. कामिनी कामायनी, विधा कविता, उप-विधा प्रविष्टि — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।
६०६. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।
६०७. (D) ई पाठ प्रविष्टिक रूपमे कविता-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।
६०८. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।
६०९. (B) खण्ड 4140, सूचकांक पंक्ति 2831मे डॉ. कामिनी कामायनीक “जहिया ओ इतिहास सुनौलक” प्रविष्टि कविता, प्रविष्टि आ “इतिहास-दर्शन” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 31क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।
६१०. (A) संग दिअ सदियन अहिना — सूचकांक पंक्ति 2832मे डॉ. कामिनी कामायनीक प्रविष्टि “संग दिअ सदियन अहिना” रूपमे देल अछि।
६११. (B) कविता — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “कविता” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।
६१२. (C) प्रविष्टि — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “प्रविष्टि” अछि।
६१३. (D) सहयात्री भाव — टिप्पणीक पहिल संकेत “सहयात्री भाव” अछि।
६१४. (A) सहयात्री भाव — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “सहयात्री भाव” रूपमे देखाइत अछि।
६१५. (B) लेखक डॉ. कामिनी कामायनी, विधा कविता, उप-विधा प्रविष्टि — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।
६१६. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।
६१७. (D) ई पाठ प्रविष्टिक रूपमे कविता-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।
६१८. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।
६१९. (B) खण्ड 4141, सूचकांक पंक्ति 2832मे डॉ. कामिनी कामायनीक “संग दिअ सदियन अहिना” प्रविष्टि कविता, प्रविष्टि आ “सहयात्री भाव” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 31क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।
६२०. (A) वसंत — सूचकांक पंक्ति 2833मे डॉ. कामिनी कामायनीक प्रविष्टि “वसंत” रूपमे देल अछि।
६२१. (B) कविता — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “कविता” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।
६२२. (C) प्रविष्टि — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “प्रविष्टि” अछि।
६२३. (D) प्रकृति-वर्णन — टिप्पणीक पहिल संकेत “प्रकृति-वर्णन” अछि।
६२४. (A) प्रकृति-वर्णन — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “प्रकृति-वर्णन” रूपमे देखाइत अछि।
६२५. (B) लेखक डॉ. कामिनी कामायनी, विधा कविता, उप-विधा प्रविष्टि — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।
६२६. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।
६२७. (D) ई पाठ प्रविष्टिक रूपमे कविता-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

६२८. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।
६२९. (B) खण्ड 4142, सूचकांक पंक्ति 2833मे डॉ. कामिनी कामायनीक “वसंत” प्रविष्टि कविता, प्रविष्टि आ “प्रकृति-वर्णन” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 31क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकें प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।
६३०. (A) बाजार मे स्त्री — सूचकांक पंक्ति 2834मे डॉ. कामिनी कामायनीक प्रविष्टि “बाजार मे स्त्री” रूपमे देल अछि।
६३१. (B) कविता — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकें “कविता” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।
६३२. (C) प्रविष्टि — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “प्रविष्टि” अछि।
६३३. (D) नारी-सशक्तिकरण — टिप्पणीक पहिल संकेत “नारी-सशक्तिकरण” अछि।
६३४. (A) नारी-सशक्तिकरण — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “नारी-सशक्तिकरण” रूपमे देखाइत अछि।
६३५. (B) लेखक डॉ. कामिनी कामायनी, विधा कविता, उप-विधा प्रविष्टि — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकें एक साथ रखैत अछि।
६३६. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककें केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।
६३७. (D) ई पाठ प्रविष्टिक रूपमे कविता-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकें स्पष्ट करैत अछि।
६३८. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।
६३९. (B) खण्ड 4143, सूचकांक पंक्ति 2834मे डॉ. कामिनी कामायनीक “बाजार मे स्त्री” प्रविष्टि कविता, प्रविष्टि आ “नारी-सशक्तिकरण” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 31क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकें प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।
६४०. (A) बंजारा मोन — सूचकांक पंक्ति 2835मे डॉ. कामिनी कामायनीक प्रविष्टि “बंजारा मोन” रूपमे देल अछि।
६४१. (B) कविता — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकें “कविता” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।
६४२. (C) प्रविष्टि — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “प्रविष्टि” अछि।
६४३. (D) मनक चंचलता — टिप्पणीक पहिल संकेत “मनक चंचलता” अछि।
६४४. (A) मनक चंचलता — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “मनक चंचलता” रूपमे देखाइत अछि।
६४५. (B) लेखक डॉ. कामिनी कामायनी, विधा कविता, उप-विधा प्रविष्टि — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकें एक साथ रखैत अछि।
६४६. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककें केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।
६४७. (D) ई पाठ प्रविष्टिक रूपमे कविता-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकें स्पष्ट करैत अछि।
६४८. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।
६४९. (B) खण्ड 4144, सूचकांक पंक्ति 2835मे डॉ. कामिनी कामायनीक “बंजारा मोन” प्रविष्टि कविता, प्रविष्टि आ “मनक चंचलता” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 31क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकें प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।
६५०. (A) द्रौपदी — सूचकांक पंक्ति 2836मे डॉ. कामिनी कामायनीक प्रविष्टि “द्रौपदी” रूपमे देल अछि।
६५१. (B) दीर्घ-कविता — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकें “दीर्घ-कविता” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।
६५२. (C) प्रविष्टि — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “प्रविष्टि” अछि।
६५३. (D) नारी-विमर्श — टिप्पणीक पहिल संकेत “नारी-विमर्श” अछि।
६५४. (A) नारी-विमर्श — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “नारी-विमर्श” रूपमे देखाइत अछि।
६५५. (B) लेखक डॉ. कामिनी कामायनी, विधा दीर्घ-कविता, उप-विधा प्रविष्टि — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकें एक साथ रखैत अछि।
६५६. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककें केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।
६५७. (D) ई पाठ प्रविष्टिक रूपमे दीर्घ-कविता-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकें स्पष्ट करैत अछि।

६५८. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।
६५९. (B) खण्ड 4145, सूचकांक पंक्ति 2836मे डॉ. कामिनी कामायनीक “द्रौपदी” प्रविष्टि दीर्घ-कविता, प्रविष्टि आ “नारी-विमर्श” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 31क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।
६६०. (A) यशोधरा — सूचकांक पंक्ति 2837मे डॉ. कामिनी कामायनीक प्रविष्टि “यशोधरा” रूपमे देल अछि।
६६१. (B) दीर्घ-कविता — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “दीर्घ-कविता” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।
६६२. (C) प्रविष्टि — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “प्रविष्टि” अछि।
६६३. (D) बौद्ध-दर्शन — टिप्पणीक पहिल संकेत “बौद्ध-दर्शन” अछि।
६६४. (A) बौद्ध-दर्शन — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “बौद्ध-दर्शन” रूपमे देखाइत अछि।
६६५. (B) लेखक डॉ. कामिनी कामायनी, विधा दीर्घ-कविता, उप-विधा प्रविष्टि — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।
६६६. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।
६६७. (D) ई पाठ प्रविष्टिक रूपमे दीर्घ-कविता-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।
६६८. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।
६६९. (B) खण्ड 4146, सूचकांक पंक्ति 2837मे डॉ. कामिनी कामायनीक “यशोधरा” प्रविष्टि दीर्घ-कविता, प्रविष्टि आ “बौद्ध-दर्शन” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 31क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।
६७०. (A) गांधारी — सूचकांक पंक्ति 2838मे डॉ. कामिनी कामायनीक प्रविष्टि “गांधारी” रूपमे देल अछि।
६७१. (B) दीर्घ-कविता — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “दीर्घ-कविता” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।
६७२. (C) प्रविष्टि — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “प्रविष्टि” अछि।
६७३. (D) महाभारत-पुनर्पाठ — टिप्पणीक पहिल संकेत “महाभारत-पुनर्पाठ” अछि।
६७४. (A) महाभारत-पुनर्पाठ — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “महाभारत-पुनर्पाठ” रूपमे देखाइत अछि।
६७५. (B) लेखक डॉ. कामिनी कामायनी, विधा दीर्घ-कविता, उप-विधा प्रविष्टि — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।
६७६. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।
६७७. (D) ई पाठ प्रविष्टिक रूपमे दीर्घ-कविता-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।
६७८. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।
६७९. (B) खण्ड 4147, सूचकांक पंक्ति 2838मे डॉ. कामिनी कामायनीक “गांधारी” प्रविष्टि दीर्घ-कविता, प्रविष्टि आ “महाभारत-पुनर्पाठ” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 31क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।
६८०. (A) शकुनतला (सकुन) — सूचकांक पंक्ति 2839मे डॉ. कामिनी कामायनीक प्रविष्टि “शकुनतला (सकुन)” रूपमे देल अछि।
६८१. (B) दीर्घ-कविता — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “दीर्घ-कविता” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।
६८२. (C) प्रविष्टि — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “प्रविष्टि” अछि।
६८३. (D) पौराणिक प्रेम — टिप्पणीक पहिल संकेत “पौराणिक प्रेम” अछि।
६८४. (A) पौराणिक प्रेम — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “पौराणिक प्रेम” रूपमे देखाइत अछि।
६८५. (B) लेखक डॉ. कामिनी कामायनी, विधा दीर्घ-कविता, उप-विधा प्रविष्टि — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।
६८६. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।
६८७. (D) ई पाठ प्रविष्टिक रूपमे दीर्घ-कविता-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

६८८. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।
६८९. (B) खण्ड 4148, सूचकांक पंक्ति 2839मे डॉ. कामिनी कामायनीक “शकुनतला (सकुन)” प्रविष्टि दीर्घ-कविता, प्रविष्टि आ “पौराणिक प्रेम” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 31क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।
६९०. (A) फागुन राग — सूचकांक पंक्ति 2840मे डॉ. कामिनी कामायनीक प्रविष्टि “फागुन राग” रूपमे देल अछि।
६९१. (B) कविता — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “कविता” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।
६९२. (C) प्रविष्टि — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “प्रविष्टि” अछि।
६९३. (D) लोक-उत्सव — टिप्पणीक पहिल संकेत “लोक-उत्सव” अछि।
६९४. (A) लोक-उत्सव — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “लोक-उत्सव” रूपमे देखाइत अछि।
६९५. (B) लेखक डॉ. कामिनी कामायनी, विधा कविता, उप-विधा प्रविष्टि — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।
६९६. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।
६९७. (D) ई पाठ प्रविष्टिक रूपमे कविता-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।
६९८. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।
६९९. (B) खण्ड 4149, सूचकांक पंक्ति 2840मे डॉ. कामिनी कामायनीक “फागुन राग” प्रविष्टि कविता, प्रविष्टि आ “लोक-उत्सव” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 31क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।
७००. (A) काशीक घाट — सूचकांक पंक्ति 2841मे डॉ. कामिनी कामायनीक प्रविष्टि “काशीक घाट” रूपमे देल अछि।
७०१. (B) कविता — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “कविता” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।
७०२. (C) प्रविष्टि — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “प्रविष्टि” अछि।
७०३. (D) आध्यात्मिक — टिप्पणीक पहिल संकेत “आध्यात्मिक” अछि।
७०४. (A) आध्यात्मिक — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “आध्यात्मिक” रूपमे देखाइत अछि।
७०५. (B) लेखक डॉ. कामिनी कामायनी, विधा कविता, उप-विधा प्रविष्टि — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।
७०६. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।
७०७. (D) ई पाठ प्रविष्टिक रूपमे कविता-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।
७०८. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।
७०९. (B) खण्ड 4150, सूचकांक पंक्ति 2841मे डॉ. कामिनी कामायनीक “काशीक घाट” प्रविष्टि कविता, प्रविष्टि आ “आध्यात्मिक” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 31क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।
७१०. (A) चिडैक अभिलाष — सूचकांक पंक्ति 2842मे डॉ. कामिनी कामायनीक प्रविष्टि “चिडैक अभिलाष” रूपमे देल अछि।
७११. (B) कविता — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “कविता” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।
७१२. (C) प्रविष्टि — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “प्रविष्टि” अछि।
७१३. (D) प्रतीकात्मक — टिप्पणीक पहिल संकेत “प्रतीकात्मक” अछि।
७१४. (A) प्रतीकात्मक — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “प्रतीकात्मक” रूपमे देखाइत अछि।
७१५. (B) लेखक डॉ. कामिनी कामायनी, विधा कविता, उप-विधा प्रविष्टि — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।
७१६. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।
७१७. (D) ई पाठ प्रविष्टिक रूपमे कविता-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

७१८. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।
७१९. (B) खण्ड 4151, सूचकांक पंक्ति 2842मे डॉ. कामिनी कामायनीक “चिडैक अभिलाष” प्रविष्टि कविता, प्रविष्टि आ “प्रतीकात्मक” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 31क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकें प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।
७२०. (A) भटकैत स्वप्न — सूचकांक पंक्ति 2843मे डॉ. कामिनी कामायनीक प्रविष्टि “भटकैत स्वप्न” रूपमे देल अछि।
७२१. (B) कविता — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकें “कविता” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।
७२२. (C) प्रविष्टि — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “प्रविष्टि” अछि।
७२३. (D) आधुनिक जीवन — टिप्पणीक पहिल संकेत “आधुनिक जीवन” अछि।
७२४. (A) आधुनिक जीवन — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “आधुनिक जीवन” रूपमे देखाइत अछि।
७२५. (B) लेखक डॉ. कामिनी कामायनी, विधा कविता, उप-विधा प्रविष्टि — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकें एक साथ रखैत अछि।
७२६. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककें केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।
७२७. (D) ई पाठ प्रविष्टिक रूपमे कविता-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकें स्पष्ट करैत अछि।
७२८. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।
७२९. (B) खण्ड 4152, सूचकांक पंक्ति 2843मे डॉ. कामिनी कामायनीक “भटकैत स्वप्न” प्रविष्टि कविता, प्रविष्टि आ “आधुनिक जीवन” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 31क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकें प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।
७३०. (A) आजुक विद्यार्थी — सूचकांक पंक्ति 2844मे डॉ. कामिनी कामायनीक प्रविष्टि “आजुक विद्यार्थी” रूपमे देल अछि।
७३१. (B) कविता — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकें “कविता” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।
७३२. (C) प्रविष्टि — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “प्रविष्टि” अछि।
७३३. (D) शिक्षा-व्यवस्था — टिप्पणीक पहिल संकेत “शिक्षा-व्यवस्था” अछि।
७३४. (A) शिक्षा-व्यवस्था — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “शिक्षा-व्यवस्था” रूपमे देखाइत अछि।
७३५. (B) लेखक डॉ. कामिनी कामायनी, विधा कविता, उप-विधा प्रविष्टि — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकें एक साथ रखैत अछि।
७३६. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककें केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।
७३७. (D) ई पाठ प्रविष्टिक रूपमे कविता-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकें स्पष्ट करैत अछि।
७३८. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।
७३९. (B) खण्ड 4153, सूचकांक पंक्ति 2844मे डॉ. कामिनी कामायनीक “आजुक विद्यार्थी” प्रविष्टि कविता, प्रविष्टि आ “शिक्षा-व्यवस्था” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 31क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकें प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।
७४०. (A) असमंजस — सूचकांक पंक्ति 2845मे डॉ. कामिनी कामायनीक प्रविष्टि “असमंजस” रूपमे देल अछि।
७४१. (B) कविता — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकें “कविता” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।
७४२. (C) प्रविष्टि — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “प्रविष्टि” अछि।
७४३. (D) प्रेरणा — टिप्पणीक पहिल संकेत “प्रेरणा” अछि।
७४४. (A) प्रेरणा — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “प्रेरणा” रूपमे देखाइत अछि।
७४५. (B) लेखक डॉ. कामिनी कामायनी, विधा कविता, उप-विधा प्रविष्टि — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकें एक साथ रखैत अछि।
७४६. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककें केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।
७४७. (D) ई पाठ प्रविष्टिक रूपमे कविता-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकें स्पष्ट करैत अछि।

७४८. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।
७४९. (B) खण्ड 4154, सूचकांक पंक्ति 2845मे डॉ. कामिनी कामायनीक “असमंजस” प्रविष्टि कविता, प्रविष्टि आ “प्रेरणा” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 31क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकें प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।
७५०. (A) आतंकी गाम — सूचकांक पंक्ति 2846मे डॉ. कामिनी कामायनीक प्रविष्टि “आतंकी गाम” रूपमे देल अछि।
७५१. (B) कविता — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकें “कविता” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।
७५२. (C) प्रविष्टि — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “प्रविष्टि” अछि।
७५३. (D) सामाजिक बदलाव — टिप्पणीक पहिल संकेत “सामाजिक बदलाव” अछि।
७५४. (A) सामाजिक बदलाव — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “सामाजिक बदलाव” रूपमे देखाइत अछि।
७५५. (B) लेखक डॉ. कामिनी कामायनी, विधा कविता, उप-विधा प्रविष्टि — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकें एक साथ रखैत अछि।
७५६. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककें केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।
७५७. (D) ई पाठ प्रविष्टिक रूपमे कविता-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकें स्पष्ट करैत अछि।
७५८. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।
७५९. (B) खण्ड 4155, सूचकांक पंक्ति 2846मे डॉ. कामिनी कामायनीक “आतंकी गाम” प्रविष्टि कविता, प्रविष्टि आ “सामाजिक बदलाव” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 31क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकें प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।
७६०. (A) लिखत के प्रेम गीत — सूचकांक पंक्ति 2847मे डॉ. कामिनी कामायनीक प्रविष्टि “लिखत के प्रेम गीत” रूपमे देल अछि।
७६१. (B) कविता — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकें “कविता” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।
७६२. (C) प्रविष्टि — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “प्रविष्टि” अछि।
७६३. (D) प्रेम — टिप्पणीक पहिल संकेत “प्रेम” अछि।
७६४. (A) प्रेम — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “प्रेम” रूपमे देखाइत अछि।
७६५. (B) लेखक डॉ. कामिनी कामायनी, विधा कविता, उप-विधा प्रविष्टि — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकें एक साथ रखैत अछि।
७६६. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककें केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।
७६७. (D) ई पाठ प्रविष्टिक रूपमे कविता-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकें स्पष्ट करैत अछि।
७६८. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।
७६९. (B) खण्ड 4156, सूचकांक पंक्ति 2847मे डॉ. कामिनी कामायनीक “लिखत के प्रेम गीत” प्रविष्टि कविता, प्रविष्टि आ “प्रेम” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 31क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकें प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।
७७०. (A) आखिर कहिया धरि — सूचकांक पंक्ति 2848मे डॉ. कामिनी कामायनीक प्रविष्टि “आखिर कहिया धरि” रूपमे देल अछि।
७७१. (B) कविता — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकें “कविता” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।
७७२. (C) प्रविष्टि — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “प्रविष्टि” अछि।
७७३. (D) सामाजिक आलोचना — टिप्पणीक पहिल संकेत “सामाजिक आलोचना” अछि।
७७४. (A) सामाजिक आलोचना — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “सामाजिक आलोचना” रूपमे देखाइत अछि।
७७५. (B) लेखक डॉ. कामिनी कामायनी, विधा कविता, उप-विधा प्रविष्टि — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकें एक साथ रखैत अछि।
७७६. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककें केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।
७७७. (D) ई पाठ प्रविष्टिक रूपमे कविता-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकें स्पष्ट करैत अछि।

७७८. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।
७७९. (B) खण्ड 4157, सूचकांक पंक्ति 2848मे डॉ. कामिनी कामायनीक “आखिर कहिया धरि” प्रविष्टि कविता, प्रविष्टि आ “सामाजिक आलोचना” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 31क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकें प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।
७८०. (A) भाषा — सूचकांक पंक्ति 2849मे डॉ. कामिनी कामायनीक प्रविष्टि “भाषा” रूपमे देल अछि।
७८१. (B) कविता — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकें “कविता” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।
७८२. (C) प्रविष्टि — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “प्रविष्टि” अछि।
७८३. (D) मातृभाषा-प्रेम — टिप्पणीक पहिल संकेत “मातृभाषा-प्रेम” अछि।
७८४. (A) मातृभाषा-प्रेम — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “मातृभाषा-प्रेम” रूपमे देखाइत अछि।
७८५. (B) लेखक डॉ. कामिनी कामायनी, विधा कविता, उप-विधा प्रविष्टि — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकें एक साथ रखैत अछि।
७८६. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककें केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।
७८७. (D) ई पाठ प्रविष्टिक रूपमे कविता-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकें स्पष्ट करैत अछि।
७८८. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।
७८९. (B) खण्ड 4158, सूचकांक पंक्ति 2849मे डॉ. कामिनी कामायनीक “भाषा” प्रविष्टि कविता, प्रविष्टि आ “मातृभाषा-प्रेम” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 31क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकें प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।
७९०. (A) चक्का — सूचकांक पंक्ति 2850मे डॉ. कामिनी कामायनीक प्रविष्टि “चक्का” रूपमे देल अछि।
७९१. (B) कविता — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकें “कविता” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।
७९२. (C) प्रविष्टि — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “प्रविष्टि” अछि।
७९३. (D) आधुनिकताक प्रभाव — टिप्पणीक पहिल संकेत “आधुनिकताक प्रभाव” अछि।
७९४. (A) आधुनिकताक प्रभाव — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “आधुनिकताक प्रभाव” रूपमे देखाइत अछि।
७९५. (B) लेखक डॉ. कामिनी कामायनी, विधा कविता, उप-विधा प्रविष्टि — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकें एक साथ रखैत अछि।
७९६. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककें केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।
७९७. (D) ई पाठ प्रविष्टिक रूपमे कविता-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकें स्पष्ट करैत अछि।
७९८. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।
७९९. (B) खण्ड 4159, सूचकांक पंक्ति 2850मे डॉ. कामिनी कामायनीक “चक्का” प्रविष्टि कविता, प्रविष्टि आ “आधुनिकताक प्रभाव” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 31क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकें प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।
८००. (A) ई केकर शोणित? — सूचकांक पंक्ति 2851मे डॉ. कामिनी कामायनीक प्रविष्टि “ई केकर शोणित?” रूपमे देल अछि।
८०१. (B) कविता — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकें “कविता” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।
८०२. (C) प्रविष्टि — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “प्रविष्टि” अछि।
८०३. (D) प्रवासी श्रमिक — टिप्पणीक पहिल संकेत “प्रवासी श्रमिक” अछि।
८०४. (A) प्रवासी श्रमिक — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “प्रवासी श्रमिक” रूपमे देखाइत अछि।
८०५. (B) लेखक डॉ. कामिनी कामायनी, विधा कविता, उप-विधा प्रविष्टि — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकें एक साथ रखैत अछि।
८०६. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककें केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।
८०७. (D) ई पाठ प्रविष्टिक रूपमे कविता-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकें स्पष्ट करैत अछि।

८०८. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।
८०९. (B) खण्ड 4160, सूचकांक पंक्ति 2851मे डॉ. कामिनी कामायनीक “ई केकर शोणित?” प्रविष्टि कविता, प्रविष्टि आ “प्रवासी श्रमिक” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 31क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।
८१०. (A) खिडकी — सूचकांक पंक्ति 2852मे डॉ. कामिनी कामायनीक प्रविष्टि “खिडकी” रूपमे देल अछि।
८११. (B) कविता — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “कविता” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।
८१२. (C) प्रविष्टि — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “प्रविष्टि” अछि।
८१३. (D) दृष्टिकोण — टिप्पणीक पहिल संकेत “दृष्टिकोण” अछि।
८१४. (A) दृष्टिकोण — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “दृष्टिकोण” रूपमे देखाइत अछि।
८१५. (B) लेखक डॉ. कामिनी कामायनी, विधा कविता, उप-विधा प्रविष्टि — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।
८१६. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।
८१७. (D) ई पाठ प्रविष्टिक रूपमे कविता-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।
८१८. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।
८१९. (B) खण्ड 4161, सूचकांक पंक्ति 2852मे डॉ. कामिनी कामायनीक “खिडकी” प्रविष्टि कविता, प्रविष्टि आ “दृष्टिकोण” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 31क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।
८२०. (A) भरोस (कविता) — सूचकांक पंक्ति 2853मे डॉ. कामिनी कामायनीक प्रविष्टि “भरोस (कविता)” रूपमे देल अछि।
८२१. (B) कविता — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “कविता” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।
८२२. (C) प्रविष्टि — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “प्रविष्टि” अछि।
८२३. (D) विश्वास-भंग — टिप्पणीक पहिल संकेत “विश्वास-भंग” अछि।
८२४. (A) विश्वास-भंग — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “विश्वास-भंग” रूपमे देखाइत अछि।
८२५. (B) लेखक डॉ. कामिनी कामायनी, विधा कविता, उप-विधा प्रविष्टि — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।
८२६. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।
८२७. (D) ई पाठ प्रविष्टिक रूपमे कविता-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।
८२८. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।
८२९. (B) खण्ड 4162, सूचकांक पंक्ति 2853मे डॉ. कामिनी कामायनीक “भरोस (कविता)” प्रविष्टि कविता, प्रविष्टि आ “विश्वास-भंग” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 31क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।
८३०. (A) पुष्पांजलि — सूचकांक पंक्ति 2854मे डॉ. कामिनी कामायनीक प्रविष्टि “पुष्पांजलि” रूपमे देल अछि।
८३१. (B) कविता — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “कविता” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।
८३२. (C) प्रविष्टि — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “प्रविष्टि” अछि।
८३३. (D) प्रकृति — टिप्पणीक पहिल संकेत “प्रकृति” अछि।
८३४. (A) प्रकृति — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “प्रकृति” रूपमे देखाइत अछि।
८३५. (B) लेखक डॉ. कामिनी कामायनी, विधा कविता, उप-विधा प्रविष्टि — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।
८३६. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।
८३७. (D) ई पाठ प्रविष्टिक रूपमे कविता-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

८३८. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।
८३९. (B) खण्ड 4163, सूचकांक पंक्ति 2854मे डॉ. कामिनी कामायनीक “पुष्पांजलि” प्रविष्टि कविता, प्रविष्टि आ “प्रकृति” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 31क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।
८४०. (A) आस्थाक पूर्ण कलश — सूचकांक पंक्ति 2855मे डॉ. कामिनी कामायनीक प्रविष्टि “आस्थाक पूर्ण कलश” रूपमे देल अछि।
८४१. (B) कविता — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “कविता” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।
८४२. (C) प्रविष्टि — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “प्रविष्टि” अछि।
८४३. (D) तीर्थ-यात्रा — टिप्पणीक पहिल संकेत “तीर्थ-यात्रा” अछि।
८४४. (A) तीर्थ-यात्रा — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “तीर्थ-यात्रा” रूपमे देखाइत अछि।
८४५. (B) लेखक डॉ. कामिनी कामायनी, विधा कविता, उप-विधा प्रविष्टि — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।
८४६. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।
८४७. (D) ई पाठ प्रविष्टिक रूपमे कविता-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।
८४८. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।
८४९. (B) खण्ड 4164, सूचकांक पंक्ति 2855मे डॉ. कामिनी कामायनीक “आस्थाक पूर्ण कलश” प्रविष्टि कविता, प्रविष्टि आ “तीर्थ-यात्रा” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 31क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।
८५०. (A) खिलैत पलास वन — सूचकांक पंक्ति 2856मे डॉ. कामिनी कामायनीक प्रविष्टि “खिलैत पलास वन” रूपमे देल अछि।
८५१. (B) कविता — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “कविता” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।
८५२. (C) प्रविष्टि — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “प्रविष्टि” अछि।
८५३. (D) प्रकृति — टिप्पणीक पहिल संकेत “प्रकृति” अछि।
८५४. (A) प्रकृति — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “प्रकृति” रूपमे देखाइत अछि।
८५५. (B) लेखक डॉ. कामिनी कामायनी, विधा कविता, उप-विधा प्रविष्टि — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।
८५६. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।
८५७. (D) ई पाठ प्रविष्टिक रूपमे कविता-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।
८५८. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।
८५९. (B) खण्ड 4165, सूचकांक पंक्ति 2856मे डॉ. कामिनी कामायनीक “खिलैत पलास वन” प्रविष्टि कविता, प्रविष्टि आ “प्रकृति” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 31क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।
८६०. (A) आधुनिक स्त्रीगण १-५ — सूचकांक पंक्ति 2857मे डॉ. कामिनी कामायनीक प्रविष्टि “आधुनिक स्त्रीगण १-५” रूपमे देल अछि।
८६१. (B) कविता (शृंखला) — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “कविता (शृंखला)” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।
८६२. (C) प्रविष्टि — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “प्रविष्टि” अछि।
८६३. (D) नारी-सशक्तिकरण — टिप्पणीक पहिल संकेत “नारी-सशक्तिकरण” अछि।
८६४. (A) नारी-सशक्तिकरण — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “नारी-सशक्तिकरण” रूपमे देखाइत अछि।
८६५. (B) लेखक डॉ. कामिनी कामायनी, विधा कविता (शृंखला), उप-विधा प्रविष्टि — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।
८६६. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।
८६७. (D) ई पाठ प्रविष्टिक रूपमे कविता (शृंखला)-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

८६८. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।
८६९. (B) खण्ड 4166, सूचकांक पंक्ति 2857मे डॉ. कामिनी कामायनीक “आधुनिक स्त्रीगण १-५” प्रविष्टि कविता (शृंखला), प्रविष्टि आ “नारी-सशक्तिकरण” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 31क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकें प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।
८७०. (A) वसंती दोहा — सूचकांक पंक्ति 2858मे कुमार मनोज कश्यपक प्रविष्टि “वसंती दोहा” रूपमे देल अछि।
८७१. (B) दोहा — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकें “दोहा” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।
८७२. (C) प्रविष्टि — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “प्रविष्टि” अछि।
८७३. (D) दोहा परम्परा — टिप्पणीक पहिल संकेत “दोहा परम्परा” अछि।
८७४. (A) दोहा परम्परा — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “दोहा परम्परा” रूपमे देखाइत अछि।
८७५. (B) लेखक कुमार मनोज कश्यप, विधा दोहा, उप-विधा प्रविष्टि — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकें एक साथ रखैत अछि।
८७६. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककें केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।
८७७. (D) ई पाठ प्रविष्टिक रूपमे दोहा-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकें स्पष्ट करैत अछि।
८७८. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।
८७९. (B) खण्ड 4167, सूचकांक पंक्ति 2858मे कुमार मनोज कश्यपक “वसंती दोहा” प्रविष्टि दोहा, प्रविष्टि आ “दोहा परम्परा” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 31क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकें प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।
८८०. (A) नहिं सुति रहब आहाँ चदरि तानि — सूचकांक पंक्ति 2859मे कुमार मनोज कश्यपक प्रविष्टि “नहिं सुति रहब आहाँ चदरि तानि” रूपमे देल अछि।
८८१. (B) देशभक्ति गीत — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकें “देशभक्ति गीत” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।
८८२. (C) प्रविष्टि — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “प्रविष्टि” अछि।
८८३. (D) राष्ट्रीय चेतना — टिप्पणीक पहिल संकेत “राष्ट्रीय चेतना” अछि।
८८४. (A) राष्ट्रीय चेतना — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “राष्ट्रीय चेतना” रूपमे देखाइत अछि।
८८५. (B) लेखक कुमार मनोज कश्यप, विधा देशभक्ति गीत, उप-विधा प्रविष्टि — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकें एक साथ रखैत अछि।
८८६. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककें केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।
८८७. (D) ई पाठ प्रविष्टिक रूपमे देशभक्ति गीत-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकें स्पष्ट करैत अछि।
८८८. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।
८८९. (B) खण्ड 4168, सूचकांक पंक्ति 2859मे कुमार मनोज कश्यपक “नहिं सुति रहब आहाँ चदरि तानि” प्रविष्टि देशभक्ति गीत, प्रविष्टि आ “राष्ट्रीय चेतना” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 31क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकें प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।
८९०. (A) किछु गजल (गजल १) — सूचकांक पंक्ति 2860मे कुमार मनोज कश्यपक प्रविष्टि “किछु गजल (गजल १)” रूपमे देल अछि।
८९१. (B) गजल — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकें “गजल” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।
८९२. (C) प्रविष्टि — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “प्रविष्टि” अछि।
८९३. (D) गजल परम्परा — टिप्पणीक पहिल संकेत “गजल परम्परा” अछि।
८९४. (A) गजल परम्परा — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “गजल परम्परा” रूपमे देखाइत अछि।
८९५. (B) लेखक कुमार मनोज कश्यप, विधा गजल, उप-विधा प्रविष्टि — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकें एक साथ रखैत अछि।
८९६. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककें केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।
८९७. (D) ई पाठ प्रविष्टिक रूपमे गजल-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकें स्पष्ट करैत अछि।

८९८. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।
८९९. (B) खण्ड 4169, सूचकांक पंक्ति 2860मे कुमार मनोज कश्यपक “किछु गजल (गजल १)” प्रविष्टि गजल, प्रविष्टि आ “गजल परम्परा” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 31क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।
९००. (A) किछु गजल (गजल २) — सूचकांक पंक्ति 2861मे कुमार मनोज कश्यपक प्रविष्टि “किछु गजल (गजल २)” रूपमे देल अछि।
९०१. (B) गजल — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गजल” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।
९०२. (C) प्रविष्टि — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “प्रविष्टि” अछि।
९०३. (D) दार्शनिक — टिप्पणीक पहिल संकेत “दार्शनिक” अछि।
९०४. (A) दार्शनिक — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “दार्शनिक” रूपमे देखाइत अछि।
९०५. (B) लेखक कुमार मनोज कश्यप, विधा गजल, उप-विधा प्रविष्टि — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।
९०६. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।
९०७. (D) ई पाठ प्रविष्टिक रूपमे गजल-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।
९०८. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।
९०९. (B) खण्ड 4170, सूचकांक पंक्ति 2861मे कुमार मनोज कश्यपक “किछु गजल (गजल २)” प्रविष्टि गजल, प्रविष्टि आ “दार्शनिक” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 31क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

अध्याय ३ : विदेह-सदेह ३२ — विस्तृत अध्ययन

खण्ड २९ : विदेह-सदेह ३२ — माटिक बासन आ भालचन्द्र झा

१. 'माटिक बासन' कथाक मुख्य पात्र के छथि?
 - (A) केदार प्रसाद (कुम्हार) आ हुनकर बेटा बिभू
 - (B) विद्यापति
 - (C) गोनू झा
 - (D) कोनो नहि
२. केदार प्रसाद मूलतः कोन काज करैत छलाह?
 - (A) माटिक बासन (घैल, ढाकन, मटकुरी) बनाएब
 - (B) लोहाक काज
 - (C) काठक काज
 - (D) कोनो नहि
३. बिभू दसम वर्गक बाद कोन क्षेत्रमे अपनाकेँ समर्पित केलक?
 - (A) मूर्तिकला
 - (B) संगीत
 - (C) नाटक
 - (D) कोनो नहि
४. बिभूक बनाएल मूर्तिक चर्चा कतय धरि पहुँचल?
 - (A) राजसरकारक गृहमंत्रालय धरि
 - (B) केवल गाम
 - (C) विदेश
 - (D) कोनो नहि
५. कथाक अन्तमे केदार प्रसाद बिभूकेँ की सिखबैत छथि?
 - (A) सम्पूर्णताक आभास भेने आगाँ बढ़बाक प्रेरणा रुकि जाइत अछि (आत्म-संतोषक बादक खतरा)
 - (B) केवल प्रशंसा
 - (C) कोनो शिक्षा नहि
 - (D) कोनो नहि
६. भालचन्द्र झा कोन कलामे मुम्बईसँ डिप्लोमा केलनि?
 - (A) थिएटर कला
 - (B) चित्रकला
 - (C) संगीत
 - (D) कोनो नहि
७. भालचन्द्र झा मैथिलीक अतिरिक्त कोन-कोन भाषामे निष्णात छथि?
 - (A) हिन्दी, मराठी, अंग्रेजी आ गुजराती
 - (B) केवल अंग्रेजी
 - (C) केवल हिन्दी
 - (D) कोनो नहि
८. भालचन्द्र झा कहियासँ मराठी आ हिन्दी थिएटरमे सक्रिय छथि?
 - (A) १९७४ ई.सँ
 - (B) १९५० ई.सँ
 - (C) २००० ई.सँ
 - (D) कोनो नहि

९. भालचन्द्र झा एखन कोन रूपमे कार्यरत छथि?

- (A) फ्री-लान्स लेखक-निदेशक
- (B) केवल अभिनेता
- (C) सेवानिवृत्त
- (D) कोनो नहि

१०. विदेह-सदेह ३२ मे 'चूल्हि' कथामे चूल्हि आ स्त्रीक प्रारब्धक तुलना कोना कएल गेल?

- (A) दुनू जरैत-जरैत जीबैत छथि (एके जकाँ)
- (B) कोनो तुलना नहि
- (C) विपरीत प्रारब्ध
- (D) कोनो नहि

खण्ड ६४ : विदेह-सदेह ३२ — उदय नारायण सिंह 'नचिकेता'क जीवनी (विस्तार)

११. उदय नारायण सिंह 'नचिकेता'क जन्म कहिया आ कतय भेल?

- (A) १९५१, कलकत्ता (पश्चिम बंगाल)
- (B) १९६० दिल्ली
- (C) १९४५ पटना
- (D) कोनो नहि

१२. नचिकेताक स्नातक शिक्षा कतयसँ भेल?

- (A) बी.ए. (सम्मान) भाषाविज्ञान, कलकत्ता विश्वविद्यालय
- (B) दिल्ली विश्वविद्यालय
- (C) पटना विश्वविद्यालय
- (D) कोनो नहि

१३. नचिकेताक पी-एच.डी. भाषाविज्ञानमे कतयसँ भेल?

- (A) दिल्ली विश्वविद्यालय
- (B) कलकत्ता विश्वविद्यालय
- (C) हैदराबाद विश्वविद्यालय
- (D) कोनो नहि

१४. नचिकेता मैथिली आ कोन अन्य भाषाक कवि-नाटककारक रूपमे प्रख्यात छथि?

- (A) बंगला
- (B) हिन्दी
- (C) अंग्रेजी
- (D) कोनो नहि

१५. नचिकेता कोन-कोन विश्वविद्यालयमे कार्यरत रहलाह, स्रोत अनुसार?

- (A) महाराजा सियाजी राव विश्वविद्यालय (बड़ौदा), दक्षिणी गुजरात विश्वविद्यालय, दिल्ली विश्वविद्यालय, हैदराबाद विश्वविद्यालय
- (B) केवल एक विश्वविद्यालय
- (C) विदेशी विश्वविद्यालय मात्र
- (D) कोनो नहि

१६. नचिकेता कोन-कोन देशमे साहित्यिक गतिविधिमे सहभागी भेलाह, स्रोत अनुसार?

- (A) बांगलादेश, कैरबियन आइलैण्ड, फ्रांस, जर्मनी, इटली, नेपाल, पाकिस्तान, रूस, सिंगापुर, स्वीडन, थायलैण्ड, अमेरिका
- (B) केवल भारत
- (C) केवल यूरोप
- (D) कोनो नहि

१७. नचिकेता कोन अन्तरराष्ट्रीय संस्थाक सदस्य रहलाह?

- (A) इंडो-इटैलियन कल्चरल एक्सचेंज फॉर क्रिएटिव राइटर्स (१९९९)
- (B) केवल भारतीय संस्था
- (C) विश्व बैंक
- (D) कोनो नहि

१८. नचिकेताक नाटक 'नो एण्ट्री: मा प्रविश' कतेक वर्षक मौनभंगक बाद पाठकक सम्मुख आएल, स्रोत अनुसार?

- (A) २५ वर्ष
- (B) दस वर्ष
- (C) ५० वर्ष
- (D) कोनो नहि

खण्ड ८७ : विदेह-सदेह ३२ — मिथिला आ नेपालक ऐतिहासिक सम्बन्ध (किरात-लिच्छवी काल)

१९. नेपालक प्रारंभिक इतिहासमे ई.पू. ५९०सँ ११० ई. धरि नेपाल कोन संस्कृतिक प्रधान केन्द्र छल, आलेख अनुसार?

- (A) किरात संस्कृति
- (B) लिच्छवी संस्कृति
- (C) मौर्य संस्कृति
- (D) कोनो नहि

२०. महाभारत अनुसार महादेव कोन भेषमे अर्जुनक परीक्षा लेने छलाह?

- (A) किरातक भेष
- (B) ब्राह्मणक भेष
- (C) सन्यासीक भेष
- (D) कोनो नहि

२१. नेपाल-मिथिला सम्बन्धमे नेपाली संवतक आरम्भ कोन सालसँ मानल जाइत अछि, आलेख अनुसार?

- (A) १११ ई.सँ
- (B) ई.पू. ६००सँ
- (C) ३५० ई.सँ
- (D) कोनो नहि

२२. लिच्छवी लोकनि नेपालमे कतेक काल धरि शासन केलन्हि, आलेख अनुसार?

- (A) ३५०सँ ८९९ धरि
- (B) १०० वर्ष धरि
- (C) एक हजार वर्ष धरि
- (D) कोनो नहि

२३. महासामंत अंशुवर्मन कोन शताब्दीक एकटा महत्वपूर्ण नेपाली शासक छलाह, आलेख अनुसार?

- (A) सातम शताब्दीक पूर्वार्द्ध
- (B) तेसर शताब्दी
- (C) बारहम शताब्दी
- (D) कोनो नहि

२४. दरभंगा राजकें स्थायी रूपेण अपन राजधानी कोन राजा बनौलन्हि?

- (A) राजा माधव सिंह
- (B) राजा प्रताप सिंह
- (C) नरेन्द्र सिंह
- (D) कोनो नहि

२५. राजा प्रताप सिंहके स्थानीय परम्परामे कोन उपाधिसँ जानल जाइत छलन्हि?

- (A) “मिथिलेश”
- (B) “महाराजाधिराज”
- (C) “सम्राट”
- (D) कोनो नहि

२६. महाराज लक्ष्मीश्वर सिंहक समयमे दरभंगामे कोन अस्पतालक स्थापना भेल?

- (A) लेडी डफरिन अस्पताल
- (B) एम्स
- (C) पटना मेडिकल कॉलेज
- (D) कोनो नहि

२७. महाराज लक्ष्मीश्वर सिंह कोन सालमे काँग्रेसक अधिवेशन करबाक लेल ‘लाउपर कास्टल’ प्रयागमे कीनि देने छलथिन्ह?

- (A) १८८८मे
- (B) १९४७मे
- (C) १८००मे
- (D) कोनो नहि

२८. १९४७ धरि दरभंगाक शासकगणकेँ कोन दर्जा भेटल छलन्हि, आलेख अनुसार?

- (A) जमीन्दारक दर्जा
- (B) स्वतंत्र राजाक दर्जा
- (C) गवर्नरक दर्जा
- (D) कोनो नहि

खण्ड ८८ : विदेह-सदेह ३२ — कर्णाट वंश आ हरिसिंह देवक पञ्जी-प्रबन्ध

२९. कर्णाट वंशक संस्थापक राजा नान्यदेव कोन साके (शक संवत) राज्य पौलन्हि, आलेख अनुसार?

- (A) शाके १०१९
- (B) शाके १२१६
- (C) शाके १२४८
- (D) कोनो नहि

३०. हरिसिंह देव मैथिल ब्राह्मणक कोन व्यवस्थाक प्रबन्ध केलन्हि?

- (A) पञ्जी प्रबन्ध
- (B) वर्णाश्रम व्यवस्था
- (C) तंत्र-साधना
- (D) कोनो नहि

३१. हरिसिंह देवक मंत्री, साँधिविग्रहिक महावार्तिक-निबन्धकार के छलाह?

- (A) महामत्तक वीरेश्वर ठाकुर
- (B) नान्यदेव
- (C) गंगदेव
- (D) कोनो नहि

३२. कर्णाट वंशमे हरिसिंह कतेक वर्ष राज्य भोग केलन्हि, आलेख अनुसार?

- (A) २० वर्ष
- (B) ३६ वर्ष
- (C) ९२ वर्ष
- (D) कोनो नहि

३३. हरिसिंह देव दैवाधीन पटना छोड़ि कतय चल गेलाह, आलेख अनुसार?

- (A) उत्तर पहाड़ जंगल दिसि
- (B) बंगाल दिसि
- (C) दक्षिण भारत दिसि
- (D) कोनो नहि

३४. लोक मान्यता अनुसार श्रीकृष्ण स्यमंतक मणिक खोजक क्रममे मिथिलामे जतय निवास केलन्हि, ओहि गढ़क नाम की पड़ल?

- (A) कोपगढ़
- (B) बलिराजगढ़
- (C) क्षेमगढ़
- (D) कोनो नहि

३५. लोक मान्यता अनुसार श्रीकृष्ण मिथिलाक कोपगढ़मे कतेक वर्ष धरि निवास केलन्हि?

- (A) ६० वर्ष
- (B) १० वर्ष
- (C) १०० वर्ष
- (D) कोनो नहि

३६. बलिराज, जकर नामपर बलिराजगढ़ अछि, स्कन्दपुराण अनुसार कोन वंशक छलाह?

- (A) चन्द्रवंशी (सौनल मुनिसँ उत्पन्न क्षत्रिय वंशक बीसम राजा)
- (B) सूर्यवंशी
- (C) इक्ष्वाकु वंशी
- (D) कोनो नहि

खण्ड 4171 : विदेह-सदेह 32 — जगदानन्द झा 'मनु': माटिक बासन

३७. खण्ड 4171, सूचकांक पंक्ति 2862: जगदानन्द झा 'मनु'क “माटिक बासन” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) माटिक बासन
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३८. खण्ड 4171, सूचकांक पंक्ति 2862: जगदानन्द झा 'मनु'क “माटिक बासन”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) गद्य
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३९. खण्ड 4171, सूचकांक पंक्ति 2862: जगदानन्द झा 'मनु'क “माटिक बासन”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) —
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४०. खण्ड 4171, सूचकांक पंक्ति 2862: जगदानन्द झा 'मनु'क “माटिक बासन” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ग्रामीण यथार्थ

४१. खण्ड 4171, सूचकांक पंक्ति 2862: जगदानन्द झा 'मनु'क “माटिक बासन” प्रविष्टि विदेह-सदेह 32मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) ग्रामीण यथार्थ
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४२. खण्ड 4171, सूचकांक पंक्ति 2862: जगदानन्द झा 'मनु'क “माटिक बासन”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककें की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक जगदानन्द झा 'मनु', विधा गद्य, उप-विधा —
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४३. खण्ड 4171, सूचकांक पंक्ति 2862: जगदानन्द झा 'मनु'क “माटिक बासन” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४४. खण्ड 4171, सूचकांक पंक्ति 2862: जगदानन्द झा 'मनु'क “माटिक बासन”कें विदेह-सदेह 32क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ —क रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

४५. खण्ड 4171, सूचकांक पंक्ति 2862: जगदानन्द झा 'मनु'क “माटिक बासन” प्रविष्टि विदेह-सदेह 32क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४६. खण्ड 4171, सूचकांक पंक्ति 2862: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 4171, सूचकांक पंक्ति 2862मे जगदानन्द झा 'मनु'क “माटिक बासन” प्रविष्टि गद्य, — आ “ग्रामीण यथार्थ” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 32क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 4172 : विदेह-सदेह 32 — भालचन्द्र झा: चूल्हि

४७. खण्ड 4172, सूचकांक पंक्ति 2863: भालचन्द्र झाक “चूल्हि” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) चूल्हि
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४८. खण्ड 4172, सूचकांक पंक्ति 2863: भालचन्द्र झाक “चूल्हि”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) गद्य
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४९. खण्ड 4172, सूचकांक पंक्ति 2863: भालचन्द्र झाक “चूल्हि”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) नाटक
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

५०. खण्ड 4172, सूचकांक पंक्ति 2863: भालचन्द्र झाक “चूल्हि” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) रंगमञ्च परम्परा

५१. खण्ड 4172, सूचकांक पंक्ति 2863: भालचन्द्र झाक “चूल्हि” प्रविष्टि विदेह-सदेह 32मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) रंगमञ्च परम्परा
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

५२. खण्ड 4172, सूचकांक पंक्ति 2863: भालचन्द्र झाक “चूल्हि”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककें की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक भालचन्द्र झा, विधा गद्य, उप-विधा नाटक
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

५३. खण्ड 4172, सूचकांक पंक्ति 2863: भालचन्द्र झाक “चूल्हि” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

५४. खण्ड 4172, सूचकांक पंक्ति 2863: भालचन्द्र झाक “चूल्हि”कें विदेह-सदेह 32क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ नाटकक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

५५. खण्ड 4172, सूचकांक पंक्ति 2863: भालचन्द्र झाक “चूल्हि” प्रविष्टि विदेह-सदेह 32क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

५६. खण्ड 4172, सूचकांक पंक्ति 2863: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 4172, सूचकांक पंक्ति 2863मे भालचन्द्र झाक “चूल्हि” प्रविष्टि गद्य, नाटक आ “रंगमञ्च परम्परा” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 32क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 4173 : विदेह-सदेह 32 — गंगेश गुंजन: भोज परक आँटी- सत्तरिक नव-खादिक युवा नवतुरिआसँ

५७. खण्ड 4173, सूचकांक पंक्ति 2864: गंगेश गुंजनक “भोज परक आँटी- सत्तरिक नव-खादिक युवा नवतुरिआसँ” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) भोज परक आँटी- सत्तरिक नव-खादिक युवा नवतुरिआसँ
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

५८. खण्ड 4173, सूचकांक पंक्ति 2864: गंगेश गुंजनक “भोज परक आँटी- सत्तरिक नव-खादिक युवा नवतुरिआसँ”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) गद्य
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

५९. खण्ड 4173, सूचकांक पंक्ति 2864: गंगेश गुंजनक “भोज परक आँटी- सत्तरिक नव-खादिक युवा नवतुरिआसँ”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) —
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

६०. खण्ड 4173, सूचकांक पंक्ति 2864: गंगेश गुंजनक “भोज परक आँटी- सत्तरिक नव-खादिक युवा नवतुरिआसँ” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) साहित्य अकादेमी पुरस्कार

६१. खण्ड 4173, सूचकांक पंक्ति 2864: गंगेश गुंजनक “भोज परक आँटी- सत्तरिक नव-खादिक युवा नवतुरिआसँ” प्रविष्टि विदेह-सदेह 32मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) साहित्य अकादेमी पुरस्कार
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

६२. खण्ड 4173, सूचकांक पंक्ति 2864: गंगेश गुंजनक “भोज परक आँटी- सत्तरिक नव-खादिक युवा नवतुरिआसँ”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक गंगेश गुंजन, विधा गद्य, उप-विधा —
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

६३. खण्ड 4173, सूचकांक पंक्ति 2864: गंगेश गुंजनक “भोज परक आँटी- सत्तरिक नव-खादिक युवा नवतुरिआसँ” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

६४. खण्ड 4173, सूचकांक पंक्ति 2864: गंगेश गुंजनक “भोज परक आँटी- सत्तरिक नव-खादिक युवा नवतुरिआसँ”कें विदेह-सदेह 32क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ —क रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

६५. खण्ड 4173, सूचकांक पंक्ति 2864: गंगेश गुंजनक “भोज परक आँटी- सत्तरिक नव-खादिक युवा नवतुरिआसँ” प्रविष्टि विदेह-सदेह 32क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

६६. खण्ड 4173, सूचकांक पंक्ति 2864: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 4173, सूचकांक पंक्ति 2864मे गंगेश गुंजनक “भोज परक आँटी- सत्तरिक नव-खादिक युवा नवतुरिआसँ” प्रविष्टि गद्य, — आ “साहित्य अकादेमी पुरस्कार” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 32क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 4174 : विदेह-सदेह 32 — गंगेश गुंजन: मैथिलीक उर्वर क्षेत्रमे कॉरपोरेट-जगत धाप

६७. खण्ड 4174, सूचकांक पंक्ति 2865: गंगेश गुंजनक “मैथिलीक उर्वर क्षेत्रमे कॉरपोरेट-जगत धाप” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) मैथिलीक उर्वर क्षेत्रमे कॉरपोरेट-जगत धाप
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

६८. खण्ड 4174, सूचकांक पंक्ति 2865: गंगेश गुंजनक “मैथिलीक उर्वर क्षेत्रमे कॉरपोरेट-जगत धाप”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) गद्य
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

६९. खण्ड 4174, सूचकांक पंक्ति 2865: गंगेश गुंजनक “मैथिलीक उर्वर क्षेत्रमे कॉरपोरेट-जगत धाप”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) —
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

७०. खण्ड 4174, सूचकांक पंक्ति 2865: गंगेश गुंजनक “मैथिलीक उर्वर क्षेत्रमे कॉरपोरेट-जगत धाप” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) साहित्य अकादेमी पुरस्कार

७१. खण्ड 4174, सूचकांक पंक्ति 2865: गंगेश गुंजनक “मैथिलीक उर्वर क्षेत्रमे कॉरपोरेट-जगत धाप” प्रविष्टि विदेह-सदेह 32मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) साहित्य अकादेमी पुरस्कार
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

७२. खण्ड 4174, सूचकांक पंक्ति 2865: गंगेश गुंजनक “मैथिलीक उर्वर क्षेत्रमे कॉरपोरेट-जगत धाप”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक गंगेश गुंजन, विधा गद्य, उप-विधा —
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

७३. खण्ड 4174, सूचकांक पंक्ति 2865: गंगेश गुंजनक “मैथिलीक उर्वर क्षेत्रमे कॉरपोरेट-जगत धाप” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

७४. खण्ड 4174, सूचकांक पंक्ति 2865: गंगेश गुंजनक “मैथिलीक उर्वर क्षेत्रमे कॉरपोरेट-जगत धाप”केँ विदेह-सदेह 32क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ —क रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

७५. खण्ड 4174, सूचकांक पंक्ति 2865: गंगेश गुंजनक “मैथिलीक उर्वर क्षेत्रमे कॉरपोरेट-जगत धाप” प्रविष्टि विदेह-सदेह 32क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

७६. खण्ड 4174, सूचकांक पंक्ति 2865: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 4174, सूचकांक पंक्ति 2865मे गंगेश गुंजनक “मैथिलीक उर्वर क्षेत्रमे कॉरपोरेट-जगत धाप” प्रविष्टि गद्य, — आ “साहित्य अकादेमी पुरस्कार” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 32क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 4175 : विदेह-सदेह 32 — गंगेश गुंजन: किछु एहनो बात विषय

७७. खण्ड 4175, सूचकांक पंक्ति 2866: गंगेश गुंजनक “किछु एहनो बात विषय” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) किछु एहनो बात विषय
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

७८. खण्ड 4175, सूचकांक पंक्ति 2866: गंगेश गुंजनक “किछु एहनो बात विषय”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) गद्य
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

७९. खण्ड 4175, सूचकांक पंक्ति 2866: गंगेश गुंजनक “किछु एहनो बात विषय”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) —
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

८०. खण्ड 4175, सूचकांक पंक्ति 2866: गंगेश गुंजनक “किछु एहनो बात विषय” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) साहित्य अकादेमी पुरस्कार

८१. खण्ड 4175, सूचकांक पंक्ति 2866: गंगेश गुंजनक “किछु एहनो बात विषय” प्रविष्टि विदेह-सदेह 32मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) साहित्य अकादेमी पुरस्कार
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

८२. खण्ड 4175, सूचकांक पंक्ति 2866: गंगेश गुंजनक “किछु एहनो बात विषय”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककें की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक गंगेश गुंजन, विधा गद्य, उप-विधा —
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

८३. खण्ड 4175, सूचकांक पंक्ति 2866: गंगेश गुंजनक “किछु एहनो बात विषय” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

८४. खण्ड 4175, सूचकांक पंक्ति 2866: गंगेश गुंजनक “किछु एहनो बात विषय”कें विदेह-सदेह 32क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ —क रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

८५. खण्ड 4175, सूचकांक पंक्ति 2866: गंगेश गुंजनक “किछु एहनो बात विषय” प्रविष्टि विदेह-सदेह 32क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

८६. खण्ड 4175, सूचकांक पंक्ति 2866: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 4175, सूचकांक पंक्ति 2866मे गंगेश गुंजनक “किछु एहनो बात विषय” प्रविष्टि गद्य, — आ “साहित्य अकादेमी पुरस्कार” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 32क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 4176 : विदेह-सदेह 32 — गंगेश गुंजन: गोबरक मूल्य

८७. खण्ड 4176, सूचकांक पंक्ति 2867: गंगेश गुंजनक “गोबरक मूल्य” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) गोबरक मूल्य
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

८८. खण्ड 4176, सूचकांक पंक्ति 2867: गंगेश गुंजनक “गोबरक मूल्य”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) गद्य
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

८९. खण्ड 4176, सूचकांक पंक्ति 2867: गंगेश गुंजनक “गोबरक मूल्य”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) —
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

९०. खण्ड 4176, सूचकांक पंक्ति 2867: गंगेश गुंजनक “गोबरक मूल्य” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) साहित्य अकादेमी पुरस्कार

९१. खण्ड 4176, सूचकांक पंक्ति 2867: गंगेश गुंजनक “गोबरक मूल्य” प्रविष्टि विदेह-सदेह 32मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) साहित्य अकादेमी पुरस्कार
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

९२. खण्ड 4176, सूचकांक पंक्ति 2867: गंगेश गुंजनक “गोबरक मूल्य”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककें की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक गंगेश गुंजन, विधा गद्य, उप-विधा —
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

९३. खण्ड 4176, सूचकांक पंक्ति 2867: गंगेश गुंजनक “गोबरक मूल्य” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

९४. खण्ड 4176, सूचकांक पंक्ति 2867: गंगेश गुंजनक “गोबरक मूल्य”कें विदेह-सदेह 32क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ —क रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

९५. खण्ड 4176, सूचकांक पंक्ति 2867: गंगेश गुंजनक “गोबरक मूल्य” प्रविष्टि विदेह-सदेह 32क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

९६. खण्ड 4176, सूचकांक पंक्ति 2867: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 4176, सूचकांक पंक्ति 2867मे गंगेश गुंजनक “गोबरक मूल्य” प्रविष्टि गद्य, — आ “साहित्य अकादेमी पुरस्कार” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 32क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 4177 : विदेह-सदेह 32 — उदय नारायण सिंह ‘नचिकेता’: ने एंट्री: मा प्रविश (गद्य)

९७. खण्ड 4177, सूचकांक पंक्ति 2868: उदय नारायण सिंह ‘नचिकेता’क “ने एंट्री: मा प्रविश (गद्य)” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) ने एंट्री: मा प्रविश (गद्य)
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

९८. खण्ड 4177, सूचकांक पंक्ति 2868: उदय नारायण सिंह ‘नचिकेता’क “ने एंट्री: मा प्रविश (गद्य)”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) गद्य
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

९९. खण्ड 4177, सूचकांक पंक्ति 2868: उदय नारायण सिंह ‘नचिकेता’क “ने एंट्री: मा प्रविश (गद्य)”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) नाटक
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१००. खण्ड 4177, सूचकांक पंक्ति 2868: उदय नारायण सिंह 'नचिकेता'क "ने एंटी: मा प्रविश (गद्य)" पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) सीआइआइएल

१०१. खण्ड 4177, सूचकांक पंक्ति 2868: उदय नारायण सिंह 'नचिकेता'क "ने एंटी: मा प्रविश (गद्य)" प्रविष्टि विदेह-सदेह 32मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) सीआइआइएल
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१०२. खण्ड 4177, सूचकांक पंक्ति 2868: उदय नारायण सिंह 'नचिकेता'क "ने एंटी: मा प्रविश (गद्य)"क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक उदय नारायण सिंह 'नचिकेता', विधा गद्य, उप-विधा नाटक
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१०३. खण्ड 4177, सूचकांक पंक्ति 2868: उदय नारायण सिंह 'नचिकेता'क "ने एंटी: मा प्रविश (गद्य)" रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१०४. खण्ड 4177, सूचकांक पंक्ति 2868: उदय नारायण सिंह 'नचिकेता'क "ने एंटी: मा प्रविश (गद्य)"केँ विदेह-सदेह 32क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ नाटकक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

१०५. खण्ड 4177, सूचकांक पंक्ति 2868: उदय नारायण सिंह 'नचिकेता'क "ने एंटी: मा प्रविश (गद्य)" प्रविष्टि विदेह-सदेह 32क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१०६. खण्ड 4177, सूचकांक पंक्ति 2868: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 4177, सूचकांक पंक्ति 2868मे उदय नारायण सिंह 'नचिकेता'क "ने एंटी: मा प्रविश (गद्य)" प्रविष्टि गद्य, नाटक आ "सीआइआइएल" संकेत द्वारा विदेह-सदेह 32क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 4178 : विदेह-सदेह 32 — राधाकृष्ण चौधरी: मिथिलाक इतिहास

१०७. खण्ड 4178, सूचकांक पंक्ति 2869: राधाकृष्ण चौधरीक “मिथिलाक इतिहास” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) मिथिलाक इतिहास
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१०८. खण्ड 4178, सूचकांक पंक्ति 2869: राधाकृष्ण चौधरीक “मिथिलाक इतिहास”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) गद्य
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१०९. खण्ड 4178, सूचकांक पंक्ति 2869: राधाकृष्ण चौधरीक “मिथिलाक इतिहास”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) इतिहास
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

११०. खण्ड 4178, सूचकांक पंक्ति 2869: राधाकृष्ण चौधरीक “मिथिलाक इतिहास” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ऐतिहासिक शोध

१११. खण्ड 4178, सूचकांक पंक्ति 2869: राधाकृष्ण चौधरीक “मिथिलाक इतिहास” प्रविष्टि विदेह-सदेह 32मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) ऐतिहासिक शोध
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

११२. खण्ड 4178, सूचकांक पंक्ति 2869: राधाकृष्ण चौधरीक “मिथिलाक इतिहास”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककें की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक राधाकृष्ण चौधरी, विधा गद्य, उप-विधा इतिहास
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

११३. खण्ड 4178, सूचकांक पंक्ति 2869: राधाकृष्ण चौधरीक “मिथिलाक इतिहास” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

११४. खण्ड 4178, सूचकांक पंक्ति 2869: राधाकृष्ण चौधरीक “मिथिलाक इतिहास”कें विदेह-सदेह 32क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ इतिहासक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

११५. खण्ड 4178, सूचकांक पंक्ति 2869: राधाकृष्ण चौधरीक “मिथिलाक इतिहास” प्रविष्टि विदेह-सदेह 32क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

११६. खण्ड 4178, सूचकांक पंक्ति 2869: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 4178, सूचकांक पंक्ति 2869मे राधाकृष्ण चौधरीक “मिथिलाक इतिहास” प्रविष्टि गद्य, इतिहास आ “ऐतिहासिक शोध” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 32क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 4179 : विदेह-सदेह 32 — प्रेमशंकर सिंह: बीसम शताब्दी- मैथिलीक स्वर्ण युग

११७. खण्ड 4179, सूचकांक पंक्ति 2870: प्रेमशंकर सिंहक “बीसम शताब्दी- मैथिलीक स्वर्ण युग” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) बीसम शताब्दी- मैथिलीक स्वर्ण युग
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

११८. खण्ड 4179, सूचकांक पंक्ति 2870: प्रेमशंकर सिंहक “बीसम शताब्दी- मैथिलीक स्वर्ण युग”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) गद्य
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

११९. खण्ड 4179, सूचकांक पंक्ति 2870: प्रेमशंकर सिंहक “बीसम शताब्दी- मैथिलीक स्वर्ण युग”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) निबन्ध/शोध
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१२०. खण्ड 4179, सूचकांक पंक्ति 2870: प्रेमशंकर सिंहक “बीसम शताब्दी- मैथिलीक स्वर्ण युग” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) भक्ति परम्परा

१२१. खण्ड 4179, सूचकांक पंक्ति 2870: प्रेमशंकर सिंहक “बीसम शताब्दी- मैथिलीक स्वर्ण युग” प्रविष्टि विदेह-सदेह 32मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) भक्ति परम्परा
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१२२. खण्ड 4179, सूचकांक पंक्ति 2870: प्रेमशंकर सिंहक “बीसम शताब्दी- मैथिलीक स्वर्ण युग”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक प्रेमशंकर सिंह, विधा गद्य, उप-विधा निबन्ध/शोध
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१२३. खण्ड 4179, सूचकांक पंक्ति 2870: प्रेमशंकर सिंहक “बीसम शताब्दी- मैथिलीक स्वर्ण युग” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१२४. खण्ड 4179, सूचकांक पंक्ति 2870: प्रेमशंकर सिंहक “बीसम शताब्दी- मैथिलीक स्वर्ण युग”केँ विदेह-सदेह 32क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ निबन्ध/शोधक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

१२५. खण्ड 4179, सूचकांक पंक्ति 2870: प्रेमशंकर सिंहक “बीसम शताब्दी- मैथिलीक स्वर्ण युग” प्रविष्टि विदेह-सदेह 32क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१२६. खण्ड 4179, सूचकांक पंक्ति 2870: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 4179, सूचकांक पंक्ति 2870मे प्रेमशंकर सिंहक “बीसम शताब्दी- मैथिलीक स्वर्ण युग” प्रविष्टि गद्य, निबन्ध/शोध आ “भक्ति परम्परा” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 32क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 4180 : विदेह-सदेह 32 — प्रेमशंकर सिंह: सामाजिक विवर्तक जीवन झा

१२७. खण्ड 4180, सूचकांक पंक्ति 2871: प्रेमशंकर सिंहक “सामाजिक विवर्तक जीवन झा” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) सामाजिक विवर्तक जीवन झा
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१२८. खण्ड 4180, सूचकांक पंक्ति 2871: प्रेमशंकर सिंहक “सामाजिक विवर्तक जीवन झा”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) गद्य
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१२९. खण्ड 4180, सूचकांक पंक्ति 2871: प्रेमशंकर सिंहक “सामाजिक विवर्तक जीवन झा”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) निबन्ध/शोध
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१३०. खण्ड 4180, सूचकांक पंक्ति 2871: प्रेमशंकर सिंहक “सामाजिक विवर्तक जीवन झा” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) भक्ति परम्परा

१३१. खण्ड 4180, सूचकांक पंक्ति 2871: प्रेमशंकर सिंहक “सामाजिक विवर्तक जीवन झा” प्रविष्टि विदेह-सदेह 32मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) भक्ति परम्परा
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१३२. खण्ड 4180, सूचकांक पंक्ति 2871: प्रेमशंकर सिंहक “सामाजिक विवर्तक जीवन झा”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककें की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक प्रेमशंकर सिंह, विधा गद्य, उप-विधा निबन्ध/शोध
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१३३. खण्ड 4180, सूचकांक पंक्ति 2871: प्रेमशंकर सिंहक “सामाजिक विवर्तक जीवन झा” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१३४. खण्ड 4180, सूचकांक पंक्ति 2871: प्रेमशंकर सिंहक “सामाजिक विवर्तक जीवन झा”कें विदेह-सदेह 32क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ निबन्ध/शोधक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

१३५. खण्ड 4180, सूचकांक पंक्ति 2871: प्रेमशंकर सिंहक “सामाजिक विवर्तक जीवन झा” प्रविष्टि विदेह-सदेह 32क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१३६. खण्ड 4180, सूचकांक पंक्ति 2871: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 4180, सूचकांक पंक्ति 2871मे प्रेमशंकर सिंहक “सामाजिक विवर्तक जीवन झा” प्रविष्टि गद्य, निबन्ध/शोध आ “भक्ति परम्परा” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 32क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 4181 : विदेह-सदेह 32 — प्रेमशंकर सिंह: मैथिली भाषाक साहित्य

१३७. खण्ड 4181, सूचकांक पंक्ति 2872: प्रेमशंकर सिंहक “मैथिली भाषाक साहित्य” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) मैथिली भाषाक साहित्य
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१३८. खण्ड 4181, सूचकांक पंक्ति 2872: प्रेमशंकर सिंहक “मैथिली भाषाक साहित्य”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) गद्य
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१३९. खण्ड 4181, सूचकांक पंक्ति 2872: प्रेमशंकर सिंहक “मैथिली भाषाक साहित्य”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) निबन्ध/शोध
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१४०. खण्ड 4181, सूचकांक पंक्ति 2872: प्रेमशंकर सिंहक “मैथिली भाषाक साहित्य” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) भक्ति परम्परा

१४१. खण्ड 4181, सूचकांक पंक्ति 2872: प्रेमशंकर सिंहक “मैथिली भाषाक साहित्य” प्रविष्टि विदेह-सदेह 32मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) भक्ति परम्परा
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१४२. खण्ड 4181, सूचकांक पंक्ति 2872: प्रेमशंकर सिंहक “मैथिली भाषाक साहित्य”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक प्रेमशंकर सिंह, विधा गद्य, उप-विधा निबन्ध/शोध
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१४३. खण्ड 4181, सूचकांक पंक्ति 2872: प्रेमशंकर सिंहक “मैथिली भाषाक साहित्य” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१४४. खण्ड 4181, सूचकांक पंक्ति 2872: प्रेमशंकर सिंहक “मैथिली भाषाक साहित्य”कें विदेह-सदेह 32क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ निबन्ध/शोधक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

१४५. खण्ड 4181, सूचकांक पंक्ति 2872: प्रेमशंकर सिंहक “मैथिली भाषाक साहित्य” प्रविष्टि विदेह-सदेह 32क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१४६. खण्ड 4181, सूचकांक पंक्ति 2872: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 4181, सूचकांक पंक्ति 2872मे प्रेमशंकर सिंहक “मैथिली भाषाक साहित्य” प्रविष्टि गद्य, निबन्ध/शोध आ “भक्ति परम्परा” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 32क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 4182 : विदेह-सदेह 32 — प्रेमशंकर सिंह: लोकनाट्य

१४७. खण्ड 4182, सूचकांक पंक्ति 2873: प्रेमशंकर सिंहक “लोकनाट्य” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) लोकनाट्य
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१४८. खण्ड 4182, सूचकांक पंक्ति 2873: प्रेमशंकर सिंहक “लोकनाट्य”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) गद्य
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१४९. खण्ड 4182, सूचकांक पंक्ति 2873: प्रेमशंकर सिंहक “लोकनाट्य”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) निबन्ध/शोध
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१५०. खण्ड 4182, सूचकांक पंक्ति 2873: प्रेमशंकर सिंहक “लोकनाट्य” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) भक्ति परम्परा

१५१. खण्ड 4182, सूचकांक पंक्ति 2873: प्रेमशंकर सिंहक “लोकनाट्य” प्रविष्टि विदेह-सदेह 32मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) भक्ति परम्परा
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१५२. खण्ड 4182, सूचकांक पंक्ति 2873: प्रेमशंकर सिंहक “लोकनाट्य”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक प्रेमशंकर सिंह, विधा गद्य, उप-विधा निबन्ध/शोध
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१५३. खण्ड 4182, सूचकांक पंक्ति 2873: प्रेमशंकर सिंहक “लोकनाट्य” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१५४. खण्ड 4182, सूचकांक पंक्ति 2873: प्रेमशंकर सिंहक “लोकनाट्य”केँ विदेह-सदेह 32क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ निबन्ध/शोधक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

१५५. खण्ड 4182, सूचकांक पंक्ति 2873: प्रेमशंकर सिंहक “लोकनाट्य” प्रविष्टि विदेह-सदेह 32क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१५६. खण्ड 4182, सूचकांक पंक्ति 2873: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 4182, सूचकांक पंक्ति 2873मे प्रेमशंकर सिंहक “लोकनाट्य” प्रविष्टि गद्य, निबन्ध/शोध आ “भक्ति परम्परा” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 32क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 4183 : विदेह-सदेह 32 — प्रेमशंकर सिंह: पारंपरिक नाटक

१५७. खण्ड 4183, सूचकांक पंक्ति 2874: प्रेमशंकर सिंहक “पारंपरिक नाटक” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) पारंपरिक नाटक
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१५८. खण्ड 4183, सूचकांक पंक्ति 2874: प्रेमशंकर सिंहक “पारंपरिक नाटक”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) गद्य
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१५९. खण्ड 4183, सूचकांक पंक्ति 2874: प्रेमशंकर सिंहक “पारंपरिक नाटक”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) निबन्ध/शोध
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१६०. खण्ड 4183, सूचकांक पंक्ति 2874: प्रेमशंकर सिंहक “पारंपरिक नाटक” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) भक्ति परम्परा

१६१. खण्ड 4183, सूचकांक पंक्ति 2874: प्रेमशंकर सिंहक “पारंपरिक नाटक” प्रविष्टि विदेह-सदेह 32मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) भक्ति परम्परा
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१६२. खण्ड 4183, सूचकांक पंक्ति 2874: प्रेमशंकर सिंहक “पारंपरिक नाटक”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककें की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक प्रेमशंकर सिंह, विधा गद्य, उप-विधा निबन्ध/शोध
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१६३. खण्ड 4183, सूचकांक पंक्ति 2874: प्रेमशंकर सिंहक “पारंपरिक नाटक” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१६४. खण्ड 4183, सूचकांक पंक्ति 2874: प्रेमशंकर सिंहक “पारंपरिक नाटक”कें विदेह-सदेह 32क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ निबन्ध/शोधक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

१६५. खण्ड 4183, सूचकांक पंक्ति 2874: प्रेमशंकर सिंहक “पारंपरिक नाटक” प्रविष्टि विदेह-सदेह 32क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१६६. खण्ड 4183, सूचकांक पंक्ति 2874: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 4183, सूचकांक पंक्ति 2874मे प्रेमशंकर सिंहक “पारंपरिक नाटक” प्रविष्टि गद्य, निबन्ध/शोध आ “भक्ति परम्परा” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 32क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 4184 : विदेह-सदेह 32 — प्रेमशंकर सिंह: मायानन्दक रेडिया-रूपक

१६७. खण्ड 4184, सूचकांक पंक्ति 2875: प्रेमशंकर सिंहक “मायानन्दक रेडिया-रूपक” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) मायानन्दक रेडिया-रूपक
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१६८. खण्ड 4184, सूचकांक पंक्ति 2875: प्रेमशंकर सिंहक “मायानन्दक रेडिया-रूपक”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) गद्य
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१६९. खण्ड 4184, सूचकांक पंक्ति 2875: प्रेमशंकर सिंहक “मायानन्दक रेडिया-रूपक”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) निबन्ध/शोध
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१७०. खण्ड 4184, सूचकांक पंक्ति 2875: प्रेमशंकर सिंहक “मायानन्दक रेडिया-रूपक” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) भक्ति परम्परा

१७१. खण्ड 4184, सूचकांक पंक्ति 2875: प्रेमशंकर सिंहक “मायानन्दक रेडिया-रूपक” प्रविष्टि विदेह-सदेह 32मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) भक्ति परम्परा
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१७२. खण्ड 4184, सूचकांक पंक्ति 2875: प्रेमशंकर सिंहक “मायानन्दक रेडिया-रूपक”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक प्रेमशंकर सिंह, विधा गद्य, उप-विधा निबन्ध/शोध
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१७३. खण्ड 4184, सूचकांक पंक्ति 2875: प्रेमशंकर सिंहक “मायानन्दक रेडिया-रूपक” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१७४. खण्ड 4184, सूचकांक पंक्ति 2875: प्रेमशंकर सिंहक “मायानन्दक रेडिया-रूपक”क विदेह-सदेह 32क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ निबन्ध/शोधक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

१७५. खण्ड 4184, सूचकांक पंक्ति 2875: प्रेमशंकर सिंहक “मायानन्दक रेडिया-रूपक” प्रविष्टि विदेह-सदेह 32क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१७६. खण्ड 4184, सूचकांक पंक्ति 2875: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 4184, सूचकांक पंक्ति 2875मे प्रेमशंकर सिंहक “मायानन्दक रेडिया-रूपक” प्रविष्टि गद्य, निबन्ध/शोध आ “भक्ति परम्परा” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 32क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 4185 : विदेह-सदेह 32 — प्रेमशंकर सिंह: हुनकासँ भेट भेल छल

१७७. खण्ड 4185, सूचकांक पंक्ति 2876: प्रेमशंकर सिंहक “हुनकासँ भेट भेल छल” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) हुनकासँ भेट भेल छल
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१७८. खण्ड 4185, सूचकांक पंक्ति 2876: प्रेमशंकर सिंहक “हुनकासँ भेट भेल छल”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) गद्य
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१७९. खण्ड 4185, सूचकांक पंक्ति 2876: प्रेमशंकर सिंहक “हुनकासँ भेट भेल छल”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) निबन्ध/शोध
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१८०. खण्ड 4185, सूचकांक पंक्ति 2876: प्रेमशंकर सिंहक “हुनकासँ भेट भेल छल” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?
- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
 (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
 (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
 (D) भक्ति परम्परा
१८१. खण्ड 4185, सूचकांक पंक्ति 2876: प्रेमशंकर सिंहक “हुनकासँ भेट भेल छल” प्रविष्टि विदेह-सदेह 32मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?
- (A) भक्ति परम्परा
 (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
 (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
 (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
१८२. खण्ड 4185, सूचकांक पंक्ति 2876: प्रेमशंकर सिंहक “हुनकासँ भेट भेल छल”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?
- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
 (B) लेखक प्रेमशंकर सिंह, विधा गद्य, उप-विधा निबन्ध/शोध
 (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
 (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
१८३. खण्ड 4185, सूचकांक पंक्ति 2876: प्रेमशंकर सिंहक “हुनकासँ भेट भेल छल” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?
- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
 (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
 (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
 (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
१८४. खण्ड 4185, सूचकांक पंक्ति 2876: प्रेमशंकर सिंहक “हुनकासँ भेट भेल छल”केँ विदेह-सदेह 32क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?
- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
 (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
 (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
 (D) ई पाठ निबन्ध/शोधक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।
१८५. खण्ड 4185, सूचकांक पंक्ति 2876: प्रेमशंकर सिंहक “हुनकासँ भेट भेल छल” प्रविष्टि विदेह-सदेह 32क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?
- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
 (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
 (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
 (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
१८६. खण्ड 4185, सूचकांक पंक्ति 2876: एहि खण्डक सार की अछि?
- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
 (B) खण्ड 4185, सूचकांक पंक्ति 2876मे प्रेमशंकर सिंहक “हुनकासँ भेट भेल छल” प्रविष्टि गद्य, निबन्ध/शोध आ “भक्ति परम्परा” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 32क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।
 (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
 (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 4186 : विदेह-सदेह 32 — प्रेमशंकर सिंह: अमरक एकांकी-प्रहसनक सामाजिक यथार्थ

१८७. खण्ड 4186, सूचकांक पंक्ति 2877: प्रेमशंकर सिंहक “अमरक एकांकी-प्रहसनक सामाजिक यथार्थ” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) अमरक एकांकी-प्रहसनक सामाजिक यथार्थ
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१८८. खण्ड 4186, सूचकांक पंक्ति 2877: प्रेमशंकर सिंहक “अमरक एकांकी-प्रहसनक सामाजिक यथार्थ”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) गद्य
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१८९. खण्ड 4186, सूचकांक पंक्ति 2877: प्रेमशंकर सिंहक “अमरक एकांकी-प्रहसनक सामाजिक यथार्थ”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) निबन्ध/शोध
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१९०. खण्ड 4186, सूचकांक पंक्ति 2877: प्रेमशंकर सिंहक “अमरक एकांकी-प्रहसनक सामाजिक यथार्थ” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) भक्ति परम्परा

१९१. खण्ड 4186, सूचकांक पंक्ति 2877: प्रेमशंकर सिंहक “अमरक एकांकी-प्रहसनक सामाजिक यथार्थ” प्रविष्टि विदेह-सदेह 32मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) भक्ति परम्परा
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१९२. खण्ड 4186, सूचकांक पंक्ति 2877: प्रेमशंकर सिंहक “अमरक एकांकी-प्रहसनक सामाजिक यथार्थ”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककें की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक प्रेमशंकर सिंह, विधा गद्य, उप-विधा निबन्ध/शोध
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१९३. खण्ड 4186, सूचकांक पंक्ति 2877: प्रेमशंकर सिंहक “अमरक एकांकी-प्रहसनक सामाजिक यथार्थ” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१९४. खण्ड 4186, सूचकांक पंक्ति 2877: प्रेमशंकर सिंहक “अमरक एकांकी-प्रहसनक सामाजिक यथार्थ”कें विदेह-सदेह 32क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ निबन्ध/शोधक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

१९५. खण्ड 4186, सूचकांक पंक्ति 2877: प्रेमशंकर सिंहक “अमरक एकांकी-प्रहसनक सामाजिक यथार्थ” प्रविष्टि विदेह-सदेह 32क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१९६. खण्ड 4186, सूचकांक पंक्ति 2877: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 4186, सूचकांक पंक्ति 2877मे प्रेमशंकर सिंहक “अमरक एकांकी-प्रहसनक सामाजिक यथार्थ” प्रविष्टि गद्य, निबन्ध/शोध आ “भक्ति परम्परा” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 32क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 4187 : विदेह-सदेह 32 — प्रेमशंकर सिंह: लोकगाथा ओ मणिपद्म

१९७. खण्ड 4187, सूचकांक पंक्ति 2878: प्रेमशंकर सिंहक “लोकगाथा ओ मणिपद्म” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) लोकगाथा ओ मणिपद्म
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१९८. खण्ड 4187, सूचकांक पंक्ति 2878: प्रेमशंकर सिंहक “लोकगाथा ओ मणिपद्म”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) गद्य
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१९९. खण्ड 4187, सूचकांक पंक्ति 2878: प्रेमशंकर सिंहक “लोकगाथा ओ मणिपद्म”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) निबन्ध/शोध
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२००. खण्ड 4187, सूचकांक पंक्ति 2878: प्रेमशंकर सिंहक “लोकगाथा ओ मणिपद्म” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) भक्ति परम्परा

२०१. खण्ड 4187, सूचकांक पंक्ति 2878: प्रेमशंकर सिंहक “लोकगाथा ओ मणिपद्म” प्रविष्टि विदेह-सदेह 32मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) भक्ति परम्परा
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२०२. खण्ड 4187, सूचकांक पंक्ति 2878: प्रेमशंकर सिंहक “लोकगाथा ओ मणिपद्म”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक प्रेमशंकर सिंह, विधा गद्य, उप-विधा निबन्ध/शोध
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२०३. खण्ड 4187, सूचकांक पंक्ति 2878: प्रेमशंकर सिंहक “लोकगाथा ओ मणिपद्म” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२०४. खण्ड 4187, सूचकांक पंक्ति 2878: प्रेमशंकर सिंहक “लोकगाथा ओ मणिपद्म”केँ विदेह-सदेह 32क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ निबन्ध/शोधक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

२०५. खण्ड 4187, सूचकांक पंक्ति 2878: प्रेमशंकर सिंहक “लोकगाथा ओ मणिपद्म” प्रविष्टि विदेह-सदेह 32क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२०६. खण्ड 4187, सूचकांक पंक्ति 2878: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 4187, सूचकांक पंक्ति 2878मे प्रेमशंकर सिंहक “लोकगाथा ओ मणिपद्म” प्रविष्टि गद्य, निबन्ध/शोध आ “भक्ति परम्परा” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 32क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 4188 : विदेह-सदेह 32 — प्रेमशंकर सिंह: चेतना समिति ओ नाट्यमंच

२०७. खण्ड 4188, सूचकांक पंक्ति 2879: प्रेमशंकर सिंहक “चेतना समिति ओ नाट्यमंच” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) चेतना समिति ओ नाट्यमंच
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२०८. खण्ड 4188, सूचकांक पंक्ति 2879: प्रेमशंकर सिंहक “चेतना समिति ओ नाट्यमंच”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) गद्य
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२०९. खण्ड 4188, सूचकांक पंक्ति 2879: प्रेमशंकर सिंहक “चेतना समिति ओ नाट्यमंच”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) निबन्ध/शोध
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२१०. खण्ड 4188, सूचकांक पंक्ति 2879: प्रेमशंकर सिंहक “चेतना समिति ओ नाट्यमंच” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) भक्ति परम्परा

२११. खण्ड 4188, सूचकांक पंक्ति 2879: प्रेमशंकर सिंहक “चेतना समिति ओ नाट्यमंच” प्रविष्टि विदेह-सदेह 32मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) भक्ति परम्परा
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२१२. खण्ड 4188, सूचकांक पंक्ति 2879: प्रेमशंकर सिंहक “चेतना समिति ओ नाट्यमंच”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककें की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक प्रेमशंकर सिंह, विधा गद्य, उप-विधा निबन्ध/शोध
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२१३. खण्ड 4188, सूचकांक पंक्ति 2879: प्रेमशंकर सिंहक “चेतना समिति ओ नाट्यमंच” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२१४. खण्ड 4188, सूचकांक पंक्ति 2879: प्रेमशंकर सिंहक “चेतना समिति ओ नाट्यमंच”कें विदेह-सदेह 32क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ निबन्ध/शोधक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

२१५. खण्ड 4188, सूचकांक पंक्ति 2879: प्रेमशंकर सिंहक “चेतना समिति ओ नाट्यमंच” प्रविष्टि विदेह-सदेह 32क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२१६. खण्ड 4188, सूचकांक पंक्ति 2879: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 4188, सूचकांक पंक्ति 2879मे प्रेमशंकर सिंहक “चेतना समिति ओ नाट्यमंच” प्रविष्टि गद्य, निबन्ध/शोध आ “भक्ति परम्परा” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 32क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 4189 : विदेह-सदेह 32 — प्रेमशंकर सिंह: जयकान्त मिश्र जीवन आ साहित्य साधना

२१७. खण्ड 4189, सूचकांक पंक्ति 2880: प्रेमशंकर सिंहक “जयकान्त मिश्र जीवन आ साहित्य साधना” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) जयकान्त मिश्र जीवन आ साहित्य साधना
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२१८. खण्ड 4189, सूचकांक पंक्ति 2880: प्रेमशंकर सिंहक “जयकान्त मिश्र जीवन आ साहित्य साधना”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) गद्य
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२१९. खण्ड 4189, सूचकांक पंक्ति 2880: प्रेमशंकर सिंहक “जयकान्त मिश्र जीवन आ साहित्य साधना”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) निबन्ध/शोध
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२२०. खण्ड 4189, सूचकांक पंक्ति 2880: प्रेमशंकर सिंहक “जयकान्त मिश्र जीवन आ साहित्य साधना” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) भक्ति परम्परा

२२१. खण्ड 4189, सूचकांक पंक्ति 2880: प्रेमशंकर सिंहक “जयकान्त मिश्र जीवन आ साहित्य साधना” प्रविष्टि विदेह-सदेह 32मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) भक्ति परम्परा
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२२२. खण्ड 4189, सूचकांक पंक्ति 2880: प्रेमशंकर सिंहक “जयकान्त मिश्र जीवन आ साहित्य साधना”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक प्रेमशंकर सिंह, विधा गद्य, उप-विधा निबन्ध/शोध
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२२३. खण्ड 4189, सूचकांक पंक्ति 2880: प्रेमशंकर सिंहक “जयकान्त मिश्र जीवन आ साहित्य साधना” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२२४. खण्ड 4189, सूचकांक पंक्ति 2880: प्रेमशंकर सिंहक “जयकान्त मिश्र जीवन आ साहित्य साधना”कें विदेह-सदेह 32क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ निबन्ध/शोधक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

२२५. खण्ड 4189, सूचकांक पंक्ति 2880: प्रेमशंकर सिंहक “जयकान्त मिश्र जीवन आ साहित्य साधना” प्रविष्टि विदेह-सदेह 32क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२२६. खण्ड 4189, सूचकांक पंक्ति 2880: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 4189, सूचकांक पंक्ति 2880मे प्रेमशंकर सिंहक “जयकान्त मिश्र जीवन आ साहित्य साधना” प्रविष्टि गद्य, निबन्ध/शोध आ “भक्ति परम्परा” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 32क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 4190 : विदेह-सदेह 32 — डॉ. कैलाश कुमार मिश्र: समीक्षा- बनैत बिगडैत

२२७. खण्ड 4190, सूचकांक पंक्ति 2881: डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक “समीक्षा- बनैत बिगडैत” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) समीक्षा- बनैत बिगडैत
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२२८. खण्ड 4190, सूचकांक पंक्ति 2881: डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक “समीक्षा- बनैत बिगडैत”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) गद्य
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२२९. खण्ड 4190, सूचकांक पंक्ति 2881: डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक “समीक्षा- बनैत बिगडैत”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समीक्षा
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२३०. खण्ड 4190, सूचकांक पंक्ति 2881: डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक “समीक्षा- बनैत बिगडैत” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) यात्रा-वृत्तान्तकार

२३१. खण्ड 4190, सूचकांक पंक्ति 2881: डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक “समीक्षा- बनैत बिगडैत” प्रविष्टि विदेह-सदेह 32मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) यात्रा-वृत्तान्तकार
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२३२. खण्ड 4190, सूचकांक पंक्ति 2881: डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक “समीक्षा- बनैत बिगडैत”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककें की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक डॉ. कैलाश कुमार मिश्र, विधा गद्य, उप-विधा समीक्षा
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२३३. खण्ड 4190, सूचकांक पंक्ति 2881: डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक “समीक्षा- बनैत बिगडैत” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२३४. खण्ड 4190, सूचकांक पंक्ति 2881: डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक “समीक्षा- बनैत बिगडैत”कें विदेह-सदेह 32क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ समीक्षाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

२३५. खण्ड 4190, सूचकांक पंक्ति 2881: डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक “समीक्षा- बनैत बिगडैत” प्रविष्टि विदेह-सदेह 32क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२३६. खण्ड 4190, सूचकांक पंक्ति 2881: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 4190, सूचकांक पंक्ति 2881मे डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक “समीक्षा- बनैत बिगडैत” प्रविष्टि गद्य, समीक्षा आ “यात्रा-वृत्तान्तकार” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 32क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 4191 : विदेह-सदेह 32 — गजेन्द्र ठाकूर: समीक्षा- बनैत बिगड़ौत

२३७. खण्ड 4191, सूचकांक पंक्ति 2882: गजेन्द्र ठाकूरक “समीक्षा- बनैत बिगड़ौत” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) समीक्षा- बनैत बिगड़ौत
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२३८. खण्ड 4191, सूचकांक पंक्ति 2882: गजेन्द्र ठाकूरक “समीक्षा- बनैत बिगड़ौत”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) गद्य
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२३९. खण्ड 4191, सूचकांक पंक्ति 2882: गजेन्द्र ठाकूरक “समीक्षा- बनैत बिगड़ौत”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समीक्षा
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२४०. खण्ड 4191, सूचकांक पंक्ति 2882: गजेन्द्र ठाकूरक “समीक्षा- बनैत बिगड़ौत” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) —

२४१. खण्ड 4191, सूचकांक पंक्ति 2882: गजेन्द्र ठाकूरक “समीक्षा- बनैत बिगड़ौत” प्रविष्टि विदेह-सदेह 32मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) —
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२४२. खण्ड 4191, सूचकांक पंक्ति 2882: गजेन्द्र ठाकूरक “समीक्षा- बनैत बिगड़ौत”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककें की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक गजेन्द्र ठाकूर, विधा गद्य, उप-विधा समीक्षा
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२४३. खण्ड 4191, सूचकांक पंक्ति 2882: गजेन्द्र ठाकूरक “समीक्षा- बनैत बिगड़ौत” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२४४. खण्ड 4191, सूचकांक पंक्ति 2882: गजेन्द्र ठाकूरक “समीक्षा- बनैत बिगड़ौत”कें विदेह-सदेह 32क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ समीक्षाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

२४५. खण्ड 4191, सूचकांक पंक्ति 2882: गजेन्द्र ठाकूरक “समीक्षा- बनैत बिगड़ौत” प्रविष्टि विदेह-सदेह 32क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२४६. खण्ड 4191, सूचकांक पंक्ति 2882: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 4191, सूचकांक पंक्ति 2882मे गजेन्द्र ठाकूरक “समीक्षा- बनैत बिगड़ौत” प्रविष्टि गद्य, समीक्षा आ “—” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 32क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 4192 : विदेह-सदेह 32 — महाप्रकाश: सुभाष चन्द्र यादव पर

२४७. खण्ड 4192, सूचकांक पंक्ति 2883: महाप्रकाशक “सुभाष चन्द्र यादव पर” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) सुभाष चन्द्र यादव पर
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२४८. खण्ड 4192, सूचकांक पंक्ति 2883: महाप्रकाशक “सुभाष चन्द्र यादव पर”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) गद्य
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२४९. खण्ड 4192, सूचकांक पंक्ति 2883: महाप्रकाशक “सुभाष चन्द्र यादव पर”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) —
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२५०. खण्ड 4192, सूचकांक पंक्ति 2883: महाप्रकाशक “सुभाष चन्द्र यादव पर” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) —

२५१. खण्ड 4192, सूचकांक पंक्ति 2883: महाप्रकाशक “सुभाष चन्द्र यादव पर” प्रविष्टि विदेह-सदेह 32मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) —
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२५२. खण्ड 4192, सूचकांक पंक्ति 2883: महाप्रकाशक “सुभाष चन्द्र यादव पर”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक महाप्रकाश, विधा गद्य, उप-विधा —
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२५३. खण्ड 4192, सूचकांक पंक्ति 2883: महाप्रकाशक “सुभाष चन्द्र यादव पर” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२५४. खण्ड 4192, सूचकांक पंक्ति 2883: महाप्रकाशक “सुभाष चन्द्र यादव पर”कें विदेह-सदेह 32क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ —क रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

२५५. खण्ड 4192, सूचकांक पंक्ति 2883: महाप्रकाशक “सुभाष चन्द्र यादव पर” प्रविष्टि विदेह-सदेह 32क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२५६. खण्ड 4192, सूचकांक पंक्ति 2883: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 4192, सूचकांक पंक्ति 2883मे महाप्रकाशक “सुभाष चन्द्र यादव पर” प्रविष्टि गद्य, — आ “—” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 32क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 4193 : विदेह-सदेह 32 — सुभाष चन्द्र यादव: बनैत बिगड़ौत

२५७. खण्ड 4193, सूचकांक पंक्ति 2884: सुभाष चन्द्र यादवक “बनैत बिगड़ौत” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) बनैत बिगड़ौत
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२५८. खण्ड 4193, सूचकांक पंक्ति 2884: सुभाष चन्द्र यादवक “बनैत बिगड़ौत”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) गद्य
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२५९. खण्ड 4193, सूचकांक पंक्ति 2884: सुभाष चन्द्र यादवक “बनैत बिगड़ौत”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) कथा
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२६०. खण्ड 4193, सूचकांक पंक्ति 2884: सुभाष चन्द्र यादवक “बनैत बिगड़ौत” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ओबीसी एनएआरआरएटीआइवीई

२६१. खण्ड 4193, सूचकांक पंक्ति 2884: सुभाष चन्द्र यादवक “बनैत बिगड़ौत” प्रविष्टि विदेह-सदेह 32मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) ओबीसी एनएआरआरएटीआइवीई
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२६२. खण्ड 4193, सूचकांक पंक्ति 2884: सुभाष चन्द्र यादवक “बनैत बिगड़ौत”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककें की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक सुभाष चन्द्र यादव, विधा गद्य, उप-विधा कथा
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२६३. खण्ड 4193, सूचकांक पंक्ति 2884: सुभाष चन्द्र यादवक “बनैत बिगड़ौत” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२६४. खण्ड 4193, सूचकांक पंक्ति 2884: सुभाष चन्द्र यादवक “बनैत बिगड़ौत”कें विदेह-सदेह 32क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ कथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

२६५. खण्ड 4193, सूचकांक पंक्ति 2884: सुभाष चन्द्र यादवक “बनैत बिगड़ौत” प्रविष्टि विदेह-सदेह 32क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२६६. खण्ड 4193, सूचकांक पंक्ति 2884: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 4193, सूचकांक पंक्ति 2884मे सुभाष चन्द्र यादवक “बनैत बिगड़ौत” प्रविष्टि गद्य, कथा आ “ओबीसी एनएआरआरएटीआइवीई” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 32क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 4194 : विदेह-सदेह 32 — सुभाष चन्द्र यादव: अपन-अपन दुख

२६७. खण्ड 4194, सूचकांक पंक्ति 2885: सुभाष चन्द्र यादवक “अपन-अपन दुख” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) अपन-अपन दुख
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२६८. खण्ड 4194, सूचकांक पंक्ति 2885: सुभाष चन्द्र यादवक “अपन-अपन दुख”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) गद्य
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२६९. खण्ड 4194, सूचकांक पंक्ति 2885: सुभाष चन्द्र यादवक “अपन-अपन दुख”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) कथा
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२७०. खण्ड 4194, सूचकांक पंक्ति 2885: सुभाष चन्द्र यादवक “अपन-अपन दुख” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ओबीसी एनएआरआरएटीआइवीई

२७१. खण्ड 4194, सूचकांक पंक्ति 2885: सुभाष चन्द्र यादवक “अपन-अपन दुख” प्रविष्टि विदेह-सदेह 32मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) ओबीसी एनएआरआरएटीआइवीई
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२७२. खण्ड 4194, सूचकांक पंक्ति 2885: सुभाष चन्द्र यादवक “अपन-अपन दुख”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककें की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक सुभाष चन्द्र यादव, विधा गद्य, उप-विधा कथा
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२७३. खण्ड 4194, सूचकांक पंक्ति 2885: सुभाष चन्द्र यादवक “अपन-अपन दुख” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२७४. खण्ड 4194, सूचकांक पंक्ति 2885: सुभाष चन्द्र यादवक “अपन-अपन दुख”कें विदेह-सदेह 32क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ कथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

२७५. खण्ड 4194, सूचकांक पंक्ति 2885: सुभाष चन्द्र यादवक “अपन-अपन दुख” प्रविष्टि विदेह-सदेह 32क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२७६. खण्ड 4194, सूचकांक पंक्ति 2885: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 4194, सूचकांक पंक्ति 2885मे सुभाष चन्द्र यादवक “अपन-अपन दुख” प्रविष्टि गद्य, कथा आ “ओबीसी एनएआरआरएटीआइवीई” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 32क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 4195 : विदेह-सदेह 32 — सुभाष चन्द्र यादव: असुरक्षित

२७७. खण्ड 4195, सूचकांक पंक्ति 2886: सुभाष चन्द्र यादवक “असुरक्षित” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) असुरक्षित
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२७८. खण्ड 4195, सूचकांक पंक्ति 2886: सुभाष चन्द्र यादवक “असुरक्षित”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) गद्य
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२७९. खण्ड 4195, सूचकांक पंक्ति 2886: सुभाष चन्द्र यादवक “असुरक्षित”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) कथा
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२८०. खण्ड 4195, सूचकांक पंक्ति 2886: सुभाष चन्द्र यादवक “असुरक्षित” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ओबीसी एनएआरआरएटीआइवीई

२८१. खण्ड 4195, सूचकांक पंक्ति 2886: सुभाष चन्द्र यादवक “असुरक्षित” प्रविष्टि विदेह-सदेह 32मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) ओबीसी एनएआरआरएटीआइवीई
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२८२. खण्ड 4195, सूचकांक पंक्ति 2886: सुभाष चन्द्र यादवक “असुरक्षित”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककें की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक सुभाष चन्द्र यादव, विधा गद्य, उप-विधा कथा
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२८३. खण्ड 4195, सूचकांक पंक्ति 2886: सुभाष चन्द्र यादवक “असुरक्षित” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२८४. खण्ड 4195, सूचकांक पंक्ति 2886: सुभाष चन्द्र यादवक “असुरक्षित”कें विदेह-सदेह 32क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ कथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

२८५. खण्ड 4195, सूचकांक पंक्ति 2886: सुभाष चन्द्र यादवक “असुरक्षित” प्रविष्टि विदेह-सदेह 32क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२८६. खण्ड 4195, सूचकांक पंक्ति 2886: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 4195, सूचकांक पंक्ति 2886मे सुभाष चन्द्र यादवक “असुरक्षित” प्रविष्टि गद्य, कथा आ “ओबीसी एनएआरआरएटीआइवीई” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 32क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 4196 : विदेह-सदेह 32 — सुभाष चन्द्र यादव: आतंक

२८७. खण्ड 4196, सूचकांक पंक्ति 2887: सुभाष चन्द्र यादवक “आतंक” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) आतंक
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२८८. खण्ड 4196, सूचकांक पंक्ति 2887: सुभाष चन्द्र यादवक “आतंक”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) गद्य
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२८९. खण्ड 4196, सूचकांक पंक्ति 2887: सुभाष चन्द्र यादवक “आतंक”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) कथा
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२९०. खण्ड 4196, सूचकांक पंक्ति 2887: सुभाष चन्द्र यादवक “आतंक” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ओबीसी एनएआरआरएटीआइवीई

२९१. खण्ड 4196, सूचकांक पंक्ति 2887: सुभाष चन्द्र यादवक “आतंक” प्रविष्टि विदेह-सदेह 32मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) ओबीसी एनएआरआरएटीआइवीई
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२९२. खण्ड 4196, सूचकांक पंक्ति 2887: सुभाष चन्द्र यादवक “आतंक”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककें की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक सुभाष चन्द्र यादव, विधा गद्य, उप-विधा कथा
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२९३. खण्ड 4196, सूचकांक पंक्ति 2887: सुभाष चन्द्र यादवक “आतंक” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२९४. खण्ड 4196, सूचकांक पंक्ति 2887: सुभाष चन्द्र यादवक “आतंक”कें विदेह-सदेह 32क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ कथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

२९५. खण्ड 4196, सूचकांक पंक्ति 2887: सुभाष चन्द्र यादवक “आतंक” प्रविष्टि विदेह-सदेह 32क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२९६. खण्ड 4196, सूचकांक पंक्ति 2887: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 4196, सूचकांक पंक्ति 2887मे सुभाष चन्द्र यादवक “आतंक” प्रविष्टि गद्य, कथा आ “ओबीसी एनएआरआरएटीआइवीई” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 32क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 4197 : विदेह-सदेह 32 — सुभाष चन्द्र यादव: ओ लड़की

२९७. खण्ड 4197, सूचकांक पंक्ति 2888: सुभाष चन्द्र यादवक “ओ लड़की” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) ओ लड़की
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२९८. खण्ड 4197, सूचकांक पंक्ति 2888: सुभाष चन्द्र यादवक “ओ लड़की”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) गद्य
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२९९. खण्ड 4197, सूचकांक पंक्ति 2888: सुभाष चन्द्र यादवक “ओ लड़की”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) कथा
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३००. खण्ड 4197, सूचकांक पंक्ति 2888: सुभाष चन्द्र यादवक “ओ लड़की” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ओबीसी एनएआरआरएटीआइवीई

३०१. खण्ड 4197, सूचकांक पंक्ति 2888: सुभाष चन्द्र यादवक “ओ लड़की” प्रविष्टि विदेह-सदेह 32मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) ओबीसी एनएआरआरएटीआइवीई
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३०२. खण्ड 4197, सूचकांक पंक्ति 2888: सुभाष चन्द्र यादवक “ओ लड़की”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककें की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक सुभाष चन्द्र यादव, विधा गद्य, उप-विधा कथा
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३०३. खण्ड 4197, सूचकांक पंक्ति 2888: सुभाष चन्द्र यादवक “ओ लड़की” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३०४. खण्ड 4197, सूचकांक पंक्ति 2888: सुभाष चन्द्र यादवक “ओ लड़की”कें विदेह-सदेह 32क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ कथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

३०५. खण्ड 4197, सूचकांक पंक्ति 2888: सुभाष चन्द्र यादवक “ओ लड़की” प्रविष्टि विदेह-सदेह 32क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३०६. खण्ड 4197, सूचकांक पंक्ति 2888: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 4197, सूचकांक पंक्ति 2888मे सुभाष चन्द्र यादवक “ओ लड़की” प्रविष्टि गद्य, कथा आ “ओबीसी एनएआरआरएटीआइवीई” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 32क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 4198 : विदेह-सदेह 32 — सुभाष चन्द्र यादव: एकटा अंत

३०७. खण्ड 4198, सूचकांक पंक्ति 2889: सुभाष चन्द्र यादवक “एकटा अंत” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) एकटा अंत
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३०८. खण्ड 4198, सूचकांक पंक्ति 2889: सुभाष चन्द्र यादवक “एकटा अंत”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) गद्य
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३०९. खण्ड 4198, सूचकांक पंक्ति 2889: सुभाष चन्द्र यादवक “एकटा अंत”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) कथा
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३१०. खण्ड 4198, सूचकांक पंक्ति 2889: सुभाष चन्द्र यादवक “एकटा अंत” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ओबीसी एनएआरआरएटीआइवीई

३११. खण्ड 4198, सूचकांक पंक्ति 2889: सुभाष चन्द्र यादवक “एकटा अंत” प्रविष्टि विदेह-सदेह 32मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) ओबीसी एनएआरआरएटीआइवीई
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३१२. खण्ड 4198, सूचकांक पंक्ति 2889: सुभाष चन्द्र यादवक “एकटा अंत”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककें की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक सुभाष चन्द्र यादव, विधा गद्य, उप-विधा कथा
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३१३. खण्ड 4198, सूचकांक पंक्ति 2889: सुभाष चन्द्र यादवक “एकटा अंत” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३१४. खण्ड 4198, सूचकांक पंक्ति 2889: सुभाष चन्द्र यादवक “एकटा अंत”कें विदेह-सदेह 32क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ कथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

३१५. खण्ड 4198, सूचकांक पंक्ति 2889: सुभाष चन्द्र यादवक “एकटा अंत” प्रविष्टि विदेह-सदेह 32क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३१६. खण्ड 4198, सूचकांक पंक्ति 2889: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 4198, सूचकांक पंक्ति 2889मे सुभाष चन्द्र यादवक “एकटा अंत” प्रविष्टि गद्य, कथा आ “ओबीसी एनएआरआरएटीआइवीई” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 32क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 4199 : विदेह-सदेह 32 — सुभाष चन्द्र यादव: एकटा प्रेम कथा

३१७. खण्ड 4199, सूचकांक पंक्ति 2890: सुभाष चन्द्र यादवक “एकटा प्रेम कथा” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) एकटा प्रेम कथा
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३१८. खण्ड 4199, सूचकांक पंक्ति 2890: सुभाष चन्द्र यादवक “एकटा प्रेम कथा”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) गद्य
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३१९. खण्ड 4199, सूचकांक पंक्ति 2890: सुभाष चन्द्र यादवक “एकटा प्रेम कथा”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) कथा
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३२०. खण्ड 4199, सूचकांक पंक्ति 2890: सुभाष चन्द्र यादवक “एकटा प्रेम कथा” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ओबीसी एनएआरआरएटीआइवीई

३२१. खण्ड 4199, सूचकांक पंक्ति 2890: सुभाष चन्द्र यादवक “एकटा प्रेम कथा” प्रविष्टि विदेह-सदेह 32मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) ओबीसी एनएआरआरएटीआइवीई
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३२२. खण्ड 4199, सूचकांक पंक्ति 2890: सुभाष चन्द्र यादवक “एकटा प्रेम कथा”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककें की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक सुभाष चन्द्र यादव, विधा गद्य, उप-विधा कथा
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३२३. खण्ड 4199, सूचकांक पंक्ति 2890: सुभाष चन्द्र यादवक “एकटा प्रेम कथा” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३२४. खण्ड 4199, सूचकांक पंक्ति 2890: सुभाष चन्द्र यादवक “एकटा प्रेम कथा”कें विदेह-सदेह 32क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ कथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

३२५. खण्ड 4199, सूचकांक पंक्ति 2890: सुभाष चन्द्र यादवक “एकटा प्रेम कथा” प्रविष्टि विदेह-सदेह 32क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३२६. खण्ड 4199, सूचकांक पंक्ति 2890: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 4199, सूचकांक पंक्ति 2890मे सुभाष चन्द्र यादवक “एकटा प्रेम कथा” प्रविष्टि गद्य, कथा आ “ओबीसी एनएआरआरएटीआइवीई” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 32क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 4200 : विदेह-सदेह 32 — सुभाष चन्द्र यादव: एकाकी

३२७. खण्ड 4200, सूचकांक पंक्ति 2891: सुभाष चन्द्र यादवक “एकाकी” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) एकाकी
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३२८. खण्ड 4200, सूचकांक पंक्ति 2891: सुभाष चन्द्र यादवक “एकाकी”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) गद्य
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३२९. खण्ड 4200, सूचकांक पंक्ति 2891: सुभाष चन्द्र यादवक “एकाकी”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) कथा
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३३०. खण्ड 4200, सूचकांक पंक्ति 2891: सुभाष चन्द्र यादवक “एकाकी” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ओबीसी एनएआरआरएटीआइवीई

३३१. खण्ड 4200, सूचकांक पंक्ति 2891: सुभाष चन्द्र यादवक “एकाकी” प्रविष्टि विदेह-सदेह 32मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) ओबीसी एनएआरआरएटीआइवीई
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३३२. खण्ड 4200, सूचकांक पंक्ति 2891: सुभाष चन्द्र यादवक “एकाकी”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककें की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक सुभाष चन्द्र यादव, विधा गद्य, उप-विधा कथा
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३३३. खण्ड 4200, सूचकांक पंक्ति 2891: सुभाष चन्द्र यादवक “एकाकी” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३३४. खण्ड 4200, सूचकांक पंक्ति 2891: सुभाष चन्द्र यादवक “एकाकी”कें विदेह-सदेह 32क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ कथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

३३५. खण्ड 4200, सूचकांक पंक्ति 2891: सुभाष चन्द्र यादवक “एकाकी” प्रविष्टि विदेह-सदेह 32क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३३६. खण्ड 4200, सूचकांक पंक्ति 2891: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 4200, सूचकांक पंक्ति 2891मे सुभाष चन्द्र यादवक “एकाकी” प्रविष्टि गद्य, कथा आ “ओबीसी एनएआरआरएटीआइवीई” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 32क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 4201 : विदेह-सदेह 32 — सुभाष चन्द्र यादव: कनियाँ-पुतरा

३३७. खण्ड 4201, सूचकांक पंक्ति 2892: सुभाष चन्द्र यादवक “कनियाँ-पुतरा” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) कनियाँ-पुतरा
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३३८. खण्ड 4201, सूचकांक पंक्ति 2892: सुभाष चन्द्र यादवक “कनियाँ-पुतरा”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) गद्य
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३३९. खण्ड 4201, सूचकांक पंक्ति 2892: सुभाष चन्द्र यादवक “कनियाँ-पुतरा”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) कथा
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३४०. खण्ड 4201, सूचकांक पंक्ति 2892: सुभाष चन्द्र यादवक “कनियाँ-पुतरा” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ओबीसी एनएआरआरएटीआइवीई

३४१. खण्ड 4201, सूचकांक पंक्ति 2892: सुभाष चन्द्र यादवक “कनियाँ-पुतरा” प्रविष्टि विदेह-सदेह 32मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) ओबीसी एनएआरआरएटीआइवीई
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३४२. खण्ड 4201, सूचकांक पंक्ति 2892: सुभाष चन्द्र यादवक “कनियाँ-पुतरा”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककें की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक सुभाष चन्द्र यादव, विधा गद्य, उप-विधा कथा
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३४३. खण्ड 4201, सूचकांक पंक्ति 2892: सुभाष चन्द्र यादवक “कनियाँ-पुतरा” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३४४. खण्ड 4201, सूचकांक पंक्ति 2892: सुभाष चन्द्र यादवक “कनियाँ-पुतरा”कें विदेह-सदेह 32क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ कथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

३४५. खण्ड 4201, सूचकांक पंक्ति 2892: सुभाष चन्द्र यादवक “कनियाँ-पुतरा” प्रविष्टि विदेह-सदेह 32क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३४६. खण्ड 4201, सूचकांक पंक्ति 2892: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 4201, सूचकांक पंक्ति 2892मे सुभाष चन्द्र यादवक “कनियाँ-पुतरा” प्रविष्टि गद्य, कथा आ “ओबीसी एनएआरआरएटीआइवीई” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 32क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 4202 : विदेह-सदेह 32 — सुभाष चन्द्र यादव: कबाछू

३४७. खण्ड 4202, सूचकांक पंक्ति 2893: सुभाष चन्द्र यादवक “कबाछू” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) कबाछू
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३४८. खण्ड 4202, सूचकांक पंक्ति 2893: सुभाष चन्द्र यादवक “कबाछू”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) गद्य
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३४९. खण्ड 4202, सूचकांक पंक्ति 2893: सुभाष चन्द्र यादवक “कबाछू”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) कथा
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३५०. खण्ड 4202, सूचकांक पंक्ति 2893: सुभाष चन्द्र यादवक “कबाछू” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ओबीसी एनएआरआरएटीआइवीई

३५१. खण्ड 4202, सूचकांक पंक्ति 2893: सुभाष चन्द्र यादवक “कबाछू” प्रविष्टि विदेह-सदेह 32मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) ओबीसी एनएआरआरएटीआइवीई
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३५२. खण्ड 4202, सूचकांक पंक्ति 2893: सुभाष चन्द्र यादवक “कबाछू”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककें की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक सुभाष चन्द्र यादव, विधा गद्य, उप-विधा कथा
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३५३. खण्ड 4202, सूचकांक पंक्ति 2893: सुभाष चन्द्र यादवक “कबाछू” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३५४. खण्ड 4202, सूचकांक पंक्ति 2893: सुभाष चन्द्र यादवक “कबाछू”कें विदेह-सदेह 32क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ कथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

३५५. खण्ड 4202, सूचकांक पंक्ति 2893: सुभाष चन्द्र यादवक “कबाछू” प्रविष्टि विदेह-सदेह 32क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३५६. खण्ड 4202, सूचकांक पंक्ति 2893: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 4202, सूचकांक पंक्ति 2893मे सुभाष चन्द्र यादवक “कबाछू” प्रविष्टि गद्य, कथा आ “ओबीसी एनएआरआरएटीआइवीई” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 32क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 4203 : विदेह-सदेह 32 — सुभाष चन्द्र यादव: कारबार

३५७. खण्ड 4203, सूचकांक पंक्ति 2894: सुभाष चन्द्र यादवक “कारबार” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) कारबार
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३५८. खण्ड 4203, सूचकांक पंक्ति 2894: सुभाष चन्द्र यादवक “कारबार”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) गद्य
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३५९. खण्ड 4203, सूचकांक पंक्ति 2894: सुभाष चन्द्र यादवक “कारबार”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) कथा
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३६०. खण्ड 4203, सूचकांक पंक्ति 2894: सुभाष चन्द्र यादवक “कारबार” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ओबीसी एनएआरआरएटीआइवीई

३६१. खण्ड 4203, सूचकांक पंक्ति 2894: सुभाष चन्द्र यादवक “कारबार” प्रविष्टि विदेह-सदेह 32मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) ओबीसी एनएआरआरएटीआइवीई
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३६२. खण्ड 4203, सूचकांक पंक्ति 2894: सुभाष चन्द्र यादवक “कारबार”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककें की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक सुभाष चन्द्र यादव, विधा गद्य, उप-विधा कथा
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३६३. खण्ड 4203, सूचकांक पंक्ति 2894: सुभाष चन्द्र यादवक “कारबार” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३६४. खण्ड 4203, सूचकांक पंक्ति 2894: सुभाष चन्द्र यादवक “कारबार”कें विदेह-सदेह 32क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ कथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

३६५. खण्ड 4203, सूचकांक पंक्ति 2894: सुभाष चन्द्र यादवक “कारबार” प्रविष्टि विदेह-सदेह 32क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३६६. खण्ड 4203, सूचकांक पंक्ति 2894: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 4203, सूचकांक पंक्ति 2894मे सुभाष चन्द्र यादवक “कारबार” प्रविष्टि गद्य, कथा आ “ओबीसी एनएआरआरएटीआइवीई” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 32क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 4204 : विदेह-सदेह 32 — सुभाष चन्द्र यादव: कुशती

३६७. खण्ड 4204, सूचकांक पंक्ति 2895: सुभाष चन्द्र यादवक “कुशती” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) कुशती
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३६८. खण्ड 4204, सूचकांक पंक्ति 2895: सुभाष चन्द्र यादवक “कुशती”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) गद्य
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३६९. खण्ड 4204, सूचकांक पंक्ति 2895: सुभाष चन्द्र यादवक “कुशती”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) कथा
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३७०. खण्ड 4204, सूचकांक पंक्ति 2895: सुभाष चन्द्र यादवक “कुशती” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ओबीसी एनएआरआरएटीआइवीई

३७१. खण्ड 4204, सूचकांक पंक्ति 2895: सुभाष चन्द्र यादवक “कुशती” प्रविष्टि विदेह-सदेह 32मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) ओबीसी एनएआरआरएटीआइवीई
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३७२. खण्ड 4204, सूचकांक पंक्ति 2895: सुभाष चन्द्र यादवक “कुशती”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककें की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक सुभाष चन्द्र यादव, विधा गद्य, उप-विधा कथा
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३७३. खण्ड 4204, सूचकांक पंक्ति 2895: सुभाष चन्द्र यादवक “कुशती” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३७४. खण्ड 4204, सूचकांक पंक्ति 2895: सुभाष चन्द्र यादवक “कुशती”कें विदेह-सदेह 32क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ कथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

३७५. खण्ड 4204, सूचकांक पंक्ति 2895: सुभाष चन्द्र यादवक “कुशती” प्रविष्टि विदेह-सदेह 32क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३७६. खण्ड 4204, सूचकांक पंक्ति 2895: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 4204, सूचकांक पंक्ति 2895मे सुभाष चन्द्र यादवक “कुशती” प्रविष्टि गद्य, कथा आ “ओबीसी एनएआरआरएटीआइवीई” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 32क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 4205 : विदेह-सदेह 32 — सुभाष चन्द्र यादव: कैनरी आइलैण्डक लॉरेल

३७७. खण्ड 4205, सूचकांक पंक्ति 2896: सुभाष चन्द्र यादवक “कैनरी आइलैण्डक लॉरेल” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) कैनरी आइलैण्डक लॉरेल
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३७८. खण्ड 4205, सूचकांक पंक्ति 2896: सुभाष चन्द्र यादवक “कैनरी आइलैण्डक लॉरेल”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) गद्य
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३७९. खण्ड 4205, सूचकांक पंक्ति 2896: सुभाष चन्द्र यादवक “कैनरी आइलैण्डक लॉरेल”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) कथा
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३८०. खण्ड 4205, सूचकांक पंक्ति 2896: सुभाष चन्द्र यादवक “कैनरी आइलैण्डक लॉरिल” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ओबीसी एनएआरआरएटीआइवीई

३८१. खण्ड 4205, सूचकांक पंक्ति 2896: सुभाष चन्द्र यादवक “कैनरी आइलैण्डक लॉरिल” प्रविष्टि विदेह-सदेह 32मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) ओबीसी एनएआरआरएटीआइवीई
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३८२. खण्ड 4205, सूचकांक पंक्ति 2896: सुभाष चन्द्र यादवक “कैनरी आइलैण्डक लॉरिल”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककें की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक सुभाष चन्द्र यादव, विधा गद्य, उप-विधा कथा
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३८३. खण्ड 4205, सूचकांक पंक्ति 2896: सुभाष चन्द्र यादवक “कैनरी आइलैण्डक लॉरिल” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३८४. खण्ड 4205, सूचकांक पंक्ति 2896: सुभाष चन्द्र यादवक “कैनरी आइलैण्डक लॉरिल”कें विदेह-सदेह 32क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ कथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

३८५. खण्ड 4205, सूचकांक पंक्ति 2896: सुभाष चन्द्र यादवक “कैनरी आइलैण्डक लॉरिल” प्रविष्टि विदेह-सदेह 32क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३८६. खण्ड 4205, सूचकांक पंक्ति 2896: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 4205, सूचकांक पंक्ति 2896मे सुभाष चन्द्र यादवक “कैनरी आइलैण्डक लॉरिल” प्रविष्टि गद्य, कथा आ “ओबीसी एनएआरआरएटीआइवीई” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 32क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 4206 : विदेह-सदेह 32 — सुभाष चन्द्र यादव: तृष्णा

३८७. खण्ड 4206, सूचकांक पंक्ति 2897: सुभाष चन्द्र यादवक “तृष्णा” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) तृष्णा
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३८८. खण्ड 4206, सूचकांक पंक्ति 2897: सुभाष चन्द्र यादवक “तृष्णा”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) गद्य
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३८९. खण्ड 4206, सूचकांक पंक्ति 2897: सुभाष चन्द्र यादवक “तृष्णा”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) कथा
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३९०. खण्ड 4206, सूचकांक पंक्ति 2897: सुभाष चन्द्र यादवक “तृष्णा” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ओबीसी एनएआरआरएटीआइवीई

३९१. खण्ड 4206, सूचकांक पंक्ति 2897: सुभाष चन्द्र यादवक “तृष्णा” प्रविष्टि विदेह-सदेह 32मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) ओबीसी एनएआरआरएटीआइवीई
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३९२. खण्ड 4206, सूचकांक पंक्ति 2897: सुभाष चन्द्र यादवक “तृष्णा”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककें की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक सुभाष चन्द्र यादव, विधा गद्य, उप-विधा कथा
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३९३. खण्ड 4206, सूचकांक पंक्ति 2897: सुभाष चन्द्र यादवक “तृष्णा” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३९४. खण्ड 4206, सूचकांक पंक्ति 2897: सुभाष चन्द्र यादवक “तृष्णा”कें विदेह-सदेह 32क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ कथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

३९५. खण्ड 4206, सूचकांक पंक्ति 2897: सुभाष चन्द्र यादवक “तृष्णा” प्रविष्टि विदेह-सदेह 32क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३९६. खण्ड 4206, सूचकांक पंक्ति 2897: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 4206, सूचकांक पंक्ति 2897मे सुभाष चन्द्र यादवक “तृष्णा” प्रविष्टि गद्य, कथा आ “ओबीसी एनएआरआरएटीआइवीई” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 32क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 4207 : विदेह-सदेह 32 — सुभाष चन्द्र यादव: दाना

३९७. खण्ड 4207, सूचकांक पंक्ति 2898: सुभाष चन्द्र यादवक “दाना” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) दाना
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३९८. खण्ड 4207, सूचकांक पंक्ति 2898: सुभाष चन्द्र यादवक “दाना”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) गद्य
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३९९. खण्ड 4207, सूचकांक पंक्ति 2898: सुभाष चन्द्र यादवक “दाना”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) कथा
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४००. खण्ड 4207, सूचकांक पंक्ति 2898: सुभाष चन्द्र यादवक “दाना” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ओबीसी एनएआरआरएटीआइवीई

४०१. खण्ड 4207, सूचकांक पंक्ति 2898: सुभाष चन्द्र यादवक “दाना” प्रविष्टि विदेह-सदेह 32मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) ओबीसी एनएआरआरएटीआइवीई
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४०२. खण्ड 4207, सूचकांक पंक्ति 2898: सुभाष चन्द्र यादवक “दाना”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककें की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक सुभाष चन्द्र यादव, विधा गद्य, उप-विधा कथा
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४०३. खण्ड 4207, सूचकांक पंक्ति 2898: सुभाष चन्द्र यादवक “दाना” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४०४. खण्ड 4207, सूचकांक पंक्ति 2898: सुभाष चन्द्र यादवक “दाना”कें विदेह-सदेह 32क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ कथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

४०५. खण्ड 4207, सूचकांक पंक्ति 2898: सुभाष चन्द्र यादवक “दाना” प्रविष्टि विदेह-सदेह 32क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४०६. खण्ड 4207, सूचकांक पंक्ति 2898: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 4207, सूचकांक पंक्ति 2898मे सुभाष चन्द्र यादवक “दाना” प्रविष्टि गद्य, कथा आ “ओबीसी एनएआरआरएटीआइवीई” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 32क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 4208 : विदेह-सदेह 32 — सुभाष चन्द्र यादव: दृष्टि

४०७. खण्ड 4208, सूचकांक पंक्ति 2899: सुभाष चन्द्र यादवक “दृष्टि” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) दृष्टि
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४०८. खण्ड 4208, सूचकांक पंक्ति 2899: सुभाष चन्द्र यादवक “दृष्टि”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) गद्य
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४०९. खण्ड 4208, सूचकांक पंक्ति 2899: सुभाष चन्द्र यादवक “दृष्टि”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) कथा
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४१०. खण्ड 4208, सूचकांक पंक्ति 2899: सुभाष चन्द्र यादवक “दृष्टि” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ओबीसी एनएआरआरएटीआइवीई

४११. खण्ड 4208, सूचकांक पंक्ति 2899: सुभाष चन्द्र यादवक “दृष्टि” प्रविष्टि विदेह-सदेह 32मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) ओबीसी एनएआरआरएटीआइवीई
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४१२. खण्ड 4208, सूचकांक पंक्ति 2899: सुभाष चन्द्र यादवक “दृष्टि”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककें की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक सुभाष चन्द्र यादव, विधा गद्य, उप-विधा कथा
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४१३. खण्ड 4208, सूचकांक पंक्ति 2899: सुभाष चन्द्र यादवक “दृष्टि” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४१४. खण्ड 4208, सूचकांक पंक्ति 2899: सुभाष चन्द्र यादवक “दृष्टि”कें विदेह-सदेह 32क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ कथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

४१५. खण्ड 4208, सूचकांक पंक्ति 2899: सुभाष चन्द्र यादवक “दृष्टि” प्रविष्टि विदेह-सदेह 32क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४१६. खण्ड 4208, सूचकांक पंक्ति 2899: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 4208, सूचकांक पंक्ति 2899मे सुभाष चन्द्र यादवक “दृष्टि” प्रविष्टि गद्य, कथा आ “ओबीसी एनएआरआरएटीआइवीई” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 32क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 4209 : विदेह-सदेह 32 — सुभाष चन्द्र यादव: नदी

४१७. खण्ड 4209, सूचकांक पंक्ति 2900: सुभाष चन्द्र यादवक “नदी” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) नदी
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४१८. खण्ड 4209, सूचकांक पंक्ति 2900: सुभाष चन्द्र यादवक “नदी”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) गद्य
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४१९. खण्ड 4209, सूचकांक पंक्ति 2900: सुभाष चन्द्र यादवक “नदी”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) कथा
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४२०. खण्ड 4209, सूचकांक पंक्ति 2900: सुभाष चन्द्र यादवक “नदी” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ओबीसी एनएआरआरएटीआइवीई

४२१. खण्ड 4209, सूचकांक पंक्ति 2900: सुभाष चन्द्र यादवक “नदी” प्रविष्टि विदेह-सदेह 32मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) ओबीसी एनएआरआरएटीआइवीई
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४२२. खण्ड 4209, सूचकांक पंक्ति 2900: सुभाष चन्द्र यादवक “नदी”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककें की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक सुभाष चन्द्र यादव, विधा गद्य, उप-विधा कथा
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४२३. खण्ड 4209, सूचकांक पंक्ति 2900: सुभाष चन्द्र यादवक “नदी” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४२४. खण्ड 4209, सूचकांक पंक्ति 2900: सुभाष चन्द्र यादवक “नदी”कें विदेह-सदेह 32क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ कथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

४२५. खण्ड 4209, सूचकांक पंक्ति 2900: सुभाष चन्द्र यादवक “नदी” प्रविष्टि विदेह-सदेह 32क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४२६. खण्ड 4209, सूचकांक पंक्ति 2900: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 4209, सूचकांक पंक्ति 2900मे सुभाष चन्द्र यादवक “नदी” प्रविष्टि गद्य, कथा आ “ओबीसी एनएआरआरएटीआइवीई” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 32क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 4210 : विदेह-सदेह 32 — सुभाष चन्द्र यादव: परलय

४२७. खण्ड 4210, सूचकांक पंक्ति 2901: सुभाष चन्द्र यादवक “परलय” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) परलय
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४२८. खण्ड 4210, सूचकांक पंक्ति 2901: सुभाष चन्द्र यादवक “परलय”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) गद्य
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४२९. खण्ड 4210, सूचकांक पंक्ति 2901: सुभाष चन्द्र यादवक “परलय”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) कथा
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४३०. खण्ड 4210, सूचकांक पंक्ति 2901: सुभाष चन्द्र यादवक “परलय” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ओबीसी एनएआरआरएटीआइवीई

४३१. खण्ड 4210, सूचकांक पंक्ति 2901: सुभाष चन्द्र यादवक “परलय” प्रविष्टि विदेह-सदेह 32मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) ओबीसी एनएआरआरएटीआइवीई
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४३२. खण्ड 4210, सूचकांक पंक्ति 2901: सुभाष चन्द्र यादवक “परलय”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककें की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक सुभाष चन्द्र यादव, विधा गद्य, उप-विधा कथा
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४३३. खण्ड 4210, सूचकांक पंक्ति 2901: सुभाष चन्द्र यादवक “परलय” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४३४. खण्ड 4210, सूचकांक पंक्ति 2901: सुभाष चन्द्र यादवक “परलय”कें विदेह-सदेह 32क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ कथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

४३५. खण्ड 4210, सूचकांक पंक्ति 2901: सुभाष चन्द्र यादवक “परलय” प्रविष्टि विदेह-सदेह 32क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४३६. खण्ड 4210, सूचकांक पंक्ति 2901: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 4210, सूचकांक पंक्ति 2901मे सुभाष चन्द्र यादवक “परलय” प्रविष्टि गद्य, कथा आ “ओबीसी एनएआरआरएटीआइवीई” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 32क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 4211 : विदेह-सदेह 32 — सुभाष चन्द्र यादव: बात

४३७. खण्ड 4211, सूचकांक पंक्ति 2902: सुभाष चन्द्र यादवक “बात” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) बात
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४३८. खण्ड 4211, सूचकांक पंक्ति 2902: सुभाष चन्द्र यादवक “बात”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) गद्य
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४३९. खण्ड 4211, सूचकांक पंक्ति 2902: सुभाष चन्द्र यादवक “बात”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) कथा
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४४०. खण्ड 4211, सूचकांक पंक्ति 2902: सुभाष चन्द्र यादवक “बात” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ओबीसी एनएआरआरएटीआइवीई

४४१. खण्ड 4211, सूचकांक पंक्ति 2902: सुभाष चन्द्र यादवक “बात” प्रविष्टि विदेह-सदेह 32मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) ओबीसी एनएआरआरएटीआइवीई
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४४२. खण्ड 4211, सूचकांक पंक्ति 2902: सुभाष चन्द्र यादवक “बात”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककें की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक सुभाष चन्द्र यादव, विधा गद्य, उप-विधा कथा
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४४३. खण्ड 4211, सूचकांक पंक्ति 2902: सुभाष चन्द्र यादवक “बात” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४४४. खण्ड 4211, सूचकांक पंक्ति 2902: सुभाष चन्द्र यादवक “बात”कें विदेह-सदेह 32क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ कथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

४४५. खण्ड 4211, सूचकांक पंक्ति 2902: सुभाष चन्द्र यादवक “बात” प्रविष्टि विदेह-सदेह 32क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४४६. खण्ड 4211, सूचकांक पंक्ति 2902: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 4211, सूचकांक पंक्ति 2902मे सुभाष चन्द्र यादवक “बात” प्रविष्टि गद्य, कथा आ “ओबीसी एनएआरआरएटीआइवीई” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 32क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 4212 : विदेह-सदेह 32 — सुभाष चन्द्र यादव: रंभा

४४७. खण्ड 4212, सूचकांक पंक्ति 2903: सुभाष चन्द्र यादवक “रंभा” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) रंभा
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४४८. खण्ड 4212, सूचकांक पंक्ति 2903: सुभाष चन्द्र यादवक “रंभा”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) गद्य
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४४९. खण्ड 4212, सूचकांक पंक्ति 2903: सुभाष चन्द्र यादवक “रंभा”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) कथा
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४५०. खण्ड 4212, सूचकांक पंक्ति 2903: सुभाष चन्द्र यादवक “रंभा” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ओबीसी एनएआरआरएटीआइवीई

४५१. खण्ड 4212, सूचकांक पंक्ति 2903: सुभाष चन्द्र यादवक “रंभा” प्रविष्टि विदेह-सदेह 32मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) ओबीसी एनएआरआरएटीआइवीई
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४५२. खण्ड 4212, सूचकांक पंक्ति 2903: सुभाष चन्द्र यादवक “रंभा”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककें की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक सुभाष चन्द्र यादव, विधा गद्य, उप-विधा कथा
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४५३. खण्ड 4212, सूचकांक पंक्ति 2903: सुभाष चन्द्र यादवक “रंभा” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४५४. खण्ड 4212, सूचकांक पंक्ति 2903: सुभाष चन्द्र यादवक “रंभा”कें विदेह-सदेह 32क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ कथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

४५५. खण्ड 4212, सूचकांक पंक्ति 2903: सुभाष चन्द्र यादवक “रंभा” प्रविष्टि विदेह-सदेह 32क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४५६. खण्ड 4212, सूचकांक पंक्ति 2903: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 4212, सूचकांक पंक्ति 2903मे सुभाष चन्द्र यादवक “रंभा” प्रविष्टि गद्य, कथा आ “ओबीसी एनएआरआरएटीआइवीई” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 32क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 4213 : विदेह-सदेह 32 — सुभाष चन्द्र यादव: हमर गाम

४५७. खण्ड 4213, सूचकांक पंक्ति 2904: सुभाष चन्द्र यादवक “हमर गाम” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) हमर गाम
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४५८. खण्ड 4213, सूचकांक पंक्ति 2904: सुभाष चन्द्र यादवक “हमर गाम”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) गद्य
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४५९. खण्ड 4213, सूचकांक पंक्ति 2904: सुभाष चन्द्र यादवक “हमर गाम”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) कथा
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४६०. खण्ड 4213, सूचकांक पंक्ति 2904: सुभाष चन्द्र यादवक “हमर गाम” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ओबीसी एनएआरआरएटीआइवीई

४६१. खण्ड 4213, सूचकांक पंक्ति 2904: सुभाष चन्द्र यादवक “हमर गाम” प्रविष्टि विदेह-सदेह 32मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) ओबीसी एनएआरआरएटीआइवीई
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४६२. खण्ड 4213, सूचकांक पंक्ति 2904: सुभाष चन्द्र यादवक “हमर गाम”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककें की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक सुभाष चन्द्र यादव, विधा गद्य, उप-विधा कथा
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४६३. खण्ड 4213, सूचकांक पंक्ति 2904: सुभाष चन्द्र यादवक “हमर गाम” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४६४. खण्ड 4213, सूचकांक पंक्ति 2904: सुभाष चन्द्र यादवक “हमर गाम”कें विदेह-सदेह 32क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ कथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

४६५. खण्ड 4213, सूचकांक पंक्ति 2904: सुभाष चन्द्र यादवक “हमर गाम” प्रविष्टि विदेह-सदेह 32क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४६६. खण्ड 4213, सूचकांक पंक्ति 2904: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 4213, सूचकांक पंक्ति 2904मे सुभाष चन्द्र यादवक “हमर गाम” प्रविष्टि गद्य, कथा आ “ओबीसी एनएआरआरएटीआइवीई” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 32क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 4214 : विदेह-सदेह 32 — विभा रानी: माउगि

४६७. खण्ड 4214, सूचकांक पंक्ति 2905: विभा रानीक “माउगि” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) माउगि
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४६८. खण्ड 4214, सूचकांक पंक्ति 2905: विभा रानीक “माउगि”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) गद्य
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४६९. खण्ड 4214, सूचकांक पंक्ति 2905: विभा रानीक “माउगि”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) कथा
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४७०. खण्ड 4214, सूचकांक पंक्ति 2905: विभा रानीक “माउगि” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) नारी-दृष्टि

४७१. खण्ड 4214, सूचकांक पंक्ति 2905: विभा रानीक “माउगि” प्रविष्टि विदेह-सदेह 32मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) नारी-दृष्टि
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४७२. खण्ड 4214, सूचकांक पंक्ति 2905: विभा रानीक “माउगि”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककें की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक विभा रानी, विधा गद्य, उप-विधा कथा
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४७३. खण्ड 4214, सूचकांक पंक्ति 2905: विभा रानीक “माउगि” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४७४. खण्ड 4214, सूचकांक पंक्ति 2905: विभा रानीक “माउगि”कें विदेह-सदेह 32क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ कथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

४७५. खण्ड 4214, सूचकांक पंक्ति 2905: विभा रानीक “माउगि” प्रविष्टि विदेह-सदेह 32क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४७६. खण्ड 4214, सूचकांक पंक्ति 2905: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 4214, सूचकांक पंक्ति 2905मे विभा रानीक “माउगि” प्रविष्टि गद्य, कथा आ “नारी-दृष्टि” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 32क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 4215 : विदेह-सदेह 32 — विभा रानी: भाग रौ

४७७. खण्ड 4215, सूचकांक पंक्ति 2906: विभा रानीक “भाग रौ” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) भाग रौ
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४७८. खण्ड 4215, सूचकांक पंक्ति 2906: विभा रानीक “भाग रौ”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) गद्य
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४७९. खण्ड 4215, सूचकांक पंक्ति 2906: विभा रानीक “भाग रौ”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) कथा
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४८०. खण्ड 4215, सूचकांक पंक्ति 2906: विभा रानीक “भाग रौ” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) नारी-दृष्टि

४८१. खण्ड 4215, सूचकांक पंक्ति 2906: विभा रानीक “भाग रौ” प्रविष्टि विदेह-सदेह 32मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) नारी-दृष्टि
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४८२. खण्ड 4215, सूचकांक पंक्ति 2906: विभा रानीक “भाग रौ”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक विभा रानी, विधा गद्य, उप-विधा कथा
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४८३. खण्ड 4215, सूचकांक पंक्ति 2906: विभा रानीक “भाग रौ” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४८४. खण्ड 4215, सूचकांक पंक्ति 2906: विभा रानीक “भाग रौ”क विदेह-सदेह 32क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ कथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

४८५. खण्ड 4215, सूचकांक पंक्ति 2906: विभा रानीक “भाग रौ” प्रविष्टि विदेह-सदेह 32क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४८६. खण्ड 4215, सूचकांक पंक्ति 2906: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 4215, सूचकांक पंक्ति 2906मे विभा रानीक “भाग रौ” प्रविष्टि गद्य, कथा आ “नारी-दृष्टि” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 32क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 4216 : विदेह-सदेह 32 — विभा रानी: बलचन्दा

४८७. खण्ड 4216, सूचकांक पंक्ति 2907: विभा रानीक “बलचन्दा” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) बलचन्दा
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४८८. खण्ड 4216, सूचकांक पंक्ति 2907: विभा रानीक “बलचन्दा”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) गद्य
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४८९. खण्ड 4216, सूचकांक पंक्ति 2907: विभा रानीक “बलचन्दा”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) कथा
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४९०. खण्ड 4216, सूचकांक पंक्ति 2907: विभा रानीक “बलचन्दा” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) नारी-दृष्टि

४९१. खण्ड 4216, सूचकांक पंक्ति 2907: विभा रानीक “बलचन्दा” प्रविष्टि विदेह-सदेह 32मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) नारी-दृष्टि
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४९२. खण्ड 4216, सूचकांक पंक्ति 2907: विभा रानीक “बलचन्दा”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक विभा रानी, विधा गद्य, उप-विधा कथा
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४९३. खण्ड 4216, सूचकांक पंक्ति 2907: विभा रानीक “बलचन्दा” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४९४. खण्ड 4216, सूचकांक पंक्ति 2907: विभा रानीक “बलचन्दा”केँ विदेह-सदेह 32क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ कथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

४९५. खण्ड 4216, सूचकांक पंक्ति 2907: विभा रानीक “बलचन्दा” प्रविष्टि विदेह-सदेह 32क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४९६. खण्ड 4216, सूचकांक पंक्ति 2907: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 4216, सूचकांक पंक्ति 2907मे विभा रानीक “बलचन्दा” प्रविष्टि गद्य, कथा आ “नारी-दृष्टि” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 32क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 4217 : विदेह-सदेह 32 — डॉ शिव प्रसाद यादव: साहित्य मनीषी मायानन्द मिश्रसँ साक्षात्कार

४९७. खण्ड 4217, सूचकांक पंक्ति 2908: डॉ शिव प्रसाद यादवक “साहित्य मनीषी मायानन्द मिश्रसँ साक्षात्कार” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) साहित्य मनीषी मायानन्द मिश्रसँ साक्षात्कार
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४९८. खण्ड 4217, सूचकांक पंक्ति 2908: डॉ शिव प्रसाद यादवक “साहित्य मनीषी मायानन्द मिश्रसँ साक्षात्कार”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) गद्य
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४९९. खण्ड 4217, सूचकांक पंक्ति 2908: डॉ शिव प्रसाद यादवक “साहित्य मनीषी मायानन्द मिश्रसँ साक्षात्कार”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) साक्षात्कार
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

५००. खण्ड 4217, सूचकांक पंक्ति 2908: डॉ शिव प्रसाद यादवक “साहित्य मनीषी मायानन्द मिश्रसँ साक्षात्कार” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) बीएकेएचटीआइएन डीआइएएलओजीआइएसएम

५०१. खण्ड 4217, सूचकांक पंक्ति 2908: डॉ शिव प्रसाद यादवक “साहित्य मनीषी मायानन्द मिश्रसँ साक्षात्कार” प्रविष्टि विदेह-सदेह 32मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) बीएकेएचटीआइएन डीआइएएलओजीआइएसएम
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

५०२. खण्ड 4217, सूचकांक पंक्ति 2908: डॉ शिव प्रसाद यादवक “साहित्य मनीषी मायानन्द मिश्रसँ साक्षात्कार”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक डॉ शिव प्रसाद यादव, विधा गद्य, उप-विधा साक्षात्कार
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

५०३. खण्ड 4217, सूचकांक पंक्ति 2908: डॉ शिव प्रसाद यादवक “साहित्य मनीषी मायानन्द मिश्रसँ साक्षात्कार” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

५०४. खण्ड 4217, सूचकांक पंक्ति 2908: डॉ शिव प्रसाद यादवक “साहित्य मनीषी मायानन्द मिश्रसँ साक्षात्कार”केँ विदेह-सदेह 32क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ साक्षात्कारक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

५०५. खण्ड 4217, सूचकांक पंक्ति 2908: डॉ शिव प्रसाद यादवक “साहित्य मनीषी मायानन्द मिश्रसँ साक्षात्कार” प्रविष्टि विदेह-सदेह 32क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

५०६. खण्ड 4217, सूचकांक पंक्ति 2908: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 4217, सूचकांक पंक्ति 2908मे डॉ शिव प्रसाद यादवक “साहित्य मनीषी मायानन्द मिश्रसँ साक्षात्कार” प्रविष्टि गद्य, साक्षात्कार आ “बीएकेएचटीआइएन डीआइएलओजीआइएसएम” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 32क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 4218 : विदेह-सदेह 32 — उदय नारायण सिंह 'नचिकेता': अन्तर्द्वन्द्व

५०७. खण्ड 4218, सूचकांक पंक्ति 2909: उदय नारायण सिंह 'नचिकेता'क “अन्तर्द्वन्द्व” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) अन्तर्द्वन्द्व
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

५०८. खण्ड 4218, सूचकांक पंक्ति 2909: उदय नारायण सिंह 'नचिकेता'क “अन्तर्द्वन्द्व”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) पद्य
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

५०९. खण्ड 4218, सूचकांक पंक्ति 2909: उदय नारायण सिंह 'नचिकेता'क “अन्तर्द्वन्द्व”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) कविता
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

५१०. खण्ड 4218, सूचकांक पंक्ति 2909: उदय नारायण सिंह 'नचिकेता'क “अन्तर्द्वन्द्व” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) सीआइआइएल

५११. खण्ड 4218, सूचकांक पंक्ति 2909: उदय नारायण सिंह 'नचिकेता'क “अन्तर्द्वन्द्व” प्रविष्टि विदेह-सदेह 32मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) सीआइआइएल
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

५१२. खण्ड 4218, सूचकांक पंक्ति 2909: उदय नारायण सिंह 'नचिकेता'क “अन्तर्द्वन्द्व”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककें की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक उदय नारायण सिंह 'नचिकेता', विधा पद्य, उप-विधा कविता
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

५१३. खण्ड 4218, सूचकांक पंक्ति 2909: उदय नारायण सिंह 'नचिकेता'क “अन्तर्द्वन्द्व” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

५१४. खण्ड 4218, सूचकांक पंक्ति 2909: उदय नारायण सिंह 'नचिकेता'क “अन्तर्द्वन्द्व”कें विदेह-सदेह 32क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

५१५. खण्ड 4218, सूचकांक पंक्ति 2909: उदय नारायण सिंह 'नचिकेता'क “अन्तर्द्वन्द्व” प्रविष्टि विदेह-सदेह 32क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

५१६. खण्ड 4218, सूचकांक पंक्ति 2909: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 4218, सूचकांक पंक्ति 2909मे उदय नारायण सिंह 'नचिकेता'क “अन्तर्द्वन्द्व” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “सीआइआइएल” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 32क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 4219 : विदेह-सदेह 32 — शैलेन्द्र मोहन झा: सपना, हम तऽ छी परदेशमे, चलला मुरारी छौरी फ़सबय!

५१७. खण्ड 4219, सूचकांक पंक्ति 2910: शैलेन्द्र मोहन झाक “सपना, हम तऽ छी परदेशमे, चलला मुरारी छौरी फ़सबय!” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) सपना, हम तऽ छी परदेशमे, चलला मुरारी छौरी फ़सबय!
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

५१८. खण्ड 4219, सूचकांक पंक्ति 2910: शैलेन्द्र मोहन झाक “सपना, हम तऽ छी परदेशमे, चलला मुरारी छौरी फ़सबय!”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) पद्य
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

५१९. खण्ड 4219, सूचकांक पंक्ति 2910: शैलेन्द्र मोहन झाक “सपना, हम तऽ छी परदेशमे, चलला मुरारी छौरी फ्रँसबय!”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) कविता
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

५२०. खण्ड 4219, सूचकांक पंक्ति 2910: शैलेन्द्र मोहन झाक “सपना, हम तऽ छी परदेशमे, चलला मुरारी छौरी फ्रँसबय!” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) भावात्मक अभिव्यक्ति

५२१. खण्ड 4219, सूचकांक पंक्ति 2910: शैलेन्द्र मोहन झाक “सपना, हम तऽ छी परदेशमे, चलला मुरारी छौरी फ्रँसबय!” प्रविष्टि विदेह-सदेह 32मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) भावात्मक अभिव्यक्ति
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

५२२. खण्ड 4219, सूचकांक पंक्ति 2910: शैलेन्द्र मोहन झाक “सपना, हम तऽ छी परदेशमे, चलला मुरारी छौरी फ्रँसबय!”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककें की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक शैलेन्द्र मोहन झा, विधा पद्य, उप-विधा कविता
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

५२३. खण्ड 4219, सूचकांक पंक्ति 2910: शैलेन्द्र मोहन झाक “सपना, हम तऽ छी परदेशमे, चलला मुरारी छौरी फ्रँसबय!” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

५२४. खण्ड 4219, सूचकांक पंक्ति 2910: शैलेन्द्र मोहन झाक “सपना, हम तऽ छी परदेशमे, चलला मुरारी छौरी फ्रँसबय!”कें विदेह-सदेह 32क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

५२५. खण्ड 4219, सूचकांक पंक्ति 2910: शैलेन्द्र मोहन झाक “सपना, हम तऽ छी परदेशमे, चलला मुरारी छौरी फ्रँसबय!” प्रविष्टि विदेह-सदेह 32क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

५२६. खण्ड 4219, सूचकांक पंक्ति 2910: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 4219, सूचकांक पंक्ति 2910मे शैलेन्द्र मोहन झाक “सपना, हम तऽ छी परदेशमे, चलला मुरारी छौरी फ़सबय!” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “भावनात्मक अभिव्यक्ति” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 32क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 4220 : विदेह-सदेह 32 — जितमोहन झा: भक्तिगीत

५२७. खण्ड 4220, सूचकांक पंक्ति 2911: जितमोहन झाक “भक्तिगीत” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) भक्तिगीत
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

५२८. खण्ड 4220, सूचकांक पंक्ति 2911: जितमोहन झाक “भक्तिगीत”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) पद्य
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

५२९. खण्ड 4220, सूचकांक पंक्ति 2911: जितमोहन झाक “भक्तिगीत”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) भक्तिगीत
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

५३०. खण्ड 4220, सूचकांक पंक्ति 2911: जितमोहन झाक “भक्तिगीत” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) मुम्बई

५३१. खण्ड 4220, सूचकांक पंक्ति 2911: जितमोहन झाक “भक्तिगीत” प्रविष्टि विदेह-सदेह 32मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) मुम्बई
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

५३२. खण्ड 4220, सूचकांक पंक्ति 2911: जितमोहन झाक “भक्तिगीत”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककें की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक जितमोहन झा, विधा पद्य, उप-विधा भक्तिगीत
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

५३३. खण्ड 4220, सूचकांक पंक्ति 2911: जितमोहन झाक “भक्तिगीत” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

५३४. खण्ड 4220, सूचकांक पंक्ति 2911: जितमोहन झाक “भक्तिगीत”के विदेह-सदेह 32क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ भक्तिगीतक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

५३५. खण्ड 4220, सूचकांक पंक्ति 2911: जितमोहन झाक “भक्तिगीत” प्रविष्टि विदेह-सदेह 32क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

५३६. खण्ड 4220, सूचकांक पंक्ति 2911: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 4220, सूचकांक पंक्ति 2911मे जितमोहन झाक “भक्तिगीत” प्रविष्टि पद्य, भक्तिगीत आ “मुम्बई” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 32क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 4221 : विदेह-सदेह 32 — प्रकाश झा: हमर मिथिलाक दर्शन

५३७. खण्ड 4221, सूचकांक पंक्ति 2912: प्रकाश झाक “हमर मिथिलाक दर्शन” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) हमर मिथिलाक दर्शन
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

५३८. खण्ड 4221, सूचकांक पंक्ति 2912: प्रकाश झाक “हमर मिथिलाक दर्शन”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) पद्य
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

५३९. खण्ड 4221, सूचकांक पंक्ति 2912: प्रकाश झाक “हमर मिथिलाक दर्शन”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) कविता
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

५४०. खण्ड 4221, सूचकांक पंक्ति 2912: प्रकाश झाक “हमर मिथिलाक दर्शन” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) सामाजिक रिपोर्टिंग

५४१. खण्ड 4221, सूचकांक पंक्ति 2912: प्रकाश झाक “हमर मिथिलाक दर्शन” प्रविष्टि विदेह-सदेह 32मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) सामाजिक रिपोर्टिंग
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

५४२. खण्ड 4221, सूचकांक पंक्ति 2912: प्रकाश झाक “हमर मिथिलाक दर्शन”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककें की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक प्रकाश झा, विधा पद्य, उप-विधा कविता
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

५४३. खण्ड 4221, सूचकांक पंक्ति 2912: प्रकाश झाक “हमर मिथिलाक दर्शन” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

५४४. खण्ड 4221, सूचकांक पंक्ति 2912: प्रकाश झाक “हमर मिथिलाक दर्शन”कें विदेह-सदेह 32क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

५४५. खण्ड 4221, सूचकांक पंक्ति 2912: प्रकाश झाक “हमर मिथिलाक दर्शन” प्रविष्टि विदेह-सदेह 32क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

५४६. खण्ड 4221, सूचकांक पंक्ति 2912: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 4221, सूचकांक पंक्ति 2912मे प्रकाश झाक “हमर मिथिलाक दर्शन” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “सामाजिक रिपोर्टिंग” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 32क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 4222 : विदेह-सदेह 32 — गंगेश गुंजन: राधा (धारावाहिक, खेप १-३०)

५४७. खण्ड 4222, सूचकांक पंक्ति 2913: गंगेश गुंजनक “राधा (धारावाहिक, खेप १-३०)” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) राधा (धारावाहिक, खेप १-३०)
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

५४८. खण्ड 4222, सूचकांक पंक्ति 2913: गंगेश गुंजनक “राधा (धारावाहिक, खेप १-३०)”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) पद्य
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

५४९. खण्ड 4222, सूचकांक पंक्ति 2913: गंगेश गुंजनक “राधा (धारावाहिक, खेप १-३०)”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) गद्य-पद्य/गजल
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

५५०. खण्ड 4222, सूचकांक पंक्ति 2913: गंगेश गुंजनक “राधा (धारावाहिक, खेप १-३०)” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) साहित्य अकादेमी पुरस्कार

५५१. खण्ड 4222, सूचकांक पंक्ति 2913: गंगेश गुंजनक “राधा (धारावाहिक, खेप १-३०)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 32मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) साहित्य अकादेमी पुरस्कार
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

५५२. खण्ड 4222, सूचकांक पंक्ति 2913: गंगेश गुंजनक “राधा (धारावाहिक, खेप १-३०)”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककें की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक गंगेश गुंजन, विधा पद्य, उप-विधा गद्य-पद्य/गजल
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

५५३. खण्ड 4222, सूचकांक पंक्ति 2913: गंगेश गुंजनक “राधा (धारावाहिक, खेप १-३०)” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

५५४. खण्ड 4222, सूचकांक पंक्ति 2913: गंगेश गुंजनक “राधा (धारावाहिक, खेप १-३०)”कें विदेह-सदेह 32क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ गद्य-पद्य/गजलक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

५५५. खण्ड 4222, सूचकांक पंक्ति 2913: गंगेश गुंजनक “राधा (धारावाहिक, खेप १-३०)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 32क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

५५६. खण्ड 4222, सूचकांक पंक्ति 2913: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 4222, सूचकांक पंक्ति 2913मे गंगेश गुंजनक “राधा (धारावाहिक, खेप १-३०)” प्रविष्टि पद्य, गद्य-पद्य/गजल आ “साहित्य अकादेमी पुरस्कार” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 32क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 4223 : विदेह-सदेह 32 — गंगेश गुंजन: बाल कविता- आउ हनुमान

५५७. खण्ड 4223, सूचकांक पंक्ति 2914: गंगेश गुंजनक “बाल कविता- आउ हनुमान” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) बाल कविता- आउ हनुमान
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

५५८. खण्ड 4223, सूचकांक पंक्ति 2914: गंगेश गुंजनक “बाल कविता- आउ हनुमान”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) पद्य
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

५५९. खण्ड 4223, सूचकांक पंक्ति 2914: गंगेश गुंजनक “बाल कविता- आउ हनुमान”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) कविता
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

५६०. खण्ड 4223, सूचकांक पंक्ति 2914: गंगेश गुंजनक “बाल कविता- आउ हनुमान” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) साहित्य अकादेमी पुरस्कार

५६१. खण्ड 4223, सूचकांक पंक्ति 2914: गंगेश गुंजनक “बाल कविता- आउ हनुमान” प्रविष्टि विदेह-सदेह 32मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) साहित्य अकादेमी पुरस्कार
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

५६२. खण्ड 4223, सूचकांक पंक्ति 2914: गंगेश गुंजनक “बाल कविता- आउ हनुमान”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककें की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक गंगेश गुंजन, विधा पद्य, उप-विधा कविता
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

५६३. खण्ड 4223, सूचकांक पंक्ति 2914: गंगेश गुंजनक “बाल कविता- आउ हनुमान” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

५६४. खण्ड 4223, सूचकांक पंक्ति 2914: गंगेश गुंजनक “बाल कविता- आउ हनुमान”कें विदेह-सदेह 32क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

५६५. खण्ड 4223, सूचकांक पंक्ति 2914: गंगेश गुंजनक “बाल कविता- आउ हनुमान” प्रविष्टि विदेह-सदेह 32क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

५६६. खण्ड 4223, सूचकांक पंक्ति 2914: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 4223, सूचकांक पंक्ति 2914मे गंगेश गुंजनक “बाल कविता- आउ हनुमान” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “साहित्य अकादेमी पुरस्कार” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 32क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 4224 : विदेह-सदेह 32 — गंगेश गुंजन: भेटताह अनन्त?

५६७. खण्ड 4224, सूचकांक पंक्ति 2915: गंगेश गुंजनक “भेटताह अनन्त?” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) भेटताह अनन्त?
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

५६८. खण्ड 4224, सूचकांक पंक्ति 2915: गंगेश गुंजनक “भेटताह अनन्त?”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) पद्य
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

५६९. खण्ड 4224, सूचकांक पंक्ति 2915: गंगेश गुंजनक “भेटताह अनन्त?”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) कविता
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

५७०. खण्ड 4224, सूचकांक पंक्ति 2915: गंगेश गुंजनक “भेटताह अनन्त?” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) साहित्य अकादेमी पुरस्कार

५७१. खण्ड 4224, सूचकांक पंक्ति 2915: गंगेश गुंजनक “भेटताह अनन्त?” प्रविष्टि विदेह-सदेह 32मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) साहित्य अकादेमी पुरस्कार
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

५७२. खण्ड 4224, सूचकांक पंक्ति 2915: गंगेश गुंजनक “भेटताह अनन्त?”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक गंगेश गुंजन, विधा पद्य, उप-विधा कविता
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

५७३. खण्ड 4224, सूचकांक पंक्ति 2915: गंगेश गुंजनक “भेटताह अनन्त?” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

५७४. खण्ड 4224, सूचकांक पंक्ति 2915: गंगेश गुंजनक “भेटताह अनन्त?”कें विदेह-सदेह 32क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

५७५. खण्ड 4224, सूचकांक पंक्ति 2915: गंगेश गुंजनक “भेटताह अनन्त?” प्रविष्टि विदेह-सदेह 32क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

५७६. खण्ड 4224, सूचकांक पंक्ति 2915: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 4224, सूचकांक पंक्ति 2915मे गंगेश गुंजनक “भेटताह अनन्त?” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “साहित्य अकादेमी पुरस्कार” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 32क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 4225 : विदेह-सदेह 32 — गंगेश गुंजन: दिल्ली नगर बस मे तामस: एक-दू

५७७. खण्ड 4225, सूचकांक पंक्ति 2916: गंगेश गुंजनक “दिल्ली नगर बस मे तामस: एक-दू” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) दिल्ली नगर बस मे तामस: एक-दू
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

५७८. खण्ड 4225, सूचकांक पंक्ति 2916: गंगेश गुंजनक “दिल्ली नगर बस मे तामस: एक-दू”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) पद्य
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

५७९. खण्ड 4225, सूचकांक पंक्ति 2916: गंगेश गुंजनक “दिल्ली नगर बस मे तामस: एक-दू”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) कविता
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

५८०. खण्ड 4225, सूचकांक पंक्ति 2916: गंगेश गुंजनक “दिल्ली नगर बस मे तामस: एक-दू” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) साहित्य अकादेमी पुरस्कार

५८१. खण्ड 4225, सूचकांक पंक्ति 2916: गंगेश गुंजनक “दिल्ली नगर बस मे तामस: एक-दू” प्रविष्टि विदेह-सदेह 32मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) साहित्य अकादेमी पुरस्कार
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

५८२. खण्ड 4225, सूचकांक पंक्ति 2916: गंगेश गुंजनक “दिल्ली नगर बस मे तामस: एक-दू”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक गंगेश गुंजन, विधा पद्य, उप-विधा कविता
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

५८३. खण्ड 4225, सूचकांक पंक्ति 2916: गंगेश गुंजनक “दिल्ली नगर बस मे तामस: एक-दू” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

५८४. खण्ड 4225, सूचकांक पंक्ति 2916: गंगेश गुंजनक “दिल्ली नगर बस मे तामस: एक-दू”केँ विदेह-सदेह 32क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

५८५. खण्ड 4225, सूचकांक पंक्ति 2916: गंगेश गुंजनक “दिल्ली नगर बस मे तामस: एक-दू” प्रविष्टि विदेह-सदेह 32क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

५८६. खण्ड 4225, सूचकांक पंक्ति 2916: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 4225, सूचकांक पंक्ति 2916मे गंगेश गुंजनक “दिल्ली नगर बस मे तामस: एक-दू” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “साहित्य अकादेमी पुरस्कार” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 32क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 4226 : विदेह-सदेह 32 — गंगेश गुंजन: आयुर्दा

५८७. खण्ड 4226, सूचकांक पंक्ति 2917: गंगेश गुंजनक “आयुर्दा” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) आयुर्दा
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

५८८. खण्ड 4226, सूचकांक पंक्ति 2917: गंगेश गुंजनक “आयुर्दा”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) पद्य
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

५८९. खण्ड 4226, सूचकांक पंक्ति 2917: गंगेश गुंजनक “आयुर्दा”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) कविता
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

५९०. खण्ड 4226, सूचकांक पंक्ति 2917: गंगेश गुंजनक “आयुर्दा” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) साहित्य अकादेमी पुरस्कार

५९१. खण्ड 4226, सूचकांक पंक्ति 2917: गंगेश गुंजनक “आयुर्दा” प्रविष्टि विदेह-सदेह 32मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) साहित्य अकादेमी पुरस्कार
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

५९२. खण्ड 4226, सूचकांक पंक्ति 2917: गंगेश गुंजनक “आयुर्दा”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककें की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक गंगेश गुंजन, विधा पद्य, उप-विधा कविता
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

५९३. खण्ड 4226, सूचकांक पंक्ति 2917: गंगेश गुंजनक “आयुर्दा” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

५९४. खण्ड 4226, सूचकांक पंक्ति 2917: गंगेश गुंजनक “आयुर्दा”कें विदेह-सदेह 32क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

५९५. खण्ड 4226, सूचकांक पंक्ति 2917: गंगेश गुंजनक “आयुर्दा” प्रविष्टि विदेह-सदेह 32क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

५९६. खण्ड 4226, सूचकांक पंक्ति 2917: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 4226, सूचकांक पंक्ति 2917मे गंगेश गुंजनक “आयुर्दा” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “साहित्य अकादेमी पुरस्कार” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 32क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 4227 : विदेह-सदेह 32 — गंगेश गुंजन: परिवर्तन

५९७. खण्ड 4227, सूचकांक पंक्ति 2918: गंगेश गुंजनक “परिवर्तन” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) परिवर्तन
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

५९८. खण्ड 4227, सूचकांक पंक्ति 2918: गंगेश गुंजनक “परिवर्तन”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) पद्य
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

५९९. खण्ड 4227, सूचकांक पंक्ति 2918: गंगेश गुंजनक “परिवर्तन”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) कविता
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

६००. खण्ड 4227, सूचकांक पंक्ति 2918: गंगेश गुंजनक “परिवर्तन” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) साहित्य अकादेमी पुरस्कार

६०१. खण्ड 4227, सूचकांक पंक्ति 2918: गंगेश गुंजनक “परिवर्तन” प्रविष्टि विदेह-सदेह 32मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) साहित्य अकादेमी पुरस्कार
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

६०२. खण्ड 4227, सूचकांक पंक्ति 2918: गंगेश गुंजनक “परिवर्तन”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक गंगेश गुंजन, विधा पद्य, उप-विधा कविता
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

६०३. खण्ड 4227, सूचकांक पंक्ति 2918: गंगेश गुंजनक “परिवर्त्तन” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगौं बढि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

६०४. खण्ड 4227, सूचकांक पंक्ति 2918: गंगेश गुंजनक “परिवर्त्तन”कें विदेह-सदेह 32क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

६०५. खण्ड 4227, सूचकांक पंक्ति 2918: गंगेश गुंजनक “परिवर्त्तन” प्रविष्टि विदेह-सदेह 32क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

६०६. खण्ड 4227, सूचकांक पंक्ति 2918: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 4227, सूचकांक पंक्ति 2918मे गंगेश गुंजनक “परिवर्त्तन” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “साहित्य अकादेमी पुरस्कार” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 32क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 4228 : विदेह-सदेह 32 — गंगेश गुंजन: देश छोड़ि कत' गेल

६०७. खण्ड 4228, सूचकांक पंक्ति 2919: गंगेश गुंजनक “देश छोड़ि कत' गेल” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) देश छोड़ि कत' गेल
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

६०८. खण्ड 4228, सूचकांक पंक्ति 2919: गंगेश गुंजनक “देश छोड़ि कत' गेल”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) पद्य
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

६०९. खण्ड 4228, सूचकांक पंक्ति 2919: गंगेश गुंजनक “देश छोड़ि कत' गेल”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) कविता
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

६१०. खण्ड 4228, सूचकांक पंक्ति 2919: गंगेश गुंजनक “देश छोड़ि कत' गेल” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) साहित्य अकादेमी पुरस्कार

६११. खण्ड 4228, सूचकांक पंक्ति 2919: गंगेश गुंजनक “देश छोड़ि कत' गेल” प्रविष्टि विदेह-सदेह 32मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) साहित्य अकादेमी पुरस्कार
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

६१२. खण्ड 4228, सूचकांक पंक्ति 2919: गंगेश गुंजनक “देश छोड़ि कत' गेल”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककें की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक गंगेश गुंजन, विधा पद्य, उप-विधा कविता
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

६१३. खण्ड 4228, सूचकांक पंक्ति 2919: गंगेश गुंजनक “देश छोड़ि कत' गेल” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

६१४. खण्ड 4228, सूचकांक पंक्ति 2919: गंगेश गुंजनक “देश छोड़ि कत' गेल”कें विदेह-सदेह 32क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

६१५. खण्ड 4228, सूचकांक पंक्ति 2919: गंगेश गुंजनक “देश छोड़ि कत' गेल” प्रविष्टि विदेह-सदेह 32क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

६१६. खण्ड 4228, सूचकांक पंक्ति 2919: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 4228, सूचकांक पंक्ति 2919मे गंगेश गुंजनक “देश छोड़ि कत' गेल” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “साहित्य अकादेमी पुरस्कार” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 32क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 4229 : विदेह-सदेह 32 — गंगेश गुंजन: देश छोड़ि कियेक गेलय?

६१७. खण्ड 4229, सूचकांक पंक्ति 2920: गंगेश गुंजनक “देश छोड़ि कियेक गेलय?” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) देश छोड़ि कियेक गेलय?
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

६१८. खण्ड 4229, सूचकांक पंक्ति 2920: गंगेश गुंजनक “देश छोड़ि कियेक गेलय?”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) पद्य
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

६१९. खण्ड 4229, सूचकांक पंक्ति 2920: गंगेश गुंजनक “देश छोड़ि कियेक गेलय?”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) कविता
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

६२०. खण्ड 4229, सूचकांक पंक्ति 2920: गंगेश गुंजनक “देश छोड़ि कियेक गेलय?” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) साहित्य अकादेमी पुरस्कार

६२१. खण्ड 4229, सूचकांक पंक्ति 2920: गंगेश गुंजनक “देश छोड़ि कियेक गेलय?” प्रविष्टि विदेह-सदेह 32मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) साहित्य अकादेमी पुरस्कार
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

६२२. खण्ड 4229, सूचकांक पंक्ति 2920: गंगेश गुंजनक “देश छोड़ि कियेक गेलय?”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककें की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक गंगेश गुंजन, विधा पद्य, उप-विधा कविता
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

६२३. खण्ड 4229, सूचकांक पंक्ति 2920: गंगेश गुंजनक “देश छोड़ि कियेक गेलय?” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

६२४. खण्ड 4229, सूचकांक पंक्ति 2920: गंगेश गुंजनक “देश छोड़ि कियेक गेलय?”कें विदेह-सदेह 32क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

६२५. खण्ड 4229, सूचकांक पंक्ति 2920: गंगेश गुंजनक “देश छोड़ि कियेक गेलय?” प्रविष्टि विदेह-सदेह 32क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

६२६. खण्ड 4229, सूचकांक पंक्ति 2920: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 4229, सूचकांक पंक्ति 2920मे गंगेश गुंजनक “देश छोड़ि कियेक गेलय?” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “साहित्य अकादेमी पुरस्कार” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 32क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 4230 : विदेह-सदेह 32 — गंगेश गुंजन: गाम

६२७. खण्ड 4230, सूचकांक पंक्ति 2921: गंगेश गुंजनक “गाम” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) गाम
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

६२८. खण्ड 4230, सूचकांक पंक्ति 2921: गंगेश गुंजनक “गाम”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) पद्य
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

६२९. खण्ड 4230, सूचकांक पंक्ति 2921: गंगेश गुंजनक “गाम”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) कविता
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

६३०. खण्ड 4230, सूचकांक पंक्ति 2921: गंगेश गुंजनक “गाम” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) साहित्य अकादेमी पुरस्कार

६३१. खण्ड 4230, सूचकांक पंक्ति 2921: गंगेश गुंजनक “गाम” प्रविष्टि विदेह-सदेह 32मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) साहित्य अकादेमी पुरस्कार
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

६३२. खण्ड 4230, सूचकांक पंक्ति 2921: गंगेश गुंजनक “गाम”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककें की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक गंगेश गुंजन, विधा पद्य, उप-विधा कविता
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

६३३. खण्ड 4230, सूचकांक पंक्ति 2921: गंगेश गुंजनक “गाम” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

६३४. खण्ड 4230, सूचकांक पंक्ति 2921: गंगेश गुंजनक “गाम”कें विदेह-सदेह 32क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

६३५. खण्ड 4230, सूचकांक पंक्ति 2921: गंगेश गुंजनक “गाम” प्रविष्टि विदेह-सदेह 32क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

६३६. खण्ड 4230, सूचकांक पंक्ति 2921: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 4230, सूचकांक पंक्ति 2921मे गंगेश गुंजनक “गाम” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “साहित्य अकादेमी पुरस्कार” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 32क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 4231 : विदेह-सदेह 32 — गंगेश गुंजन: बीच बाट पर खसल लाल गमछा

६३७. खण्ड 4231, सूचकांक पंक्ति 2922: गंगेश गुंजनक “बीच बाट पर खसल लाल गमछा” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) बीच बाट पर खसल लाल गमछा
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

६३८. खण्ड 4231, सूचकांक पंक्ति 2922: गंगेश गुंजनक “बीच बाट पर खसल लाल गमछा”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) पद्य
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

६३९. खण्ड 4231, सूचकांक पंक्ति 2922: गंगेश गुंजनक “बीच बाट पर खसल लाल गमछा”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) कविता
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

६४०. खण्ड 4231, सूचकांक पंक्ति 2922: गंगेश गुंजनक “बीच बाट पर खसल लाल गमछा” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) साहित्य अकादेमी पुरस्कार

६४१. खण्ड 4231, सूचकांक पंक्ति 2922: गंगेश गुंजनक “बीच बाट पर खसल लाल गमछा” प्रविष्टि विदेह-सदेह 32मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) साहित्य अकादेमी पुरस्कार
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

६४२. खण्ड 4231, सूचकांक पंक्ति 2922: गंगेश गुंजनक “बीच बाट पर खसल लाल गमछा”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक गंगेश गुंजन, विधा पद्य, उप-विधा कविता
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

६४३. खण्ड 4231, सूचकांक पंक्ति 2922: गंगेश गुंजनक “बीच बाट पर खसल लाल गमछा” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

६४४. खण्ड 4231, सूचकांक पंक्ति 2922: गंगेश गुंजनक “बीच बाट पर खसल लाल गमछा”केँ विदेह-सदेह 32क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

६४५. खण्ड 4231, सूचकांक पंक्ति 2922: गंगेश गुंजनक “बीच बाट पर खसल लाल गमछा” प्रविष्टि विदेह-सदेह 32क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

६४६. खण्ड 4231, सूचकांक पंक्ति 2922: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 4231, सूचकांक पंक्ति 2922मे गंगेश गुंजनक “बीच बाट पर खसल लाल गमछा” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “साहित्य अकादेमी पुरस्कार” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 32क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 4232 : विदेह-सदेह 32 — गंगेश गुंजन: गीत १-२

६४७. खण्ड 4232, सूचकांक पंक्ति 2923: गंगेश गुंजनक “गीत १-२” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) गीत १-२
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

६४८. खण्ड 4232, सूचकांक पंक्ति 2923: गंगेश गुंजनक “गीत १-२”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) पद्य
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

६४९. खण्ड 4232, सूचकांक पंक्ति 2923: गंगेश गुंजनक “गीत १-२”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) गीत
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

६५०. खण्ड 4232, सूचकांक पंक्ति 2923: गंगेश गुंजनक “गीत १-२” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) साहित्य अकादेमी पुरस्कार

६५१. खण्ड 4232, सूचकांक पंक्ति 2923: गंगेश गुंजनक “गीत १-२” प्रविष्टि विदेह-सदेह 32मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) साहित्य अकादेमी पुरस्कार
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

६५२. खण्ड 4232, सूचकांक पंक्ति 2923: गंगेश गुंजनक “गीत १-२”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककें की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक गंगेश गुंजन, विधा पद्य, उप-विधा गीत
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

६५३. खण्ड 4232, सूचकांक पंक्ति 2923: गंगेश गुंजनक “गीत १-२” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

६५४. खण्ड 4232, सूचकांक पंक्ति 2923: गंगेश गुंजनक “गीत १-२”कें विदेह-सदेह 32क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ गीतक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

६५५. खण्ड 4232, सूचकांक पंक्ति 2923: गंगेश गुंजनक “गीत १-२” प्रविष्टि विदेह-सदेह 32क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

६५६. खण्ड 4232, सूचकांक पंक्ति 2923: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 4232, सूचकांक पंक्ति 2923मे गंगेश गुंजनक “गीत १-२” प्रविष्टि पद्य, गीत आ “साहित्य अकादेमी पुरस्कार” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 32क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 4233 : विदेह-सदेह 32 — गंगेश गुंजन: बाढ़िक त्रासदीपर गजल सन किछु

६५७. खण्ड 4233, सूचकांक पंक्ति 2924: गंगेश गुंजनक “बाढ़िक त्रासदीपर गजल सन किछु” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) बाढ़िक त्रासदीपर गजल सन किछु
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

६५८. खण्ड 4233, सूचकांक पंक्ति 2924: गंगेश गुंजनक “बाढ़िक त्रासदीपर गजल सन किछु”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) पद्य
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

६५९. खण्ड 4233, सूचकांक पंक्ति 2924: गंगेश गुंजनक “बाढ़िक त्रासदीपर गजल सन किछु”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) गजल
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

६६०. खण्ड 4233, सूचकांक पंक्ति 2924: गंगेश गुंजनक “बाढ़िक त्रासदीपर गजल सन किछु” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) साहित्य अकादेमी पुरस्कार

६६१. खण्ड 4233, सूचकांक पंक्ति 2924: गंगेश गुंजनक “बाढ़िक त्रासदीपर गजल सन किछु” प्रविष्टि विदेह-सदेह 32मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) साहित्य अकादेमी पुरस्कार
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

६६२. खण्ड 4233, सूचकांक पंक्ति 2924: गंगेश गुंजनक “बाढ़िक त्रासदीपर गजल सन किछु”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककें की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक गंगेश गुंजन, विधा पद्य, उप-विधा गजल
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

६६३. खण्ड 4233, सूचकांक पंक्ति 2924: गंगेश गुंजनक “बाढ़िक त्रासदीपर गजल सन किछु” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

६६४. खण्ड 4233, सूचकांक पंक्ति 2924: गंगेश गुंजनक “बाढ़िक त्रासदीपर गजल सन किछु” के विदेह-सदेह 32क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ गजलक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

६६५. खण्ड 4233, सूचकांक पंक्ति 2924: गंगेश गुंजनक “बाढ़िक त्रासदीपर गजल सन किछु” प्रविष्टि विदेह-सदेह 32क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

६६६. खण्ड 4233, सूचकांक पंक्ति 2924: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 4233, सूचकांक पंक्ति 2924मे गंगेश गुंजनक “बाढ़िक त्रासदीपर गजल सन किछु” प्रविष्टि पद्य, गजल आ “साहित्य अकादेमी पुरस्कार” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 32क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 4234 : विदेह-सदेह 32 — गंगेश गुंजन: गजल जेकाँ किछु- मैथिलीमे १-३

६६७. खण्ड 4234, सूचकांक पंक्ति 2925: गंगेश गुंजनक “गजल जेकाँ किछु- मैथिलीमे १-३” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) गजल जेकाँ किछु- मैथिलीमे १-३
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

६६८. खण्ड 4234, सूचकांक पंक्ति 2925: गंगेश गुंजनक “गजल जेकाँ किछु- मैथिलीमे १-३”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) पद्य
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

६६९. खण्ड 4234, सूचकांक पंक्ति 2925: गंगेश गुंजनक “गजल जेकाँ किछु- मैथिलीमे १-३”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) गजल
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

६७०. खण्ड 4234, सूचकांक पंक्ति 2925: गंगेश गुंजनक “गजल जेकाँ किछु- मैथिलीमे १-३” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) साहित्य अकादेमी पुरस्कार

६७१. खण्ड 4234, सूचकांक पंक्ति 2925: गंगेश गुंजनक “गजल जेकाँ किछु- मैथिलीमे १-३” प्रविष्टि विदेह-सदेह 32मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) साहित्य अकादेमी पुरस्कार
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

६७२. खण्ड 4234, सूचकांक पंक्ति 2925: गंगेश गुंजनक “गजल जेकाँ किछु- मैथिलीमे १-३”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककें की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक गंगेश गुंजन, विधा पद्य, उप-विधा गजल
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

६७३. खण्ड 4234, सूचकांक पंक्ति 2925: गंगेश गुंजनक “गजल जेकाँ किछु- मैथिलीमे १-३” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

६७४. खण्ड 4234, सूचकांक पंक्ति 2925: गंगेश गुंजनक “गजल जेकाँ किछु- मैथिलीमे १-३”कें विदेह-सदेह 32क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ गजलक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

६७५. खण्ड 4234, सूचकांक पंक्ति 2925: गंगेश गुंजनक “गजल जेकाँ किछु- मैथिलीमे १-३” प्रविष्टि विदेह-सदेह 32क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

६७६. खण्ड 4234, सूचकांक पंक्ति 2925: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 4234, सूचकांक पंक्ति 2925मे गंगेश गुंजनक “गजल जेकाँ किछु- मैथिलीमे १-३” प्रविष्टि पद्य, गजल आ “साहित्य अकादेमी पुरस्कार” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 32क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 4235 : विदेह-सदेह 32 — गंगेश गुंजन: समर्पित गजल सन किछु (भीमनाथ झा, रामलोचन ठाकुर, अजित आज़ाद, शेफालिका वर्मा, सकेतानंद)

६७७. खण्ड 4235, सूचकांक पंक्ति 2926: गंगेश गुंजनक “समर्पित गजल सन किछु (भीमनाथ झा, रामलोचन ठाकुर, अजित आज़ाद, शेफालिका वर्मा, सकेतानंद)” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) समर्पित गजल सन किछु (भीमनाथ झा, रामलोचन ठाकुर, अजित आज़ाद, शेफालिका वर्मा, सकेतानंद)
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

६७८. खण्ड 4235, सूचकांक पंक्ति 2926: गंगेश गुंजनक “समर्पित गजल सन किछु (भीमनाथ झा, रामलोचन ठाकुर, अजित आज़ाद, शेफालिका वर्मा, सकेतानंद)”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) पद्य
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

६७९. खण्ड 4235, सूचकांक पंक्ति 2926: गंगेश गुंजनक “समर्पित गजल सन किछु (भीमनाथ झा, रामलोचन ठाकुर, अजित आज़ाद, शेफालिका वर्मा, सकेतानंद)”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) गजल
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

६८०. खण्ड 4235, सूचकांक पंक्ति 2926: गंगेश गुंजनक “समर्पित गजल सन किछु (भीमनाथ झा, रामलोचन ठाकुर, अजित आज़ाद, शेफालिका वर्मा, सकेतानंद)” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) साहित्य अकादेमी पुरस्कार

६८१. खण्ड 4235, सूचकांक पंक्ति 2926: गंगेश गुंजनक “समर्पित गजल सन किछु (भीमनाथ झा, रामलोचन ठाकुर, अजित आज़ाद, शेफालिका वर्मा, सकेतानंद)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 32मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) साहित्य अकादेमी पुरस्कार
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

६८२. खण्ड 4235, सूचकांक पंक्ति 2926: गंगेश गुंजनक “समर्पित गजल सन किछु (भीमनाथ झा, रामलोचन ठाकुर, अजित आज़ाद, शेफालिका वर्मा, सकेतानंद)”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककें की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक गंगेश गुंजन, विधा पद्य, उप-विधा गजल
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

६८३. खण्ड 4235, सूचकांक पंक्ति 2926: गंगेश गुंजनक “समर्पित गजल सन किछु (भीमनाथ झा, रामलोचन ठाकुर, अजित आज़ाद, शेफालिका वर्मा, सकेतानंद)” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

६८४. खण्ड 4235, सूचकांक पंक्ति 2926: गंगेश गुंजनक “समर्पित गजल सन किछु (भीमनाथ झा, रामलोचन ठाकुर, अजित आज़ाद, शेफालिका वर्मा, सकेतानंद)”कें विदेह-सदेह 32क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ गजलक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

६८५. खण्ड 4235, सूचकांक पंक्ति 2926: गंगेश गुंजनक “समर्पित गजल सन किछु (भीमनाथ झा, रामलोचन ठाकुर, अजित आज़ाद, शेफालिका वर्मा, सकेतानंद)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 32क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

६८६. खण्ड 4235, सूचकांक पंक्ति 2926: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 4235, सूचकांक पंक्ति 2926मे गंगेश गुंजनक “समर्पित गजल सन किछु (भीमनाथ झा, रामलोचन ठाकुर, अजित आज़ाद, शेफालिका वर्मा, सकेतानंद)” प्रविष्टि पद्य, गजल आ “साहित्य अकादेमी पुरस्कार” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 32क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 4236 : विदेह-सदेह 32 — गंगेश गुंजन: स्वतंत्रता-दिवस २०१०

६८७. खण्ड 4236, सूचकांक पंक्ति 2927: गंगेश गुंजनक “स्वतंत्रता-दिवस २०१०” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) स्वतंत्रता-दिवस २०१०
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

६८८. खण्ड 4236, सूचकांक पंक्ति 2927: गंगेश गुंजनक “स्वतंत्रता-दिवस २०१०”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) पद्य
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

६८९. खण्ड 4236, सूचकांक पंक्ति 2927: गंगेश गुंजनक “स्वतंत्रता-दिवस २०१०”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) कविता
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

६९०. खण्ड 4236, सूचकांक पंक्ति 2927: गंगेश गुंजनक “स्वतंत्रता-दिवस २०१०” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) साहित्य अकादेमी पुरस्कार

६९१. खण्ड 4236, सूचकांक पंक्ति 2927: गंगेश गुंजनक “स्वतंत्रता-दिवस २०१०” प्रविष्टि विदेह-सदेह 32मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) साहित्य अकादेमी पुरस्कार
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

६९२. खण्ड 4236, सूचकांक पंक्ति 2927: गंगेश गुंजनक “स्वतंत्रता-दिवस २०१०”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक गंगेश गुंजन, विधा पद्य, उप-विधा कविता
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

६९३. खण्ड 4236, सूचकांक पंक्ति 2927: गंगेश गुंजनक “स्वतंत्रता-दिवस २०१०” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसे आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

६९४. खण्ड 4236, सूचकांक पंक्ति 2927: गंगेश गुंजनक “स्वतंत्रता-दिवस २०१०”केँ विदेह-सदेह 32क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

६९५. खण्ड 4236, सूचकांक पंक्ति 2927: गंगेश गुंजनक “स्वतंत्रता-दिवस २०१०” प्रविष्टि विदेह-सदेह 32क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

६९६. खण्ड 4236, सूचकांक पंक्ति 2927: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 4236, सूचकांक पंक्ति 2927मे गंगेश गुंजनक “स्वतंत्रता-दिवस २०१०” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “साहित्य अकादेमी पुरस्कार” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 32क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तरमाला — अध्याय ३ (उत्तर ओ व्याख्या / Answers & Explanations)

१. (A) केदार प्रसाद (कुम्हार) आ हुनकर बेटा बिभू — ‘माटिक बासन’ कथाक मुख्य पात्र केदार प्रसाद (कुशल कुम्हार) आ हुनकर बेटा बिभू छथि।
२. (A) माटिक बासन (घैल, ढाकन, मटकुरी) बनाएब — केदार प्रसाद माटिक बासन — घैल, ढाकन, मटकुरी — बना अपन जीवन यापन करैत छलाह।
३. (A) मूर्तिकला — बिभू दसम वर्गक बाद इस्कूली पढ़ाई छोड़ि पूर्णतः मूर्तिकलामे अपनाकेँ समर्पित कऽ लेलक।
४. (A) राजसरकारक गृहमंत्रालय धरि — बिभूक बनाएल मूर्तिक चर्चा राजक सीमासँ निकलि बाहर दस्तक देलक, आ राजसरकारक गृहमंत्रालयसँ पत्र आएल।
५. (A) सम्पूर्णताक आभास भेने आगाँ बढ़बाक प्रेरणा रुकि जाइत अछि (आत्म-संतोषक बादक खतरा) — केदार प्रसाद बिभूकेँ सिखबैत छथि जे जखन व्यक्तिकेँ अपन पूर्णताक आभास भऽ जाइत अछि, तखन आगाँ बढ़बाक प्रेरणा रुकि सकैत अछि — तँ ओ हमेशा किछु कमी देखाइत रहथिन्ह।
६. (A) थिएटर कला — भालचन्द्र झा मुम्बईसँ थिएटर कलामे डिप्लोमा केलनि।
७. (A) हिन्दी, मराठी, अंग्रेजी आ गुजराती — भालचन्द्र झा मैथिलीक अतिरिक्त हिन्दी, मराठी, अंग्रेजी आ गुजरातीमे निष्णात छथि।
८. (A) १९७४ ई.सँ — भालचन्द्र झा सन् १९७४ ई.सँ मराठी आ हिन्दी थिएटरमे सक्रिय छथि।
९. (A) फ्री-लान्स लेखक-निदेशक — भालचन्द्र झा एखन फ्री-लान्स लेखक-निदेशकक रूपमे कार्यरत छथि।
१०. (A) दुनू जरैत-जरैत जीबैत छथि (एके जकाँ) — ‘चूल्हे’ कथामे कहल गेल जे चूल्हे आ स्त्री दुनूक प्रारब्ध एके जकाँ होइत अछि — दुनू जरैत-जरैत जीबैत छथि।
११. (A) १९५१, कलकत्ता (पश्चिम बंगाल) — उदय नारायण सिंह ‘नचिकेता’क जन्म सन् १९५१ मे कलकत्ता (पश्चिम बंगाल) मे भेल।

१२. (A) बी.ए. (सम्मान) भाषाविज्ञान, कलकत्ता विश्वविद्यालय — नचिकेता बी.ए. (सम्मान) भाषाविज्ञानमे कलकत्ता विश्वविद्यालयसँ प्रथम ईशान स्कॉलरक रूपमे उत्तीर्ण भेलाह।
१३. (A) दिल्ली विश्वविद्यालय — नचिकेता एम.ए. आ पी-एच.डी. भाषाविज्ञानमे दिल्ली विश्वविद्यालयसँ प्राप्त केलनि।
१४. (A) बंगला — नचिकेता मैथिली आ बंगला साहित्यक कवि आ नाटककारक रूपमे प्रख्यात छथि।
१५. (A) महाराजा सियाजी राव विश्वविद्यालय (बड़ौदा), दक्षिणी गुजरात विश्वविद्यालय, दिल्ली विश्वविद्यालय, हैदराबाद विश्वविद्यालय — नचिकेता महाराजा सियाजी राव विश्वविद्यालय (बड़ौदा, १९७९-८१), दक्षिणी गुजरात विश्वविद्यालय (१९८१-८५), दिल्ली विश्वविद्यालय (१९८५-८७) आ हैदराबाद विश्वविद्यालयमे कार्यरत रहलाह।
१६. (A) बांग्लादेश, कैरबियन आइलैण्ड, फ्रांस, जर्मनी, इटली, नेपाल, पाकिस्तान, रूस, सिंगापुर, स्वीडन, थायलैण्ड, अमेरिका — नचिकेता बांग्लादेश, कैरबियन आइलैण्ड, फ्रांस, जर्मनी, इटली, नेपाल, पाकिस्तान, रूस, सिंगापुर, स्वीडन, थायलैण्ड आ अमेरिका सन अनेक देशमे साहित्यिक गतिविधिमे सहभागी भेलाह।
१७. (A) इंडो-इटैलियन कल्चरल एक्सचेंज फॉर क्रिएटिव राइटर्स (१९९९) — नचिकेता इंडो-इटैलियन कल्चरल एक्सचेंज फॉर क्रिएटिव राइटर्सक सदस्य (१९९९) रहलाह, संगहि त्रिनिदाद-टोबेगो आ मॉरीशसमे सेहो कार्यालयी प्रतिनिधि रहलाह।
१८. (A) २५ वर्ष — स्रोत अनुसार 'नो एण्ट्री: मा प्रविश' नचिकेताजीक २५ वर्षक मौनभंगक पश्चात् पाठकक सम्मुख प्रस्तुत भेल नाटक थिक।
१९. (A) किरात संस्कृति — आलेख अनुसार ई.पू. ५९०सँ ११० ई. धरि नेपाल किरात संस्कृतिक प्रधान केन्द्र छल, जकर वर्णन शुक्ल यजुर्वेदमे सेहो आएल अछि।
२०. (A) किरातक भेष — आलेख अनुसार महाभारतसँ ज्ञात होइत अछि जे जखन अर्जुन हिमालयमे तपस्या करैत छलाह तखन महादेव किरातक भेषमे अर्जुनक परीक्षा लेने छलाह।
२१. (A) १११ ई.सँ — आलेख अनुसार नेपाली संवत जे १११ ई.सँ आरंभ छैक, सैह संभवतः लिच्छवी लोकनिक राज्यारोहणक संकेत दैत अछि।
२२. (A) ३५०सँ ८९९ धरि — आलेख अनुसार लिच्छवी लोकनि ३५०सँ ८९९ धरि शासन केलन्हि, जाहिमे बीचमे मात्र अंशुवर्मन आ जिशुगुप्त छोड़िकेँ स्वतंत्र शासन भेल।
२३. (A) सातम शताब्दीक पूर्वार्द्ध — आलेख अनुसार महासामंत अंशुवर्मन सातम शताब्दीक पूर्वार्द्धक एकटा महत्वपूर्ण नेपाली शासक भेल छथि, जे अपन राज्यक विस्तार बेतिया धरि कऽ लेने छलाह।
२४. (A) राजा माधव सिंह — आलेख अनुसार राजा माधव सिंह दरभंगाकेँ स्थायी रूपेण अपन राजधानी बनौलन्हि, आ १७८५सँ अद्यावधि हुनका लोकनिक राजधानी दरभंगा रहल अछि।
२५. (A) “मिथिलेश” — आलेख अनुसार स्थानीय परम्परामे राजा प्रताप सिंहकेँ “मिथिलेश” कहल गेल छन्हि।
२६. (A) लेडी डफरिन अस्पताल — आलेख अनुसार महाराज लक्ष्मीश्वर सिंहक समयमे दरभंगामे लेडी डफरिन अस्पतालक स्थापना भेल, संगहि खड़गपुर (मूंगेर)मे सेहो एकटा अस्पतालक स्थापना केलन्हि।
२७. (A) १८८८मे — आलेख अनुसार महाराज लक्ष्मीश्वर सिंह १८८८मे काँग्रेसक अधिवेशन करबा लेल ‘लाउपर कास्ल’ प्रयागमे कीनिकेँ देने छलथिन्ह आ सालाना १०,००० टाका चंदा दैते रहथिन्ह।
२८. (A) जमीन्दारक दर्जा — आलेख अनुसार कम्पनीक अधिकारी लोकनि माधव सिंहक मांग नहि सुनलकैन्ह आ हुनका लोकनिकेँ जमीन्दारक दर्जा दऽ देलकैन्ह, जे १९४७ तक रहल।
२९. (A) शाके १०१९ — आलेख अनुसार नान्य राजा क्षत्रिय कर्णाट छलाह जे शाके १०१९मे राज्य पौलन्हि, आ २२६ वर्ष धरि हुनक संतान लोकनि राज्य केलन्हि।
३०. (A) पञ्जी प्रबन्ध — आलेख अनुसार हरिसिंह देव मैथिल ब्राह्मणक पञ्जी प्रबन्ध केलन्हि, जे मिथिलाक प्रसिद्ध पञ्जी (वंशावली) व्यवस्थाक आरम्भ मानल जाइत अछि।
३१. (A) महामत्तक वीरेश्वर ठाकुर — आलेख अनुसार हरिसिंह देवक मंत्री साँधिग्रहिक महावार्तिक-निबन्धकार महामत्तक वीरेश्वर ठाकुर छलथिन्ह, जे अलाउद्दीनक संग रणस्तंभ किलापर विजयाभियानक अवसरपर सेहो छलाह।
३२. (A) २० वर्ष — आलेख अनुसार कर्णाट वंशमे हरिसिंह २० वर्ष राज्य भोग केलन्हि, जखन कि नान्यदेव ३६ वर्ष, नरसिंह देव ५२ वर्ष आ रामसिंह देव ९२ वर्ष राज्य केलन्हि।
३३. (A) उत्तर पहाड़ जंगल दिसि — आलेख अनुसार हरिसिंह देव दैवाधीन ओ पटना छोड़ि उत्तर पहाड़ जंगल दिसि चल गेलाह।

३४. (A) कोपगढ़ — लोक मान्यता अनुसार मणि नहि भेटलाक कारणे कृष्णकें क्रोध भेलन्हि आ ओ मिथिलामे आबि राजसत्कारसँ प्रसन्न भऽ धर्मागंद गढ़मे निवास केलन्हि, तखनहिसँ ओहि गढ़क नाम कोपगढ़ पड़ल।
३५. (A) ६० वर्ष — लोक मान्यता अनुसार श्रीकृष्ण ६० वर्षक पछाति द्वारिका घुरलाह, ताबत मिथिलाक कोपगढ़मे निवास केने छलाह।
३६. (A) चन्द्रवंशी (सौनल मुनिसँ उत्पन्न क्षत्रिय वंशक बीसम राजा) — स्कन्दपुराण (सह्याद्रिखण्ड, अध्याय-३५) अनुसार बलिराज सौनल मुनिसँ उत्पन्न चन्द्रवंशी क्षत्रिय वंशक बीसम राजा छलाह।
३७. (A) माटिक बासन — सूचकांक पंक्ति 2862मे जगदानन्द झा 'मनु'क प्रविष्टि “माटिक बासन” रूपमे देल अछि।
३८. (B) गद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकें “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।
३९. (C) — — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “—” अछि।
४०. (D) ग्रामीण यथार्थ — टिप्पणीक पहिल संकेत “ग्रामीण यथार्थ” अछि।
४१. (A) ग्रामीण यथार्थ — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “ग्रामीण यथार्थ” रूपमे देखाइत अछि।
४२. (B) लेखक जगदानन्द झा 'मनु', विधा गद्य, उप-विधा — — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकें एक साथ रखैत अछि।
४३. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककें केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।
४४. (D) ई पाठ —क रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकें स्पष्ट करैत अछि।
४५. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।
४६. (B) खण्ड 4171, सूचकांक पंक्ति 2862मे जगदानन्द झा 'मनु'क “माटिक बासन” प्रविष्टि गद्य, — आ “ग्रामीण यथार्थ” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 32क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकें प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।
४७. (A) चूल्हि — सूचकांक पंक्ति 2863मे भालचन्द्र झाक प्रविष्टि “चूल्हि” रूपमे देल अछि।
४८. (B) गद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकें “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।
४९. (C) नाटक — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “नाटक” अछि।
५०. (D) रंगमञ्च परम्परा — टिप्पणीक पहिल संकेत “रंगमञ्च परम्परा” अछि।
५१. (A) रंगमञ्च परम्परा — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “रंगमञ्च परम्परा” रूपमे देखाइत अछि।
५२. (B) लेखक भालचन्द्र झा, विधा गद्य, उप-विधा नाटक — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकें एक साथ रखैत अछि।
५३. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककें केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।
५४. (D) ई पाठ नाटकक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकें स्पष्ट करैत अछि।
५५. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।
५६. (B) खण्ड 4172, सूचकांक पंक्ति 2863मे भालचन्द्र झाक “चूल्हि” प्रविष्टि गद्य, नाटक आ “रंगमञ्च परम्परा” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 32क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकें प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।
५७. (A) भोज परक आँटी- सत्तरिक नव-खादिक युवा नवतुरिआसँ — सूचकांक पंक्ति 2864मे गंगेश गुंजनक प्रविष्टि “भोज परक आँटी- सत्तरिक नव-खादिक युवा नवतुरिआसँ” रूपमे देल अछि।
५८. (B) गद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकें “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।
५९. (C) — — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “—” अछि।
६०. (D) साहित्य अकादेमी पुरस्कार — टिप्पणीक पहिल संकेत “साहित्य अकादेमी पुरस्कार” अछि।
६१. (A) साहित्य अकादेमी पुरस्कार — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “साहित्य अकादेमी पुरस्कार” रूपमे देखाइत अछि।
६२. (B) लेखक गंगेश गुंजन, विधा गद्य, उप-विधा — — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकें एक साथ रखैत अछि।
६३. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककें केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

६४. (D) ई पाठ —क रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकें स्पष्ट करैत अछि।
६५. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।
६६. (B) खण्ड 4173, सूचकांक पंक्ति 2864मे गंगेश गुंजनक “भोज परक अँटी- सत्तरिक नव-खादिक युवा नवतुरिआसँ” प्रविष्टि गद्य, — आ “साहित्य अकादेमी पुरस्कार” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 32क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकें प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।
६७. (A) मैथिलीक उर्वर क्षेत्रमे कॉरपोरेट-जगत धाप — सूचकांक पंक्ति 2865मे गंगेश गुंजनक प्रविष्टि “मैथिलीक उर्वर क्षेत्रमे कॉरपोरेट-जगत धाप” रूपमे देल अछि।
६८. (B) गद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकें “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।
६९. (C) — — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “—” अछि।
७०. (D) साहित्य अकादेमी पुरस्कार — टिप्पणीक पहिल संकेत “साहित्य अकादेमी पुरस्कार” अछि।
७१. (A) साहित्य अकादेमी पुरस्कार — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “साहित्य अकादेमी पुरस्कार” रूपमे देखाइत अछि।
७२. (B) लेखक गंगेश गुंजन, विधा गद्य, उप-विधा — — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकें एक साथ रखैत अछि।
७३. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककें केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।
७४. (D) ई पाठ —क रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकें स्पष्ट करैत अछि।
७५. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।
७६. (B) खण्ड 4174, सूचकांक पंक्ति 2865मे गंगेश गुंजनक “मैथिलीक उर्वर क्षेत्रमे कॉरपोरेट-जगत धाप” प्रविष्टि गद्य, — आ “साहित्य अकादेमी पुरस्कार” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 32क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकें प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।
७७. (A) किछु एहनो बात विषय — सूचकांक पंक्ति 2866मे गंगेश गुंजनक प्रविष्टि “किछु एहनो बात विषय” रूपमे देल अछि।
७८. (B) गद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकें “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।
७९. (C) — — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “—” अछि।
८०. (D) साहित्य अकादेमी पुरस्कार — टिप्पणीक पहिल संकेत “साहित्य अकादेमी पुरस्कार” अछि।
८१. (A) साहित्य अकादेमी पुरस्कार — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “साहित्य अकादेमी पुरस्कार” रूपमे देखाइत अछि।
८२. (B) लेखक गंगेश गुंजन, विधा गद्य, उप-विधा — — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकें एक साथ रखैत अछि।
८३. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककें केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।
८४. (D) ई पाठ —क रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकें स्पष्ट करैत अछि।
८५. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।
८६. (B) खण्ड 4175, सूचकांक पंक्ति 2866मे गंगेश गुंजनक “किछु एहनो बात विषय” प्रविष्टि गद्य, — आ “साहित्य अकादेमी पुरस्कार” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 32क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकें प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।
८७. (A) गोबरक मूल्य — सूचकांक पंक्ति 2867मे गंगेश गुंजनक प्रविष्टि “गोबरक मूल्य” रूपमे देल अछि।
८८. (B) गद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकें “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।
८९. (C) — — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “—” अछि।
९०. (D) साहित्य अकादेमी पुरस्कार — टिप्पणीक पहिल संकेत “साहित्य अकादेमी पुरस्कार” अछि।
९१. (A) साहित्य अकादेमी पुरस्कार — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “साहित्य अकादेमी पुरस्कार” रूपमे देखाइत अछि।
९२. (B) लेखक गंगेश गुंजन, विधा गद्य, उप-विधा — — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकें एक साथ रखैत अछि।

१३. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककें केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।
१४. (D) ई पाठ —क रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकें स्पष्ट करैत अछि।
१५. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।
१६. (B) खण्ड 4176, सूचकांक पंक्ति 2867मे गंगेश गुंजनक “गोबरक मूल्य” प्रविष्टि गद्य, — आ “साहित्य अकादेमी पुरस्कार” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 32क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकें प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।
१७. (A) ने एंट्री: मा प्रविश (गद्य) — सूचकांक पंक्ति 2868मे उदय नारायण सिंह ‘नचिकेता’क प्रविष्टि “ने एंट्री: मा प्रविश (गद्य)” रूपमे देल अछि।
१८. (B) गद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकें “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।
१९. (C) नाटक — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “नाटक” अछि।
१००. (D) सीआइआइएल — टिप्पणीक पहिल संकेत “सीआइआइएल” अछि।
१०१. (A) सीआइआइएल — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “सीआइआइएल” रूपमे देखाइत अछि।
१०२. (B) लेखक उदय नारायण सिंह ‘नचिकेता’, विधा गद्य, उप-विधा नाटक — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकें एक साथ रखैत अछि।
१०३. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककें केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।
१०४. (D) ई पाठ नाटकक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकें स्पष्ट करैत अछि।
१०५. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।
१०६. (B) खण्ड 4177, सूचकांक पंक्ति 2868मे उदय नारायण सिंह ‘नचिकेता’क “ने एंट्री: मा प्रविश (गद्य)” प्रविष्टि गद्य, नाटक आ “सीआइआइएल” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 32क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकें प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।
१०७. (A) मिथिलाक इतिहास — सूचकांक पंक्ति 2869मे राधाकृष्ण चौधरीक प्रविष्टि “मिथिलाक इतिहास” रूपमे देल अछि।
१०८. (B) गद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकें “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।
१०९. (C) इतिहास — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “इतिहास” अछि।
११०. (D) ऐतिहासिक शोध — टिप्पणीक पहिल संकेत “ऐतिहासिक शोध” अछि।
१११. (A) ऐतिहासिक शोध — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “ऐतिहासिक शोध” रूपमे देखाइत अछि।
११२. (B) लेखक राधाकृष्ण चौधरी, विधा गद्य, उप-विधा इतिहास — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकें एक साथ रखैत अछि।
११३. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककें केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।
११४. (D) ई पाठ इतिहासक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकें स्पष्ट करैत अछि।
११५. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।
११६. (B) खण्ड 4178, सूचकांक पंक्ति 2869मे राधाकृष्ण चौधरीक “मिथिलाक इतिहास” प्रविष्टि गद्य, इतिहास आ “ऐतिहासिक शोध” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 32क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकें प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।
११७. (A) बीसम शताब्दी- मैथिलीक स्वर्ण युग — सूचकांक पंक्ति 2870मे प्रेमशंकर सिंहक प्रविष्टि “बीसम शताब्दी- मैथिलीक स्वर्ण युग” रूपमे देल अछि।
११८. (B) गद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकें “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।
११९. (C) निबन्ध/शोध — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “निबन्ध/शोध” अछि।
१२०. (D) भक्ति परम्परा — टिप्पणीक पहिल संकेत “भक्ति परम्परा” अछि।
१२१. (A) भक्ति परम्परा — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “भक्ति परम्परा” रूपमे देखाइत अछि।
१२२. (B) लेखक प्रेमशंकर सिंह, विधा गद्य, उप-विधा निबन्ध/शोध — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकें एक साथ रखैत अछि।

१२३. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठकके केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।
१२४. (D) ई पाठ निबन्ध/शोधक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।
१२५. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।
१२६. (B) खण्ड 4179, सूचकांक पंक्ति 2870मे प्रेमशंकर सिंहक “बीसम शताब्दी- मैथिलीक स्वर्ण युग” प्रविष्टि गद्य, निबन्ध/शोध आ “भक्ति परम्परा” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 32क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।
१२७. (A) सामाजिक विवर्तक जीवन झा — सूचकांक पंक्ति 2871मे प्रेमशंकर सिंहक प्रविष्टि “सामाजिक विवर्तक जीवन झा” रूपमे देल अछि।
१२८. (B) गद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।
१२९. (C) निबन्ध/शोध — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “निबन्ध/शोध” अछि।
१३०. (D) भक्ति परम्परा — टिप्पणीक पहिल संकेत “भक्ति परम्परा” अछि।
१३१. (A) भक्ति परम्परा — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “भक्ति परम्परा” रूपमे देखाइत अछि।
१३२. (B) लेखक प्रेमशंकर सिंह, विधा गद्य, उप-विधा निबन्ध/शोध — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।
१३३. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।
१३४. (D) ई पाठ निबन्ध/शोधक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।
१३५. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।
१३६. (B) खण्ड 4180, सूचकांक पंक्ति 2871मे प्रेमशंकर सिंहक “सामाजिक विवर्तक जीवन झा” प्रविष्टि गद्य, निबन्ध/शोध आ “भक्ति परम्परा” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 32क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।
१३७. (A) मैथिली भाषाक साहित्य — सूचकांक पंक्ति 2872मे प्रेमशंकर सिंहक प्रविष्टि “मैथिली भाषाक साहित्य” रूपमे देल अछि।
१३८. (B) गद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।
१३९. (C) निबन्ध/शोध — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “निबन्ध/शोध” अछि।
१४०. (D) भक्ति परम्परा — टिप्पणीक पहिल संकेत “भक्ति परम्परा” अछि।
१४१. (A) भक्ति परम्परा — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “भक्ति परम्परा” रूपमे देखाइत अछि।
१४२. (B) लेखक प्रेमशंकर सिंह, विधा गद्य, उप-विधा निबन्ध/शोध — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।
१४३. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।
१४४. (D) ई पाठ निबन्ध/शोधक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।
१४५. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।
१४६. (B) खण्ड 4181, सूचकांक पंक्ति 2872मे प्रेमशंकर सिंहक “मैथिली भाषाक साहित्य” प्रविष्टि गद्य, निबन्ध/शोध आ “भक्ति परम्परा” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 32क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।
१४७. (A) लोकनाट्य — सूचकांक पंक्ति 2873मे प्रेमशंकर सिंहक प्रविष्टि “लोकनाट्य” रूपमे देल अछि।
१४८. (B) गद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।
१४९. (C) निबन्ध/शोध — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “निबन्ध/शोध” अछि।
१५०. (D) भक्ति परम्परा — टिप्पणीक पहिल संकेत “भक्ति परम्परा” अछि।
१५१. (A) भक्ति परम्परा — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “भक्ति परम्परा” रूपमे देखाइत अछि।
१५२. (B) लेखक प्रेमशंकर सिंह, विधा गद्य, उप-विधा निबन्ध/शोध — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

१५३. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठकके केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।
१५४. (D) ई पाठ निबन्ध/शोधक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।
१५५. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।
१५६. (B) खण्ड 4182, सूचकांक पंक्ति 2873मे प्रेमशंकर सिंहक “लोकनाट्य” प्रविष्टि गद्य, निबन्ध/शोध आ “भक्ति परम्परा” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 32क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।
१५७. (A) पारंपरिक नाटक — सूचकांक पंक्ति 2874मे प्रेमशंकर सिंहक प्रविष्टि “पारंपरिक नाटक” रूपमे देल अछि।
१५८. (B) गद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।
१५९. (C) निबन्ध/शोध — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “निबन्ध/शोध” अछि।
१६०. (D) भक्ति परम्परा — टिप्पणीक पहिल संकेत “भक्ति परम्परा” अछि।
१६१. (A) भक्ति परम्परा — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “भक्ति परम्परा” रूपमे देखाइत अछि।
१६२. (B) लेखक प्रेमशंकर सिंह, विधा गद्य, उप-विधा निबन्ध/शोध — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।
१६३. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।
१६४. (D) ई पाठ निबन्ध/शोधक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।
१६५. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।
१६६. (B) खण्ड 4183, सूचकांक पंक्ति 2874मे प्रेमशंकर सिंहक “पारंपरिक नाटक” प्रविष्टि गद्य, निबन्ध/शोध आ “भक्ति परम्परा” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 32क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।
१६७. (A) मायानन्दक रेडिया-रूपक — सूचकांक पंक्ति 2875मे प्रेमशंकर सिंहक प्रविष्टि “मायानन्दक रेडिया-रूपक” रूपमे देल अछि।
१६८. (B) गद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।
१६९. (C) निबन्ध/शोध — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “निबन्ध/शोध” अछि।
१७०. (D) भक्ति परम्परा — टिप्पणीक पहिल संकेत “भक्ति परम्परा” अछि।
१७१. (A) भक्ति परम्परा — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “भक्ति परम्परा” रूपमे देखाइत अछि।
१७२. (B) लेखक प्रेमशंकर सिंह, विधा गद्य, उप-विधा निबन्ध/शोध — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।
१७३. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।
१७४. (D) ई पाठ निबन्ध/शोधक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।
१७५. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।
१७६. (B) खण्ड 4184, सूचकांक पंक्ति 2875मे प्रेमशंकर सिंहक “मायानन्दक रेडिया-रूपक” प्रविष्टि गद्य, निबन्ध/शोध आ “भक्ति परम्परा” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 32क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।
१७७. (A) हुनकासँ भेट भेल छल — सूचकांक पंक्ति 2876मे प्रेमशंकर सिंहक प्रविष्टि “हुनकासँ भेट भेल छल” रूपमे देल अछि।
१७८. (B) गद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।
१७९. (C) निबन्ध/शोध — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “निबन्ध/शोध” अछि।
१८०. (D) भक्ति परम्परा — टिप्पणीक पहिल संकेत “भक्ति परम्परा” अछि।
१८१. (A) भक्ति परम्परा — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “भक्ति परम्परा” रूपमे देखाइत अछि।
१८२. (B) लेखक प्रेमशंकर सिंह, विधा गद्य, उप-विधा निबन्ध/शोध — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।
१८३. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

१८४. (D) ई पाठ निबन्ध/शोधक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकें स्पष्ट करैत अछि।
१८५. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।
१८६. (B) खण्ड 4185, सूचकांक पंक्ति 2876मे प्रेमशंकर सिंहक “हुनकासँ भेट भेल छल” प्रविष्टि गद्य, निबन्ध/शोध आ “भक्ति परम्परा” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 32क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकें प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।
१८७. (A) अमरक एकांकी-प्रहसनक सामाजिक यथार्थ — सूचकांक पंक्ति 2877मे प्रेमशंकर सिंहक प्रविष्टि “अमरक एकांकी-प्रहसनक सामाजिक यथार्थ” रूपमे देल अछि।
१८८. (B) गद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकें “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।
१८९. (C) निबन्ध/शोध — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “निबन्ध/शोध” अछि।
१९०. (D) भक्ति परम्परा — टिप्पणीक पहिल संकेत “भक्ति परम्परा” अछि।
१९१. (A) भक्ति परम्परा — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “भक्ति परम्परा” रूपमे देखाइत अछि।
१९२. (B) लेखक प्रेमशंकर सिंह, विधा गद्य, उप-विधा निबन्ध/शोध — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकें एक साथ रखैत अछि।
१९३. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककें केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।
१९४. (D) ई पाठ निबन्ध/शोधक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकें स्पष्ट करैत अछि।
१९५. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।
१९६. (B) खण्ड 4186, सूचकांक पंक्ति 2877मे प्रेमशंकर सिंहक “अमरक एकांकी-प्रहसनक सामाजिक यथार्थ” प्रविष्टि गद्य, निबन्ध/शोध आ “भक्ति परम्परा” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 32क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकें प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।
१९७. (A) लोकगाथा ओ मणिपट्टम — सूचकांक पंक्ति 2878मे प्रेमशंकर सिंहक प्रविष्टि “लोकगाथा ओ मणिपट्टम” रूपमे देल अछि।
१९८. (B) गद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकें “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।
१९९. (C) निबन्ध/शोध — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “निबन्ध/शोध” अछि।
२००. (D) भक्ति परम्परा — टिप्पणीक पहिल संकेत “भक्ति परम्परा” अछि।
२०१. (A) भक्ति परम्परा — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “भक्ति परम्परा” रूपमे देखाइत अछि।
२०२. (B) लेखक प्रेमशंकर सिंह, विधा गद्य, उप-विधा निबन्ध/शोध — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकें एक साथ रखैत अछि।
२०३. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककें केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।
२०४. (D) ई पाठ निबन्ध/शोधक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकें स्पष्ट करैत अछि।
२०५. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।
२०६. (B) खण्ड 4187, सूचकांक पंक्ति 2878मे प्रेमशंकर सिंहक “लोकगाथा ओ मणिपट्टम” प्रविष्टि गद्य, निबन्ध/शोध आ “भक्ति परम्परा” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 32क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकें प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।
२०७. (A) चेतना समिति ओ नाट्यमंच — सूचकांक पंक्ति 2879मे प्रेमशंकर सिंहक प्रविष्टि “चेतना समिति ओ नाट्यमंच” रूपमे देल अछि।
२०८. (B) गद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकें “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।
२०९. (C) निबन्ध/शोध — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “निबन्ध/शोध” अछि।
२१०. (D) भक्ति परम्परा — टिप्पणीक पहिल संकेत “भक्ति परम्परा” अछि।
२११. (A) भक्ति परम्परा — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “भक्ति परम्परा” रूपमे देखाइत अछि।
२१२. (B) लेखक प्रेमशंकर सिंह, विधा गद्य, उप-विधा निबन्ध/शोध — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकें एक साथ रखैत अछि।
२१३. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककें केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

२१४. (D) ई पाठ निबन्ध/शोधक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।
२१५. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।
२१६. (B) खण्ड 4188, सूचकांक पंक्ति 2879मे प्रेमशंकर सिंहक “चेतना समिति ओ नाट्यमंच” प्रविष्टि गद्य, निबन्ध/शोध आ “भक्ति परम्परा” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 32क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।
२१७. (A) जयकान्त मिश्र जीवन आ साहित्य साधना — सूचकांक पंक्ति 2880मे प्रेमशंकर सिंहक प्रविष्टि “जयकान्त मिश्र जीवन आ साहित्य साधना” रूपमे देल अछि।
२१८. (B) गद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।
२१९. (C) निबन्ध/शोध — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “निबन्ध/शोध” अछि।
२२०. (D) भक्ति परम्परा — टिप्पणीक पहिल संकेत “भक्ति परम्परा” अछि।
२२१. (A) भक्ति परम्परा — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “भक्ति परम्परा” रूपमे देखाइत अछि।
२२२. (B) लेखक प्रेमशंकर सिंह, विधा गद्य, उप-विधा निबन्ध/शोध — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।
२२३. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।
२२४. (D) ई पाठ निबन्ध/शोधक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।
२२५. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।
२२६. (B) खण्ड 4189, सूचकांक पंक्ति 2880मे प्रेमशंकर सिंहक “जयकान्त मिश्र जीवन आ साहित्य साधना” प्रविष्टि गद्य, निबन्ध/शोध आ “भक्ति परम्परा” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 32क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।
२२७. (A) समीक्षा- बनैत बिगडैत — सूचकांक पंक्ति 2881मे डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक प्रविष्टि “समीक्षा- बनैत बिगडैत” रूपमे देल अछि।
२२८. (B) गद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।
२२९. (C) समीक्षा — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “समीक्षा” अछि।
२३०. (D) यात्रा-वृत्तान्तकार — टिप्पणीक पहिल संकेत “यात्रा-वृत्तान्तकार” अछि।
२३१. (A) यात्रा-वृत्तान्तकार — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “यात्रा-वृत्तान्तकार” रूपमे देखाइत अछि।
२३२. (B) लेखक डॉ. कैलाश कुमार मिश्र, विधा गद्य, उप-विधा समीक्षा — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।
२३३. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।
२३४. (D) ई पाठ समीक्षाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।
२३५. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।
२३६. (B) खण्ड 4190, सूचकांक पंक्ति 2881मे डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक “समीक्षा- बनैत बिगडैत” प्रविष्टि गद्य, समीक्षा आ “यात्रा-वृत्तान्तकार” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 32क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।
२३७. (A) समीक्षा- बनैत बिगडैत — सूचकांक पंक्ति 2882मे गजेन्द्र ठाकुरक प्रविष्टि “समीक्षा- बनैत बिगडैत” रूपमे देल अछि।
२३८. (B) गद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।
२३९. (C) समीक्षा — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “समीक्षा” अछि।
२४०. (D) — — टिप्पणीक पहिल संकेत “—” अछि।
२४१. (A) — — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “—” रूपमे देखाइत अछि।
२४२. (B) लेखक गजेन्द्र ठाकुर, विधा गद्य, उप-विधा समीक्षा — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।
२४३. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

२४४. (D) ई पाठ समीक्षाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकें स्पष्ट करैत अछि।
२४५. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।
२४६. (B) खण्ड 4191, सूचकांक पंक्ति 2882मे गजेन्द्र ठाकुरक “समीक्षा- बनैत बिगड़ौत” प्रविष्टि गद्य, समीक्षा आ “—” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 32क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकें प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।
२४७. (A) सुभाष चन्द्र यादव पर — सूचकांक पंक्ति 2883मे महाप्रकाशक प्रविष्टि “सुभाष चन्द्र यादव पर” रूपमे देल अछि।
२४८. (B) गद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकें “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।
२४९. (C) — — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “—” अछि।
२५०. (D) — — टिप्पणीक पहिल संकेत “—” अछि।
२५१. (A) — — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “—” रूपमे देखाइत अछि।
२५२. (B) लेखक महाप्रकाश, विधा गद्य, उप-विधा — — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकें एक साथ रखैत अछि।
२५३. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककें केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।
२५४. (D) ई पाठ —क रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकें स्पष्ट करैत अछि।
२५५. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।
२५६. (B) खण्ड 4192, सूचकांक पंक्ति 2883मे महाप्रकाशक “सुभाष चन्द्र यादव पर” प्रविष्टि गद्य, — आ “—” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 32क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकें प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।
२५७. (A) बनैत बिगड़ौत — सूचकांक पंक्ति 2884मे सुभाष चन्द्र यादवक प्रविष्टि “बनैत बिगड़ौत” रूपमे देल अछि।
२५८. (B) गद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकें “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।
२५९. (C) कथा — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “कथा” अछि।
२६०. (D) ओबीसी एनएआरआरएटीआइवीई — टिप्पणीक पहिल संकेत “ओबीसी एनएआरआरएटीआइवीई” अछि।
२६१. (A) ओबीसी एनएआरआरएटीआइवीई — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “ओबीसी एनएआरआरएटीआइवीई” रूपमे देखाइत अछि।
२६२. (B) लेखक सुभाष चन्द्र यादव, विधा गद्य, उप-विधा कथा — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकें एक साथ रखैत अछि।
२६३. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककें केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।
२६४. (D) ई पाठ कथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकें स्पष्ट करैत अछि।
२६५. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।
२६६. (B) खण्ड 4193, सूचकांक पंक्ति 2884मे सुभाष चन्द्र यादवक “बनैत बिगड़ौत” प्रविष्टि गद्य, कथा आ “ओबीसी एनएआरआरएटीआइवीई” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 32क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकें प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।
२६७. (A) अपन-अपन दुख — सूचकांक पंक्ति 2885मे सुभाष चन्द्र यादवक प्रविष्टि “अपन-अपन दुख” रूपमे देल अछि।
२६८. (B) गद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकें “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।
२६९. (C) कथा — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “कथा” अछि।
२७०. (D) ओबीसी एनएआरआरएटीआइवीई — टिप्पणीक पहिल संकेत “ओबीसी एनएआरआरएटीआइवीई” अछि।
२७१. (A) ओबीसी एनएआरआरएटीआइवीई — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “ओबीसी एनएआरआरएटीआइवीई” रूपमे देखाइत अछि।
२७२. (B) लेखक सुभाष चन्द्र यादव, विधा गद्य, उप-विधा कथा — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकें एक साथ रखैत अछि।
२७३. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककें केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।
२७४. (D) ई पाठ कथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकें स्पष्ट करैत अछि।

२७५. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।
२७६. (B) खण्ड 4194, सूचकांक पंक्ति 2885मे सुभाष चन्द्र यादवक “अपन-अपन दुख” प्रविष्टि गद्य, कथा आ “ओबीसी एनएआरआरएटीआइवीई” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 32क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।
२७७. (A) असुरक्षित — सूचकांक पंक्ति 2886मे सुभाष चन्द्र यादवक प्रविष्टि “असुरक्षित” रूपमे देल अछि।
२७८. (B) गद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।
२७९. (C) कथा — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “कथा” अछि।
२८०. (D) ओबीसी एनएआरआरएटीआइवीई — टिप्पणीक पहिल संकेत “ओबीसी एनएआरआरएटीआइवीई” अछि।
२८१. (A) ओबीसी एनएआरआरएटीआइवीई — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “ओबीसी एनएआरआरएटीआइवीई” रूपमे देखाइत अछि।
२८२. (B) लेखक सुभाष चन्द्र यादव, विधा गद्य, उप-विधा कथा — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।
२८३. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।
२८४. (D) ई पाठ कथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।
२८५. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।
२८६. (B) खण्ड 4195, सूचकांक पंक्ति 2886मे सुभाष चन्द्र यादवक “असुरक्षित” प्रविष्टि गद्य, कथा आ “ओबीसी एनएआरआरएटीआइवीई” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 32क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।
२८७. (A) आतंक — सूचकांक पंक्ति 2887मे सुभाष चन्द्र यादवक प्रविष्टि “आतंक” रूपमे देल अछि।
२८८. (B) गद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।
२८९. (C) कथा — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “कथा” अछि।
२९०. (D) ओबीसी एनएआरआरएटीआइवीई — टिप्पणीक पहिल संकेत “ओबीसी एनएआरआरएटीआइवीई” अछि।
२९१. (A) ओबीसी एनएआरआरएटीआइवीई — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “ओबीसी एनएआरआरएटीआइवीई” रूपमे देखाइत अछि।
२९२. (B) लेखक सुभाष चन्द्र यादव, विधा गद्य, उप-विधा कथा — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।
२९३. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।
२९४. (D) ई पाठ कथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।
२९५. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।
२९६. (B) खण्ड 4196, सूचकांक पंक्ति 2887मे सुभाष चन्द्र यादवक “आतंक” प्रविष्टि गद्य, कथा आ “ओबीसी एनएआरआरएटीआइवीई” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 32क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।
२९७. (A) ओ लड़की — सूचकांक पंक्ति 2888मे सुभाष चन्द्र यादवक प्रविष्टि “ओ लड़की” रूपमे देल अछि।
२९८. (B) गद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।
२९९. (C) कथा — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “कथा” अछि।
३००. (D) ओबीसी एनएआरआरएटीआइवीई — टिप्पणीक पहिल संकेत “ओबीसी एनएआरआरएटीआइवीई” अछि।
३०१. (A) ओबीसी एनएआरआरएटीआइवीई — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “ओबीसी एनएआरआरएटीआइवीई” रूपमे देखाइत अछि।
३०२. (B) लेखक सुभाष चन्द्र यादव, विधा गद्य, उप-विधा कथा — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।
३०३. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।
३०४. (D) ई पाठ कथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

३०५. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।
३०६. (B) खण्ड 4197, सूचकांक पंक्ति 2888मे सुभाष चन्द्र यादवक “ओ लड़की” प्रविष्टि गद्य, कथा आ “ओबीसी एनएआरआरएटीआइवीई” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 32क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।
३०७. (A) एकटा अंत — सूचकांक पंक्ति 2889मे सुभाष चन्द्र यादवक प्रविष्टि “एकटा अंत” रूपमे देल अछि।
३०८. (B) गद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।
३०९. (C) कथा — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “कथा” अछि।
३१०. (D) ओबीसी एनएआरआरएटीआइवीई — टिप्पणीक पहिल संकेत “ओबीसी एनएआरआरएटीआइवीई” अछि।
३११. (A) ओबीसी एनएआरआरएटीआइवीई — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “ओबीसी एनएआरआरएटीआइवीई” रूपमे देखाइत अछि।
३१२. (B) लेखक सुभाष चन्द्र यादव, विधा गद्य, उप-विधा कथा — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।
३१३. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।
३१४. (D) ई पाठ कथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।
३१५. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।
३१६. (B) खण्ड 4198, सूचकांक पंक्ति 2889मे सुभाष चन्द्र यादवक “एकटा अंत” प्रविष्टि गद्य, कथा आ “ओबीसी एनएआरआरएटीआइवीई” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 32क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।
३१७. (A) एकटा प्रेम कथा — सूचकांक पंक्ति 2890मे सुभाष चन्द्र यादवक प्रविष्टि “एकटा प्रेम कथा” रूपमे देल अछि।
३१८. (B) गद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।
३१९. (C) कथा — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “कथा” अछि।
३२०. (D) ओबीसी एनएआरआरएटीआइवीई — टिप्पणीक पहिल संकेत “ओबीसी एनएआरआरएटीआइवीई” अछि।
३२१. (A) ओबीसी एनएआरआरएटीआइवीई — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “ओबीसी एनएआरआरएटीआइवीई” रूपमे देखाइत अछि।
३२२. (B) लेखक सुभाष चन्द्र यादव, विधा गद्य, उप-विधा कथा — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।
३२३. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।
३२४. (D) ई पाठ कथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।
३२५. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।
३२६. (B) खण्ड 4199, सूचकांक पंक्ति 2890मे सुभाष चन्द्र यादवक “एकटा प्रेम कथा” प्रविष्टि गद्य, कथा आ “ओबीसी एनएआरआरएटीआइवीई” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 32क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।
३२७. (A) एकाकी — सूचकांक पंक्ति 2891मे सुभाष चन्द्र यादवक प्रविष्टि “एकाकी” रूपमे देल अछि।
३२८. (B) गद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।
३२९. (C) कथा — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “कथा” अछि।
३३०. (D) ओबीसी एनएआरआरएटीआइवीई — टिप्पणीक पहिल संकेत “ओबीसी एनएआरआरएटीआइवीई” अछि।
३३१. (A) ओबीसी एनएआरआरएटीआइवीई — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “ओबीसी एनएआरआरएटीआइवीई” रूपमे देखाइत अछि।
३३२. (B) लेखक सुभाष चन्द्र यादव, विधा गद्य, उप-विधा कथा — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।
३३३. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।
३३४. (D) ई पाठ कथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

३३५. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।
३३६. (B) खण्ड 4200, सूचकांक पंक्ति 2891मे सुभाष चन्द्र यादवक “एकाकी” प्रविष्टि गद्य, कथा आ “ओबीसी एनएआरआरएटीआइवीई” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 32क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।
३३७. (A) कनियाँ-पुतरा — सूचकांक पंक्ति 2892मे सुभाष चन्द्र यादवक प्रविष्टि “कनियाँ-पुतरा” रूपमे देल अछि।
३३८. (B) गद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।
३३९. (C) कथा — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “कथा” अछि।
३४०. (D) ओबीसी एनएआरआरएटीआइवीई — टिप्पणीक पहिल संकेत “ओबीसी एनएआरआरएटीआइवीई” अछि।
३४१. (A) ओबीसी एनएआरआरएटीआइवीई — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “ओबीसी एनएआरआरएटीआइवीई” रूपमे देखाइत अछि।
३४२. (B) लेखक सुभाष चन्द्र यादव, विधा गद्य, उप-विधा कथा — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।
३४३. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।
३४४. (D) ई पाठ कथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।
३४५. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।
३४६. (B) खण्ड 4201, सूचकांक पंक्ति 2892मे सुभाष चन्द्र यादवक “कनियाँ-पुतरा” प्रविष्टि गद्य, कथा आ “ओबीसी एनएआरआरएटीआइवीई” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 32क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।
३४७. (A) कबाछू — सूचकांक पंक्ति 2893मे सुभाष चन्द्र यादवक प्रविष्टि “कबाछू” रूपमे देल अछि।
३४८. (B) गद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।
३४९. (C) कथा — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “कथा” अछि।
३५०. (D) ओबीसी एनएआरआरएटीआइवीई — टिप्पणीक पहिल संकेत “ओबीसी एनएआरआरएटीआइवीई” अछि।
३५१. (A) ओबीसी एनएआरआरएटीआइवीई — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “ओबीसी एनएआरआरएटीआइवीई” रूपमे देखाइत अछि।
३५२. (B) लेखक सुभाष चन्द्र यादव, विधा गद्य, उप-विधा कथा — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।
३५३. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।
३५४. (D) ई पाठ कथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।
३५५. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।
३५६. (B) खण्ड 4202, सूचकांक पंक्ति 2893मे सुभाष चन्द्र यादवक “कबाछू” प्रविष्टि गद्य, कथा आ “ओबीसी एनएआरआरएटीआइवीई” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 32क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।
३५७. (A) कारबार — सूचकांक पंक्ति 2894मे सुभाष चन्द्र यादवक प्रविष्टि “कारबार” रूपमे देल अछि।
३५८. (B) गद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।
३५९. (C) कथा — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “कथा” अछि।
३६०. (D) ओबीसी एनएआरआरएटीआइवीई — टिप्पणीक पहिल संकेत “ओबीसी एनएआरआरएटीआइवीई” अछि।
३६१. (A) ओबीसी एनएआरआरएटीआइवीई — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “ओबीसी एनएआरआरएटीआइवीई” रूपमे देखाइत अछि।
३६२. (B) लेखक सुभाष चन्द्र यादव, विधा गद्य, उप-विधा कथा — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।
३६३. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।
३६४. (D) ई पाठ कथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

३६५. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।
३६६. (B) खण्ड 4203, सूचकांक पंक्ति 2894मे सुभाष चन्द्र यादवक “कारबार” प्रविष्टि गद्य, कथा आ “ओबीसी एनएआरआरएटीआइवीई” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 32क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकें प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।
३६७. (A) कुशती — सूचकांक पंक्ति 2895मे सुभाष चन्द्र यादवक प्रविष्टि “कुशती” रूपमे देल अछि।
३६८. (B) गद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकें “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।
३६९. (C) कथा — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “कथा” अछि।
३७०. (D) ओबीसी एनएआरआरएटीआइवीई — टिप्पणीक पहिल संकेत “ओबीसी एनएआरआरएटीआइवीई” अछि।
३७१. (A) ओबीसी एनएआरआरएटीआइवीई — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “ओबीसी एनएआरआरएटीआइवीई” रूपमे देखाइत अछि।
३७२. (B) लेखक सुभाष चन्द्र यादव, विधा गद्य, उप-विधा कथा — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकें एक साथ रखैत अछि।
३७३. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककें केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।
३७४. (D) ई पाठ कथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकें स्पष्ट करैत अछि।
३७५. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।
३७६. (B) खण्ड 4204, सूचकांक पंक्ति 2895मे सुभाष चन्द्र यादवक “कुशती” प्रविष्टि गद्य, कथा आ “ओबीसी एनएआरआरएटीआइवीई” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 32क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकें प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।
३७७. (A) कैनरी आइलैण्डक लॉरेल — सूचकांक पंक्ति 2896मे सुभाष चन्द्र यादवक प्रविष्टि “कैनरी आइलैण्डक लॉरेल” रूपमे देल अछि।
३७८. (B) गद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकें “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।
३७९. (C) कथा — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “कथा” अछि।
३८०. (D) ओबीसी एनएआरआरएटीआइवीई — टिप्पणीक पहिल संकेत “ओबीसी एनएआरआरएटीआइवीई” अछि।
३८१. (A) ओबीसी एनएआरआरएटीआइवीई — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “ओबीसी एनएआरआरएटीआइवीई” रूपमे देखाइत अछि।
३८२. (B) लेखक सुभाष चन्द्र यादव, विधा गद्य, उप-विधा कथा — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकें एक साथ रखैत अछि।
३८३. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककें केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।
३८४. (D) ई पाठ कथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकें स्पष्ट करैत अछि।
३८५. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।
३८६. (B) खण्ड 4205, सूचकांक पंक्ति 2896मे सुभाष चन्द्र यादवक “कैनरी आइलैण्डक लॉरेल” प्रविष्टि गद्य, कथा आ “ओबीसी एनएआरआरएटीआइवीई” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 32क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकें प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।
३८७. (A) तृष्णा — सूचकांक पंक्ति 2897मे सुभाष चन्द्र यादवक प्रविष्टि “तृष्णा” रूपमे देल अछि।
३८८. (B) गद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकें “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।
३८९. (C) कथा — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “कथा” अछि।
३९०. (D) ओबीसी एनएआरआरएटीआइवीई — टिप्पणीक पहिल संकेत “ओबीसी एनएआरआरएटीआइवीई” अछि।
३९१. (A) ओबीसी एनएआरआरएटीआइवीई — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “ओबीसी एनएआरआरएटीआइवीई” रूपमे देखाइत अछि।
३९२. (B) लेखक सुभाष चन्द्र यादव, विधा गद्य, उप-विधा कथा — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकें एक साथ रखैत अछि।
३९३. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककें केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।
३९४. (D) ई पाठ कथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकें स्पष्ट करैत अछि।

३९५. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।
३९६. (B) खण्ड 4206, सूचकांक पंक्ति 2897मे सुभाष चन्द्र यादवक “तृष्णा” प्रविष्टि गद्य, कथा आ “ओबीसी एनएआरआरएटीआइवीई” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 32क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकें प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।
३९७. (A) दाना — सूचकांक पंक्ति 2898मे सुभाष चन्द्र यादवक प्रविष्टि “दाना” रूपमे देल अछि।
३९८. (B) गद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकें “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।
३९९. (C) कथा — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “कथा” अछि।
४००. (D) ओबीसी एनएआरआरएटीआइवीई — टिप्पणीक पहिल संकेत “ओबीसी एनएआरआरएटीआइवीई” अछि।
४०१. (A) ओबीसी एनएआरआरएटीआइवीई — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “ओबीसी एनएआरआरएटीआइवीई” रूपमे देखाइत अछि।
४०२. (B) लेखक सुभाष चन्द्र यादव, विधा गद्य, उप-विधा कथा — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकें एक साथ रखैत अछि।
४०३. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककें केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।
४०४. (D) ई पाठ कथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकें स्पष्ट करैत अछि।
४०५. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।
४०६. (B) खण्ड 4207, सूचकांक पंक्ति 2898मे सुभाष चन्द्र यादवक “दाना” प्रविष्टि गद्य, कथा आ “ओबीसी एनएआरआरएटीआइवीई” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 32क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकें प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।
४०७. (A) दृष्टि — सूचकांक पंक्ति 2899मे सुभाष चन्द्र यादवक प्रविष्टि “दृष्टि” रूपमे देल अछि।
४०८. (B) गद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकें “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।
४०९. (C) कथा — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “कथा” अछि।
४१०. (D) ओबीसी एनएआरआरएटीआइवीई — टिप्पणीक पहिल संकेत “ओबीसी एनएआरआरएटीआइवीई” अछि।
४११. (A) ओबीसी एनएआरआरएटीआइवीई — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “ओबीसी एनएआरआरएटीआइवीई” रूपमे देखाइत अछि।
४१२. (B) लेखक सुभाष चन्द्र यादव, विधा गद्य, उप-विधा कथा — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकें एक साथ रखैत अछि।
४१३. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककें केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।
४१४. (D) ई पाठ कथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकें स्पष्ट करैत अछि।
४१५. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।
४१६. (B) खण्ड 4208, सूचकांक पंक्ति 2899मे सुभाष चन्द्र यादवक “दृष्टि” प्रविष्टि गद्य, कथा आ “ओबीसी एनएआरआरएटीआइवीई” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 32क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकें प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।
४१७. (A) नदी — सूचकांक पंक्ति 2900मे सुभाष चन्द्र यादवक प्रविष्टि “नदी” रूपमे देल अछि।
४१८. (B) गद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकें “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।
४१९. (C) कथा — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “कथा” अछि।
४२०. (D) ओबीसी एनएआरआरएटीआइवीई — टिप्पणीक पहिल संकेत “ओबीसी एनएआरआरएटीआइवीई” अछि।
४२१. (A) ओबीसी एनएआरआरएटीआइवीई — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “ओबीसी एनएआरआरएटीआइवीई” रूपमे देखाइत अछि।
४२२. (B) लेखक सुभाष चन्द्र यादव, विधा गद्य, उप-विधा कथा — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकें एक साथ रखैत अछि।
४२३. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककें केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।
४२४. (D) ई पाठ कथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकें स्पष्ट करैत अछि।

४२५. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।
४२६. (B) खण्ड 4209, सूचकांक पंक्ति 2900मे सुभाष चन्द्र यादवक “नदी” प्रविष्टि गद्य, कथा आ “ओबीसी एनएआरआरएटीआइवीई” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 32क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।
४२७. (A) परलय — सूचकांक पंक्ति 2901मे सुभाष चन्द्र यादवक प्रविष्टि “परलय” रूपमे देल अछि।
४२८. (B) गद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।
४२९. (C) कथा — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “कथा” अछि।
४३०. (D) ओबीसी एनएआरआरएटीआइवीई — टिप्पणीक पहिल संकेत “ओबीसी एनएआरआरएटीआइवीई” अछि।
४३१. (A) ओबीसी एनएआरआरएटीआइवीई — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “ओबीसी एनएआरआरएटीआइवीई” रूपमे देखाइत अछि।
४३२. (B) लेखक सुभाष चन्द्र यादव, विधा गद्य, उप-विधा कथा — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।
४३३. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।
४३४. (D) ई पाठ कथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।
४३५. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।
४३६. (B) खण्ड 4210, सूचकांक पंक्ति 2901मे सुभाष चन्द्र यादवक “परलय” प्रविष्टि गद्य, कथा आ “ओबीसी एनएआरआरएटीआइवीई” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 32क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।
४३७. (A) बात — सूचकांक पंक्ति 2902मे सुभाष चन्द्र यादवक प्रविष्टि “बात” रूपमे देल अछि।
४३८. (B) गद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।
४३९. (C) कथा — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “कथा” अछि।
४४०. (D) ओबीसी एनएआरआरएटीआइवीई — टिप्पणीक पहिल संकेत “ओबीसी एनएआरआरएटीआइवीई” अछि।
४४१. (A) ओबीसी एनएआरआरएटीआइवीई — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “ओबीसी एनएआरआरएटीआइवीई” रूपमे देखाइत अछि।
४४२. (B) लेखक सुभाष चन्द्र यादव, विधा गद्य, उप-विधा कथा — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।
४४३. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।
४४४. (D) ई पाठ कथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।
४४५. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।
४४६. (B) खण्ड 4211, सूचकांक पंक्ति 2902मे सुभाष चन्द्र यादवक “बात” प्रविष्टि गद्य, कथा आ “ओबीसी एनएआरआरएटीआइवीई” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 32क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।
४४७. (A) रंभा — सूचकांक पंक्ति 2903मे सुभाष चन्द्र यादवक प्रविष्टि “रंभा” रूपमे देल अछि।
४४८. (B) गद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।
४४९. (C) कथा — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “कथा” अछि।
४५०. (D) ओबीसी एनएआरआरएटीआइवीई — टिप्पणीक पहिल संकेत “ओबीसी एनएआरआरएटीआइवीई” अछि।
४५१. (A) ओबीसी एनएआरआरएटीआइवीई — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “ओबीसी एनएआरआरएटीआइवीई” रूपमे देखाइत अछि।
४५२. (B) लेखक सुभाष चन्द्र यादव, विधा गद्य, उप-विधा कथा — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।
४५३. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।
४५४. (D) ई पाठ कथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

४५५. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।
४५६. (B) खण्ड 4212, सूचकांक पंक्ति 2903मे सुभाष चन्द्र यादवक “रंभा” प्रविष्टि गद्य, कथा आ “ओबीसी एनएआरआरएटीआइवीई” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 32क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।
४५७. (A) हमर गाम — सूचकांक पंक्ति 2904मे सुभाष चन्द्र यादवक प्रविष्टि “हमर गाम” रूपमे देल अछि।
४५८. (B) गद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।
४५९. (C) कथा — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “कथा” अछि।
४६०. (D) ओबीसी एनएआरआरएटीआइवीई — टिप्पणीक पहिल संकेत “ओबीसी एनएआरआरएटीआइवीई” अछि।
४६१. (A) ओबीसी एनएआरआरएटीआइवीई — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “ओबीसी एनएआरआरएटीआइवीई” रूपमे देखाइत अछि।
४६२. (B) लेखक सुभाष चन्द्र यादव, विधा गद्य, उप-विधा कथा — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।
४६३. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।
४६४. (D) ई पाठ कथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।
४६५. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।
४६६. (B) खण्ड 4213, सूचकांक पंक्ति 2904मे सुभाष चन्द्र यादवक “हमर गाम” प्रविष्टि गद्य, कथा आ “ओबीसी एनएआरआरएटीआइवीई” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 32क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।
४६७. (A) माउगि — सूचकांक पंक्ति 2905मे विभा रानीक प्रविष्टि “माउगि” रूपमे देल अछि।
४६८. (B) गद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।
४६९. (C) कथा — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “कथा” अछि।
४७०. (D) नारी-दृष्टि — टिप्पणीक पहिल संकेत “नारी-दृष्टि” अछि।
४७१. (A) नारी-दृष्टि — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “नारी-दृष्टि” रूपमे देखाइत अछि।
४७२. (B) लेखक विभा रानी, विधा गद्य, उप-विधा कथा — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।
४७३. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।
४७४. (D) ई पाठ कथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।
४७५. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।
४७६. (B) खण्ड 4214, सूचकांक पंक्ति 2905मे विभा रानीक “माउगि” प्रविष्टि गद्य, कथा आ “नारी-दृष्टि” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 32क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।
४७७. (A) भाग रौ — सूचकांक पंक्ति 2906मे विभा रानीक प्रविष्टि “भाग रौ” रूपमे देल अछि।
४७८. (B) गद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।
४७९. (C) कथा — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “कथा” अछि।
४८०. (D) नारी-दृष्टि — टिप्पणीक पहिल संकेत “नारी-दृष्टि” अछि।
४८१. (A) नारी-दृष्टि — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “नारी-दृष्टि” रूपमे देखाइत अछि।
४८२. (B) लेखक विभा रानी, विधा गद्य, उप-विधा कथा — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।
४८३. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।
४८४. (D) ई पाठ कथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

४८५. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।
४८६. (B) खण्ड 4215, सूचकांक पंक्ति 2906मे विभा रानीक “भाग रौ” प्रविष्टि गद्य, कथा आ “नारी-दृष्टि” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 32क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकें प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।
४८७. (A) बलचन्दा — सूचकांक पंक्ति 2907मे विभा रानीक प्रविष्टि “बलचन्दा” रूपमे देल अछि।
४८८. (B) गद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकें “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।
४८९. (C) कथा — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “कथा” अछि।
४९०. (D) नारी-दृष्टि — टिप्पणीक पहिल संकेत “नारी-दृष्टि” अछि।
४९१. (A) नारी-दृष्टि — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “नारी-दृष्टि” रूपमे देखाइत अछि।
४९२. (B) लेखक विभा रानी, विधा गद्य, उप-विधा कथा — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकें एक साथ रखैत अछि।
४९३. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककें केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।
४९४. (D) ई पाठ कथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकें स्पष्ट करैत अछि।
४९५. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।
४९६. (B) खण्ड 4216, सूचकांक पंक्ति 2907मे विभा रानीक “बलचन्दा” प्रविष्टि गद्य, कथा आ “नारी-दृष्टि” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 32क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकें प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।
४९७. (A) साहित्य मनीषी मायानन्द मिश्रसँ साक्षात्कार — सूचकांक पंक्ति 2908मे डॉ शिव प्रसाद यादवक प्रविष्टि “साहित्य मनीषी मायानन्द मिश्रसँ साक्षात्कार” रूपमे देल अछि।
४९८. (B) गद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकें “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।
४९९. (C) साक्षात्कार — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “साक्षात्कार” अछि।
५००. (D) बीएकेएचटीआइएन डीआइएएलओजीआइएसएम — टिप्पणीक पहिल संकेत “बीएकेएचटीआइएन डीआइएएलओजीआइएसएम” अछि।
५०१. (A) बीएकेएचटीआइएन डीआइएएलओजीआइएसएम — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “बीएकेएचटीआइएन डीआइएएलओजीआइएसएम” रूपमे देखाइत अछि।
५०२. (B) लेखक डॉ शिव प्रसाद यादव, विधा गद्य, उप-विधा साक्षात्कार — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकें एक साथ रखैत अछि।
५०३. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककें केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।
५०४. (D) ई पाठ साक्षात्कारक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकें स्पष्ट करैत अछि।
५०५. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।
५०६. (B) खण्ड 4217, सूचकांक पंक्ति 2908मे डॉ शिव प्रसाद यादवक “साहित्य मनीषी मायानन्द मिश्रसँ साक्षात्कार” प्रविष्टि गद्य, साक्षात्कार आ “बीएकेएचटीआइएन डीआइएएलओजीआइएसएम” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 32क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकें प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।
५०७. (A) अन्तर्द्वन्द्व — सूचकांक पंक्ति 2909मे उदय नारायण सिंह 'नचिकेता'क प्रविष्टि “अन्तर्द्वन्द्व” रूपमे देल अछि।
५०८. (B) पद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकें “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।
५०९. (C) कविता — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “कविता” अछि।
५१०. (D) सीआइआइएल — टिप्पणीक पहिल संकेत “सीआइआइएल” अछि।
५११. (A) सीआइआइएल — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “सीआइआइएल” रूपमे देखाइत अछि।
५१२. (B) लेखक उदय नारायण सिंह 'नचिकेता', विधा पद्य, उप-विधा कविता — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकें एक साथ रखैत अछि।
५१३. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककें केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

५१४. (D) ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।
५१५. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।
५१६. (B) खण्ड 4218, सूचकांक पंक्ति 2909मे उदय नारायण सिंह 'नचिकेता'क “अन्तर्द्वन्द्व” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “सीआइआइएल” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 32क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।
५१७. (A) सपना, हम तऽ छी परदेशमे, चलला मुरारी छौरी फ्रँसबय! — सूचकांक पंक्ति 2910मे शैलेन्द्र मोहन झाक प्रविष्टि “सपना, हम तऽ छी परदेशमे, चलला मुरारी छौरी फ्रँसबय!” रूपमे देल अछि।
५१८. (B) पद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।
५१९. (C) कविता — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “कविता” अछि।
५२०. (D) भावात्मक अभिव्यक्ति — टिप्पणीक पहिल संकेत “भावात्मक अभिव्यक्ति” अछि।
५२१. (A) भावात्मक अभिव्यक्ति — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “भावात्मक अभिव्यक्ति” रूपमे देखाइत अछि।
५२२. (B) लेखक शैलेन्द्र मोहन झा, विधा पद्य, उप-विधा कविता — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।
५२३. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।
५२४. (D) ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।
५२५. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।
५२६. (B) खण्ड 4219, सूचकांक पंक्ति 2910मे शैलेन्द्र मोहन झाक “सपना, हम तऽ छी परदेशमे, चलला मुरारी छौरी फ्रँसबय!” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “भावात्मक अभिव्यक्ति” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 32क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।
५२७. (A) भक्तिगीत — सूचकांक पंक्ति 2911मे जितमोहन झाक प्रविष्टि “भक्तिगीत” रूपमे देल अछि।
५२८. (B) पद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।
५२९. (C) भक्तिगीत — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “भक्तिगीत” अछि।
५३०. (D) मुम्बई — टिप्पणीक पहिल संकेत “मुम्बई” अछि।
५३१. (A) मुम्बई — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “मुम्बई” रूपमे देखाइत अछि।
५३२. (B) लेखक जितमोहन झा, विधा पद्य, उप-विधा भक्तिगीत — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।
५३३. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।
५३४. (D) ई पाठ भक्तिगीतक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।
५३५. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।
५३६. (B) खण्ड 4220, सूचकांक पंक्ति 2911मे जितमोहन झाक “भक्तिगीत” प्रविष्टि पद्य, भक्तिगीत आ “मुम्बई” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 32क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।
५३७. (A) हमर मिथिलाक दर्शन — सूचकांक पंक्ति 2912मे प्रकाश झाक प्रविष्टि “हमर मिथिलाक दर्शन” रूपमे देल अछि।
५३८. (B) पद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।
५३९. (C) कविता — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “कविता” अछि।
५४०. (D) सामाजिक रिपोर्टिंग — टिप्पणीक पहिल संकेत “सामाजिक रिपोर्टिंग” अछि।
५४१. (A) सामाजिक रिपोर्टिंग — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “सामाजिक रिपोर्टिंग” रूपमे देखाइत अछि।
५४२. (B) लेखक प्रकाश झा, विधा पद्य, उप-विधा कविता — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।
५४३. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

५४४. (D) ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।
५४५. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।
५४६. (B) खण्ड 4221, सूचकांक पंक्ति 2912मे प्रकाश झाक “हमर मिथिलाक दर्शन” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “सामाजिक रिपोर्टिंग” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 32क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।
५४७. (A) राधा (धारावाहिक, खेप १-३०) — सूचकांक पंक्ति 2913मे गंगेश गुंजनक प्रविष्टि “राधा (धारावाहिक, खेप १-३०)” रूपमे देल अछि।
५४८. (B) पद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।
५४९. (C) गद्य-पद्य/गजल — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “गद्य-पद्य/गजल” अछि।
५५०. (D) साहित्य अकादेमी पुरस्कार — टिप्पणीक पहिल संकेत “साहित्य अकादेमी पुरस्कार” अछि।
५५१. (A) साहित्य अकादेमी पुरस्कार — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “साहित्य अकादेमी पुरस्कार” रूपमे देखाइत अछि।
५५२. (B) लेखक गंगेश गुंजन, विधा पद्य, उप-विधा गद्य-पद्य/गजल — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।
५५३. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।
५५४. (D) ई पाठ गद्य-पद्य/गजलक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।
५५५. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।
५५६. (B) खण्ड 4222, सूचकांक पंक्ति 2913मे गंगेश गुंजनक “राधा (धारावाहिक, खेप १-३०)” प्रविष्टि पद्य, गद्य-पद्य/गजल आ “साहित्य अकादेमी पुरस्कार” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 32क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।
५५७. (A) बाल कविता- आउ हनुमान — सूचकांक पंक्ति 2914मे गंगेश गुंजनक प्रविष्टि “बाल कविता- आउ हनुमान” रूपमे देल अछि।
५५८. (B) पद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।
५५९. (C) कविता — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “कविता” अछि।
५६०. (D) साहित्य अकादेमी पुरस्कार — टिप्पणीक पहिल संकेत “साहित्य अकादेमी पुरस्कार” अछि।
५६१. (A) साहित्य अकादेमी पुरस्कार — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “साहित्य अकादेमी पुरस्कार” रूपमे देखाइत अछि।
५६२. (B) लेखक गंगेश गुंजन, विधा पद्य, उप-विधा कविता — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।
५६३. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।
५६४. (D) ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।
५६५. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।
५६६. (B) खण्ड 4223, सूचकांक पंक्ति 2914मे गंगेश गुंजनक “बाल कविता- आउ हनुमान” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “साहित्य अकादेमी पुरस्कार” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 32क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।
५६७. (A) भेटताह अनन्त? — सूचकांक पंक्ति 2915मे गंगेश गुंजनक प्रविष्टि “भेटताह अनन्त?” रूपमे देल अछि।
५६८. (B) पद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।
५६९. (C) कविता — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “कविता” अछि।
५७०. (D) साहित्य अकादेमी पुरस्कार — टिप्पणीक पहिल संकेत “साहित्य अकादेमी पुरस्कार” अछि।
५७१. (A) साहित्य अकादेमी पुरस्कार — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “साहित्य अकादेमी पुरस्कार” रूपमे देखाइत अछि।
५७२. (B) लेखक गंगेश गुंजन, विधा पद्य, उप-विधा कविता — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।
५७३. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

५७४. (D) ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।
५७५. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।
५७६. (B) खण्ड 4224, सूचकांक पंक्ति 2915मे गंगेश गुंजनक “भेटताह अनन्त?” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “साहित्य अकादेमी पुरस्कार” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 32क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।
५७७. (A) दिल्ली नगर बस मे तामसः एक-दू — सूचकांक पंक्ति 2916मे गंगेश गुंजनक प्रविष्टि “दिल्ली नगर बस मे तामसः एक-दू” रूपमे देल अछि।
५७८. (B) पद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।
५७९. (C) कविता — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “कविता” अछि।
५८०. (D) साहित्य अकादेमी पुरस्कार — टिप्पणीक पहिल संकेत “साहित्य अकादेमी पुरस्कार” अछि।
५८१. (A) साहित्य अकादेमी पुरस्कार — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “साहित्य अकादेमी पुरस्कार” रूपमे देखाइत अछि।
५८२. (B) लेखक गंगेश गुंजन, विधा पद्य, उप-विधा कविता — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।
५८३. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।
५८४. (D) ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।
५८५. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।
५८६. (B) खण्ड 4225, सूचकांक पंक्ति 2916मे गंगेश गुंजनक “दिल्ली नगर बस मे तामसः एक-दू” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “साहित्य अकादेमी पुरस्कार” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 32क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।
५८७. (A) आयुर्दा — सूचकांक पंक्ति 2917मे गंगेश गुंजनक प्रविष्टि “आयुर्दा” रूपमे देल अछि।
५८८. (B) पद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।
५८९. (C) कविता — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “कविता” अछि।
५९०. (D) साहित्य अकादेमी पुरस्कार — टिप्पणीक पहिल संकेत “साहित्य अकादेमी पुरस्कार” अछि।
५९१. (A) साहित्य अकादेमी पुरस्कार — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “साहित्य अकादेमी पुरस्कार” रूपमे देखाइत अछि।
५९२. (B) लेखक गंगेश गुंजन, विधा पद्य, उप-विधा कविता — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।
५९३. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।
५९४. (D) ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।
५९५. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।
५९६. (B) खण्ड 4226, सूचकांक पंक्ति 2917मे गंगेश गुंजनक “आयुर्दा” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “साहित्य अकादेमी पुरस्कार” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 32क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।
५९७. (A) परिवर्तन — सूचकांक पंक्ति 2918मे गंगेश गुंजनक प्रविष्टि “परिवर्तन” रूपमे देल अछि।
५९८. (B) पद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।
५९९. (C) कविता — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “कविता” अछि।
६००. (D) साहित्य अकादेमी पुरस्कार — टिप्पणीक पहिल संकेत “साहित्य अकादेमी पुरस्कार” अछि।
६०१. (A) साहित्य अकादेमी पुरस्कार — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “साहित्य अकादेमी पुरस्कार” रूपमे देखाइत अछि।
६०२. (B) लेखक गंगेश गुंजन, विधा पद्य, उप-विधा कविता — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।
६०३. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

६०४. (D) ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

૬૦૫. (A) ઓ લેખક, પાઠ આ આલોચનાત્મક સંકેતકેં એક સાથ ઉપલબ્ધ કરબૈત અછિ। — પ્રવિષ્ઠિ અધ્યયનક લેલ આધાર-સૂચના આ અર્થ-સૂત્ર ઢુનૂ દૈત અછિ।

६०६. (B) खण्ड 4227, सूचकांक पंक्ति 2918में गंगेश गुंजनक “परिवर्तन” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “साहित्य अकादेमी पुरस्कार” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 32क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकें प्रश्नोत्तरी रूपमें खोलैत अछि।

६०७. (A) देश छोड़ि कत' गेल — सूचकांक पंक्ति 2919मे गंगेश गुंजनक प्रविष्टि “देश छोड़ि कत' गेल” रूपमे देल अछि।

६०८. (B) पद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

६०९. (C) कविता — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “कविता” अछि।

६१०. (D) साहित्य अकादेमी पुरस्कार — टिप्पणीक पहिल संकेत “साहित्य अकादेमी पुरस्कार” अछि।

६११. (A) साहित्य अकादेमी पुरस्कार — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “साहित्य अकादेमी पुरस्कार” रूपमे देखाइत अछि।

६१२. (B) लेखक गंगेश गुंजन, विधा पद्य, उप-विधा कविता — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

६१३. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

६१४. (D) ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

૬૧૫. (A) ઓ લેખક, પાઠ આ આલોચનાત્મક સંકેતકેં એક સાથે ઉપલબ્ધ કરાેત અછિ. — પ્રવિષ્ઠિ અધ્યયનક લેલ આધાર-સૂચના આ અર્થ-સૂત્ર ઢુનૂ દેત અછિ।

६१६. (B) खण्ड 4228, सूचकांक पंक्ति 2919में गंगेश गुंजनक “देश छोड़ि कत' गेल” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “साहित्य अकादेमी पुरस्कार” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 32क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

६१७. (A) देश छोड़ि कियेक गेलय? — सूचकांक पंक्ति 2920मे गंगेश गुंजनक प्रविष्टि “देश छोड़ि कियेक गेलय?” रूपमे देल अछि।

६१८. (B) पद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

६१९. (C) कविता — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “कविता” अछि।

६२०. (D) साहित्य अकादेमी पुरस्कार — टिप्पणीक पहिल संकेत “साहित्य अकादेमी पुरस्कार” अछि।

६२१. (A) साहित्य अकादेमी पुरस्कार — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “साहित्य अकादेमी पुरस्कार” रूपमे देखाइत अछि।

६२२. (B) लेखक गंगेश गुंजन, विधा पद्य, उप-विधा कविता — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

६३३. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठकके केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

६२४. (D) ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

૬૨૫. (A) ઓ લેખક, પાઠ આ આલોચનાત્મક સંકેતકેં એક સાથ ઉપલબ્ધ કરબૈત અછિ। — પ્રવિષ્ઠિ અધ્યયનક લેલ આધાર-સૂચના આ અર્થ-સૂત્ર ઢુનૂ દૈત અછિ।

६२६. (B) खण्ड 4229, सूचकांक पंक्ति 2920में गंगेश गुंजनक “देश छोड़ि कियेक गेलय?” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “साहित्य अकादेमी पुरस्कार” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 32क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकें प्रश्नोत्तरी रूपमें खोलैत अछि।

६२७. (A) गाम — सूचकांक पंक्ति 2921 में गंगेश गुंजनक प्रविष्टि “गाम” रूप में देल अछि।

६२८. (B) पद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

६२९. (C) कविता — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “कविता” अछि।

६३०. (D) साहित्य अकादेमी पुरस्कार — टिप्पणीक पहिल संकेत “साहित्य अकादेमी पुरस्कार” अछि।

६३१. (A) साहित्य अकादेमी पुरस्कार — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “साहित्य अकादेमी पुरस्कार” रूपमे देखाइत अछि।

६३२. (B) लेखक गंगेश गुंजन, विधा पद्य, उप-विधा कविता — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

६३३. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककें केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

६३४. (D) ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

६३५. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।
६३६. (B) खण्ड 4230, सूचकांक पंक्ति 2921मे गंगेश गुंजनक “गाम” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “साहित्य अकादेमी पुरस्कार” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 32क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।
६३७. (A) बीच बाट पर खसल लाल गमछा — सूचकांक पंक्ति 2922मे गंगेश गुंजनक प्रविष्टि “बीच बाट पर खसल लाल गमछा” रूपमे देल अछि।
६३८. (B) पद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।
६३९. (C) कविता — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “कविता” अछि।
६४०. (D) साहित्य अकादेमी पुरस्कार — टिप्पणीक पहिल संकेत “साहित्य अकादेमी पुरस्कार” अछि।
६४१. (A) साहित्य अकादेमी पुरस्कार — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “साहित्य अकादेमी पुरस्कार” रूपमे देखाइत अछि।
६४२. (B) लेखक गंगेश गुंजन, विधा पद्य, उप-विधा कविता — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।
६४३. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।
६४४. (D) ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।
६४५. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।
६४६. (B) खण्ड 4231, सूचकांक पंक्ति 2922मे गंगेश गुंजनक “बीच बाट पर खसल लाल गमछा” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “साहित्य अकादेमी पुरस्कार” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 32क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।
६४७. (A) गीत १-२ — सूचकांक पंक्ति 2923मे गंगेश गुंजनक प्रविष्टि “गीत १-२” रूपमे देल अछि।
६४८. (B) पद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।
६४९. (C) गीत — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “गीत” अछि।
६५०. (D) साहित्य अकादेमी पुरस्कार — टिप्पणीक पहिल संकेत “साहित्य अकादेमी पुरस्कार” अछि।
६५१. (A) साहित्य अकादेमी पुरस्कार — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “साहित्य अकादेमी पुरस्कार” रूपमे देखाइत अछि।
६५२. (B) लेखक गंगेश गुंजन, विधा पद्य, उप-विधा गीत — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।
६५३. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।
६५४. (D) ई पाठ गीतक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।
६५५. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।
६५६. (B) खण्ड 4232, सूचकांक पंक्ति 2923मे गंगेश गुंजनक “गीत १-२” प्रविष्टि पद्य, गीत आ “साहित्य अकादेमी पुरस्कार” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 32क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।
६५७. (A) बाढ़िक त्रासदीपर गजल सन किछु — सूचकांक पंक्ति 2924मे गंगेश गुंजनक प्रविष्टि “बाढ़िक त्रासदीपर गजल सन किछु” रूपमे देल अछि।
६५८. (B) पद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।
६५९. (C) गजल — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “गजल” अछि।
६६०. (D) साहित्य अकादेमी पुरस्कार — टिप्पणीक पहिल संकेत “साहित्य अकादेमी पुरस्कार” अछि।
६६१. (A) साहित्य अकादेमी पुरस्कार — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “साहित्य अकादेमी पुरस्कार” रूपमे देखाइत अछि।
६६२. (B) लेखक गंगेश गुंजन, विधा पद्य, उप-विधा गजल — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।
६६३. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।
६६४. (D) ई पाठ गजलक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

६६५. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।
६६६. (B) खण्ड 4233, सूचकांक पंक्ति 2924मे गंगेश गुंजनक “बाढ़िक त्रासदीपर गजल सन किछु” प्रविष्टि पद्य, गजल आ “साहित्य अकादेमी पुरस्कार” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 32क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकें प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।
६६७. (A) गजल जेकाँ किछु- मैथिलीमे १-३ — सूचकांक पंक्ति 2925मे गंगेश गुंजनक प्रविष्टि “गजल जेकाँ किछु- मैथिलीमे १-३” रूपमे देल अछि।
६६८. (B) पद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकें “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।
६६९. (C) गजल — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “गजल” अछि।
६७०. (D) साहित्य अकादेमी पुरस्कार — टिप्पणीक पहिल संकेत “साहित्य अकादेमी पुरस्कार” अछि।
६७१. (A) साहित्य अकादेमी पुरस्कार — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “साहित्य अकादेमी पुरस्कार” रूपमे देखाइत अछि।
६७२. (B) लेखक गंगेश गुंजन, विधा पद्य, उप-विधा गजल — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकें एक साथ रखैत अछि।
६७३. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककें केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।
६७४. (D) ई पाठ गजलक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकें स्पष्ट करैत अछि।
६७५. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।
६७६. (B) खण्ड 4234, सूचकांक पंक्ति 2925मे गंगेश गुंजनक “गजल जेकाँ किछु- मैथिलीमे १-३” प्रविष्टि पद्य, गजल आ “साहित्य अकादेमी पुरस्कार” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 32क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकें प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।
६७७. (A) समर्पित गजल सन किछु (भीमनाथ झा, रामलोचन ठाकुर, अजित आज़ाद, शेफालिका वर्मा, सकेतानंद) — सूचकांक पंक्ति 2926मे गंगेश गुंजनक प्रविष्टि “समर्पित गजल सन किछु (भीमनाथ झा, रामलोचन ठाकुर, अजित आज़ाद, शेफालिका वर्मा, सकेतानंद)” रूपमे देल अछि।
६७८. (B) पद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकें “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।
६७९. (C) गजल — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “गजल” अछि।
६८०. (D) साहित्य अकादेमी पुरस्कार — टिप्पणीक पहिल संकेत “साहित्य अकादेमी पुरस्कार” अछि।
६८१. (A) साहित्य अकादेमी पुरस्कार — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “साहित्य अकादेमी पुरस्कार” रूपमे देखाइत अछि।
६८२. (B) लेखक गंगेश गुंजन, विधा पद्य, उप-विधा गजल — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकें एक साथ रखैत अछि।
६८३. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककें केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।
६८४. (D) ई पाठ गजलक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकें स्पष्ट करैत अछि।
६८५. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।
६८६. (B) खण्ड 4235, सूचकांक पंक्ति 2926मे गंगेश गुंजनक “समर्पित गजल सन किछु (भीमनाथ झा, रामलोचन ठाकुर, अजित आज़ाद, शेफालिका वर्मा, सकेतानंद)” प्रविष्टि पद्य, गजल आ “साहित्य अकादेमी पुरस्कार” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 32क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकें प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।
६८७. (A) स्वतंत्रता-दिवस २०१० — सूचकांक पंक्ति 2927मे गंगेश गुंजनक प्रविष्टि “स्वतंत्रता-दिवस २०१०” रूपमे देल अछि।
६८८. (B) पद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकें “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।
६८९. (C) कविता — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “कविता” अछि।
६९०. (D) साहित्य अकादेमी पुरस्कार — टिप्पणीक पहिल संकेत “साहित्य अकादेमी पुरस्कार” अछि।
६९१. (A) साहित्य अकादेमी पुरस्कार — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “साहित्य अकादेमी पुरस्कार” रूपमे देखाइत अछि।
६९२. (B) लेखक गंगेश गुंजन, विधा पद्य, उप-विधा कविता — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकें एक साथ रखैत अछि।

६९३. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

६९४. (D) ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

६९५. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

६९६. (B) खण्ड 4236, सूचकांक पंक्ति 2927मे गंगेश गुंजनक “स्वतंत्रता-दिवस २०१०” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “साहित्य अकादेमी पुरस्कार” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 32क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

अध्याय ४ : विदेह-सदेह ३३ — विस्तृत अध्ययन

खण्ड २० : विदेह-सदेह ३३ — हाइकू समीक्षाशास्त्र

१. हाइकू कोन देशक काव्य-विधा थिक?
(A) जापान
(B) चीन
(C) भारत
(D) कोनो नहि
२. हाइकूकें काव्य-विधाक रूप देनिहार जापानी कवि के छथि?
(A) मात्सुओ बासो
(B) कोनो भारतीय कवि
(C) गजेन्द्र ठाकुर
(D) कोनो नहि
३. हाइकू कतेक अक्षरमे लिखल जाइत अछि?
(A) १७ अक्षर (५-७-५)
(B) दस अक्षर
(C) बीस अक्षर
(D) कोनो नहि
४. गजेन्द्र ठाकुर अनुसार हाइकू लेल कोन भाषा सर्वाधिक उपयुक्त?
(A) मैथिली (आ भारतीय संस्कृताश्रित लिपि)
(B) केवल अंग्रेजी
(C) केवल जापानी
(D) कोनो नहि
५. जापानमे ईश्वर-आह्वान प्रार्थना कोन स्वरूपमे होइत छल, जे बादमे टनका/वाका बनल?
(A) ५-७-५-७-७
(B) ५-७-५
(C) ७-७-५
(D) कोनो नहि
६. ५-७-५ आ ७-७-५ कें दू लेखक द्वारा लिखलासँ कोन नव स्वरूप बनल?
(A) रेन्गा
(B) हैबून्
(C) शेनर्यू
(D) कोनो नहि
७. हाइकूक वार्षिक गणनामे संयुक्ताक्षरकें कोना गनल जाइत अछि?
(A) एक गानू
(B) दू गानू
(C) गनल नहि जाइत
(D) कोनो नहि
८. कीर्तिलताक प्रथम पल्लवक पहिल दोहाक भाव की?
(A) अक्षररूपी स्तम्भ बिना काव्यरूपी मंच नहि बान्हल जा सकैत
(B) केवल इतिहास
(C) निरर्थक
(D) कोनो नहि

९. साहित्यिक दू मूल विधा की थिक, आलेख अनुसार?

- (A) गद्य आ पद्य
- (B) केवल गद्य
- (C) केवल पद्य
- (D) कोनो नहि

१०. छन्दक कतेक प्रकार अछि?

- (A) दू (मात्रिक आ वार्णिक)
- (B) तीन
- (C) एक
- (D) चारि

११. वेदमे कोन प्रकारक छन्द अछि?

- (A) वार्णिक
- (B) मात्रिक
- (C) दुनू
- (D) कोनो नहि

१२. विदेह-सदेह ३३ क समग्र विषय की?

- (A) मैथिली हाइकू/हैकू/क्षणिका/शेनर्यू/टनका/हैबून
- (B) केवल नाटक
- (C) केवल कथा
- (D) कोनो नहि

खण्ड ६५ : विदेह-सदेह ३३ — नाटक 'अपाला आत्रेयी' (वैदिक ऋषिका)

१३. 'अपाला आत्रेयी' नाटकक मुख्य पात्र के छथि?

- (A) अपाला (ऋग्वैदिक ऋचाक लेखिका)
- (B) विद्यापति
- (C) कृशाश्व
- (D) कोनो नहि

१४. अपालाक पिता के छथि, नाटक अनुसार?

- (A) ऋषि अत्रि
- (B) कृशाश्व
- (C) गोनू झा
- (D) कोनो नहि

१५. अपालाक पति के छथि, नाटक अनुसार?

- (A) कृशाश्व
- (B) ऋषि अत्रि
- (C) कोनो नहि
- (D) विद्यापति

१६. नाटकक आरम्भिक दृश्य कतय स्थापित अछि?

- (A) आमक गाछीक मध्य (सहकार-कुञ्ज)
- (B) कोर्ट
- (C) विदेश
- (D) कोनो नहि

१७. नाटकमे अपालाकेँ कोन शारीरिक समस्या होइत अछि?

- (A) त्वचा रोग (श्वेत कुष्ठ)
- (B) दृष्टि-दोष
- (C) बधिरता
- (D) कोनो नहि

१८. नाटकक अन्तिम भागमे अपालाक रचनाक संग की होइत अछि?

- (A) ऋग्विजगणक मंत्र-संग्रहमे आधिकारिक रूपेँ सम्मिलित कएल जाइत अछि
- (B) नष्ट कएल जाइत अछि
- (C) गुप्त राखल जाइत अछि
- (D) कोनो नहि

१९. नाटकक नाटककार कोन ऐतिहासिक-सांस्कृतिक विषयक पुनर्कथन करैत छथि?

- (A) एक वैदिक-कालीन नारी-ऋषिकाक जीवन आ साहित्यिक मान्यता
- (B) आधुनिक राजनीति
- (C) विदेशी इतिहास
- (D) कोनो नहि

२०. नाटकमे प्रारम्भिक मंच-सज्जामे कोन-कोन प्रतीकात्मक वस्तुक उल्लेख अछि?

- (A) वेदी, हविर्गन्ध, साही-गोहि-गिरगिट
- (B) केवल आधुनिक उपकरण
- (C) विदेशी वस्तु
- (D) कोनो नहि

खण्ड ७२ : विदेह-सदेह ३३ — वैदिक नाटक (दधीची-मधुविद्या प्रसंग)

२१. एहि नाटकक मुख्य ऋषि-पात्र के छथि?

- (A) दध्यङ्ग आथर्वन दधीची
- (B) अत्रि
- (C) कृशाश्व
- (D) कोनो नहि

२२. नाटकमे दधीची केकरा 'मधु-विद्या'क शिक्षा देबाक प्रसंग अछि?

- (A) इन्द्र
- (B) आश्विनौ (दुनू)
- (C) वृत्र
- (D) कोनो नहि

२३. नाटकक एक दृश्यमे आश्विनौ दधीचीकेँ की प्रस्ताव दैत छथि?

- (A) हुनकर मस्तक काटि कऽ घोड़ाक मस्तक लगाएब
- (B) धन देब
- (C) विदेश-यात्रा कराएब
- (D) कोनो नहि

२४. नाटकमे इन्द्र दधीचीक संग की करैत छथि, जखन ओ रहस्य जानि क्रोधित होइत छथि?

- (A) वज्रसँ गरदनि काटि दैत छथि
- (B) क्षमा करैत छथि
- (C) देश-निकाला दैत छथि
- (D) कोनो नहि

२५. नाटकक अन्तिम दृश्यमे इन्द्र केकर आक्रमणक विरुद्ध सहायता मँगैत छथि?

- (A) वृत्र आ शम्बर
- (B) रावण
- (C) कंस
- (D) कोनो नहि

२६. दधीची इन्द्रकेँ कोन अस्त्र-निर्माणक स्थान बताबैत छथि?

- (A) शर्यणा (कुरुक्षेत्र लग एक जलाशय)
- (B) हिमालय
- (C) गंगा-तट
- (D) कोनो नहि

२७. नाटकक अन्त्यमे सूत्रधारक टिप्पणी की संकेत दैत अछि?

- (A) वैदिक कथाकेँ बादमे पौराणिक लोकनि अर्थ-परिवर्तन कऽ देलनि
- (B) कथाक कोनो परिवर्तन नहि भेल
- (C) कोनो नहि
- (D) आधुनिक कथा

२८. नाटकक समग्र विषय की कहल जा सकैत अछि?

- (A) ज्ञान-दान, बलिदान आ सत्यनिष्ठाक वैदिक आख्यानक नाट्य-रूपान्तरण
- (B) केवल युद्ध-गाथा
- (C) हास्य-नाटक
- (D) कोनो नहि

खण्ड ८४ : विदेह-सदेह ३३ — दूर्वाक्षत मंत्र (शुक्ल यजुर्वेद २२/२२) समीक्षा

२९. दूर्वाक्षत आशीर्वचन मंत्र कोन वेदसँ लेल गेल अछि?

- (A) शुक्ल यजुर्वेद, अध्याय २२, मंत्र २२
- (B) ऋग्वेद
- (C) अथर्ववेद
- (D) कोनो नहि

३०. दूर्वाक्षत मंत्र भारतमे सौँसे कोन रूपमे मंत्रोच्चारित होइत अछि?

- (A) देशभक्ति गीतक रूपमे
- (B) विवाह गीतक रूपमे
- (C) शोक गीतक रूपमे
- (D) कोनो नहि

३१. मिथिलामे दूर्वाक्षत मंत्रक अंतमे कोन अतिरिक्त पाँति जोड़ल जाइत अछि, समीक्षा अनुसार?

- (A) “मंत्रार्था सिद्धयः संतु मनोरथाः। शत्रूणां बुद्धिनाशोऽस्तु मित्राणामुदयस्तव” आदि
- (B) केवल ॐ शांति
- (C) कोनो अतिरिक्त पाँति नहि
- (D) कोनो नहि

३२. दूर्वाक्षत मंत्रमे कोन अलंकार अछि, समीक्षा अनुसार?

- (A) वाचकलुप्तोपमालङ्कार
- (B) उपमा अलंकार
- (C) रूपक अलंकार
- (D) कोनो नहि

३३. ग्रिफिथक अनुवाद अनुसार दूर्वाक्षत मंत्रमे कोन-कोन कामनाक उल्लेख अछि?

- (A) नीक धार्मिक विद्या बला ब्राह्मण, वीर राजन्य, तीरंदाज, दूध दैबाली गाय, उद्यमी नारी
- (B) केवल धन-समृद्धि
- (C) केवल युद्ध-विजय
- (D) कोनो नहि

३४. मायानन्द मिश्रक उपन्यास 'पुरोहित' कतेक सर्गमे विभक्त अछि?

- (A) तेरह सर्ग
- (B) दस सर्ग
- (C) पाँच सर्ग
- (D) कोनो नहि

३५. 'पुरोहित' उपन्यासक प्रथम सर्ग कतयसँ शुरू होइत अछि, समीक्षा अनुसार?

- (A) दक्षिण पांचालक कांपिल्य नगरसँ
- (B) मिथिलासँ
- (C) हरियूपियासँ
- (D) कोनो नहि

खण्ड ८५ : विदेह-सदेह ३३ — गजल-शास्त्रक शब्दावली (रदीफ, काफिया, मतला, मकता)

३६. गजलमे 'रदीफ' की होइत अछि, आशीष अनचिन्हारक आलेख अनुसार?

- (A) शेरक दुनू पाँतिमे कौमन (समान) शब्द
- (B) शेरक पहिल शब्द
- (C) शेरक तुकान्त शब्द
- (D) कोनो नहि

३७. गजलमे 'काफिया' की होइत अछि, आलेख अनुसार?

- (A) तुकान्त शब्द, जकर तुक शब्दक अंतिमसँ पता लागैत अछि
- (B) गजलक प्रथम पाँति
- (C) शाइरक उपनाम
- (D) कोनो नहि

३८. गजलमे 'मतला' की होइत अछि, आलेख अनुसार?

- (A) गजलक पहिल शेर, जकर दुनू पाँतिमे रदीफ आ काफिया दुनू हो
- (B) गजलक अंतिम शेर
- (C) गजलक मध्यवर्ती शेर
- (D) कोनो नहि

३९. गजलमे 'मकता' की होइत अछि, आलेख अनुसार?

- (A) गजलक अंतिम शेर, जाहिमे शाइर अपन नाम-उपनाम (तखल्लुस) क प्रयोग करथि
- (B) गजलक प्रथम शेर
- (C) गजलक रदीफ
- (D) कोनो नहि

४०. मकताक संबंधमे आलेख अनुसार शाइरकेँ कोन नियमक पालन करबाक चाही?

- (A) सभ गजलमे अपन नाम वा उपनामसँ एकेटाक प्रयोग करब
- (B) हर गजलमे भिन्न-भिन्न नामक प्रयोग करब
- (C) मकता बिनु गजल नहि बनाएब
- (D) कोनो नहि

४१. काफ़ियाक संबंधमे आलेख अनुसार 'र' वर्णक उच्चारण कोन वर्णक बराबर मानल जाइत अछि?

- (A) 'ड़'
- (B) 'ल'
- (C) 'न'
- (D) कोनो नहि

खण्ड ८९ : विदेह-सदेह ३३ — गोनू झाक कालखण्ड-विवाद आ प्रेमशंकर सिंहक समीक्षा-संग्रह

४२. पञ्जीमे उपलब्ध लिखित अभिलेखन अनुसार गोनू झा विद्यापतिसँ कतेक पीढ़ी पहिने भेल अभिलेखित अछि, समीक्षा अनुसार?

- (A) दस पीढ़ी पहिने
- (B) एक पीढ़ी पहिने
- (C) बीस पीढ़ी पहिने
- (D) कोनो नहि

४३. वीरेन्द्र झा अनुसार गोनू झा कतेक साल पहिने भेला?

- (A) ५०० साल पहिने
- (B) ३०० साल पहिने
- (C) १००० साल पहिने
- (D) कोनो नहि

४४. तारानन्द वियोगी अनुसार गोनू झा कतेक साल पहिने भेल मानल जाइत छथि?

- (A) ३०० साल पहिने
- (B) ५०० साल पहिने
- (C) १०० साल पहिने
- (D) कोनो नहि

४५. विभा रानीक हिन्दी पोथीमे कुणाल गोनू झाकेँ कोन राजाक राज्यमे भेल मानैत छथि?

- (A) भव सिंहक राज्यमे (१४म शताब्दी)
- (B) हरि सिंहक राज्यमे
- (C) नान्यदेवक राज्यमे
- (D) कोनो नहि

४६. गोनू झापर साहित्यिक चर्चामे एक भ्रामक तथ्य की उजागर कएल गेल अछि, समीक्षा अनुसार?

- (A) साम्प्रदायिक लेखक गोनूक कथामे मुस्लिम तहसीलदारक अत्याचार घोंसिया रहल छथि, जखन कि गोनूक समयमे मुस्लिम मिथिलामे रहबे नहि करथि
- (B) गोनू झा संस्कृत नहि जनैत छलाह
- (C) गोनू झा कोनो ऐतिहासिक व्यक्ति नहि छथि
- (D) कोनो नहि

४७. प्रेमशंकर सिंहक निबन्ध-संग्रह 'मैथिली भाषा साहित्य : बीसम शताब्दी' मे कोन-कोन कालखण्डक चर्चा भेल अछि?

- (A) २०म शताब्दी आ २१म शताब्दीक पहिल दशक
- (B) केवल १९म शताब्दी
- (C) केवल स्वतंत्रता-पूर्व काल
- (D) कोनो नहि

४८. प्रेमशंकर सिंहक संग्रहमे 'संस्मरण साहित्य' खण्डमे केकर संस्मरणक चर्चा भेल अछि?

- (A) मणिपद्म (हुनकासँ भेंट भेल छल)
- (B) जयकान्त मिश्र
- (C) हरिमोहन झा
- (D) कोनो नहि

४९. समीक्षक अनुसार जगदीश प्रसाद मण्डलक योगदानक कारणे मैथिली साहित्यक इतिहास कोन दू खण्डमे पाठित होएत?

- (A) “जगदीश प्रसाद मण्डलसँ पूर्व” आ “जगदीश प्रसाद मण्डलसँ”
- (B) “स्वतंत्रता-पूर्व” आ “स्वतंत्रता-पश्चात”
- (C) “प्राचीन” आ “आधुनिक”
- (D) कोनो नहि

५०. विदेहमे जगदीश प्रसाद मण्डलक कतेक उपन्यास आ कतेक कथा ई-प्रकाशित भेल अछि, समीक्षा अनुसार?

- (A) पाँचटा उपन्यास, एकटा नाटक, दू दर्जनसँ बेशी कथा
- (B) एकटा उपन्यास मात्र
- (C) दस उपन्यास
- (D) कोनो नहि

खण्ड 4237 : विदेह-सदेह 33 — गजेन्द्र ठाकूर: मैथिली हाइकू/ हैकू/ क्षणिका/ शेनयू/ टनका, हैबून, अपाला आत्रेयी, दानवीर दधीची, बालकथा- ब्राह्मण आ ठाकूरक कथा, राजा अनसारी, राजा ढोलन, बगियाक गाछ, ज्योति पँजियार, राजा सलहसे, बहुरा गोद्विन नटूआदयाल, महुआ घटवारिन, डाकू रौहिणेय, मूर्खाधिराज, कौवा आ पूढूदी, नैका बनिजारा, डोकी डोका, रघुनी मरर, जट-जटिन, बचू, भाट-भाटिन, गांगोदेवीक भगता, बड़ सुख सार पाओल तुअ तीरे, छेछन, गरीबन बाबा, लालमैन बाबा, गोनू झा आ दस ठोप बाबा, संकर्षण (नाटक), सर-समाज, काल-स्थान विस्थापन, सर्वशिक्षा अभियान, जातिवादी मराठी, थेथर मनुक्ख, बहुपत्नी विवाह आ हिजड़ा, स्त्री-बेटी, बिआह आ गोरलगाइ, प्रतिभा, जाति- पाति, अनुकम्पाक नोकरी, नूतन मीडिआ, मिथिलाक उद्योग, मिथिलाक उद्योग-२, बादि, भूख आ प्रवास, नव-सामन्त, बाणवीर, तस्कर, सिद्ध महावीर, शब्दशास्त्रम्, दिल्ली, सहस्रबाद्विन (उपन्यास), मायानन्द

५१. खण्ड 4237, सूचकांक पंक्ति 2928: गजेन्द्र ठाकूरक “मैथिली हाइकू/ हैकू/ क्षणिका/ शेनयू/ टनका, हैबून, अपाला आत्रेयी, दानवीर दधीची, बालकथा- ब्राह्मण आ ठाकूरक कथा, राजा अनसारी, राजा ढोलन, बगियाक गाछ, ज्योति पँजियार, राजा सलहसे, बहुरा गोद्विन नटूआदयाल, महुआ घटवारिन, डाकू रौहिणेय, मूर्खाधिराज, कौवा आ पूढूदी, नैका बनिजारा, डोकी डोका, रघुनी मरर, जट-जटिन, बचू, भाट-भाटिन, गांगोदेवीक भगता, बड़ सुख सार पाओल तुअ तीरे, छेछन, गरीबन बाबा, लालमैन बाबा, गोनू झा आ दस ठोप बाबा, संकर्षण (नाटक), सर-समाज, काल-स्थान विस्थापन, सर्वशिक्षा अभियान, जातिवादी मराठी, थेथर मनुक्ख, बहुपत्नी विवाह आ हिजड़ा, स्त्री-बेटी, बिआह आ गोरलगाइ, प्रतिभा, जाति- पाति, अनुकम्पाक नोकरी, नूतन मीडिआ, मिथिलाक उद्योग, मिथिलाक उद्योग-२, बादि, भूख आ प्रवास, नव-सामन्त, बाणवीर, तस्कर, सिद्ध महावीर, शब्दशास्त्रम्, दिल्ली, सहस्रबाद्विन (उपन्यास), मायानन्द” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) मैथिली हाइकू/ हैकू/ क्षणिका/ शेनयू/ टनका, हैबून, अपाला आत्रेयी, दानवीर दधीची, बालकथा- ब्राह्मण आ ठाकूरक कथा, राजा अनसारी, राजा ढोलन, बगियाक गाछ, ज्योति पँजियार, राजा सलहसे, बहुरा गोद्विन नटूआदयाल, महुआ घटवारिन, डाकू रौहिणेय, मूर्खाधिराज, कौवा आ पूढूदी, नैका बनिजारा, डोकी डोका, रघुनी मरर, जट-जटिन, बचू, भाट-भाटिन, गांगोदेवीक भगता, बड़ सुख सार पाओल तुअ तीरे, छेछन, गरीबन बाबा, लालमैन बाबा, गोनू झा आ दस ठोप बाबा, संकर्षण (नाटक), सर-समाज, काल-स्थान विस्थापन, सर्वशिक्षा अभियान, जातिवादी मराठी, थेथर मनुक्ख, बहुपत्नी विवाह आ हिजड़ा, स्त्री-बेटी, बिआह आ गोरलगाइ, प्रतिभा, जाति- पाति, अनुकम्पाक नोकरी, नूतन मीडिआ, मिथिलाक उद्योग, मिथिलाक उद्योग-२, बादि, भूख आ प्रवास, नव-सामन्त, बाणवीर, तस्कर, सिद्ध महावीर, शब्दशास्त्रम्, दिल्ली, सहस्रबाद्विन (उपन्यास), मायानन्द
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

५२. खण्ड 4237, सूचकांक पंक्ति 2928: गजेन्द्र ठाकूरक “मैथिली हाइकू/ हैकू/ क्षणिका/ शेनयू/ टनका, हैबून, अपाला आत्रेयी, दानवीर दधीची, बालकथा- ब्राह्मण आ ठाकूरक कथा, राजा अनसारी, राजा ढोलन, बगियाक गाछ, ज्योति पँजियार, राजा सलहसे, बहुरा गोद्विन नटूआदयाल, महुआ घटवारिन, डाकू रौहिणेय, मूर्खाधिराज, कौवा आ पूहूँदी, नैका बनिजारा, डोकी डोका, रघुनी मरर, जट-जटिन, बचू, भाट-भाटिन, गांगोदेवीक भगता, बड़ सुख सार पाओल तुअ तीरे, छेछन, गरीबन बाबा, लालमैन बाबा, गोनू झा आ दस ठोप बाबा, संकर्षण (नाटक), सर-समाज, काल-स्थान विस्थापन, सर्वशिक्षा अभियान, जातिवादी मराठी, थेथर मनुक्ख, बहुपत्नी विवाह आ हिजड़ा, स्त्री-बेटी, बिआह आ गोरलगाइ, प्रतिभा, जाति- पाति, अनुकम्पाक नोकरी, नूतन मीडिआ, मिथिलाक उद्योग, मिथिलाक उद्योग-२, बादि, भूख आ प्रवास, नव-सामन्त, बाणवीर, तस्कर, सिद्ध महावीर, शब्दशास्त्रम्, दिल्ली, सहस्रबाद्विन (उपन्यास), मायानन्द”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) गद्य
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

५३. खण्ड 4237, सूचकांक पंक्ति 2928: गजेन्द्र ठाकूरक “मैथिली हाइकू/ हैकू/ क्षणिका/ शेनयू/ टनका, हैबून, अपाला आत्रेयी, दानवीर दधीची, बालकथा- ब्राह्मण आ ठाकूरक कथा, राजा अनसारी, राजा ढोलन, बगियाक गाछ, ज्योति पँजियार, राजा सलहसे, बहुरा गोद्विन नटूआदयाल, महुआ घटवारिन, डाकू रौहिणेय, मूर्खाधिराज, कौवा आ पूहूँदी, नैका बनिजारा, डोकी डोका, रघुनी मरर, जट-जटिन, बचू, भाट-भाटिन, गांगोदेवीक भगता, बड़ सुख सार पाओल तुअ तीरे, छेछन, गरीबन बाबा, लालमैन बाबा, गोनू झा आ दस ठोप बाबा, संकर्षण (नाटक), सर-समाज, काल-स्थान विस्थापन, सर्वशिक्षा अभियान, जातिवादी मराठी, थेथर मनुक्ख, बहुपत्नी विवाह आ हिजड़ा, स्त्री-बेटी, बिआह आ गोरलगाइ, प्रतिभा, जाति- पाति, अनुकम्पाक नोकरी, नूतन मीडिआ, मिथिलाक उद्योग, मिथिलाक उद्योग-२, बादि, भूख आ प्रवास, नव-सामन्त, बाणवीर, तस्कर, सिद्ध महावीर, शब्दशास्त्रम्, दिल्ली, सहस्रबाद्विन (उपन्यास), मायानन्द”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) हाइकू/कथा/नाटक/निबन्ध/उपन्यास
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

५४. खण्ड 4237, सूचकांक पंक्ति 2928: गजेन्द्र ठाकूरक “मैथिली हाइकू/ हैकू/ क्षणिका/ शेनयू/ टनका, हैबून, अपाला आत्रेयी, दानवीर दधीची, बालकथा- ब्राह्मण आ ठाकूरक कथा, राजा अनसारी, राजा ढोलन, बगियाक गाछ, ज्योति पँजियार, राजा सलहसे, बहुरा गोद्विन नटूआदयाल, महुआ घटवारिन, डाकू रौहिणेय, मूर्खाधिराज, कौवा आ पूहूँदी, नैका बनिजारा, डोकी डोका, रघुनी मरर, जट-जटिन, बचू, भाट-भाटिन, गांगोदेवीक भगता, बड़ सुख सार पाओल तुअ तीरे, छेछन, गरीबन बाबा, लालमैन बाबा, गोनू झा आ दस ठोप बाबा, संकर्षण (नाटक), सर-समाज, काल-स्थान विस्थापन, सर्वशिक्षा अभियान, जातिवादी मराठी, थेथर मनुक्ख, बहुपत्नी विवाह आ हिजड़ा, स्त्री-बेटी, बिआह आ गोरलगाइ, प्रतिभा, जाति- पाति, अनुकम्पाक नोकरी, नूतन मीडिआ, मिथिलाक उद्योग, मिथिलाक उद्योग-२, बादि, भूख आ प्रवास, नव-सामन्त, बाणवीर, तस्कर, सिद्ध महावीर, शब्दशास्त्रम्, दिल्ली, सहस्रबाद्विन (उपन्यास), मायानन्द” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) मैथिली हाइकू/ हैकू/ क्षणिका/ शेनयू/ टनका, हैबून, अपाला आत्रेयी, दानवीर दधीची, बालकथा- ब्राह्मण आ ठाकूरक कथा, राजा अनसारी, राजा ढोलन, बगियाक गाछ, ज्योति पँजियार, राजा सलहसे, बहुरा गोद्विन नटूआदयाल, महुआ घटवारिन, डाकू रौहिणेय, मूर्खाधिराज, कौवा आ पूहूँदी, नैका बनिजारा, डोकी डोका, रघुनी मरर, जट-जटिन, बचू, भाट-भाटिन, गांगोदेवीक भगता, बड़ सुख सार पाओल तुअ तीरे, छेछन, गरीबन बाबा, लालमैन बाबा, गोनू झा आ दस ठोप बाबा, संकर्षण (नाटक), सर-समाज, काल-स्थान विस्थापन, सर्वशिक्षा अभियान, जातिवादी मराठी, थेथर मनुक्ख, बहुपत्नी विवाह आ हिजड़ा, स्त्री-बेटी, बिआह आ गोरलगाइ, प्रतिभा, जाति- पाति, अनुकम्पाक नोकरी, नूतन मीडिआ, मिथिलाक उद्योग, मिथिलाक उद्योग-२, बादि, भूख आ प्रवास, नव-सामन्त, बाणवीर, तस्कर, सिद्ध महावीर, शब्दशास्त्रम्, दिल्ली, सहस्रबाद्विन (उपन्यास), मायानन्द

५५. खण्ड 4237, सूचकांक पंक्ति 2928: गजेन्द्र ठाकूरक “मैथिली हाइकू/ हैकू/ क्षणिका/ शेनयू/ टनका, हैबून, अपाला आत्रेयी, दानवीर दधीची, बालकथा- ब्राह्मण आ ठाकूरक कथा, राजा अनसारी, राजा ढोलन, बगियाक गाछ, ज्योति पँजियार, राजा सलहसे, बहुरा गोद्विन नटूआदयाल, महुआ घटवारिन, डाकू रौहिण्य, मूर्खाधिराज, कौवा आ पूढूदी, नैका बनिजारा, डोकी डोका, रघुनी मरर, जट-जटिन, बचू, भाट-भाटिन, गांगोदेवीक भगता, बड़ सुख सार पाओल तुअ तीरे, छेछन, गरीबन बाबा, लालमैन बाबा, गोनू झा आ दस ठोप बाबा, संकर्षण (नाटक), सर-समाज, काल-स्थान विस्थापन, सर्वशिक्षा अभियान, जातिवादी मराठी, थेथर मनुक्ख, बहुपत्नी विवाह आ हिजड़ा, स्त्री-बेटी, बिआह आ गोरलगाइ, प्रतिभा, जाति- पाति, अनुकम्पाक नोकरी, नूतन मीडिआ, मिथिलाक उद्योग, मिथिलाक उद्योग-२, बादि, भूख आ प्रवास, नव-सामन्त, बाणवीर, तस्कर, सिद्ध महावीर, शब्दशास्त्रम्, दिल्ली, सहस्रबाद्विन (उपन्यास), मायानन्द” प्रविष्टि विदेह-सदेह 33मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) मैथिली हाइकू/ हैकू/ क्षणिका/ शेनयू/ टनका, हैबून, अपाला आत्रेयी, दानवीर दधीची, बालकथा- ब्राह्मण आ ठाकूरक कथा, राजा अनसारी, राजा ढोलन, बगियाक गाछ, ज्योति पँजियार, राजा सलहसे, बहुरा गोद्विन नटूआदयाल, महुआ घटवारिन, डाकू रौहिण्य, मूर्खाधिराज, कौवा आ पूढूदी, नैका बनिजारा, डोकी डोका, रघुनी मरर, जट-जटिन, बचू, भाट-भाटिन, गांगोदेवीक भगता, बड़ सुख सार पाओल तुअ तीरे, छेछन, गरीबन बाबा, लालमैन बाबा, गोनू झा आ दस ठोप बाबा, संकर्षण (नाटक), सर-समाज, काल-स्थान विस्थापन, सर्वशिक्षा अभियान, जातिवादी मराठी, थेथर मनुक्ख, बहुपत्नी विवाह आ हिजड़ा, स्त्री-बेटी, बिआह आ गोरलगाइ, प्रतिभा, जाति- पाति, अनुकम्पाक नोकरी, नूतन मीडिआ, मिथिलाक उद्योग, मिथिलाक उद्योग-२, बादि, भूख आ प्रवास, नव-सामन्त, बाणवीर, तस्कर, सिद्ध महावीर, शब्दशास्त्रम्, दिल्ली, सहस्रबाद्विन (उपन्यास), मायानन्द
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

५६. खण्ड 4237, सूचकांक पंक्ति 2928: गजेन्द्र ठाकूरक “मैथिली हाइकू/ हैकू/ क्षणिका/ शेनयू/ टनका, हैबून, अपाला आत्रेयी, दानवीर दधीची, बालकथा- ब्राह्मण आ ठाकूरक कथा, राजा अनसारी, राजा ढोलन, बगियाक गाछ, ज्योति पँजियार, राजा सलहसे, बहुरा गोद्विन नटूआदयाल, महुआ घटवारिन, डाकू रौहिण्य, मूर्खाधिराज, कौवा आ पूढूदी, नैका बनिजारा, डोकी डोका, रघुनी मरर, जट-जटिन, बचू, भाट-भाटिन, गांगोदेवीक भगता, बड़ सुख सार पाओल तुअ तीरे, छेछन, गरीबन बाबा, लालमैन बाबा, गोनू झा आ दस ठोप बाबा, संकर्षण (नाटक), सर-समाज, काल-स्थान विस्थापन, सर्वशिक्षा अभियान, जातिवादी मराठी, थेथर मनुक्ख, बहुपत्नी विवाह आ हिजड़ा, स्त्री-बेटी, बिआह आ गोरलगाइ, प्रतिभा, जाति- पाति, अनुकम्पाक नोकरी, नूतन मीडिआ, मिथिलाक उद्योग, मिथिलाक उद्योग-२, बादि, भूख आ प्रवास, नव-सामन्त, बाणवीर, तस्कर, सिद्ध महावीर, शब्दशास्त्रम्, दिल्ली, सहस्रबाद्विन (उपन्यास), मायानन्द”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककें की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक गजेन्द्र ठाकूर, विधा गद्य, उप-विधा हाइकू/कथा/नाटक/निबन्ध/उपन्यास
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

५७. खण्ड 4237, सूचकांक पंक्ति 2928: गजेन्द्र ठाकूरक “मैथिली हाइकू/ हैकू/ क्षणिका/ शेनयू/ टनका, हैबून, अपाला आत्रेयी, दानवीर दधीची, बालकथा- ब्राह्मण आ ठाकूरक कथा, राजा अनसारी, राजा ढोलन, बगियाक गाछ, ज्योति पँजियार, राजा सलहसे, बहुरा गोद्विन नटूआदयाल, महुआ घटवारिन, डाकू रौहिण्य, मूर्खाधिराज, कौवा आ पूढूदी, नैका बनिजारा, डोकी डोका, रघुनी मरर, जट-जटिन, बचू, भाट-भाटिन, गांगोदेवीक भगता, बड़ सुख सार पाओल तुअ तीरे, छेछन, गरीबन बाबा, लालमैन बाबा, गोनू झा आ दस ठोप बाबा, संकर्षण (नाटक), सर-समाज, काल-स्थान विस्थापन, सर्वशिक्षा अभियान, जातिवादी मराठी, थेथर मनुक्ख, बहुपत्नी विवाह आ हिजड़ा, स्त्री-बेटी, बिआह आ गोरलगाइ, प्रतिभा, जाति- पाति, अनुकम्पाक नोकरी, नूतन मीडिआ, मिथिलाक उद्योग, मिथिलाक उद्योग-२, बादि, भूख आ प्रवास, नव-सामन्त, बाणवीर, तस्कर, सिद्ध महावीर, शब्दशास्त्रम्, दिल्ली, सहस्रबाद्विन (उपन्यास), मायानन्द” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

५८. खण्ड 4237, सूचकांक पंक्ति 2928: गजेन्द्र ठाकूरक “मैथिली हाइकू/ हैकू/ क्षणिका/ शेनयू/ टनका, हैबून, अपाला आत्रेयी, दानवीर दधीची, बालकथा- ब्राह्मण आ ठाकूरक कथा, राजा अनसारी, राजा ढोलन, बगियाक गाछ, ज्योति पँजियार, राजा सलहसे, बहुरा गोद्विन नटूआदयाल, महुआ घटवारिन, डाकू रौहिणेय, मूर्खाधिराज, कौवा आ पूछूँदी, नैका बनिजारा, डोकी डोका, रघुनी मरर, जट-जटिन, बचू, भाट-भाटिन, गांगोदेवीक भगता, बड़ सुख सार पाओल तुअ तीरे, छेछन, गरीबन बाबा, लालमैन बाबा, गोनू झा आ दस ठोप बाबा, संकर्षण (नाटक), सर-समाज, काल-स्थान विस्थापन, सर्वशिक्षा अभियान, जातिवादी मराठी, थेथर मनुक्ख, बहुपत्नी विवाह आ हिजड़ा, स्त्री-बेटी, बिआह आ गोरलगाइ, प्रतिभा, जाति- पाति, अनुकम्पाक नोकरी, नूतन मीडिआ, मिथिलाक उद्योग, मिथिलाक उद्योग-२, बादि, भूख आ प्रवास, नव-सामन्त, बाणवीर, तस्कर, सिद्ध महावीर, शब्दशास्त्रम्, दिल्ली, सहस्रबाद्विन (उपन्यास), मायानन्द”कें विदेह-सदेह 33क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ हाइकू/कथा/नाटक/निबन्ध/उपन्यासक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

५९. खण्ड 4237, सूचकांक पंक्ति 2928: गजेन्द्र ठाकूरक “मैथिली हाइकू/ हैकू/ क्षणिका/ शेनयू/ टनका, हैबून, अपाला आत्रेयी, दानवीर दधीची, बालकथा- ब्राह्मण आ ठाकूरक कथा, राजा अनसारी, राजा ढोलन, बगियाक गाछ, ज्योति पँजियार, राजा सलहसे, बहुरा गोद्विन नटूआदयाल, महुआ घटवारिन, डाकू रौहिणेय, मूर्खाधिराज, कौवा आ पूछूँदी, नैका बनिजारा, डोकी डोका, रघुनी मरर, जट-जटिन, बचू, भाट-भाटिन, गांगोदेवीक भगता, बड़ सुख सार पाओल तुअ तीरे, छेछन, गरीबन बाबा, लालमैन बाबा, गोनू झा आ दस ठोप बाबा, संकर्षण (नाटक), सर-समाज, काल-स्थान विस्थापन, सर्वशिक्षा अभियान, जातिवादी मराठी, थेथर मनुक्ख, बहुपत्नी विवाह आ हिजड़ा, स्त्री-बेटी, बिआह आ गोरलगाइ, प्रतिभा, जाति- पाति, अनुकम्पाक नोकरी, नूतन मीडिआ, मिथिलाक उद्योग, मिथिलाक उद्योग-२, बादि, भूख आ प्रवास, नव-सामन्त, बाणवीर, तस्कर, सिद्ध महावीर, शब्दशास्त्रम्, दिल्ली, सहस्रबाद्विन (उपन्यास), मायानन्द” प्रविष्टि विदेह-सदेह 33क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

६०. खण्ड 4237, सूचकांक पंक्ति 2928: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 4237, सूचकांक पंक्ति 2928मे गजेन्द्र ठाकूरक “मैथिली हाइकू/ हैकू/ क्षणिका/ शेनयू/ टनका, हैबून, अपाला आत्रेयी, दानवीर दधीची, बालकथा- ब्राह्मण आ ठाकूरक कथा, राजा अनसारी, राजा ढोलन, बगियाक गाछ, ज्योति पँजियार, राजा सलहसे, बहुरा गोद्विन नटूआदयाल, महुआ घटवारिन, डाकू रौहिणेय, मूर्खाधिराज, कौवा आ पूछूँदी, नैका बनिजारा, डोकी डोका, रघुनी मरर, जट-जटिन, बचू, भाट-भाटिन, गांगोदेवीक भगता, बड़ सुख सार पाओल तुअ तीरे, छेछन, गरीबन बाबा, लालमैन बाबा, गोनू झा आ दस ठोप बाबा, संकर्षण (नाटक), सर-समाज, काल-स्थान विस्थापन, सर्वशिक्षा अभियान, जातिवादी मराठी, थेथर मनुक्ख, बहुपत्नी विवाह आ हिजड़ा, स्त्री-बेटी, बिआह आ गोरलगाइ, प्रतिभा, जाति- पाति, अनुकम्पाक नोकरी, नूतन मीडिआ, मिथिलाक उद्योग, मिथिलाक उद्योग-२, बादि, भूख आ प्रवास, नव-सामन्त, बाणवीर, तस्कर, सिद्ध महावीर, शब्दशास्त्रम्, दिल्ली, सहस्रबाद्विन (उपन्यास), मायानन्द” प्रविष्टि गद्य, हाइकू/कथा/नाटक/निबन्ध/उपन्यास आ “मैथिली हाइकू/ हैकू/ क्षणिका/ शेनयू/ टनका, हैबून, अपाला आत्रेयी, दानवीर दधीची, बालकथा- ब्राह्मण आ ठाकूरक कथा, राजा अनसारी, राजा ढोलन, बगियाक गाछ, ज्योति पँजियार, राजा सलहसे, बहुरा गोद्विन नटूआदयाल, महुआ घटवारिन, डाकू रौहिणेय, मूर्खाधिराज, कौवा आ पूछूँदी, नैका बनिजारा, डोकी डोका, रघुनी मरर, जट-जटिन, बचू, भाट-भाटिन, गांगोदेवीक भगता, बड़ सुख सार पाओल तुअ तीरे, छेछन, गरीबन बाबा, लालमैन बाबा, गोनू झा आ दस ठोप बाबा, संकर्षण (नाटक), सर-समाज, काल-स्थान विस्थापन, सर्वशिक्षा अभियान, जातिवादी मराठी, थेथर मनुक्ख, बहुपत्नी विवाह आ हिजड़ा, स्त्री-बेटी, बिआह आ गोरलगाइ, प्रतिभा, जाति- पाति, अनुकम्पाक नोकरी, नूतन मीडिआ, मिथिलाक उद्योग, मिथिलाक उद्योग-२, बादि, भूख आ प्रवास, नव-सामन्त, बाणवीर, तस्कर, सिद्ध महावीर, शब्दशास्त्रम्, दिल्ली, सहस्रबाद्विन (उपन्यास), मायानन्द” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 33क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 4238 : विदेह-सदेह 33 — गजेन्द्र ठाकूर: मिश्रक इतिहास बोध-प्रथमं शैल पुत्री च/ मंत्रपुत्र/ पुरोहित आ स्त्री-धन करे संदर्भमे, कृषि-मत्स्य शब्दावली (फील्ड-वर्कपर आधारित), विद्यापतिक बिदेसिया- पिआ देसाँतर, रमेश नारायणक “पाथरक नाव”- विनोद बिहारी वर्माक “बलानक बोनिहार ओ पल्लवी (तथा अन्य कथा)”, दूर्वाक्षत, मैथिली- सुरजापुरी- राजबंशी, बूच जीक कविताक -मार्क्सवाद, ऐतिहासिक दृष्टि, संरचनावाद, जादू-वास्तविकतावाद, उत्तर-आधुनिक, नारीवादी आ विखण्डनवाद

दृष्टिसेँ अध्ययन संगमे भारतीय सौन्दर्यशास्त्रक दृष्टिसेँ सेहो अध्ययन, स्व. श्री वैद्यनाथ मिश्र “यात्री” (१९११-१९९८), जगदीश प्रसाद मण्डल, प्रेमशंकर सिंह, सिद्ध सरहपाद आ तिब्बती लिपि (पृ. २-२१३)

६१. खण्ड 4238, सूचकांक पंक्ति 2929: गजेन्द्र ठाकूरक “मिश्रक इतिहास बोध-प्रथमं शैल पुत्री च/ मंत्रपुत्र/ पुरोहित आ स्त्री-धन करे संदर्भमे, कृषि-मत्स्य शब्दावली (फील्ड-वर्कपर आधारित), विद्यापतिक बिदेसिया- पिआ देसाँतर, रमेश नारायणक “पाथरक नाव”- विनोद बिहारी वर्माक “बलानक बोनिहार ओ पल्लवी (तथा अन्य कथा)”, दूर्वाक्षत, मैथिली- सुरजापुरी- राजबंशी, बूच जीक कविताक -माक्सवाद, ऐतिहासिक दृष्टि, संरचनावाद, जादू-वास्तविकतावाद, उत्तर-आधुनिक, नारीवादी आ विखण्डनवाद दृष्टिसेँ अध्ययन संगमे भारतीय सौन्दर्यशास्त्रक दृष्टिसेँ सेहो अध्ययन, स्व. श्री वैद्यनाथ मिश्र “यात्री” (१९११-१९९८), जगदीश प्रसाद मण्डल, प्रेमशंकर सिंह, सिद्ध सरहपाद आ तिब्बती लिपि (पृ. २-२१३)” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) मिश्रक इतिहास बोध-प्रथमं शैल पुत्री च/ मंत्रपुत्र/ पुरोहित आ स्त्री-धन करे संदर्भमे, कृषि-मत्स्य शब्दावली (फील्ड-वर्कपर आधारित), विद्यापतिक बिदेसिया- पिआ देसाँतर, रमेश नारायणक “पाथरक नाव”- विनोद बिहारी वर्माक “बलानक बोनिहार ओ पल्लवी (तथा अन्य कथा)”, दूर्वाक्षत, मैथिली- सुरजापुरी- राजबंशी, बूच जीक कविताक -माक्सवाद, ऐतिहासिक दृष्टि, संरचनावाद, जादू-वास्तविकतावाद, उत्तर-आधुनिक, नारीवादी आ विखण्डनवाद दृष्टिसेँ अध्ययन संगमे भारतीय सौन्दर्यशास्त्रक दृष्टिसेँ सेहो अध्ययन, स्व. श्री वैद्यनाथ मिश्र “यात्री” (१९११-१९९८), जगदीश प्रसाद मण्डल, प्रेमशंकर सिंह, सिद्ध सरहपाद आ तिब्बती लिपि (पृ. २-२१३)
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

६२. खण्ड 4238, सूचकांक पंक्ति 2929: गजेन्द्र ठाकूरक “मिश्रक इतिहास बोध-प्रथमं शैल पुत्री च/ मंत्रपुत्र/ पुरोहित आ स्त्री-धन करे संदर्भमे, कृषि-मत्स्य शब्दावली (फील्ड-वर्कपर आधारित), विद्यापतिक बिदेसिया- पिआ देसाँतर, रमेश नारायणक “पाथरक नाव”- विनोद बिहारी वर्माक “बलानक बोनिहार ओ पल्लवी (तथा अन्य कथा)”, दूर्वाक्षत, मैथिली- सुरजापुरी- राजबंशी, बूच जीक कविताक -माक्सवाद, ऐतिहासिक दृष्टि, संरचनावाद, जादू-वास्तविकतावाद, उत्तर-आधुनिक, नारीवादी आ विखण्डनवाद दृष्टिसेँ अध्ययन संगमे भारतीय सौन्दर्यशास्त्रक दृष्टिसेँ सेहो अध्ययन, स्व. श्री वैद्यनाथ मिश्र “यात्री” (१९११-१९९८), जगदीश प्रसाद मण्डल, प्रेमशंकर सिंह, सिद्ध सरहपाद आ तिब्बती लिपि (पृ. २-२१३)”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) गद्य
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

६३. खण्ड 4238, सूचकांक पंक्ति 2929: गजेन्द्र ठाकूरक “मिश्रक इतिहास बोध-प्रथमं शैल पुत्री च/ मंत्रपुत्र/ पुरोहित आ स्त्री-धन करे संदर्भमे, कृषि-मत्स्य शब्दावली (फील्ड-वर्कपर आधारित), विद्यापतिक बिदेसिया- पिआ देसाँतर, रमेश नारायणक “पाथरक नाव”- विनोद बिहारी वर्माक “बलानक बोनिहार ओ पल्लवी (तथा अन्य कथा)”, दूर्वाक्षत, मैथिली- सुरजापुरी- राजबंशी, बूच जीक कविताक -माक्सवाद, ऐतिहासिक दृष्टि, संरचनावाद, जादू-वास्तविकतावाद, उत्तर-आधुनिक, नारीवादी आ विखण्डनवाद दृष्टिसेँ अध्ययन संगमे भारतीय सौन्दर्यशास्त्रक दृष्टिसेँ सेहो अध्ययन, स्व. श्री वैद्यनाथ मिश्र “यात्री” (१९११-१९९८), जगदीश प्रसाद मण्डल, प्रेमशंकर सिंह, सिद्ध सरहपाद आ तिब्बती लिपि (पृ. २-२१३)”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचना/शोध-लेख/शब्दावली
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

६४. खण्ड 4238, सूचकांक पंक्ति 2929: गजेन्द्र ठाकूरक “मिश्रक इतिहास बोध-प्रथमं शैल पुत्री च/ मंत्रपुत्र/ पुरोहित आ स्त्री-धन करे संदर्भमे, कृषि-मत्स्य शब्दावली (फील्ड-वर्कपर आधारित), विद्यापतिक बिदेसिया- पिआ देसाँतर, रमेश नारायणक “पाथरक नाव”- विनोद बिहारी वर्माक “बलानक बोनिहार ओ पल्लवी (तथा अन्य कथा)”, दूर्वाक्षत, मैथिली- सुरजापुरी- राजबंशी, बूच जीक कविताक -मार्क्सवाद, ऐतिहासिक दृष्टि, संरचनावाद, जादू-वास्तविकतावाद, उत्तर-आधुनिक, नारीवादी आ विखण्डनवाद दृष्टिसँ अध्ययन संगमे भारतीय सौन्दर्यशास्त्रक दृष्टिसँ सेहो अध्ययन, स्व. श्री वैद्यनाथ मिश्र “यात्री” (१९११-१९९८), जगदीश प्रसाद मण्डल, प्रेमशंकर सिंह, सिद्ध सरहपाद आ तिब्बती लिपि (पृ. २-२१३)” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

(D) मिश्रक इतिहास बोध-प्रथमं शैल पुत्री च/ मंत्रपुत्र/ पुरोहित आ स्त्री-धन करे संदर्भमे, कृषि-मत्स्य शब्दावली (फील्ड-वर्कपर आधारित), विद्यापतिक बिदेसिया- पिआ देसाँतर, रमेश नारायणक “पाथरक नाव”- विनोद बिहारी वर्माक “बलानक बोनिहार ओ पल्लवी (तथा अन्य कथा)”, दूर्वाक्षत, मैथिली- सुरजापुरी- राजबंशी, बूच जीक कविताक -मार्क्सवाद, ऐतिहासिक दृष्टि, संरचनावाद, जादू-वास्तविकतावाद, उत्तर-आधुनिक, नारीवादी आ विखण्डनवाद दृष्टिसँ अध्ययन संगमे भारतीय सौन्दर्यशास्त्रक दृष्टिसँ सेहो अध्ययन, स्व. श्री वैद्यनाथ मिश्र “यात्री” (१९११-१९९८), जगदीश प्रसाद मण्डल, प्रेमशंकर सिंह, सिद्ध सरहपाद आ तिब्बती लिपि (पृ. २-२१३)

६५. खण्ड 4238, सूचकांक पंक्ति 2929: गजेन्द्र ठाकूरक “मिश्रक इतिहास बोध-प्रथमं शैल पुत्री च/ मंत्रपुत्र/ पुरोहित आ स्त्री-धन करे संदर्भमे, कृषि-मत्स्य शब्दावली (फील्ड-वर्कपर आधारित), विद्यापतिक बिदेसिया- पिआ देसाँतर, रमेश नारायणक “पाथरक नाव”- विनोद बिहारी वर्माक “बलानक बोनिहार ओ पल्लवी (तथा अन्य कथा)”, दूर्वाक्षत, मैथिली- सुरजापुरी- राजबंशी, बूच जीक कविताक -मार्क्सवाद, ऐतिहासिक दृष्टि, संरचनावाद, जादू-वास्तविकतावाद, उत्तर-आधुनिक, नारीवादी आ विखण्डनवाद दृष्टिसँ अध्ययन संगमे भारतीय सौन्दर्यशास्त्रक दृष्टिसँ सेहो अध्ययन, स्व. श्री वैद्यनाथ मिश्र “यात्री” (१९११-१९९८), जगदीश प्रसाद मण्डल, प्रेमशंकर सिंह, सिद्ध सरहपाद आ तिब्बती लिपि (पृ. २-२१३)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 33मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

(A) मिश्रक इतिहास बोध-प्रथमं शैल पुत्री च/ मंत्रपुत्र/ पुरोहित आ स्त्री-धन करे संदर्भमे, कृषि-मत्स्य शब्दावली (फील्ड-वर्कपर आधारित), विद्यापतिक बिदेसिया- पिआ देसाँतर, रमेश नारायणक “पाथरक नाव”- विनोद बिहारी वर्माक “बलानक बोनिहार ओ पल्लवी (तथा अन्य कथा)”, दूर्वाक्षत, मैथिली- सुरजापुरी- राजबंशी, बूच जीक कविताक -मार्क्सवाद, ऐतिहासिक दृष्टि, संरचनावाद, जादू-वास्तविकतावाद, उत्तर-आधुनिक, नारीवादी आ विखण्डनवाद दृष्टिसँ अध्ययन संगमे भारतीय सौन्दर्यशास्त्रक दृष्टिसँ सेहो अध्ययन, स्व. श्री वैद्यनाथ मिश्र “यात्री” (१९११-१९९८), जगदीश प्रसाद मण्डल, प्रेमशंकर सिंह, सिद्ध सरहपाद आ तिब्बती लिपि (पृ. २-२१३)

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

६६. खण्ड 4238, सूचकांक पंक्ति 2929: गजेन्द्र ठाकूरक “मिश्रक इतिहास बोध-प्रथमं शैल पुत्री च/ मंत्रपुत्र/ पुरोहित आ स्त्री-धन करे संदर्भमे, कृषि-मत्स्य शब्दावली (फील्ड-वर्कपर आधारित), विद्यापतिक बिदेसिया- पिआ देसाँतर, रमेश नारायणक “पाथरक नाव”- विनोद बिहारी वर्माक “बलानक बोनिहार ओ पल्लवी (तथा अन्य कथा)”, दूर्वाक्षत, मैथिली- सुरजापुरी- राजबंशी, बूच जीक कविताक -मार्क्सवाद, ऐतिहासिक दृष्टि, संरचनावाद, जादू-वास्तविकतावाद, उत्तर-आधुनिक, नारीवादी आ विखण्डनवाद दृष्टिसँ अध्ययन संगमे भारतीय सौन्दर्यशास्त्रक दृष्टिसँ सेहो अध्ययन, स्व. श्री वैद्यनाथ मिश्र “यात्री” (१९११-१९९८), जगदीश प्रसाद मण्डल, प्रेमशंकर सिंह, सिद्ध सरहपाद आ तिब्बती लिपि (पृ. २-२१३)”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककें की मुख्य सूचना दैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) लेखक गजेन्द्र ठाकूर, विधा गद्य, उप-विधा समालोचना/शोध-लेख/शब्दावली

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

६७. खण्ड 4238, सूचकांक पंक्ति 2929: गजेन्द्र ठाकूरक “मिश्रक इतिहास बोध-प्रथमं शैल पुत्री च/ मंत्रपुत्र/ पुरोहित आ स्त्री-धन करे संदर्भमे, कृषि-मत्स्य शब्दावली (फील्ड-वर्कपर आधारित), विद्यापतिक बिदेसिया- पिआ देसाँतर, रमेश नारायणक “पाथरक नाव”- विनोद बिहारी वर्माक “बलानक बोनिहार ओ पल्लवी (तथा अन्य कथा)”, दूर्वाक्षत, मैथिली- सुरजापुरी- राजबंशी, बूच जीक कविताक -माक्सवाद, ऐतिहासिक दृष्टि, संरचनावाद, जादू-वास्तविकतावाद, उत्तर-आधुनिक, नारीवादी आ विखण्डनवाद दृष्टिसँ अध्ययन संगमे भारतीय सौन्दर्यशास्त्रक दृष्टिसँ सेहो अध्ययन, स्व. श्री वैद्यनाथ मिश्र “यात्री” (१९११-१९९८), जगदीश प्रसाद मण्डल, प्रेमशंकर सिंह, सिद्ध सरहपाद आ तिब्बती लिपि (पृ. २-२१३)” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

६८. खण्ड 4238, सूचकांक पंक्ति 2929: गजेन्द्र ठाकूरक “मिश्रक इतिहास बोध-प्रथमं शैल पुत्री च/ मंत्रपुत्र/ पुरोहित आ स्त्री-धन करे संदर्भमे, कृषि-मत्स्य शब्दावली (फील्ड-वर्कपर आधारित), विद्यापतिक बिदेसिया- पिआ देसाँतर, रमेश नारायणक “पाथरक नाव”- विनोद बिहारी वर्माक “बलानक बोनिहार ओ पल्लवी (तथा अन्य कथा)”, दूर्वाक्षत, मैथिली- सुरजापुरी- राजबंशी, बूच जीक कविताक -माक्सवाद, ऐतिहासिक दृष्टि, संरचनावाद, जादू-वास्तविकतावाद, उत्तर-आधुनिक, नारीवादी आ विखण्डनवाद दृष्टिसँ अध्ययन संगमे भारतीय सौन्दर्यशास्त्रक दृष्टिसँ सेहो अध्ययन, स्व. श्री वैद्यनाथ मिश्र “यात्री” (१९११-१९९८), जगदीश प्रसाद मण्डल, प्रेमशंकर सिंह, सिद्ध सरहपाद आ तिब्बती लिपि (पृ. २-२१३)”कें विदेह-सदेह 33क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ समालोचना/शोध-लेख/शब्दावलीक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

६९. खण्ड 4238, सूचकांक पंक्ति 2929: गजेन्द्र ठाकूरक “मिश्रक इतिहास बोध-प्रथमं शैल पुत्री च/ मंत्रपुत्र/ पुरोहित आ स्त्री-धन करे संदर्भमे, कृषि-मत्स्य शब्दावली (फील्ड-वर्कपर आधारित), विद्यापतिक बिदेसिया- पिआ देसाँतर, रमेश नारायणक “पाथरक नाव”- विनोद बिहारी वर्माक “बलानक बोनिहार ओ पल्लवी (तथा अन्य कथा)”, दूर्वाक्षत, मैथिली- सुरजापुरी- राजबंशी, बूच जीक कविताक -माक्सवाद, ऐतिहासिक दृष्टि, संरचनावाद, जादू-वास्तविकतावाद, उत्तर-आधुनिक, नारीवादी आ विखण्डनवाद दृष्टिसँ अध्ययन संगमे भारतीय सौन्दर्यशास्त्रक दृष्टिसँ सेहो अध्ययन, स्व. श्री वैद्यनाथ मिश्र “यात्री” (१९११-१९९८), जगदीश प्रसाद मण्डल, प्रेमशंकर सिंह, सिद्ध सरहपाद आ तिब्बती लिपि (पृ. २-२१३)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 33क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

७०. खण्ड 4238, सूचकांक पंक्ति 2929: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 4238, सूचकांक पंक्ति 2929मे गजेन्द्र ठाकूरक “मिश्रक इतिहास बोध-प्रथमं शैल पुत्री च/ मंत्रपुत्र/ पुरोहित आ स्त्री-धन करे संदर्भमे, कृषि-मत्स्य शब्दावली (फील्ड-वर्कपर आधारित), विद्यापतिक बिदेसिया- पिआ देसाँतर, रमेश नारायणक “पाथरक नाव”- विनोद बिहारी वर्माक “बलानक बोनिहार ओ पल्लवी (तथा अन्य कथा)”, दूर्वाक्षत, मैथिली- सुरजापुरी- राजबंशी, बूच जीक कविताक -माक्सवाद, ऐतिहासिक दृष्टि, संरचनावाद, जादू-वास्तविकतावाद, उत्तर-आधुनिक, नारीवादी आ विखण्डनवाद दृष्टिसँ अध्ययन संगमे भारतीय सौन्दर्यशास्त्रक दृष्टिसँ सेहो अध्ययन, स्व. श्री वैद्यनाथ मिश्र “यात्री” (१९११-१९९८), जगदीश प्रसाद मण्डल, प्रेमशंकर सिंह, सिद्ध सरहपाद आ तिब्बती लिपि (पृ. २-२१३)” प्रविष्टि गद्य, समालोचना/शोध-लेख/शब्दावली आ “मिश्रक इतिहास बोध-प्रथमं शैल पुत्री च/ मंत्रपुत्र/ पुरोहित आ स्त्री-धन करे संदर्भमे, कृषि-मत्स्य शब्दावली (फील्ड-वर्कपर आधारित), विद्यापतिक बिदेसिया- पिआ देसाँतर, रमेश नारायणक “पाथरक नाव”- विनोद बिहारी वर्माक “बलानक बोनिहार ओ पल्लवी (तथा अन्य कथा)”, दूर्वाक्षत, मैथिली- सुरजापुरी- राजबंशी, बूच जीक कविताक -माक्सवाद, ऐतिहासिक दृष्टि, संरचनावाद, जादू-वास्तविकतावाद, उत्तर-आधुनिक, नारीवादी आ विखण्डनवाद दृष्टिसँ अध्ययन संगमे भारतीय सौन्दर्यशास्त्रक दृष्टिसँ सेहो अध्ययन, स्व. श्री वैद्यनाथ मिश्र “यात्री” (१९११-१९९८), जगदीश प्रसाद मण्डल, प्रेमशंकर सिंह, सिद्ध सरहपाद आ तिब्बती लिपि (पृ. २-२१३)” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 33क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 4239 : विदेह-सदेह 33 — विभा रानी: आऊ कनेक प्रेम करी माने बुझाँअल जिनगीक (पृ. २१४- २२२)

७१. खण्ड 4239, सूचकांक पंक्ति 2930: विभा रानीक “आऊ कनेक प्रेम करी माने बुझाँअल जिनगीक (पृ. २१४- २२२)” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) आऊ कनेक प्रेम करी माने बुझाँअल जिनगीक (पृ. २१४- २२२)
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

७२. खण्ड 4239, सूचकांक पंक्ति 2930: विभा रानीक “आऊ कनेक प्रेम करी माने बुझाँअल जिनगीक (पृ. २१४- २२२)”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) गद्य
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

७३. खण्ड 4239, सूचकांक पंक्ति 2930: विभा रानीक “आऊ कनेक प्रेम करी माने बुझाँअल जिनगीक (पृ. २१४- २२२)”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) कथा
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

७४. खण्ड 4239, सूचकांक पंक्ति 2930: विभा रानीक “आऊ कनेक प्रेम करी माने बुझाँअल जिनगीक (पृ. २१४- २२२)” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) नारी-दृष्टि

७५. खण्ड 4239, सूचकांक पंक्ति 2930: विभा रानीक “आऊ कनेक प्रेम करी माने बुझाँअल जिनगीक (पृ. २१४- २२२)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 33मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) नारी-दृष्टि
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

७६. खण्ड 4239, सूचकांक पंक्ति 2930: विभा रानीक “आऊ कनेक प्रेम करी माने बुझाँअल जिनगीक (पृ. २१४- २२२)”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककें की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक विभा रानी, विधा गद्य, उप-विधा कथा
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

७७. खण्ड 4239, सूचकांक पंक्ति 2930: विभा रानीक “आऊ कनेक प्रेम करी माने बुझाँअल जिनगीक (पृ. २१४- २२२)” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

७८. खण्ड 4239, सूचकांक पंक्ति 2930: विभा रानीक “आऊ कनेक प्रेम करी माने बुझाँअल जिनगीक (पृ. २१४- २२२)”कें विदेह-सदेह 33क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ कथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

७९. खण्ड 4239, सूचकांक पंक्ति 2930: विभा रानीक “आऊ कनेक प्रेम करी माने बुझाँअल जिनगीक (पृ. २१४- २२२)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 33क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

८०. खण्ड 4239, सूचकांक पंक्ति 2930: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 4239, सूचकांक पंक्ति 2930मे विभा रानीक “आऊ कनेक प्रेम करी माने बुझाँअल जिनगीक (पृ. २१४- २२२)” प्रविष्टि गद्य, कथा आ “नारी-दृष्टि” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 33क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 4240 : विदेह-सदेह 33 — रामभरोस कापिड “भ्रमर”: बीहिन कथा- गंगाप्रसादक स्वायतता, हुगली पर बहैत गंगा (पृ. २२३-२२६)

८१. खण्ड 4240, सूचकांक पंक्ति 2931: रामभरोस कापिड “भ्रमर”क “बीहिन कथा- गंगाप्रसादक स्वायतता, हुगली पर बहैत गंगा (पृ. २२३-२२६)” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) बीहिन कथा- गंगाप्रसादक स्वायतता, हुगली पर बहैत गंगा (पृ. २२३-२२६)
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

८२. खण्ड 4240, सूचकांक पंक्ति 2931: रामभरोस कापिड “भ्रमर”क “बीहिन कथा- गंगाप्रसादक स्वायतता, हुगली पर बहैत गंगा (पृ. २२३-२२६)”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) गद्य
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

८३. खण्ड 4240, सूचकांक पंक्ति 2931: रामभरोस कापिड “भ्रमर”क “बीहिन कथा- गंगाप्रसादक स्वायतता, हुगली पर बहैत गंगा (पृ. २२३-२२६)”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) कथा
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

८४. खण्ड 4240, सूचकांक पंक्ति 2931: रामभरोस कापिड “भ्रमर”क “बीहिन कथा- गंगाप्रसादक स्वायतता, हुगली पर बहैत गंगा (पृ. २२३-२२६)” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ईसीओएलओजीआइसीएएल डब्ल्यूआरआइटीआइएनजी

८५. खण्ड 4240, सूचकांक पंक्ति 2931: रामभरोस कापिड “भ्रमर”क “बीहिन कथा- गंगाप्रसादक स्वायतता, हुगली पर बहैत गंगा (पृ. २२३-२२६)”

प्रविष्टि विदेह-सदेह 33मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) ईसीओएलओजीआइसीएएल डब्ल्यूआरआइटीआइएनजी
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

८६. खण्ड 4240, सूचकांक पंक्ति 2931: रामभरोस कापिड “भ्रमर”क “बीहिन कथा- गंगाप्रसादक स्वायतता, हुगली पर बहैत गंगा (पृ. २२३-२२६)”क

अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककें की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक रामभरोस कापिड “भ्रमर”, विधा गद्य, उप-विधा कथा
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

८७. खण्ड 4240, सूचकांक पंक्ति 2931: रामभरोस कापिड “भ्रमर”क “बीहिन कथा- गंगाप्रसादक स्वायतता, हुगली पर बहैत गंगा (पृ. २२३-२२६)”क

रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

८८. खण्ड 4240, सूचकांक पंक्ति 2931: रामभरोस कापिड “भ्रमर”क “बीहिन कथा- गंगाप्रसादक स्वायतता, हुगली पर बहैत गंगा (पृ. २२३-२२६)”क

विदेह-सदेह 33क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ कथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

८९. खण्ड 4240, सूचकांक पंक्ति 2931: रामभरोस कापिड “भ्रमर”क “बीहिन कथा- गंगाप्रसादक स्वायतता, हुगली पर बहैत गंगा (पृ. २२३-२२६)”

प्रविष्टि विदेह-सदेह 33क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

९०. खण्ड 4240, सूचकांक पंक्ति 2931: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 4240, सूचकांक पंक्ति 2931मे रामभरोस कापिड “भ्रमर”क “बीहिन कथा- गंगाप्रसादक स्वायतता, हुगली पर बहैत गंगा (पृ. २२३-२२६)” प्रविष्टि गद्य, कथा आ “ईसीओएलओजीआइसीएएल डब्ल्यूआरआइटीआइएनजी” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 33क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 4241 : विदेह-सदेह 33 — जितेन्द्र झा: अन्तर्राष्ट्रिय मैथिली परिषद, कोना बचाएब संस्कृतिक विरासत?, संस्कृति बचाएबाक अभियान (पृ. २२७-२३०)

९१. खण्ड 4241, सूचकांक पंक्ति 2932: जितेन्द्र झाक “अन्तर्राष्ट्रिय मैथिली परिषद, कोना बचाएब संस्कृतिक विरासत?, संस्कृति बचाएबाक अभियान (पृ. २२७-२३०)” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) अन्तर्राष्ट्रिय मैथिली परिषद, कोना बचाएब संस्कृतिक विरासत?, संस्कृति बचाएबाक अभियान (पृ. २२७-२३०)
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

९२. खण्ड 4241, सूचकांक पंक्ति 2932: जितेन्द्र झाक “अन्तर्राष्ट्रिय मैथिली परिषद, कोना बचाएब संस्कृतिक विरासत?, संस्कृति बचाएबाक अभियान (पृ. २२७-२३०)”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) गद्य
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

९३. खण्ड 4241, सूचकांक पंक्ति 2932: जितेन्द्र झाक “अन्तर्राष्ट्रिय मैथिली परिषद, कोना बचाएब संस्कृतिक विरासत?, संस्कृति बचाएबाक अभियान (पृ. २२७-२३०)”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) लेख/रिपोर्टाज
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

९४. खण्ड 4241, सूचकांक पंक्ति 2932: जितेन्द्र झाक “अन्तर्राष्ट्रिय मैथिली परिषद, कोना बचाएब संस्कृतिक विरासत?, संस्कृति बचाएबाक अभियान (पृ. २२७-२३०)” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) जनकपुर, नेपाल

९५. खण्ड 4241, सूचकांक पंक्ति 2932: जितेन्द्र झाक “अन्तर्राष्ट्रिय मैथिली परिषद, कोना बचाएब संस्कृतिक विरासत?, संस्कृति बचाएबाक अभियान (पृ. २२७-२३०)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 33मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) जनकपुर, नेपाल
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

९६. खण्ड 4241, सूचकांक पंक्ति 2932: जितेन्द्र झाक “अन्तर्राष्ट्रिय मैथिली परिषद, कोना बचाएब संस्कृतिक विरासत?, संस्कृति बचाएबाक अभियान (पृ. २२७-२३०)”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक जितेन्द्र झा, विधा गद्य, उप-विधा लेख/रिपोर्टाज
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

९७. खण्ड 4241, सूचकांक पंक्ति 2932: जितेन्द्र झाक “अन्तर्राष्ट्रिय मैथिली परिषद, कोना बचाएब संस्कृतिक विरासत?, संस्कृति बचाएबाक अभियान (पृ. २२७-२३०)” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१८. खण्ड 4241, सूचकांक पंक्ति 2932: जितेन्द्र झाक “अन्तर्राष्ट्रिय मैथिली परिषद, कोना बचाएब संस्कृतिक विरासत?, संस्कृति बचाएबाक अभियान (पृ. २२७-२३०)”क विदेह-सदेह 33क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ लेख/रिपोर्ताजक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

१९. खण्ड 4241, सूचकांक पंक्ति 2932: जितेन्द्र झाक “अन्तर्राष्ट्रिय मैथिली परिषद, कोना बचाएब संस्कृतिक विरासत?, संस्कृति बचाएबाक अभियान (पृ. २२७-२३०)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 33क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१००. खण्ड 4241, सूचकांक पंक्ति 2932: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 4241, सूचकांक पंक्ति 2932मे जितेन्द्र झाक “अन्तर्राष्ट्रिय मैथिली परिषद, कोना बचाएब संस्कृतिक विरासत?, संस्कृति बचाएबाक अभियान (पृ. २२७-२३०)” प्रविष्टि गद्य, लेख/रिपोर्ताज आ “जनकपुर, नेपाल” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 33क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 4242 : विदेह-सदेह 33 — उमेश कुमार महतो: बहादुरगंज स’ रिपोर्ट (पृ. २३१-२३१)

१०१. खण्ड 4242, सूचकांक पंक्ति 2933: उमेश कुमार महतो “बहादुरगंज स’ रिपोर्ट (पृ. २३१-२३१)” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) बहादुरगंज स’ रिपोर्ट (पृ. २३१-२३१)
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१०२. खण्ड 4242, सूचकांक पंक्ति 2933: उमेश कुमार महतो “बहादुरगंज स’ रिपोर्ट (पृ. २३१-२३१)”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) गद्य
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१०३. खण्ड 4242, सूचकांक पंक्ति 2933: उमेश कुमार महतो “बहादुरगंज स’ रिपोर्ट (पृ. २३१-२३१)”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) रिपोर्ताज
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१०४. खण्ड 4242, सूचकांक पंक्ति 2933: उमेश कुमार महतो “बहादुरगंज स’ रिपोर्ट (पृ. २३१-२३१)” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ओबीसी/एसयूबीएएलटीईआरएन वीओआइसीई

१०५. खण्ड 4242, सूचकांक पंक्ति 2933: उमेश कुमार महतो “बहादुरगंज स’ रिपोर्ट (पृ. २३१-२३१)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 33में कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) ओबीसी/एसयूबीएलटीईआरएन वीओआइसीई
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१०६. खण्ड 4242, सूचकांक पंक्ति 2933: उमेश कुमार महतो “बहादुरगंज स’ रिपोर्ट (पृ. २३१-२३१)”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककें की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक उमेश कुमार महतो, विधा गद्य, उप-विधा रिपोर्टाज
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१०७. खण्ड 4242, सूचकांक पंक्ति 2933: उमेश कुमार महतो “बहादुरगंज स’ रिपोर्ट (पृ. २३१-२३१)” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१०८. खण्ड 4242, सूचकांक पंक्ति 2933: उमेश कुमार महतो “बहादुरगंज स’ रिपोर्ट (पृ. २३१-२३१)”कें विदेह-सदेह 33क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ रिपोर्टाजक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

१०९. खण्ड 4242, सूचकांक पंक्ति 2933: उमेश कुमार महतो “बहादुरगंज स’ रिपोर्ट (पृ. २३१-२३१)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 33क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

११०. खण्ड 4242, सूचकांक पंक्ति 2933: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 4242, सूचकांक पंक्ति 2933मे उमेश कुमार महतो “बहादुरगंज स’ रिपोर्ट (पृ. २३१-२३१)” प्रविष्टि गद्य, रिपोर्टाज आ “ओबीसी/एसयूबीएलटीईआरएन वीओआइसीई” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 33क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 4243 : विदेह-सदेह 33 — अनलकान्त: कबइ-इच्छा, एत’ आ ओत’, असोथकित (पृ. २३२- २५२)

१११. खण्ड 4243, सूचकांक पंक्ति 2934: अनलकान्तक “कबइ-इच्छा, एत’ आ ओत’, असोथकित (पृ. २३२- २५२)” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) कबइ-इच्छा, एत’ आ ओत’, असोथकित (पृ. २३२- २५२)
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

११२. खण्ड 4243, सूचकांक पंक्ति 2934: अनलकान्तक “कबइ-इच्छा, एत’ आ ओत’, असोथकित (पृ. २३२- २५२)”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) गद्य/पद्य
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

११३. खण्ड 4243, सूचकांक पंक्ति 2934: अनलकान्तक “कबइ-इच्छा, एत’ आ ओत’, असोथकित (पृ. २३२- २५२)”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) कविता/लघुकथा
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

११४. खण्ड 4243, सूचकांक पंक्ति 2934: अनलकान्तक “कबइ-इच्छा, एत’ आ ओत’, असोथकित (पृ. २३२- २५२)” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) एमआइएनआइएमएलआइएसएम

११५. खण्ड 4243, सूचकांक पंक्ति 2934: अनलकान्तक “कबइ-इच्छा, एत’ आ ओत’, असोथकित (पृ. २३२- २५२)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 33मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) एमआइएनआइएमएलआइएसएम
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

११६. खण्ड 4243, सूचकांक पंक्ति 2934: अनलकान्तक “कबइ-इच्छा, एत’ आ ओत’, असोथकित (पृ. २३२- २५२)”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककें की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक अनलकान्त, विधा गद्य/पद्य, उप-विधा कविता/लघुकथा
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

११७. खण्ड 4243, सूचकांक पंक्ति 2934: अनलकान्तक “कबइ-इच्छा, एत’ आ ओत’, असोथकित (पृ. २३२- २५२)” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

११८. खण्ड 4243, सूचकांक पंक्ति 2934: अनलकान्तक “कबइ-इच्छा, एत’ आ ओत’, असोथकित (पृ. २३२- २५२)”कें विदेह-सदेह 33क गद्य/पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ कविता/लघुकथाक रूपमे गद्य/पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

११९. खण्ड 4243, सूचकांक पंक्ति 2934: अनलकान्तक “कबड़-इच्छा, एत’ आ ओत’, असोथकित (पृ. २३२- २५२)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 33क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१२०. खण्ड 4243, सूचकांक पंक्ति 2934: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 4243, सूचकांक पंक्ति 2934मे अनलकान्तक “कबड़-इच्छा, एत’ आ ओत’, असोथकित (पृ. २३२- २५२)” प्रविष्टि गद्य/पद्य, कविता/लघुकथा आ “एमआइएनआइएमएएलआइएसएम” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 33क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 4244 : विदेह-सदेह 33 — मनोज झा मुक्ति: अवैद्य नागरिकता: सिक्कमीकरणक प्रयास, मनोज झा मुक्ति संग अन्तर्वाता ...आभाष लाभ, तराई/मधेशक आन्दोलन: लूटमे लट्वा नफ्फा (पृ. २५३-२५७)

१२१. खण्ड 4244, सूचकांक पंक्ति 2935: मनोज झा मुक्तिक “अवैद्य नागरिकता: सिक्कमीकरणक प्रयास, मनोज झा मुक्ति संग अन्तर्वाता ...आभाष लाभ, तराई/मधेशक आन्दोलन: लूटमे लट्वा नफ्फा (पृ. २५३-२५७)” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) अवैद्य नागरिकता: सिक्कमीकरणक प्रयास, मनोज झा मुक्ति संग अन्तर्वाता ...आभाष लाभ, तराई/मधेशक आन्दोलन: लूटमे लट्वा नफ्फा (पृ. २५३-२५७)
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१२२. खण्ड 4244, सूचकांक पंक्ति 2935: मनोज झा मुक्तिक “अवैद्य नागरिकता: सिक्कमीकरणक प्रयास, मनोज झा मुक्ति संग अन्तर्वाता ...आभाष लाभ, तराई/मधेशक आन्दोलन: लूटमे लट्वा नफ्फा (पृ. २५३-२५७)”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) गद्य
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१२३. खण्ड 4244, सूचकांक पंक्ति 2935: मनोज झा मुक्तिक “अवैद्य नागरिकता: सिक्कमीकरणक प्रयास, मनोज झा मुक्ति संग अन्तर्वाता ...आभाष लाभ, तराई/मधेशक आन्दोलन: लूटमे लट्वा नफ्फा (पृ. २५३-२५७)”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) लेख/अन्तर्वाता
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१२४. खण्ड 4244, सूचकांक पंक्ति 2935: मनोज झा मुक्तिक “अवैद्य नागरिकता: सिक्कमीकरणक प्रयास, मनोज झा मुक्ति संग अन्तर्वाता ...आभाष लाभ, तराई/मधेशक आन्दोलन: लूटमे लट्वा नफ्फा (पृ. २५३-२५७)” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) एसईएलएफ-डीआइजीएनआइटीवाई एनएआरआरएटीआइवीई

१२५. खण्ड 4244, सूचकांक पंक्ति 2935: मनोज झा मुक्तिक “अवैद्य नागरिकता: सिक्कमीकरणक प्रयास, मनोज झा मुक्ति संग अन्तर्वाता ...आभाष लाभ, तराई/मधेशक आन्दोलन: लूटमे लट्वा नफ्फा (पृ. २५३-२५७)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 33मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) एसईएलएफ-डीआइजीएनआइटीवाई एनएआरआरएटीआइवीई
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१२६. खण्ड 4244, सूचकांक पंक्ति 2935: मनोज झा मुक्तिक “अवैद्य नागरिकता: सिक्कमीकरणक प्रयास, मनोज झा मुक्ति संग अन्तर्वाता ...आभाष लाभ, तराई/मधेशक आन्दोलन: लूटमे लट्वा नफ्फा (पृ. २५३-२५७)”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककें की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक मनोज झा मुक्ति, विधा गद्य, उप-विधा लेख/अन्तर्वाता
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१२७. खण्ड 4244, सूचकांक पंक्ति 2935: मनोज झा मुक्तिक “अवैद्य नागरिकता: सिक्कमीकरणक प्रयास, मनोज झा मुक्ति संग अन्तर्वाता ...आभाष लाभ, तराई/मधेशक आन्दोलन: लूटमे लट्वा नफ्फा (पृ. २५३-२५७)” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१२८. खण्ड 4244, सूचकांक पंक्ति 2935: मनोज झा मुक्तिक “अवैद्य नागरिकता: सिक्कमीकरणक प्रयास, मनोज झा मुक्ति संग अन्तर्वाता ...आभाष लाभ, तराई/मधेशक आन्दोलन: लूटमे लट्वा नफ्फा (पृ. २५३-२५७)”कें विदेह-सदेह 33क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ लेख/अन्तर्वाताक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

१२९. खण्ड 4244, सूचकांक पंक्ति 2935: मनोज झा मुक्तिक “अवैद्य नागरिकता: सिक्कमीकरणक प्रयास, मनोज झा मुक्ति संग अन्तर्वाता ...आभाष लाभ, तराई/मधेशक आन्दोलन: लूटमे लट्वा नफ्फा (पृ. २५३-२५७)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 33क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१३०. खण्ड 4244, सूचकांक पंक्ति 2935: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 4244, सूचकांक पंक्ति 2935मे मनोज झा मुक्तिक “अवैद्य नागरिकता: सिक्कमीकरणक प्रयास, मनोज झा मुक्ति संग अन्तर्वाता ...आभाष लाभ, तराई/मधेशक आन्दोलन: लूटमे लट्वा नफ्फा (पृ. २५३-२५७)” प्रविष्टि गद्य, लेख/अन्तर्वाता आ “एसईएलएफ-डीआइजीएनआइटीवाई एनएआरआरएटीआइवीई” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 33क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 4245 : विदेह-सदेह 33 — कुमार शुशान्त: छोटकी काकी (प. २५८-२५९)

१३१. खण्ड 4245, सूचकांक पंक्ति 2936: कुमार शुशान्तक “छोटकी काकी (प. २५८-२५९)” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) छोटकी काकी (प. २५८-२५९)
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१३२. खण्ड 4245, सूचकांक पंक्ति 2936: कुमार शुशान्तक “छोटकी काकी (प. २५८-२५९)”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) गद्य
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१३३. खण्ड 4245, सूचकांक पंक्ति 2936: कुमार शुशान्तक “छोटकी काकी (प. २५८-२५९)”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) कथा
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१३४. खण्ड 4245, सूचकांक पंक्ति 2936: कुमार शुशान्तक “छोटकी काकी (प. २५८-२५९)” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) नव पीढ़ी

१३५. खण्ड 4245, सूचकांक पंक्ति 2936: कुमार शुशान्तक “छोटकी काकी (प. २५८-२५९)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 33मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) नव पीढ़ी
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१३६. खण्ड 4245, सूचकांक पंक्ति 2936: कुमार शुशान्तक “छोटकी काकी (प. २५८-२५९)”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककें की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक कुमार शुशान्त, विधा गद्य, उप-विधा कथा
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१३७. खण्ड 4245, सूचकांक पंक्ति 2936: कुमार शुशान्तक “छोटकी काकी (प. २५८-२५९)” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१३८. खण्ड 4245, सूचकांक पंक्ति 2936: कुमार शुशान्तक “छोटकी काकी (प. २५८-२५९)”कें विदेह-सदेह 33क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ कथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

१३९. खण्ड 4245, सूचकांक पंक्ति 2936: कुमार शुशान्तक “छोटकी काकी (प. २५८-२५९)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 33क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१४०. खण्ड 4245, सूचकांक पंक्ति 2936: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 4245, सूचकांक पंक्ति 2936मे कुमार शुशान्तक “छोटकी काकी (प. २५८-२५९)” प्रविष्टि गद्य, कथा आ “नव पीढ़ी” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 33क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 4246 : विदेह-सदेह 33 — श्यामसुन्दर शशि: आह उमा ! वाह उमा ! , विचार- मिशिलाक तवाही,सरकारी षडयन्त्र त ने अछि ??, दुलहा बनल श्रीराम हे एसएसएस (सन्दर्भ: राम-जानकी विवाह महोत्सव) (पृ. २६०-२६४)

१४१. खण्ड 4246, सूचकांक पंक्ति 2937: श्यामसुन्दर शशिक “आह उमा ! वाह उमा ! , विचार- मिशिलाक तवाही,सरकारी षडयन्त्र त ने अछि ??, दुलहा बनल श्रीराम हे एसएसएस (सन्दर्भ: राम-जानकी विवाह महोत्सव) (पृ. २६०-२६४)” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) आह उमा ! वाह उमा ! , विचार- मिशिलाक तवाही,सरकारी षडयन्त्र त ने अछि ??, दुलहा बनल श्रीराम हे एसएसएस (सन्दर्भ: राम-जानकी विवाह महोत्सव) (पृ. २६०-२६४)
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१४२. खण्ड 4246, सूचकांक पंक्ति 2937: श्यामसुन्दर शशिक “आह उमा ! वाह उमा ! , विचार- मिशिलाक तवाही,सरकारी षडयन्त्र त ने अछि ??, दुलहा बनल श्रीराम हे एसएसएस (सन्दर्भ: राम-जानकी विवाह महोत्सव) (पृ. २६०-२६४)”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) गद्य
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१४३. खण्ड 4246, सूचकांक पंक्ति 2937: श्यामसुन्दर शशिक “आह उमा ! वाह उमा ! , विचार- मिशिलाक तवाही,सरकारी षडयन्त्र त ने अछि ??, दुलहा बनल श्रीराम हे एसएसएस (सन्दर्भ: राम-जानकी विवाह महोत्सव) (पृ. २६०-२६४)”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) निबन्ध
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१४४. खण्ड 4246, सूचकांक पंक्ति 2937: श्यामसुन्दर शशिक “आह उमा ! वाह उमा ! , विचार- मिशिलाक तवाही,सरकारी षडयन्त्र त ने अछि ??, दुलहा बनल श्रीराम हे एसएसएस (सन्दर्भ: राम-जानकी विवाह महोत्सव) (पृ. २६०-२६४)” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) शृंगार+वियोग

१४५. खण्ड 4246, सूचकांक पंक्ति 2937: श्यामसुन्दर शशिक “आह उमा ! वाह उमा ! , विचार- मिशिलाक तवाही,सरकारी षडयन्त्र त ने अछि ??, दुलहा बनल श्रीराम हे एसएसएस (सन्दर्भ: राम-जानकी विवाह महोत्सव) (पृ. २६०-२६४)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 33मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) शृंगार+वियोग
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१४६. खण्ड 4246, सूचकांक पंक्ति 2937: श्यामसुन्दर शशिक “आह उमा ! वाह उमा ! , विचार- मिशिलाक तवाही,सरकारी षडयन्त्र त ने अछि ??, दुलहा बनल श्रीराम हे एसएसएस (सन्दर्भ: राम-जानकी विवाह महोत्सव) (पृ. २६०-२६४)”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक श्यामसुन्दर शशि, विधा गद्य, उप-विधा निबन्ध
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१४७. खण्ड 4246, सूचकांक पंक्ति 2937: श्यामसुन्दर शशिक “आह उमा ! वाह उमा ! , विचार- मिशिलाक तवाही,सरकारी षडयन्त्र त ने अछि ??, दुलहा बनल श्रीराम हे एसएसएस (सन्दर्भ: राम-जानकी विवाह महोत्सव) (पृ. २६०-२६४)” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१४८. खण्ड 4246, सूचकांक पंक्ति 2937: श्यामसुन्दर शशिक “आह उमा ! वाह उमा ! , विचार- मिशिलाक तवाही,सरकारी षडयन्त्र त ने अछि ??, दुलहा बनल श्रीराम हे एसएसएस (सन्दर्भ: राम-जानकी विवाह महोत्सव) (पृ. २६०-२६४)”केँ विदेह-सदेह 33क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ निबन्धक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

१४९. खण्ड 4246, सूचकांक पंक्ति 2937: श्यामसुन्दर शशिक “आह उमा ! वाह उमा ! , विचार- मिशिलाक तवाही,सरकारी षडयन्त्र त ने अछि ??, दुलहा बनल श्रीराम हे एसएसएस (सन्दर्भ: राम-जानकी विवाह महोत्सव) (पृ. २६०-२६४)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 33क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१५०. खण्ड 4246, सूचकांक पंक्ति 2937: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 4246, सूचकांक पंक्ति 2937मे श्यामसुन्दर शशिक “आह उमा ! वाह उमा ! , विचार- मिशिलाक तवाही,सरकारी षडयन्त्र त ने अछि ??, दुलहा बनल श्रीराम हे एसएसएस (सन्दर्भ: राम-जानकी विवाह महोत्सव) (पृ. २६०-२६४)” प्रविष्टि गद्य, निबन्ध आ “शृंगार+वियोग” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 33क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 4247 : विदेह-सदेह 33 — अंकुर काशीनाथ झा: नेताजी पर तामश कियैक उठैत अछि (प. २६५-२६६)

१५१. खण्ड 4247, सूचकांक पंक्ति 2938: अंकुर काशीनाथ झाक “नेताजी पर तामश कियैक उठैत अछि (प. २६५-२६६)” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) नेताजी पर तामश कियैक उठैत अछि (प. २६५-२६६)
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१५२. खण्ड 4247, सूचकांक पंक्ति 2938: अंकुर काशीनाथ झाक “नेताजी पर तामश कियैक उठैत अछि (प. २६५-२६६)”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) गद्य
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१५३. खण्ड 4247, सूचकांक पंक्ति 2938: अंकुर काशीनाथ झाक “नेताजी पर तामश कियैक उठैत अछि (प. २६५-२६६)”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) लेख
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१५४. खण्ड 4247, सूचकांक पंक्ति 2938: अंकुर काशीनाथ झाक “नेताजी पर तामश कियैक उठैत अछि (प. २६५-२६६)” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) नव पीढ़ी

१५५. खण्ड 4247, सूचकांक पंक्ति 2938: अंकुर काशीनाथ झाक “नेताजी पर तामश कियैक उठैत अछि (प. २६५-२६६)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 33मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) नव पीढ़ी
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१५६. खण्ड 4247, सूचकांक पंक्ति 2938: अंकुर काशीनाथ झाक “नेताजी पर तामश कियैक उठैत अछि (प. २६५-२६६)”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककें की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक अंकुर काशीनाथ झा, विधा गद्य, उप-विधा लेख
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१५७. खण्ड 4247, सूचकांक पंक्ति 2938: अंकुर काशीनाथ झाक “नेताजी पर तामश कियैक उठैत अछि (प. २६५-२६६)” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१५८. खण्ड 4247, सूचकांक पंक्ति 2938: अंकुर काशीनाथ झाक “नेताजी पर तामश कियैक उठैत अछि (प. २६५-२६६)” केँ विदेह-सदेह 33क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ लेखक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

१५९. खण्ड 4247, सूचकांक पंक्ति 2938: अंकुर काशीनाथ झाक “नेताजी पर तामश कियैक उठैत अछि (प. २६५-२६६)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 33क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१६०. खण्ड 4247, सूचकांक पंक्ति 2938: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 4247, सूचकांक पंक्ति 2938मे अंकुर काशीनाथ झाक “नेताजी पर तामश कियैक उठैत अछि (प. २६५-२६६)” प्रविष्टि गद्य, लेख आ “नव पीढ़ी” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 33क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 4248 : विदेह-सदेह 33 — लललन ठाकूर: (पू.२६७-२७४) — रचनाक नाम स्पष्ट नै अछि

१६१. खण्ड 4248, सूचकांक पंक्ति 2939: लललन ठाकूरक “(पू.२६७-२७४) — रचनाक नाम स्पष्ट नै अछि” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) (पू.२६७-२७४) — रचनाक नाम स्पष्ट नै अछि
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१६२. खण्ड 4248, सूचकांक पंक्ति 2939: लललन ठाकूरक “(पू.२६७-२७४) — रचनाक नाम स्पष्ट नै अछि”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) गद्य
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१६३. खण्ड 4248, सूचकांक पंक्ति 2939: लललन ठाकूरक “(पू.२६७-२७४) — रचनाक नाम स्पष्ट नै अछि”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) मिश्रित
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१६४. खण्ड 4248, सूचकांक पंक्ति 2939: लललन ठाकूरक “(पू.२६७-२७४) — रचनाक नाम स्पष्ट नै अछि” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) (पू.२६७-२७४) — रचनाक नाम स्पष्ट नै अछि

१६५. खण्ड 4248, सूचकांक पंक्ति 2939: लललन ठाकूरक “(पू.२६७-२७४) — रचनाक नाम स्पष्ट नै अछि” प्रविष्टि विदेह-सदेह 33मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) (पू.२६७-२७४) — रचनाक नाम स्पष्ट नै अछि
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१६६. खण्ड 4248, सूचकांक पंक्ति 2939: लललन ठाकूरक “(पू.२६७-२७४) — रचनाक नाम स्पष्ट नै अछि”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककें की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक लललन ठाकूर, विधा गद्य, उप-विधा मिश्रित
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१६७. खण्ड 4248, सूचकांक पंक्ति 2939: लललन ठाकूरक “(पू.२६७-२७४) — रचनाक नाम स्पष्ट नै अछि” रचना/लेखकक कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१६८. खण्ड 4248, सूचकांक पंक्ति 2939: लललन ठाकूरक “(पू.२६७-२७४) — रचनाक नाम स्पष्ट नै अछि”कें विदेह-सदेह 33क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ मिश्रितक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

१६९. खण्ड 4248, सूचकांक पंक्ति 2939: लललन ठाकूरक “(पू.२६७-२७४) — रचनाक नाम स्पष्ट नै अछि” प्रविष्टि विदेह-सदेह 33क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१७०. खण्ड 4248, सूचकांक पंक्ति 2939: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 4248, सूचकांक पंक्ति 2939मे लललन ठाकूरक “(पू.२६७-२७४) — रचनाक नाम स्पष्ट नै अछि” प्रविष्टि गद्य, मिश्रित आ “(पू.२६७-२७४) — रचनाक नाम स्पष्ट नै अछि” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 33क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 4249 : विदेह-सदेह 33 — साकेतानन्द: कालरात्रिश्च दारुणा (पृ. २१५-२१६)

१७१. खण्ड 4249, सूचकांक पंक्ति 2940: साकेतानन्दक “कालरात्रिश्च दारुणा (पृ. २१५-२१६)” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) कालरात्रिश्च दारुणा (पृ. २१५-२१६)
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१७२. खण्ड 4249, सूचकांक पंक्ति 2940: साकेतानन्दक “कालरात्रिश्च दारुणा (पृ. २१५-२१६)”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) गद्य
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१७३. खण्ड 4249, सूचकांक पंक्ति 2940: साकेतानन्दक “कालरात्रिश्च दारुणा (पृ. २१५-२१६)”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) कथा
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१७४. खण्ड 4249, सूचकांक पंक्ति 2940: साकेतानन्दक “कालरात्रिश्च दारुणा (पृ. २१५-२१६)” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) कालरात्रिश्च दारुणा (पृ. २१५-२१६)

१७५. खण्ड 4249, सूचकांक पंक्ति 2940: साकेतानन्दक “कालरात्रिश्च दारुणा (पृ. २१५-२१६)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 33मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) कालरात्रिश्च दारुणा (पृ. २१५-२१६)
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१७६. खण्ड 4249, सूचकांक पंक्ति 2940: साकेतानन्दक “कालरात्रिश्च दारुणा (पृ. २१५-२१६)”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक साकेतानन्द, विधा गद्य, उप-विधा कथा
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१७७. खण्ड 4249, सूचकांक पंक्ति 2940: साकेतानन्दक “कालरात्रिश्च दारुणा (पृ. २१५-२१६)” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१७८. खण्ड 4249, सूचकांक पंक्ति 2940: साकेतानन्दक “कालरात्रिश्च दारुणा (पृ. २१५-२१६)”केँ विदेह-सदेह 33क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ कथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

१७९. खण्ड 4249, सूचकांक पंक्ति 2940: साकेतानन्दक “कालरात्रिश्च दारुणा (पृ. २१५-२१६)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 33क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१८०. खण्ड 4249, सूचकांक पंक्ति 2940: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 4249, सूचकांक पंक्ति 2940मे साकेतानन्दक “कालरात्रिश्च दारुणा (पृ. २१५-२१६)” प्रविष्टि गद्य, कथा आ “कालरात्रिश्च दारुणा (पृ. २१५-२१६)” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 33क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 4250 : विदेह-सदेह 33 — बूषेश चन्द्र लाल: आ ओ मारिल गिल !, एकदन्त हाथी आ नौलखा हार (पृ. २७९-२६६)

१८१. खण्ड 4250, सूचकांक पंक्ति 2941: बूषेश चन्द्र लालक “आ ओ मारिल गिल !, एकदन्त हाथी आ नौलखा हार (पृ. २७९-२६६)” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) आ ओ मारिल गिल !, एकदन्त हाथी आ नौलखा हार (पृ. २७९-२६६)
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१८२. खण्ड 4250, सूचकांक पंक्ति 2941: बूषेश चन्द्र लालक “आ ओ मारिल गिल !, एकदन्त हाथी आ नौलखा हार (पृ. २७९-२६६)”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) गद्य
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१८३. खण्ड 4250, सूचकांक पंक्ति 2941: बूषेश चन्द्र लालक “आ ओ मारिल गिल !, एकदन्त हाथी आ नौलखा हार (पृ. २७९-२६६)”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) कथा
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१८४. खण्ड 4250, सूचकांक पंक्ति 2941: बूषेश चन्द्र लालक “आ ओ मारिल गिल !, एकदन्त हाथी आ नौलखा हार (पृ. २७९-२६६)” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) एनईपीएल

१८५. खण्ड 4250, सूचकांक पंक्ति 2941: बूषेश चन्द्र लालक “आ ओ मारिल गिल !, एकदन्त हाथी आ नौलखा हार (पृ. २७९-२६६)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 33मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) एनईपीएल
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१८६. खण्ड 4250, सूचकांक पंक्ति 2941: बूषेश चन्द्र लालक “आ ओ मारिल गिल !, एकदन्त हाथी आ नौलखा हार (पृ. २७९-२६६)”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक बूषेश चन्द्र लाल, विधा गद्य, उप-विधा कथा
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१८७. खण्ड 4250, सूचकांक पंक्ति 2941: बूषेश चन्द्र लालक “आ ओ मारिल गिल !, एकदन्त हाथी आ नौलखा हार (पृ. २७९-२६६)” रचना/लेखकक कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१८८. खण्ड 4250, सूचकांक पंक्ति 2941: बूषेश चन्द्र लालक “आ ओ मारिल गिल !, एकदन्त हाथी आ नौलखा हार (पृ. २७९-२६६)”केँ विदेह-सदेह 33क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ कथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

१८९. खण्ड 4250, सूचकांक पंक्ति 2941: बूषेश चन्द्र लालक “आ ओ मारिल गिल !, एकदन्त हाथी आ नौलखा हार (पृ. २७९-२६६)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 33क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१९०. खण्ड 4250, सूचकांक पंक्ति 2941: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 4250, सूचकांक पंक्ति 2941मे बूषेश चन्द्र लालक “आ ओ मारिल गिल !, एकदन्त हाथी आ नौलखा हार (पृ. २७९-२६६)” प्रविष्टि गद्य, कथा आ “एनईपीएल” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 33क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 4251 : विदेह-सदेह 33 — राजमोहन झा: (प्रबोध सम्मान २००९) सँ िवनीत उत्पलक साक्षात्कार- (पृ. २८७-२९३)

१९१. खण्ड 4251, सूचकांक पंक्ति 2942: राजमोहन झाक “(प्रबोध सम्मान २००९) सँ िवनीत उत्पलक साक्षात्कार- (पृ. २८७-२९३)” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) (प्रबोध सम्मान २००९) सँ िवनीत उत्पलक साक्षात्कार- (पृ. २८७-२९३)
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१९२. खण्ड 4251, सूचकांक पंक्ति 2942: राजमोहन झाक “(प्रबोध सम्मान २००९) सँ िवनीत उत्पलक साक्षात्कार- (पृ. २८७-२९३)”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) गद्य
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१९३. खण्ड 4251, सूचकांक पंक्ति 2942: राजमोहन झाक “(प्रबोध सम्मान २००९) सँ िवनीत उत्पलक साक्षात्कार- (पृ. २८७-२९३)”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) साक्षात्कार
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१९४. खण्ड 4251, सूचकांक पंक्ति 2942: राजमोहन झाक “(प्रबोध सम्मान २००९) सँ िवनीत उत्पलक साक्षात्कार- (पृ. २८७-२९३)” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) साहित्य अकादेमी — 'आई-काइल-परसू'

१९५. खण्ड 4251, सूचकांक पंक्ति 2942: राजमोहन झाक “(प्रबोध सम्मान २००९) सँ िवनीत उत्पलक साक्षात्कार- (पृ. २८७-२९३)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 33मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) साहित्य अकादेमी — 'आई-काइल-परसू'
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१९६. खण्ड 4251, सूचकांक पंक्ति 2942: राजमोहन झाक “(प्रबोध सम्मान २००९) सँ िवनीत उत्पलक साक्षात्कार- (पृ. २८७-२९३)”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककें की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक राजमोहन झा, विधा गद्य, उप-विधा साक्षात्कार
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१९७. खण्ड 4251, सूचकांक पंक्ति 2942: राजमोहन झाक “(प्रबोध सम्मान २००९) सँ िवनीत उत्पलक साक्षात्कार- (पृ. २८७-२९३)” रचना/लेखकक कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१९८. खण्ड 4251, सूचकांक पंक्ति 2942: राजमोहन झाक “(प्रबोध सम्मान २००९) सँ िवनीत उत्पलक साक्षात्कार- (पृ. २८७-२९३)”कें विदेह-सदेह 33क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ साक्षात्कारक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

१९९. खण्ड 4251, सूचकांक पंक्ति 2942: राजमोहन झाक “(प्रबोध सम्मान २००९) सँ िवनीत उत्पलक साक्षात्कार- (पृ. २८७-२९३)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 33क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२००. खण्ड 4251, सूचकांक पंक्ति 2942: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 4251, सूचकांक पंक्ति 2942मे राजमोहन झाक “(प्रबोध सम्मान २००९) सँ िवनीत उत्पलक साक्षात्कार- (पृ. २८७-२९३)” प्रविष्टि गद्य, साक्षात्कार आ “साहित्य अकादेमी — 'आई-काइल-परसू'” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 33क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 4252 : विदेह-सदेह 33 — रामाश्रय झा "रामरंग": प्रसिद्ध अभिनव भातखण्डे जी सँ साक्षात्कार डो. गगेश गुंजन द्वारा (पृ. २९४-२९८)

२०१. खण्ड 4252, सूचकांक पंक्ति 2943: रामाश्रय झा "रामरंग"क “प्रसिद्ध अभिनव भातखण्डे जी सँ साक्षात्कार डो. गगेश गुंजन द्वारा (पृ. २९४-२९८)” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) प्रसिद्ध अभिनव भातखण्डे जी सँ साक्षात्कार डो. गगेश गुंजन द्वारा (पृ. २९४-२९८)
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२०२. खण्ड 4252, सूचकांक पंक्ति 2943: रामाश्रय झा "रामरंग"क “प्रसिद्ध अभिनव भातखण्डे जी सँ साक्षात्कार डो. गगेश गुंजन द्वारा (पृ. २९४-२९८)”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) गद्य
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२०३. खण्ड 4252, सूचकांक पंक्ति 2943: रामाश्रय झा "रामरंग"क “प्रसिद्ध अभिनव भातखण्डे जी सँ साक्षात्कार डो. गगेश गुंजन द्वारा (पृ. २९४-२९८)”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) साक्षात्कार
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२०४. खण्ड 4252, सूचकांक पंक्ति 2943: रामाश्रय झा "रामरंग"क “प्रसिद्ध अभिनव भातखण्डे जी सँ साक्षात्कार डो. गगेश गुंजन द्वारा (पृ. २९४-२९८)” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) वीआईडीवाईएपीएटीआई एमयूएसआइसी टीआरएडीआईटीआईओएन

२०५. खण्ड 4252, सूचकांक पंक्ति 2943: रामाश्रय झा "रामरंग"क “प्रसिद्ध अभिनव भातखण्डे जी सँ साक्षात्कार डो. गगेश गुंजन द्वारा (पृ. २९४-२९८)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 33मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) वीआईडीवाईएपीएटीआई एमयूएसआइसी टीआरएडीआईटीआईओएन
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२०६. खण्ड 4252, सूचकांक पंक्ति 2943: रामाश्रय झा "रामरंग"क “प्रसिद्ध अभिनव भातखण्डे जी सँ साक्षात्कार डो. गगेश गुंजन द्वारा (पृ. २९४-२९८)”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककें की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक रामाश्रय झा "रामरंग", विधा गद्य, उप-विधा साक्षात्कार
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२०७. खण्ड 4252, सूचकांक पंक्ति 2943: रामाश्रय झा "रामरंग"क "प्रसिद्ध अभिनव भातखण्डे जी सँ साक्षात्कार डो. गगेश गुंजन द्वारा (पृ. २९४-२९८)" रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२०८. खण्ड 4252, सूचकांक पंक्ति 2943: रामाश्रय झा "रामरंग"क "प्रसिद्ध अभिनव भातखण्डे जी सँ साक्षात्कार डो. गगेश गुंजन द्वारा (पृ. २९४-२९८)"क विदेह-सदेह 33क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ साक्षात्कारक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

२०९. खण्ड 4252, सूचकांक पंक्ति 2943: रामाश्रय झा "रामरंग"क "प्रसिद्ध अभिनव भातखण्डे जी सँ साक्षात्कार डो. गगेश गुंजन द्वारा (पृ. २९४-२९८)" प्रविष्टि विदेह-सदेह 33क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२१०. खण्ड 4252, सूचकांक पंक्ति 2943: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 4252, सूचकांक पंक्ति 2943मे रामाश्रय झा "रामरंग"क "प्रसिद्ध अभिनव भातखण्डे जी सँ साक्षात्कार डो. गगेश गुंजन द्वारा (पृ. २९४-२९८)" प्रविष्टि गद्य, साक्षात्कार आ "वीआइडीवाईएपीएटीआइ एमयूएसआइसी टीआरएडीआइटीआइओएन" संकेत द्वारा विदेह-सदेह 33क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 4253 : विदेह-सदेह 33 — शिव कृमार झा 'टिल्लू': हरिमोहन झा- द्विरागमन (पृ.२९९-३०१)

२११. खण्ड 4253, सूचकांक पंक्ति 2944: शिव कृमार झा 'टिल्लू'क "हरिमोहन झा- द्विरागमन (पृ.२९९-३०१)" प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) हरिमोहन झा- द्विरागमन (पृ.२९९-३०१)
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२१२. खण्ड 4253, सूचकांक पंक्ति 2944: शिव कृमार झा 'टिल्लू'क "हरिमोहन झा- द्विरागमन (पृ.२९९-३०१)"क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) गद्य
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२१३. खण्ड 4253, सूचकांक पंक्ति 2944: शिव कृमार झा 'टिल्लू'क "हरिमोहन झा- द्विरागमन (पृ.२९९-३०१)"क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समीक्षा/निबन्ध
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२१४. खण्ड 4253, सूचकांक पंक्ति 2944: शिव कृमार झा 'टिल्लू'क “हरिमोहन झा- द्विरागमन (पृ.२९९-३०१)” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) हरिमोहन झा- द्विरागमन (पृ.२९९-३०१)

२१५. खण्ड 4253, सूचकांक पंक्ति 2944: शिव कृमार झा 'टिल्लू'क “हरिमोहन झा- द्विरागमन (पृ.२९९-३०१)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 33मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) हरिमोहन झा- द्विरागमन (पृ.२९९-३०१)
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२१६. खण्ड 4253, सूचकांक पंक्ति 2944: शिव कृमार झा 'टिल्लू'क “हरिमोहन झा- द्विरागमन (पृ.२९९-३०१)”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठकसँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक शिव कृमार झा 'टिल्लू', विधा गद्य, उप-विधा समीक्षा/निबन्ध
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२१७. खण्ड 4253, सूचकांक पंक्ति 2944: शिव कृमार झा 'टिल्लू'क “हरिमोहन झा- द्विरागमन (पृ.२९९-३०१)” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२१८. खण्ड 4253, सूचकांक पंक्ति 2944: शिव कृमार झा 'टिल्लू'क “हरिमोहन झा- द्विरागमन (पृ.२९९-३०१)”क विदेह-सदेह 33क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ समीक्षा/निबन्धक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

२१९. खण्ड 4253, सूचकांक पंक्ति 2944: शिव कृमार झा 'टिल्लू'क “हरिमोहन झा- द्विरागमन (पृ.२९९-३०१)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 33क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतसँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२२०. खण्ड 4253, सूचकांक पंक्ति 2944: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 4253, सूचकांक पंक्ति 2944मे शिव कृमार झा 'टिल्लू'क “हरिमोहन झा- द्विरागमन (पृ.२९९-३०१)” प्रविष्टि गद्य, समीक्षा/निबन्ध आ “हरिमोहन झा- द्विरागमन (पृ.२९९-३०१)” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 33क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 4254 : विदेह-सदेह 33 — मुन्नाजी: साक्षात्कार- हम पुष्टीत छी (१.रवीन्द्र कुमार दास २.योगेन्द्र प्रसाद यादव ३.गोविन्द झा ४.राजेन्द्र बिमल ५.रामभरोस कापडि “भ्रमर” ६.रमेश रंजन ७.बृषेश चन्द्र लाल ८.धीरेन्द्र प्रेमर्षि ९.अनलकान्त १०.कुमार शैलेन्द्र

२२५. खण्ड 4254, सूचकांक पंक्ति 2945: मुन्नाजीक “साक्षात्कार- हम पुष्टीत छी (१.रवीन्द्र कुमार दास २.योगेन्द्र प्रसाद यादव ३.गोविन्द झा ४.राजेन्द्र बिमल ५.रामभरोस कापडि “भ्रमर” ६.रमेश रंजन ७.बृषेश चन्द्र लाल ८.धीरेन्द्र प्रेमर्षि ९.अनलकान्त १०.कुमार शैलेन्द्र ११.अमरनाथ १२.तारानन्द वियोगी १३.अनमोल झा १४.दुर्गानन्द मंडल १५.मिथिलेश कुमार झा १६.बेचन ठाकुर १७.धीरेन्द्र कुमार १८.सोमदेव १९.अशोक २०.ज्योति सुनीत चौधरी २१.जगदीश प्रसाद मण्डल २२.राजदेव मण्डल २३.देवशंकर नवीन २४.गजेन्द्र ठाकुर)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 33मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) साक्षात्कार- हम पुष्टीत छी (१.रवीन्द्र कुमार दास २.योगेन्द्र प्रसाद यादव ३.गोविन्द झा ४.राजेन्द्र बिमल ५.रामभरोस कापडि “भ्रमर” ६.रमेश रंजन ७.बृषेश चन्द्र लाल ८.धीरेन्द्र प्रेमर्षि ९.अनलकान्त १०.कुमार शैलेन्द्र ११.अमरनाथ १२.तारानन्द वियोगी १३.अनमोल झा १४.दुर्गानन्द मंडल १५.मिथिलेश कुमार झा १६.बेचन ठाकुर १७.धीरेन्द्र कुमार १८.सोमदेव १९.अशोक २०.ज्योति सुनीत चौधरी २१.जगदीश प्रसाद मण्डल २२.राजदेव मण्डल २३.देवशंकर नवीन २४.गजेन्द्र ठाकुर)
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२२६. खण्ड 4254, सूचकांक पंक्ति 2945: मुन्नाजीक “साक्षात्कार- हम पुष्टीत छी (१.रवीन्द्र कुमार दास २.योगेन्द्र प्रसाद यादव ३.गोविन्द झा ४.राजेन्द्र बिमल ५.रामभरोस कापडि “भ्रमर” ६.रमेश रंजन ७.बृषेश चन्द्र लाल ८.धीरेन्द्र प्रेमर्षि ९.अनलकान्त १०.कुमार शैलेन्द्र ११.अमरनाथ १२.तारानन्द वियोगी १३.अनमोल झा १४.दुर्गानन्द मंडल १५.मिथिलेश कुमार झा १६.बेचन ठाकुर १७.धीरेन्द्र कुमार १८.सोमदेव १९.अशोक २०.ज्योति सुनीत चौधरी २१.जगदीश प्रसाद मण्डल २२.राजदेव मण्डल २३.देवशंकर नवीन २४.गजेन्द्र ठाकुर)”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककें की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक मुन्नाजी, विधा गद्य, उप-विधा साक्षात्कार
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२२७. खण्ड 4254, सूचकांक पंक्ति 2945: मुन्नाजीक “साक्षात्कार- हम पुष्टीत छी (१.रवीन्द्र कुमार दास २.योगेन्द्र प्रसाद यादव ३.गोविन्द झा ४.राजेन्द्र बिमल ५.रामभरोस कापडि “भ्रमर” ६.रमेश रंजन ७.बृषेश चन्द्र लाल ८.धीरेन्द्र प्रेमर्षि ९.अनलकान्त १०.कुमार शैलेन्द्र ११.अमरनाथ १२.तारानन्द वियोगी १३.अनमोल झा १४.दुर्गानन्द मंडल १५.मिथिलेश कुमार झा १६.बेचन ठाकुर १७.धीरेन्द्र कुमार १८.सोमदेव १९.अशोक २०.ज्योति सुनीत चौधरी २१.जगदीश प्रसाद मण्डल २२.राजदेव मण्डल २३.देवशंकर नवीन २४.गजेन्द्र ठाकुर)” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२२८. खण्ड 4254, सूचकांक पंक्ति 2945: मुन्नाजीक “साक्षात्कार- हम पुष्टीत छी (१.रवीन्द्र कुमार दास २.योगेन्द्र प्रसाद यादव ३.गोविन्द झा ४.राजेन्द्र बिमल ५.रामभरोस कापडि “भ्रमर” ६.रमेश रंजन ७.बृषेश चन्द्र लाल ८.धीरेन्द्र प्रेमर्षि ९.अनलकान्त १०.कुमार शैलेन्द्र ११.अमरनाथ १२.तारानन्द वियोगी १३.अनमोल झा १४.दुर्गानन्द मंडल १५.मिथिलेश कुमार झा १६.बेचन ठाकुर १७.धीरेन्द्र कुमार १८.सोमदेव १९.अशोक २०.ज्योति सुनीत चौधरी २१.जगदीश प्रसाद मण्डल २२.राजदेव मण्डल २३.देवशंकर नवीन २४.गजेन्द्र ठाकुर)”कें विदेह-सदेह 33क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ साक्षात्कारक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

२२९. खण्ड 4254, सूचकांक पंक्ति 2945: मुन्नाजीक “साक्षात्कार- हम पुष्टीत छी (१.रवीन्द्र कुमार दास २.योगेन्द्र प्रसाद यादव ३.गोविन्द झा ४.राजेन्द्र बिमल ५.रामभरोस कापडि “भ्रमर” ६.रमेश रंजन ७.बृषेश चन्द्र लाल ८.धीरेन्द्र प्रेमर्षि ९.अनलकान्त १०.कुमार शैलेन्द्र ११.अमरनाथ १२.तारानन्द वियोगी १३.अनमोल झा १४.दुर्गानन्द मंडल १५.मिथिलेश कुमार झा १६.बेचन ठाकुर १७.धीरेन्द्र कुमार १८.सोमदेव १९.अशोक २०.ज्योति सुनीत चौधरी २१.जगदीश प्रसाद मण्डल २२.राजदेव मण्डल २३.देवशंकर नवीन २४.गजेन्द्र ठाकुर)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 33क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२३०. खण्ड 4254, सूचकांक पंक्ति 2945: एहि खण्डक सार की अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) खण्ड 4254, सूचकांक पंक्ति 2945मे मुत्राजीक “साक्षात्कार- हम पुष्टीत छी (१.रवीन्द्र कुमार दास २.योगेन्द्र प्रसाद यादव ३.गोविन्द झा ४.राजेन्द्र बिमल ५.रामभरोस कापडि “भ्रमर” ६.रमेश रंजन ७.बृषेश चन्द्र लाल ८.धीरेन्द्र प्रेमर्षि ९.अनलकान्त १०.कृमार शैलेन्द्र ११.अमरनाथ १२.तारानन्द वियोगी १३.अनमोल झा १४.दुर्गानन्द मंडल १५.मिथिलेश कुमार झा १६.बेचन ठाकुर १७.धीरेन्द्र कुमार १८.सोमदेव १९.अशोक २०.ज्योति सुनीत चौधरी २१.जगदीश प्रसाद मण्डल २२.राजदेव मण्डल २३.देवशंकर नवीन २४.गजेन्द्र ठाकुर)” प्रविष्टि गद्य, साक्षात्कार आ “साक्षात्कार- हम पुष्टीत छी (१.रवीन्द्र कुमार दास २.योगेन्द्र प्रसाद यादव ३.गोविन्द झा ४.राजेन्द्र बिमल ५.रामभरोस कापडि “भ्रमर” ६.रमेश रंजन ७.बृषेश चन्द्र लाल ८.धीरेन्द्र प्रेमर्षि ९.अनलकान्त १०.कृमार शैलेन्द्र ११.अमरनाथ १२.तारानन्द वियोगी १३.अनमोल झा १४.दुर्गानन्द मंडल १५.मिथिलेश कुमार झा १६.बेचन ठाकुर १७.धीरेन्द्र कुमार १८.सोमदेव १९.अशोक २०.ज्योति सुनीत चौधरी २१.जगदीश प्रसाद मण्डल २२.राजदेव मण्डल २३.देवशंकर नवीन २४.गजेन्द्र ठाकुर)” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 33क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 4255 : विदेह-सदेह 33 — मुत्राजी: प्रतीक- बीहिन कथा (अपन गप, अपन कहब रेवाज पडौआ टकटकी नियंत्रण गहना डोपिंग टेस्ट विनिमय सेजौट परमेश्वर पजेबा सफाई प्रिमियम मुखियैती लक्ष्य कौनचर आत्मानुभूति जनवाणी चश्मा उपहार काँट ओकाति जीवन चक्र रक्षक जमाना निर्धन आरक्षित नवयुग अवाक लिलसा खानदानी कूल्हड्या दानक बौस्त जुनुन विजेता हरियर बत्ती- लाल बत्ती लगाम देखाउँस माँ विजातीय स्वरूप आ संभावना विकल्प रीलीफ जिनगी सेवक (पृ.३०२-४६५)

२३१. खण्ड 4255, सूचकांक पंक्ति 2946: मुत्राजीक “प्रतीक- बीहिन कथा (अपन गप, अपन कहब रेवाज पडौआ टकटकी नियंत्रण गहना डोपिंग टेस्ट विनिमय सेजौट परमेश्वर पजेबा सफाई प्रिमियम मुखियैती लक्ष्य कौनचर आत्मानुभूति जनवाणी चश्मा उपहार काँट ओकाति जीवन चक्र रक्षक जमाना निर्धन आरक्षित नवयुग अवाक लिलसा खानदानी कूल्हड्या दानक बौस्त जुनुन विजेता हरियर बत्ती- लाल बत्ती लगाम देखाउँस माँ विजातीय स्वरूप आ संभावना विकल्प रीलीफ जिनगी सेवक (पृ.३०२-४६५)” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

(A) प्रतीक- बीहिन कथा (अपन गप, अपन कहब रेवाज पडौआ टकटकी नियंत्रण गहना डोपिंग टेस्ट विनिमय सेजौट परमेश्वर पजेबा सफाई प्रिमियम मुखियैती लक्ष्य कौनचर आत्मानुभूति जनवाणी चश्मा उपहार काँट ओकाति जीवन चक्र रक्षक जमाना निर्धन आरक्षित नवयुग अवाक लिलसा खानदानी कूल्हड्या दानक बौस्त जुनुन विजेता हरियर बत्ती- लाल बत्ती लगाम देखाउँस माँ विजातीय स्वरूप आ संभावना विकल्प रीलीफ जिनगी सेवक (पृ.३०२-४६५)

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२३२. खण्ड 4255, सूचकांक पंक्ति 2946: मुत्राजीक “प्रतीक- बीहिन कथा (अपन गप, अपन कहब रेवाज पडौआ टकटकी नियंत्रण गहना डोपिंग टेस्ट विनिमय सेजौट परमेश्वर पजेबा सफाई प्रिमियम मुखियैती लक्ष्य कौनचर आत्मानुभूति जनवाणी चश्मा उपहार काँट ओकाति जीवन चक्र रक्षक जमाना निर्धन आरक्षित नवयुग अवाक लिलसा खानदानी कूल्हड्या दानक बौस्त जुनुन विजेता हरियर बत्ती- लाल बत्ती लगाम देखाउँस माँ विजातीय स्वरूप आ संभावना विकल्प रीलीफ जिनगी सेवक (पृ.३०२-४६५)”क मुख्य विधा कोन अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) गद्य

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२३३. खण्ड 4255, सूचकांक पंक्ति 2946: मुत्राजीक “प्रतीक- बीहिन कथा (अपन गप, अपन कहब रेवाज पडौआ टकटकी नियंत्रण गहना डोपिंग टेस्ट विनिमय सेजौट परमेश्वर पजेबा सफाई प्रिमियम मुखियैती लक्ष्य कौनचर आत्मानुभूति जनवाणी चश्मा उपहार काँट ओकाति जीवन चक्र रक्षक जमाना निर्धन आरक्षित नवयुग अवाक लिलसा खानदानी कूल्हड्या दानक बौस्त जुनुन विजेता हरियर बत्ती- लाल बत्ती लगाम देखाउँस माँ विजातीय स्वरूप आ संभावना विकल्प रीलीफ जिनगी सेवक (पृ.३०२-४६५)”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) कथा/लघुकथा

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२३९. खण्ड 4255, सूचकांक पंक्ति 2946: मुत्राजीक “प्रतीक- बीहिन कथा (अपन गप, अपन कहब रेवाज पडौआ टकटकी नियंत्रण गहना डोपिंग टेस्ट विनिमय सेजौट परमेश्वर पजेबा सफाई प्रिमियम मुखियैती लक्ष्य कौनचर आत्मानुभूति जनवाणी चश्मा उपहार काँट ओकाति जीवन चक्र रक्षक जमाना निर्धन आरक्षित नवयुग अवाक लिलसा खानदानी कूल्हड्या दानक बौस्त जुनुन विजेता हरियर बत्ती- लाल बत्ती लगाम देखाउँस माँ विजातीय स्वरूप आ संभावना विकल्प रीलीफ जिनगी सेवक (पृ.३०२-४६५)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 33क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२४०. खण्ड 4255, सूचकांक पंक्ति 2946: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 4255, सूचकांक पंक्ति 2946मे मुत्राजीक “प्रतीक- बीहिन कथा (अपन गप, अपन कहब रेवाज पडौआ टकटकी नियंत्रण गहना डोपिंग टेस्ट विनिमय सेजौट परमेश्वर पजेबा सफाई प्रिमियम मुखियैती लक्ष्य कौनचर आत्मानुभूति जनवाणी चश्मा उपहार काँट ओकाति जीवन चक्र रक्षक जमाना निर्धन आरक्षित नवयुग अवाक लिलसा खानदानी कूल्हड्या दानक बौस्त जुनुन विजेता हरियर बत्ती- लाल बत्ती लगाम देखाउँस माँ विजातीय स्वरूप आ संभावना विकल्प रीलीफ जिनगी सेवक (पृ.३०२-४६५)” प्रविष्टि गद्य, कथा/लघुकथा आ “प्रतीक- बीहिन कथा (अपन गप, अपन कहब रेवाज पडौआ टकटकी नियंत्रण गहना डोपिंग टेस्ट विनिमय सेजौट परमेश्वर पजेबा सफाई प्रिमियम मुखियैती लक्ष्य कौनचर आत्मानुभूति जनवाणी चश्मा उपहार काँट ओकाति जीवन चक्र रक्षक जमाना निर्धन आरक्षित नवयुग अवाक लिलसा खानदानी कूल्हड्या दानक बौस्त जुनुन विजेता हरियर बत्ती- लाल बत्ती लगाम देखाउँस माँ विजातीय स्वरूप आ संभावना विकल्प रीलीफ जिनगी सेवक (पृ.३०२-४६५)” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 33क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 4256 : विदेह-सदेह 33 — गजेन्द्र ठाकूर: बडद करैए दाउन ने यौ, बाल गजल, बेसी छुट्टी कम इसकूल, शामिल बाजाक दुन्दभी वादक, मोनक रंगक अदृश्य देबाल, मन्दाकिनी जे आकाश मध्य, पक्काक जादि, निन्नक जीवन विचित्र, गंगा ब्रिज, हर आ बडद, बिसरलहूँ फेर कर्णक मृत्युक छोट- छीन रूप, बडका सडक छह लेन बला, मिथिलाक ध्वज गीत, ट्रेनक गाडी, राजा श्री अनुरन्दज सिंह, दीयाबाती, क्रिकेट-फील्डिंग, त्वज्वाहज्य, असज्जाति मन (पृ. ४६७-५७४)

२४१. खण्ड 4256, सूचकांक पंक्ति 2947: गजेन्द्र ठाकूरक “बडद करैए दाउन ने यौ, बाल गजल, बेसी छुट्टी कम इसकूल, शामिल बाजाक दुन्दभी वादक, मोनक रंगक अदृश्य देबाल, मन्दाकिनी जे आकाश मध्य, पक्काक जादि, निन्नक जीवन विचित्र, गंगा ब्रिज, हर आ बडद, बिसरलहूँ फेर कर्णक मृत्युक छोट- छीन रूप, बडका सडक छह लेन बला, मिथिलाक ध्वज गीत, ट्रेनक गाडी, राजा श्री अनुरन्दज सिंह, दीयाबाती, क्रिकेट-फील्डिंग, त्वज्वाहज्य, असज्जाति मन (पृ. ४६७-५७४)” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) बडद करैए दाउन ने यौ, बाल गजल, बेसी छुट्टी कम इसकूल, शामिल बाजाक दुन्दभी वादक, मोनक रंगक अदृश्य देबाल, मन्दाकिनी जे आकाश मध्य, पक्काक जादि, निन्नक जीवन विचित्र, गंगा ब्रिज, हर आ बडद, बिसरलहूँ फेर कर्णक मृत्युक छोट- छीन रूप, बडका सडक छह लेन बला, मिथिलाक ध्वज गीत, ट्रेनक गाडी, राजा श्री अनुरन्दज सिंह, दीयाबाती, क्रिकेट-फील्डिंग, त्वज्वाहज्य, असज्जाति मन (पृ. ४६७-५७४)
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२४२. खण्ड 4256, सूचकांक पंक्ति 2947: गजेन्द्र ठाकूरक “बडद करैए दाउन ने यौ, बाल गजल, बेसी छुट्टी कम इसकूल, शामिल बाजाक दुन्दभी वादक, मोनक रंगक अदृश्य देबाल, मन्दाकिनी जे आकाश मध्य, पक्काक जादि, निन्नक जीवन विचित्र, गंगा ब्रिज, हर आ बडद, बिसरलहूँ फेर कर्णक मृत्युक छोट- छीन रूप, बडका सडक छह लेन बला, मिथिलाक ध्वज गीत, ट्रेनक गाडी, राजा श्री अनुरन्दज सिंह, दीयाबाती, क्रिकेट-फील्डिंग, त्वज्वाहज्य, असज्जाति मन (पृ. ४६७-५७४)”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) पद्य
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२४३. खण्ड 4256, सूचकांक पंक्ति 2947: गजेन्द्र ठाकूरक “बडद करैए दाउन ने यौ, बाल गजल, बेसी छुट्टी कम इसकूल, शामिल बाजाक दुन्दभी वादक, मोनक रंगक अदृश्य देबाल, मन्दाकिनी जे आकाश मध्य, पक्काक जादि, निन्नक जीवन विचित्र, गंगा ब्रिज, हर आ बडद, बिसरलहूँ फेर कर्णक मृत्युक छोट- छीन रूप, बडका सडक छह लेन बला, मिथिलाक ध्वज गीत, ट्रेनक गाडी, राजा श्री अनुरन्दज सिंह, दीयाबाती, क्रिकेट-फील्डिंग, त्वज्याहज्य, असज्जाति मन (पृ. ४६७-५७४)”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) गजल/कविता
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२४४. खण्ड 4256, सूचकांक पंक्ति 2947: गजेन्द्र ठाकूरक “बडद करैए दाउन ने यौ, बाल गजल, बेसी छुट्टी कम इसकूल, शामिल बाजाक दुन्दभी वादक, मोनक रंगक अदृश्य देबाल, मन्दाकिनी जे आकाश मध्य, पक्काक जादि, निन्नक जीवन विचित्र, गंगा ब्रिज, हर आ बडद, बिसरलहूँ फेर कर्णक मृत्युक छोट- छीन रूप, बडका सडक छह लेन बला, मिथिलाक ध्वज गीत, ट्रेनक गाडी, राजा श्री अनुरन्दज सिंह, दीयाबाती, क्रिकेट-फील्डिंग, त्वज्याहज्य, असज्जाति मन (पृ. ४६७-५७४)” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) बडद करैए दाउन ने यौ, बाल गजल, बेसी छुट्टी कम इसकूल, शामिल बाजाक दुन्दभी वादक, मोनक रंगक अदृश्य देबाल, मन्दाकिनी जे आकाश मध्य, पक्काक जादि, निन्नक जीवन विचित्र, गंगा ब्रिज, हर आ बडद, बिसरलहूँ फेर कर्णक मृत्युक छोट- छीन रूप, बडका सडक छह लेन बला, मिथिलाक ध्वज गीत, ट्रेनक गाडी, राजा श्री अनुरन्दज सिंह, दीयाबाती, क्रिकेट-फील्डिंग, त्वज्याहज्य, असज्जाति मन (पृ. ४६७-५७४)

२४५. खण्ड 4256, सूचकांक पंक्ति 2947: गजेन्द्र ठाकूरक “बडद करैए दाउन ने यौ, बाल गजल, बेसी छुट्टी कम इसकूल, शामिल बाजाक दुन्दभी वादक, मोनक रंगक अदृश्य देबाल, मन्दाकिनी जे आकाश मध्य, पक्काक जादि, निन्नक जीवन विचित्र, गंगा ब्रिज, हर आ बडद, बिसरलहूँ फेर कर्णक मृत्युक छोट- छीन रूप, बडका सडक छह लेन बला, मिथिलाक ध्वज गीत, ट्रेनक गाडी, राजा श्री अनुरन्दज सिंह, दीयाबाती, क्रिकेट-फील्डिंग, त्वज्याहज्य, असज्जाति मन (पृ. ४६७-५७४)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 33मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) बडद करैए दाउन ने यौ, बाल गजल, बेसी छुट्टी कम इसकूल, शामिल बाजाक दुन्दभी वादक, मोनक रंगक अदृश्य देबाल, मन्दाकिनी जे आकाश मध्य, पक्काक जादि, निन्नक जीवन विचित्र, गंगा ब्रिज, हर आ बडद, बिसरलहूँ फेर कर्णक मृत्युक छोट- छीन रूप, बडका सडक छह लेन बला, मिथिलाक ध्वज गीत, ट्रेनक गाडी, राजा श्री अनुरन्दज सिंह, दीयाबाती, क्रिकेट-फील्डिंग, त्वज्याहज्य, असज्जाति मन (पृ. ४६७-५७४)
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२४६. खण्ड 4256, सूचकांक पंक्ति 2947: गजेन्द्र ठाकूरक “बडद करैए दाउन ने यौ, बाल गजल, बेसी छुट्टी कम इसकूल, शामिल बाजाक दुन्दभी वादक, मोनक रंगक अदृश्य देबाल, मन्दाकिनी जे आकाश मध्य, पक्काक जादि, निन्नक जीवन विचित्र, गंगा ब्रिज, हर आ बडद, बिसरलहूँ फेर कर्णक मृत्युक छोट- छीन रूप, बडका सडक छह लेन बला, मिथिलाक ध्वज गीत, ट्रेनक गाडी, राजा श्री अनुरन्दज सिंह, दीयाबाती, क्रिकेट-फील्डिंग, त्वज्याहज्य, असज्जाति मन (पृ. ४६७-५७४)”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककें की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक गजेन्द्र ठाकूर, विधा पद्य, उप-विधा गजल/कविता
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२४७. खण्ड 4256, सूचकांक पंक्ति 2947: गजेन्द्र ठाकूरक “बडद करैए दाउन ने यौ, बाल गजल, बेसी छुट्टी कम इसकूल, शामिल बाजाक दुन्दभी वादक, मोनक रंगक अदृश्य देबाल, मन्दाकिनी जे आकाश मध्य, पक्काक जादि, निन्नक जीवन विचित्र, गंगा ब्रिज, हर आ बडद, बिसरलहूँ फेर कर्णक मृत्युक छोट- छीन रूप, बडका सडक छह लेन बला, मिथिलाक ध्वज गीत, ट्रेनक गाडी, राजा श्री अनुरन्दज सिंह, दीयाबाती, क्रिकेट-फील्डिंग, त्वज्याहज्य, असज्जाति मन (पृ. ४६७-५७४)” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२४८. खण्ड 4256, सूचकांक पंक्ति 2947: गजेन्द्र ठाकूरक “बडद करैए दाउन ने यौ, बाल गजल, बेसी छुट्टी कम इसकूल, शामिल बाजाक दुन्दभी वादक, मोनक रंगक अदृश्य देबाल, मन्दाकिनी जे आकाश मध्य, पक्काक जादि, निन्नक जीवन विचित्र, गंगा ब्रिज, हर आ बडद, बिसरलहूँ फेर कर्णक मृत्युक छोट- छीन रूप, बडका सडक छह लेन बला, मिथिलाक ध्वज गीत, ट्रेनक गाडी, राजा श्री अनुरन्दज सिंह, दीयाबाती, क्रिकेट-फील्डिंग, त्वज्चाहज्य, असज्जाति मन (पृ. ४६७-५७४)” केँ विदेह-सदेह 33क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ गजल/कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

२४९. खण्ड 4256, सूचकांक पंक्ति 2947: गजेन्द्र ठाकूरक “बडद करैए दाउन ने यौ, बाल गजल, बेसी छुट्टी कम इसकूल, शामिल बाजाक दुन्दभी वादक, मोनक रंगक अदृश्य देबाल, मन्दाकिनी जे आकाश मध्य, पक्काक जादि, निन्नक जीवन विचित्र, गंगा ब्रिज, हर आ बडद, बिसरलहूँ फेर कर्णक मृत्युक छोट- छीन रूप, बडका सडक छह लेन बला, मिथिलाक ध्वज गीत, ट्रेनक गाडी, राजा श्री अनुरन्दज सिंह, दीयाबाती, क्रिकेट-फील्डिंग, त्वज्चाहज्य, असज्जाति मन (पृ. ४६७-५७४)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 33क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२५०. खण्ड 4256, सूचकांक पंक्ति 2947: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 4256, सूचकांक पंक्ति 2947मे गजेन्द्र ठाकूरक “बडद करैए दाउन ने यौ, बाल गजल, बेसी छुट्टी कम इसकूल, शामिल बाजाक दुन्दभी वादक, मोनक रंगक अदृश्य देबाल, मन्दाकिनी जे आकाश मध्य, पक्काक जादि, निन्नक जीवन विचित्र, गंगा ब्रिज, हर आ बडद, बिसरलहूँ फेर कर्णक मृत्युक छोट- छीन रूप, बडका सडक छह लेन बला, मिथिलाक ध्वज गीत, ट्रेनक गाडी, राजा श्री अनुरन्दज सिंह, दीयाबाती, क्रिकेट-फील्डिंग, त्वज्चाहज्य, असज्जाति मन (पृ. ४६७-५७४)” प्रविष्टि पद्य, गजल/कविता आ “बडद करैए दाउन ने यौ, बाल गजल, बेसी छुट्टी कम इसकूल, शामिल बाजाक दुन्दभी वादक, मोनक रंगक अदृश्य देबाल, मन्दाकिनी जे आकाश मध्य, पक्काक जादि, निन्नक जीवन विचित्र, गंगा ब्रिज, हर आ बडद, बिसरलहूँ फेर कर्णक मृत्युक छोट- छीन रूप, बडका सडक छह लेन बला, मिथिलाक ध्वज गीत, ट्रेनक गाडी, राजा श्री अनुरन्दज सिंह, दीयाबाती, क्रिकेट-फील्डिंग, त्वज्चाहज्य, असज्जाति मन (पृ. ४६७-५७४)” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 33क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 4257 : विदेह-सदेह 33 — कोसी लोकगीत: कोसी लोकगीत १-३ (प. ५७५-५७७)

२५१. खण्ड 4257, सूचकांक पंक्ति 2948: कोसी लोकगीतक “कोसी लोकगीत १-३ (प. ५७५-५७७)” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) कोसी लोकगीत १-३ (प. ५७५-५७७)
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२५२. खण्ड 4257, सूचकांक पंक्ति 2948: कोसी लोकगीतक “कोसी लोकगीत १-३ (प. ५७५-५७७)”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) पद्य
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२५३. खण्ड 4257, सूचकांक पंक्ति 2948: कोसी लोकगीतक “कोसी लोकगीत १-३ (प. ५७५-५७७)”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) लोकगीत
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२५४. खण्ड 4257, सूचकांक पंक्ति 2948: कोसी लोकगीतक “कोसी लोकगीत १-३ (प. ५७५-५७७)” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ईसीओएलओजीआइसीएएल डब्ल्यूआरआइटीआइएनजी

२५५. खण्ड 4257, सूचकांक पंक्ति 2948: कोसी लोकगीतक “कोसी लोकगीत १-३ (प. ५७५-५७७)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 33मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) ईसीओएलओजीआइसीएएल डब्ल्यूआरआइटीआइएनजी
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२५६. खण्ड 4257, सूचकांक पंक्ति 2948: कोसी लोकगीतक “कोसी लोकगीत १-३ (प. ५७५-५७७)”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक कोसी लोकगीत, विधा पद्य, उप-विधा लोकगीत
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२५७. खण्ड 4257, सूचकांक पंक्ति 2948: कोसी लोकगीतक “कोसी लोकगीत १-३ (प. ५७५-५७७)” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२५८. खण्ड 4257, सूचकांक पंक्ति 2948: कोसी लोकगीतक “कोसी लोकगीत १-३ (प. ५७५-५७७)”केँ विदेह-सदेह 33क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ लोकगीतक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

२५९. खण्ड 4257, सूचकांक पंक्ति 2948: कोसी लोकगीतक “कोसी लोकगीत १-३ (प. ५७५-५७७)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 33क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२६०. खण्ड 4257, सूचकांक पंक्ति 2948: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 4257, सूचकांक पंक्ति 2948मे कोसी लोकगीतक “कोसी लोकगीत १-३ (प. ५७५-५७७)” प्रविष्टि पद्य, लोकगीत आ “ईसीओएलओजीआइसीएएल डब्ल्यूआरआइटीआइएनजी” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 33क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 4258 : विदेह-सदेह 33 — बैकुण्ठ झा: चलू देखैब अपन गाम अय, सिनेमा, दहेज, परदेश, सडक, दुनियाँ (पृ. ५७८-५८३)

२६१. खण्ड 4258, सूचकांक पंक्ति 2949: बैकुण्ठ झाक “चलू देखैब अपन गाम अय, सिनेमा, दहेज, परदेश, सडक, दुनियाँ (पृ. ५७८-५८३)” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) चलू देखैब अपन गाम अय, सिनेमा, दहेज, परदेश, सडक, दुनियाँ (पृ. ५७८-५८३)
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२६२. खण्ड 4258, सूचकांक पंक्ति 2949: बैकुण्ठ झाक “चलू देखैब अपन गाम अय, सिनेमा, दहेज, परदेश, सडक, दुनियाँ (पृ. ५७८-५८३)”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) पद्य
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२६३. खण्ड 4258, सूचकांक पंक्ति 2949: बैकुण्ठ झाक “चलू देखैब अपन गाम अय, सिनेमा, दहेज, परदेश, सडक, दुनियाँ (पृ. ५७८-५८३)”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) कविता
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२६४. खण्ड 4258, सूचकांक पंक्ति 2949: बैकुण्ठ झाक “चलू देखैब अपन गाम अय, सिनेमा, दहेज, परदेश, सडक, दुनियाँ (पृ. ५७८-५८३)” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) परम्परावादी विमर्श

२६५. खण्ड 4258, सूचकांक पंक्ति 2949: बैकुण्ठ झाक “चलू देखैब अपन गाम अय, सिनेमा, दहेज, परदेश, सडक, दुनियाँ (पृ. ५७८-५८३)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 33मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) परम्परावादी विमर्श
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२६६. खण्ड 4258, सूचकांक पंक्ति 2949: बैकुण्ठ झाक “चलू देखैब अपन गाम अय, सिनेमा, दहेज, परदेश, सडक, दुनियाँ (पृ. ५७८-५८३)”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक बैकुण्ठ झा, विधा पद्य, उप-विधा कविता
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२६७. खण्ड 4258, सूचकांक पंक्ति 2949: बैकुण्ठ झाक “चलू देखैब अपन गाम अय, सिनेमा, दहेज, परदेश, सडक, दुनियाँ (पृ. ५७८-५८३)” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२६८. खण्ड 4258, सूचकांक पंक्ति 2949: बैकुण्ठ झाक “चलू देखैब अपन गाम अय, सिनेमा, दहेज, परदेश, सडक, दुनियाँ (पृ. ५७८-५८३)” केँ विदेह-सदेह 33क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

२६९. खण्ड 4258, सूचकांक पंक्ति 2949: बैकुण्ठ झाक “चलू देखैब अपन गाम अय, सिनेमा, दहेज, परदेश, सडक, दुनियाँ (पृ. ५७८-५८३)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 33क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२७०. खण्ड 4258, सूचकांक पंक्ति 2949: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 4258, सूचकांक पंक्ति 2949मे बैकुण्ठ झाक “चलू देखैब अपन गाम अय, सिनेमा, दहेज, परदेश, सडक, दुनियाँ (पृ. ५७८-५८३)” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “परम्परावादी विमर्श” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 33क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 4259 : विदेह-सदेह 33 — प्रकाश झा: हाल बचपनसँ पचपन तक (पृ. ५८४-५८६)

२७१. खण्ड 4259, सूचकांक पंक्ति 2950: प्रकाश झाक “हाल बचपनसँ पचपन तक (पृ. ५८४-५८६)” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) हाल बचपनसँ पचपन तक (पृ. ५८४-५८६)
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२७२. खण्ड 4259, सूचकांक पंक्ति 2950: प्रकाश झाक “हाल बचपनसँ पचपन तक (पृ. ५८४-५८६)”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) पद्य
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२७३. खण्ड 4259, सूचकांक पंक्ति 2950: प्रकाश झाक “हाल बचपनसँ पचपन तक (पृ. ५८४-५८६)”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) कविता
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२७४. खण्ड 4259, सूचकांक पंक्ति 2950: प्रकाश झाक “हाल बचपनसँ पचपन तक (पृ. ५८४-५८६)” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) सामाजिक रिपोर्टिंग

२७५. खण्ड 4259, सूचकांक पंक्ति 2950: प्रकाश झाक “हाल बचपनसँ पचपन तक (पृ. ५८४-५८६)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 33मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) सामाजिक रिपोर्टिंग
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२७६. खण्ड 4259, सूचकांक पंक्ति 2950: प्रकाश झाक “हाल बचपनसँ पचपन तक (पृ. ५८४-५८६)”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककें की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक प्रकाश झा, विधा पद्य, उप-विधा कविता
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२७७. खण्ड 4259, सूचकांक पंक्ति 2950: प्रकाश झाक “हाल बचपनसँ पचपन तक (पृ. ५८४-५८६)” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२७८. खण्ड 4259, सूचकांक पंक्ति 2950: प्रकाश झाक “हाल बचपनसँ पचपन तक (पृ. ५८४-५८६)”कें विदेह-सदेह 33क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

२७९. खण्ड 4259, सूचकांक पंक्ति 2950: प्रकाश झाक “हाल बचपनसँ पचपन तक (पृ. ५८४-५८६)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 33क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२८०. खण्ड 4259, सूचकांक पंक्ति 2950: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 4259, सूचकांक पंक्ति 2950मे प्रकाश झाक “हाल बचपनसँ पचपन तक (पृ. ५८४-५८६)” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “सामाजिक रिपोर्टिंग” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 33क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 4260 : विदेह-सदेह 33 — जितमोहन झा: दिलक कलमसँ शेर शायरी, जखन जनता जागि जाइत अछि! (पृ. ६२२-६२४)

२८१. खण्ड 4260, सूचकांक पंक्ति 2951: जितमोहन झाक “दिलक कलमसँ शेर शायरी, जखन जनता जागि जाइत अछि! (पृ. ६२२-६२४)” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) दिलक कलमसँ शेर शायरी, जखन जनता जागि जाइत अछि! (पृ. ६२२-६२४)
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२८२. खण्ड 4260, सूचकांक पंक्ति 2951: जितमोहन झाक “दिलक कलमसँ शैरो शायरी, जखन जनता जागि जाइत अछि! (पृ. ६२२-६२४)”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) पद्य
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२८३. खण्ड 4260, सूचकांक पंक्ति 2951: जितमोहन झाक “दिलक कलमसँ शैरो शायरी, जखन जनता जागि जाइत अछि! (पृ. ६२२-६२४)”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) शायरी/कविता
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२८४. खण्ड 4260, सूचकांक पंक्ति 2951: जितमोहन झाक “दिलक कलमसँ शैरो शायरी, जखन जनता जागि जाइत अछि! (पृ. ६२२-६२४)” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) मुम्बई

२८५. खण्ड 4260, सूचकांक पंक्ति 2951: जितमोहन झाक “दिलक कलमसँ शैरो शायरी, जखन जनता जागि जाइत अछि! (पृ. ६२२-६२४)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 33मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) मुम्बई
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२८६. खण्ड 4260, सूचकांक पंक्ति 2951: जितमोहन झाक “दिलक कलमसँ शैरो शायरी, जखन जनता जागि जाइत अछि! (पृ. ६२२-६२४)”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककें की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक जितमोहन झा, विधा पद्य, उप-विधा शायरी/कविता
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२८७. खण्ड 4260, सूचकांक पंक्ति 2951: जितमोहन झाक “दिलक कलमसँ शैरो शायरी, जखन जनता जागि जाइत अछि! (पृ. ६२२-६२४)” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२८८. खण्ड 4260, सूचकांक पंक्ति 2951: जितमोहन झाक “दिलक कलमसँ शैरो शायरी, जखन जनता जागि जाइत अछि! (पृ. ६२२-६२४)”कें विदेह-सदेह 33क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ शायरी/कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

२८९. खण्ड 4260, सूचकांक पंक्ति 2951: जितमोहन झाक “दिलक कलमसँ शैरो शायरी, जखन जनता जागि जाइत अछि! (पृ. ६२२-६२४)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 33क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२९०. खण्ड 4260, सूचकांक पंक्ति 2951: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 4260, सूचकांक पंक्ति 2951मे जितमोहन झाक “दिलक कलमसँ शैरो शायरी, जखन जनता जागि जाइत अछि! (पृ. ६२२-६२४)” प्रविष्टि पद्य, शायरी/कविता आ “मुम्बई” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 33क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 4261 : विदेह-सदेह 33 — कृष्णमोहन झा: एक दिन (पृ. ६२५-६२५)

२९१. खण्ड 4261, सूचकांक पंक्ति 2952: कृष्णमोहन झाक “एक दिन (पृ. ६२५-६२५)” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) एक दिन (पृ. ६२५-६२५)
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२९२. खण्ड 4261, सूचकांक पंक्ति 2952: कृष्णमोहन झाक “एक दिन (पृ. ६२५-६२५)”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) पद्य
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२९३. खण्ड 4261, सूचकांक पंक्ति 2952: कृष्णमोहन झाक “एक दिन (पृ. ६२५-६२५)”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) कविता
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२९४. खण्ड 4261, सूचकांक पंक्ति 2952: कृष्णमोहन झाक “एक दिन (पृ. ६२५-६२५)” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) भावात्मक

२९५. खण्ड 4261, सूचकांक पंक्ति 2952: कृष्णमोहन झाक “एक दिन (पृ. ६२५-६२५)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 33मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) भावात्मक
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२९६. खण्ड 4261, सूचकांक पंक्ति 2952: कृष्णमोहन झाक “एक दिन (पृ. ६२५-६२५)”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठकर्के की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक कृष्णमोहन झा, विधा पद्य, उप-विधा कविता
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२९७. खण्ड 4261, सूचकांक पंक्ति 2952: कृष्णमोहन झाक “एक दिन (पृ. ६२५-६२५)” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२९८. खण्ड 4261, सूचकांक पंक्ति 2952: कृष्णमोहन झाक “एक दिन (पृ. ६२५-६२५)”केँ विदेह-सदेह 33क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

२९९. खण्ड 4261, सूचकांक पंक्ति 2952: कृष्णमोहन झाक “एक दिन (पृ. ६२५-६२५)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 33क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३००. खण्ड 4261, सूचकांक पंक्ति 2952: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 4261, सूचकांक पंक्ति 2952मे कृष्णमोहन झाक “एक दिन (पृ. ६२५-६२५)” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “भावनात्मक” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 33क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 4262 : विदेह-सदेह 33 — अमरेन्द्र यादव: टमटमियाँ घोडा (पृ. ६२६-६२६)

३०१. खण्ड 4262, सूचकांक पंक्ति 2953: अमरेन्द्र यादवक “टमटमियाँ घोडा (पृ. ६२६-६२६)” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) टमटमियाँ घोडा (पृ. ६२६-६२६)
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३०२. खण्ड 4262, सूचकांक पंक्ति 2953: अमरेन्द्र यादवक “टमटमियाँ घोडा (पृ. ६२६-६२६)”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) पद्य
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३०३. खण्ड 4262, सूचकांक पंक्ति 2953: अमरेन्द्र यादवक “टमटमियाँ घोडा (पृ. ६२६-६२६)”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) कविता
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३०४. खण्ड 4262, सूचकांक पंक्ति 2953: अमरेन्द्र यादवक “टमटमियाँ घोडा (पृ. ६२६-६२६)” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ओबीसी आइडीईएनटीआइटीवाई

३०५. खण्ड 4262, सूचकांक पंक्ति 2953: अमरेन्द्र यादवक “टमटमियाँ घोडा (पृ. ६२६-६२६)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 33मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) ओबीसी आइडीईएनटीआइटीवाई
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३०६. खण्ड 4262, सूचकांक पंक्ति 2953: अमरेन्द्र यादवक “टमटमियाँ घोडा (पृ. ६२६-६२६)”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककें की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक अमरेन्द्र यादव, विधा पद्य, उप-विधा कविता
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३०७. खण्ड 4262, सूचकांक पंक्ति 2953: अमरेन्द्र यादवक “टमटमियाँ घोडा (पृ. ६२६-६२६)” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३०८. खण्ड 4262, सूचकांक पंक्ति 2953: अमरेन्द्र यादवक “टमटमियाँ घोडा (पृ. ६२६-६२६)”कें विदेह-सदेह 33क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

३०९. खण्ड 4262, सूचकांक पंक्ति 2953: अमरेन्द्र यादवक “टमटमियाँ घोडा (पृ. ६२६-६२६)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 33क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३१०. खण्ड 4262, सूचकांक पंक्ति 2953: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 4262, सूचकांक पंक्ति 2953मे अमरेन्द्र यादवक “टमटमियाँ घोडा (पृ. ६२६-६२६)” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “ओबीसी आइडीईएनटीआइटीवाई” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 33क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 4263 : विदेह-सदेह 33 — निमिष झा: जीवन एकटा दुरुह कविता, चिरींचिरीं भेल मोन, वेदनाक तरङ्ग, असमर्पित उन्माद, किछु हाइकू (पृ. ६२७-६३७)

३११. खण्ड 4263, सूचकांक पंक्ति 2954: निमिष झाक “जीवन एकटा दुरुह कविता, चिरींचिरीं भेल मोन, वेदनाक तरङ्ग, असमर्पित उन्माद, किछु हाइकू (पृ. ६२७-६३७)” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) जीवन एकटा दुरुह कविता, चिरींचिरीं भेल मोन, वेदनाक तरङ्ग, असमर्पित उन्माद, किछु हाइकू (पृ. ६२७-६३७)
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३१२. खण्ड 4263, सूचकांक पंक्ति 2954: निमिष झाक “जीवन एकटा दुरुह कविता, चिरींचिरीं भेल मोन, वेदनाक तरङ्ग, असमर्पित उन्माद, किछु हाइकू (पृ. ६२७-६३७)”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) पद्य
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३१३. खण्ड 4263, सूचकांक पंक्ति 2954: निमिष झाक “जीवन एकटा दुरुह कविता, चिरींचिरीं भेल मोन, वेदनाक तरङ्ग, असमर्पित उन्माद, किछु हाइकू (पृ. ६२७-६३७)”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) कविता/हाइकू
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३१४. खण्ड 4263, सूचकांक पंक्ति 2954: निमिष झाक “जीवन एकटा दुरुह कविता, चिरींचिरीं भेल मोन, वेदनाक तरङ्ग, असमर्पित उन्माद, किछु हाइकू (पृ. ६२७-६३७)” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) वीर+रौद्र रस

३१५. खण्ड 4263, सूचकांक पंक्ति 2954: निमिष झाक “जीवन एकटा दुरुह कविता, चिरींचिरीं भेल मोन, वेदनाक तरङ्ग, असमर्पित उन्माद, किछु हाइकू (पृ. ६२७-६३७)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 33मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) वीर+रौद्र रस
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३१६. खण्ड 4263, सूचकांक पंक्ति 2954: निमिष झाक “जीवन एकटा दुरुह कविता, चिरींचिरीं भेल मोन, वेदनाक तरङ्ग, असमर्पित उन्माद, किछु हाइकू (पृ. ६२७-६३७)”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककें की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक निमिष झा, विधा पद्य, उप-विधा कविता/हाइकू
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३१७. खण्ड 4263, सूचकांक पंक्ति 2954: निमिष झाक “जीवन एकटा दुरुह कविता, चिरीचिरी भेल मोन, वेदनाक तरङ्ग, असमर्पित उन्माद, किछु हाइकू (पू. ६२७-६३७)” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३१८. खण्ड 4263, सूचकांक पंक्ति 2954: निमिष झाक “जीवन एकटा दुरुह कविता, चिरीचिरी भेल मोन, वेदनाक तरङ्ग, असमर्पित उन्माद, किछु हाइकू (पू. ६२७-६३७)”क विदेह-सदेह 33क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ कविता/हाइकूक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

३१९. खण्ड 4263, सूचकांक पंक्ति 2954: निमिष झाक “जीवन एकटा दुरुह कविता, चिरीचिरी भेल मोन, वेदनाक तरङ्ग, असमर्पित उन्माद, किछु हाइकू (पू. ६२७-६३७)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 33क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३२०. खण्ड 4263, सूचकांक पंक्ति 2954: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 4263, सूचकांक पंक्ति 2954मे निमिष झाक “जीवन एकटा दुरुह कविता, चिरीचिरी भेल मोन, वेदनाक तरङ्ग, असमर्पित उन्माद, किछु हाइकू (पू. ६२७-६३७)” प्रविष्टि पद्य, कविता/हाइकू आ “वीर+रौद्र रस” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 33क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 4264 : विदेह-सदेह 33 — भालचन्द्र झा: अपन अस्तीत्वक असली मोल, हमर माय (पू. ६३८- ६४०)

३२१. खण्ड 4264, सूचकांक पंक्ति 2955: भालचन्द्र झाक “अपन अस्तीत्वक असली मोल, हमर माय (पू. ६३८- ६४०)” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) अपन अस्तीत्वक असली मोल, हमर माय (पू. ६३८- ६४०)
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३२२. खण्ड 4264, सूचकांक पंक्ति 2955: भालचन्द्र झाक “अपन अस्तीत्वक असली मोल, हमर माय (पू. ६३८- ६४०)”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) पद्य
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३२३. खण्ड 4264, सूचकांक पंक्ति 2955: भालचन्द्र झाक “अपन अस्तीत्वक असली मोल, हमर माय (पू. ६३८- ६४०)”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) कविता
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३२४. खण्ड 4264, सूचकांक पंक्ति 2955: भालचन्द्र झाक “अपन अस्तीत्वक असली मोल, हमर माय (पू. ६३८- ६४०)” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) रंगमञ्च परम्परा

३२५. खण्ड 4264, सूचकांक पंक्ति 2955: भालचन्द्र झाक “अपन अस्तीत्वक असली मोल, हमर माय (पू. ६३८- ६४०)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 33मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) रंगमञ्च परम्परा
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३२६. खण्ड 4264, सूचकांक पंक्ति 2955: भालचन्द्र झाक “अपन अस्तीत्वक असली मोल, हमर माय (पू. ६३८- ६४०)”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककें की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक भालचन्द्र झा, विधा पद्य, उप-विधा कविता
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३२७. खण्ड 4264, सूचकांक पंक्ति 2955: भालचन्द्र झाक “अपन अस्तीत्वक असली मोल, हमर माय (पू. ६३८- ६४०)” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३२८. खण्ड 4264, सूचकांक पंक्ति 2955: भालचन्द्र झाक “अपन अस्तीत्वक असली मोल, हमर माय (पू. ६३८- ६४०)”कें विदेह-सदेह 33क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

३२९. खण्ड 4264, सूचकांक पंक्ति 2955: भालचन्द्र झाक “अपन अस्तीत्वक असली मोल, हमर माय (पू. ६३८- ६४०)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 33क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३३०. खण्ड 4264, सूचकांक पंक्ति 2955: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 4264, सूचकांक पंक्ति 2955मे भालचन्द्र झाक “अपन अस्तीत्वक असली मोल, हमर माय (पू. ६३८- ६४०)” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “रंगमञ्च परम्परा” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 33क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 4265 : विदेह-सदेह 33 — अंकुर काशीनाथ झा: पश्चाताप (पृ. ६४१-६४१)

३३१. खण्ड 4265, सूचकांक पंक्ति 2956: अंकुर काशीनाथ झाक “पश्चाताप (पृ. ६४१-६४१)” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?
- (A) पश्चाताप (पृ. ६४१-६४१)
(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
३३२. खण्ड 4265, सूचकांक पंक्ति 2956: अंकुर काशीनाथ झाक “पश्चाताप (पृ. ६४१-६४१)”क मुख्य विधा कोन अछि?
- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
(B) पद्य
(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
३३३. खण्ड 4265, सूचकांक पंक्ति 2956: अंकुर काशीनाथ झाक “पश्चाताप (पृ. ६४१-६४१)”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?
- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
(C) कविता
(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
३३४. खण्ड 4265, सूचकांक पंक्ति 2956: अंकुर काशीनाथ झाक “पश्चाताप (पृ. ६४१-६४१)” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?
- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
(C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
(D) नव पीढ़ी
३३५. खण्ड 4265, सूचकांक पंक्ति 2956: अंकुर काशीनाथ झाक “पश्चाताप (पृ. ६४१-६४१)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 33मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?
- (A) नव पीढ़ी
(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
३३६. खण्ड 4265, सूचकांक पंक्ति 2956: अंकुर काशीनाथ झाक “पश्चाताप (पृ. ६४१-६४१)”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककें की मुख्य सूचना दैत अछि?
- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
(B) लेखक अंकुर काशीनाथ झा, विधा पद्य, उप-विधा कविता
(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
३३७. खण्ड 4265, सूचकांक पंक्ति 2956: अंकुर काशीनाथ झाक “पश्चाताप (पृ. ६४१-६४१)” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?
- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
(C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३३८. खण्ड 4265, सूचकांक पंक्ति 2956: अंकुर काशीनाथ झाक “पश्चाताप (पृ. ६४१-६४१)” के विदेह-सदेह 33क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

३३९. खण्ड 4265, सूचकांक पंक्ति 2956: अंकुर काशीनाथ झाक “पश्चाताप (पृ. ६४१-६४१)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 33क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३४०. खण्ड 4265, सूचकांक पंक्ति 2956: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 4265, सूचकांक पंक्ति 2956मे अंकुर काशीनाथ झाक “पश्चाताप (पृ. ६४१-६४१)” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “नव पीढ़ी” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 33क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 4266 : विदेह-सदेह 33 — प्रकाश झा: बाल-बुदरकक लेल कविता (पृ. ६४२-६४२)

३४१. खण्ड 4266, सूचकांक पंक्ति 2957: प्रकाश झाक “बाल-बुदरकक लेल कविता (पृ. ६४२-६४२)” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) बाल-बुदरकक लेल कविता (पृ. ६४२-६४२)
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३४२. खण्ड 4266, सूचकांक पंक्ति 2957: प्रकाश झाक “बाल-बुदरकक लेल कविता (पृ. ६४२-६४२)”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) पद्य
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३४३. खण्ड 4266, सूचकांक पंक्ति 2957: प्रकाश झाक “बाल-बुदरकक लेल कविता (पृ. ६४२-६४२)”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) बाल-कविता
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३४४. खण्ड 4266, सूचकांक पंक्ति 2957: प्रकाश झाक “बाल-बुदरकक लेल कविता (पृ. ६४२-६४२)” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) सामाजिक रिपोर्टिंग

३४५. खण्ड 4266, सूचकांक पंक्ति 2957: प्रकाश झाक “बाल-बुदरकक लेल कविता (पृ. ६४२-६४२)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 33मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) सामाजिक रिपोर्टिंग
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३४६. खण्ड 4266, सूचकांक पंक्ति 2957: प्रकाश झाक “बाल-बुदरकक लेल कविता (पृ. ६४२-६४२)”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक प्रकाश झा, विधा पद्य, उप-विधा बाल-कविता
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३४७. खण्ड 4266, सूचकांक पंक्ति 2957: प्रकाश झाक “बाल-बुदरकक लेल कविता (पृ. ६४२-६४२)” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३४८. खण्ड 4266, सूचकांक पंक्ति 2957: प्रकाश झाक “बाल-बुदरकक लेल कविता (पृ. ६४२-६४२)”केँ विदेह-सदेह 33क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ बाल-कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

३४९. खण्ड 4266, सूचकांक पंक्ति 2957: प्रकाश झाक “बाल-बुदरकक लेल कविता (पृ. ६४२-६४२)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 33क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३५०. खण्ड 4266, सूचकांक पंक्ति 2957: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 4266, सूचकांक पंक्ति 2957मे प्रकाश झाक “बाल-बुदरकक लेल कविता (पृ. ६४२-६४२)” प्रविष्टि पद्य, बाल-कविता आ “सामाजिक रिपोर्टिंग” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 33क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 4267 : विदेह-सदेह 33 — सुबोध ठाकूर: मनक तरंग, केना होएत मिथिलाक जीणोद्धार, शब्दक वाण चलेबए- नहि सहबए आब अत्याचार, पिया हमर परदेशिया, हम गामेमे रहबइ (पृ. ६४३-६४८)

३५१. खण्ड 4267, सूचकांक पंक्ति 2958: सुबोध ठाकूरक “मनक तरंग, केना होएत मिथिलाक जीणोद्धार, शब्दक वाण चलेबए- नहि सहबए आब अत्याचार, पिया हमर परदेशिया, हम गामेमे रहबइ (पृ. ६४३-६४८)” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) मनक तरंग, केना होएत मिथिलाक जीणोद्धार, शब्दक वाण चलेबए- नहि सहबए आब अत्याचार, पिया हमर परदेशिया, हम गामेमे रहबइ (पृ. ६४३-६४८)
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३५२. खण्ड 4267, सूचकांक पंक्ति 2958: सुबोध ठाकूरक “मनक तरंग, केना होएत मिथिलाक जीणोद्धार, शब्दक वाण चलेबए- नहि सहबए आब अत्याचार, पिया हमर परदेशिया, हम गामेमे रहबइ (पृ. ६४३-६४८)”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) पद्य
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३५३. खण्ड 4267, सूचकांक पंक्ति 2958: सुबोध ठाकूरक “मनक तरंग, केना होएत मिथिलाक जीणोद्धार, शब्दक वाण चलेबए- नहि सहबए आब अत्याचार, पिया हमर परदेशिया, हम गामेमे रहबइ (पृ. ६४३-६४८)”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) कविता
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३५४. खण्ड 4267, सूचकांक पंक्ति 2958: सुबोध ठाकूरक “मनक तरंग, केना होएत मिथिलाक जीणोद्धार, शब्दक वाण चलेबए- नहि सहबए आब अत्याचार, पिया हमर परदेशिया, हम गामेमे रहबइ (पृ. ६४३-६४८)” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) मनक तरंग, केना होएत मिथिलाक जीणोद्धार, शब्दक वाण चलेबए- नहि सहबए आब अत्याचार, पिया हमर परदेशिया, हम गामेमे रहबइ (पृ. ६४३-६४८)

३५५. खण्ड 4267, सूचकांक पंक्ति 2958: सुबोध ठाकूरक “मनक तरंग, केना होएत मिथिलाक जीणोद्धार, शब्दक वाण चलेबए- नहि सहबए आब अत्याचार, पिया हमर परदेशिया, हम गामेमे रहबइ (पृ. ६४३-६४८)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 33मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) मनक तरंग, केना होएत मिथिलाक जीणोद्धार, शब्दक वाण चलेबए- नहि सहबए आब अत्याचार, पिया हमर परदेशिया, हम गामेमे रहबइ (पृ. ६४३-६४८)
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३५६. खण्ड 4267, सूचकांक पंक्ति 2958: सुबोध ठाकूरक “मनक तरंग, केना होएत मिथिलाक जीणोद्धार, शब्दक वाण चलेबए- नहि सहबए आब अत्याचार, पिया हमर परदेशिया, हम गामेमे रहबइ (पृ. ६४३-६४८)”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककें की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक सुबोध ठाकूर, विधा पद्य, उप-विधा कविता
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३५७. खण्ड 4267, सूचकांक पंक्ति 2958: सुबोध ठाकूरक “मनक तरंग, केना होएत मिथिलाक जीणोद्धार, शब्दक वाण चलेबए- नहि सहबए आब अत्याचार, पिया हमर परदेशिया, हम गामेमे रहबइ (पृ. ६४३-६४८)” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३५८. खण्ड 4267, सूचकांक पंक्ति 2958: सुबोध ठाकूरक “मनक तरंग, केना होएत मिथिलाक जीणोद्धार, शब्दक वाण चलेबए- नहि सहबए आब अत्याचार, पिया हमर परदेशिया, हम गामेमे रहबइ (पृ. ६४३-६४८)”क विदेह-सदेह 33क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

३५९. खण्ड 4267, सूचकांक पंक्ति 2958: सुबोध ठाकूरक “मनक तरंग, केना होएत मिथिलाक जीणोद्धार, शब्दक वाण चलेबए- नहि सहबए आब अत्याचार, पिया हमर परदेशिया, हम गामेमे रहबइ (पृ. ६४३-६४८)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 33क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३६०. खण्ड 4267, सूचकांक पंक्ति 2958: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 4267, सूचकांक पंक्ति 2958मे सुबोध ठाकूरक “मनक तरंग, केना होएत मिथिलाक जीणोद्धार, शब्दक वाण चलेबए- नहि सहबए आब अत्याचार, पिया हमर परदेशिया, हम गामेमे रहबइ (पृ. ६४३-६४८)” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “मनक तरंग, केना होएत मिथिलाक जीणोद्धार, शब्दक वाण चलेबए- नहि सहबए आब अत्याचार, पिया हमर परदेशिया, हम गामेमे रहबइ (पृ. ६४३-६४८)” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 33क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 4268 : विदेह-सदेह 33 — रुपेश कुमार झा 'त्योँथ': आयल फेरो समय लगनक, जंगल दिस !, मैथिल के? (पृ. ६४९-६५२)

३६१. खण्ड 4268, सूचकांक पंक्ति 2959: रुपेश कुमार झा 'त्योँथ'क “आयल फेरो समय लगनक, जंगल दिस !, मैथिल के? (पृ. ६४९-६५२)” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) आयल फेरो समय लगनक, जंगल दिस !, मैथिल के? (पृ. ६४९-६५२)
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३६२. खण्ड 4268, सूचकांक पंक्ति 2959: रुपेश कुमार झा 'त्योँथ'क “आयल फेरो समय लगनक, जंगल दिस !, मैथिल के? (पृ. ६४९-६५२)”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) पद्य
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३६३. खण्ड 4268, सूचकांक पंक्ति 2959: रुपेश कुमार झा 'त्योथ'क “आयल फेरो समय लगनक, जंगल दिस !, मैथिल के? (पृ. ६४९-६५२)”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) कविता
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३६४. खण्ड 4268, सूचकांक पंक्ति 2959: रुपेश कुमार झा 'त्योथ'क “आयल फेरो समय लगनक, जंगल दिस !, मैथिल के? (पृ. ६४९-६५२)” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) आयल फेरो समय लगनक, जंगल दिस !, मैथिल के? (पृ. ६४९-६५२)

३६५. खण्ड 4268, सूचकांक पंक्ति 2959: रुपेश कुमार झा 'त्योथ'क “आयल फेरो समय लगनक, जंगल दिस !, मैथिल के? (पृ. ६४९-६५२)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 33मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) आयल फेरो समय लगनक, जंगल दिस !, मैथिल के? (पृ. ६४९-६५२)
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३६६. खण्ड 4268, सूचकांक पंक्ति 2959: रुपेश कुमार झा 'त्योथ'क “आयल फेरो समय लगनक, जंगल दिस !, मैथिल के? (पृ. ६४९-६५२)”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककें की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक रुपेश कुमार झा 'त्योथ', विधा पद्य, उप-विधा कविता
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३६७. खण्ड 4268, सूचकांक पंक्ति 2959: रुपेश कुमार झा 'त्योथ'क “आयल फेरो समय लगनक, जंगल दिस !, मैथिल के? (पृ. ६४९-६५२)” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३६८. खण्ड 4268, सूचकांक पंक्ति 2959: रुपेश कुमार झा 'त्योथ'क “आयल फेरो समय लगनक, जंगल दिस !, मैथिल के? (पृ. ६४९-६५२)”क विदेह-सदेह 33क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

३६९. खण्ड 4268, सूचकांक पंक्ति 2959: रुपेश कुमार झा 'त्योथ'क “आयल फेरो समय लगनक, जंगल दिस !, मैथिल के? (पृ. ६४९-६५२)”क प्रविष्टि विदेह-सदेह 33क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३७०. खण्ड 4268, सूचकांक पंक्ति 2959: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 4268, सूचकांक पंक्ति 2959मे रुपेश कुमार झा 'त्योथ'क “आयल फेरो समय लगनक, जंगल दिस !, मैथिल के? (पृ. ६४९-६५२)” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “आयल फेरो समय लगनक, जंगल दिस !, मैथिल के? (पृ. ६४९-६५२)” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 33क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 4269 : विदेह-सदेह 33 — मनीष झा "बौआभाई": माय (पृ. ६५४-६५५)

३७१. खण्ड 4269, सूचकांक पंक्ति 2960: मनीष झा "बौआभाई"क “माय (पृ. ६५४-६५५)” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) माय (पृ. ६५४-६५५)
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३७२. खण्ड 4269, सूचकांक पंक्ति 2960: मनीष झा "बौआभाई"क “माय (पृ. ६५४-६५५)”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) पद्य
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३७३. खण्ड 4269, सूचकांक पंक्ति 2960: मनीष झा "बौआभाई"क “माय (पृ. ६५४-६५५)”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) कविता
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३७४. खण्ड 4269, सूचकांक पंक्ति 2960: मनीष झा "बौआभाई"क “माय (पृ. ६५४-६५५)” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) माय (पृ. ६५४-६५५)

३७५. खण्ड 4269, सूचकांक पंक्ति 2960: मनीष झा "बौआभाई"क “माय (पृ. ६५४-६५५)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 33मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) माय (पृ. ६५४-६५५)
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३७६. खण्ड 4269, सूचकांक पंक्ति 2960: मनीष झा "बौआभाई"क “माय (पृ. ६५४-६५५)”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककें की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक मनीष झा "बौआभाई", विधा पद्य, उप-विधा कविता
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३७७. खण्ड 4269, सूचकांक पंक्ति 2960: मनीष झा "बौआभाई"क “माय (पृ. ६५४-६५५)” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३७८. खण्ड 4269, सूचकांक पंक्ति 2960: मनीष झा "बौआभाई"क “माय (पृ. ६५४-६५५)”कें विदेह-सदेह 33क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

३७९. खण्ड 4269, सूचकांक पंक्ति 2960: मनीष झा "बौआभाई"क “माय (पृ. ६५४-६५५)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 33क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३८०. खण्ड 4269, सूचकांक पंक्ति 2960: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 4269, सूचकांक पंक्ति 2960मे मनीष झा "बौआभाई"क “माय (पृ. ६५४-६५५)” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “माय (पृ. ६५४-६५५)” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 33क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 4270 : विदेह-सदेह 33 — सतीश चन्द्र झा: मध्य वर्गक सपना, भ्रमित शब्द, नाव आ जीवन, मौनक शब्द, चुनाव, शब्द, हमर स्वतंत्रता, ई जीवन, अपन भाषा (पृ. ६५६-६७०)

३८१. खण्ड 4270, सूचकांक पंक्ति 2961: सतीश चन्द्र झाक “मध्य वर्गक सपना, भ्रमित शब्द, नाव आ जीवन, मौनक शब्द, चुनाव, शब्द, हमर स्वतंत्रता, ई जीवन, अपन भाषा (पृ. ६५६-६७०)” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) मध्य वर्गक सपना, भ्रमित शब्द, नाव आ जीवन, मौनक शब्द, चुनाव, शब्द, हमर स्वतंत्रता, ई जीवन, अपन भाषा (पृ. ६५६-६७०)
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३८२. खण्ड 4270, सूचकांक पंक्ति 2961: सतीश चन्द्र झाक “मध्य वर्गक सपना, भ्रमित शब्द, नाव आ जीवन, मौनक शब्द, चुनाव, शब्द, हमर स्वतंत्रता, ई जीवन, अपन भाषा (पृ. ६५६-६७०)”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) पद्य
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३८३. खण्ड 4270, सूचकांक पंक्ति 2961: सतीश चन्द्र झाक “मध्य वर्गक सपना, भ्रमित शब्द, नाव आ जीवन, मौनक शब्द, चुनाव, शब्द, हमर स्वतंत्रता, ई जीवन, अपन भाषा (पृ. ६५६-६७०)”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) कविता
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३८४. खण्ड 4270, सूचकांक पंक्ति 2961: सतीश चन्द्र झाक “मध्य वर्गक सपना, भ्रमित शब्द, नाव आ जीवन, मौनक शब्द, चुनाव, शब्द, हमर स्वतंत्रता, ई जीवन, अपन भाषा (पृ. ६५६-६७०)” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) जीवन-कविता

३८५. खण्ड 4270, सूचकांक पंक्ति 2961: सतीश चन्द्र झाक “मध्य वर्गक सपना, भ्रमित शब्द, नाव आ जीवन, मौनक शब्द, चुनाव, शब्द, हमर स्वतंत्रता, ई जीवन, अपन भाषा (पृ. ६५६-६७०)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 33मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) जीवन-कविता
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३८६. खण्ड 4270, सूचकांक पंक्ति 2961: सतीश चन्द्र झाक “मध्य वर्गक सपना, भ्रमित शब्द, नाव आ जीवन, मौनक शब्द, चुनाव, शब्द, हमर स्वतंत्रता, ई जीवन, अपन भाषा (पृ. ६५६-६७०)”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककें की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक सतीश चन्द्र झा, विधा पद्य, उप-विधा कविता
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३८७. खण्ड 4270, सूचकांक पंक्ति 2961: सतीश चन्द्र झाक “मध्य वर्गक सपना, भ्रमित शब्द, नाव आ जीवन, मौनक शब्द, चुनाव, शब्द, हमर स्वतंत्रता, ई जीवन, अपन भाषा (पृ. ६५६-६७०)” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३८८. खण्ड 4270, सूचकांक पंक्ति 2961: सतीश चन्द्र झाक “मध्य वर्गक सपना, भ्रमित शब्द, नाव आ जीवन, मौनक शब्द, चुनाव, शब्द, हमर स्वतंत्रता, ई जीवन, अपन भाषा (पृ. ६५६-६७०)”कें विदेह-सदेह 33क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

३८९. खण्ड 4270, सूचकांक पंक्ति 2961: सतीश चन्द्र झाक “मध्य वर्गक सपना, भ्रमित शब्द, नाव आ जीवन, मौनक शब्द, चुनाव, शब्द, हमर स्वतंत्रता, ई जीवन, अपन भाषा (पृ. ६५६-६७०)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 33क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३९०. खण्ड 4270, सूचकांक पंक्ति 2961: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 4270, सूचकांक पंक्ति 2961मे सतीश चन्द्र झाक “मध्य वर्गक सपना, भ्रमित शब्द, नाव आ जीवन, मौनक शब्द, चुनाव, शब्द, हमर स्वतंत्रता, ई जीवन, अपन भाषा (पृ. ६५६-६७०)” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “जीवन-कविता” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 33क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 4271 : विदेह-सदेह 33 — विवेकानंद झा: सिंगरहार (पृ. ६७१-६७२)

३९१. खण्ड 4271, सूचकांक पंक्ति 2962: विवेकानंद झाक “सिंगरहार (पृ. ६७१-६७२)” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) सिंगरहार (पृ. ६७१-६७२)
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३९२. खण्ड 4271, सूचकांक पंक्ति 2962: विवेकानंद झाक “सिंगरहार (पृ. ६७१-६७२)”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) पद्य
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३९३. खण्ड 4271, सूचकांक पंक्ति 2962: विवेकानंद झाक “सिंगरहार (पृ. ६७१-६७२)”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) कविता
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३९४. खण्ड 4271, सूचकांक पंक्ति 2962: विवेकानंद झाक “सिंगरहार (पृ. ६७१-६७२)” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) सिंगरहार (पृ. ६७१-६७२)

३९५. खण्ड 4271, सूचकांक पंक्ति 2962: विवेकानंद झाक “सिंगरहार (पृ. ६७१-६७२)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 33मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) सिंगरहार (पृ. ६७१-६७२)
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३९६. खण्ड 4271, सूचकांक पंक्ति 2962: विवेकानंद झाक “सिंगरहार (पृ. ६७१-६७२)”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककें की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक विवेकानंद झा, विधा पद्य, उप-विधा कविता
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३९७. खण्ड 4271, सूचकांक पंक्ति 2962: विवेकानंद झाक “सिंगरहार (पृ. ६७१-६७२)” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३९८. खण्ड 4271, सूचकांक पंक्ति 2962: विवेकानंद झाक “सिंगरहार (पृ. ६७१-६७२)”कें विदेह-सदेह 33क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

३९९. खण्ड 4271, सूचकांक पंक्ति 2962: विवेकानंद झाक “सिंगरहार (पृ. ६७१-६७२)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 33क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४००. खण्ड 4271, सूचकांक पंक्ति 2962: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 4271, सूचकांक पंक्ति 2962मे विवेकानंद झाक “सिंगरहार (पृ. ६७१-६७२)” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “सिंगरहार (पृ. ६७१-६७२)” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 33क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 4272 : विदेह-सदेह 33 — अमित मिश्र: नव-अंशु (अपन गप, गजल १-९०, हजल-१-६, रुबाइ- १-१६) (पृ. १७३-७७६)

४०१. खण्ड 4272, सूचकांक पंक्ति 2963: अमित मिश्रक “नव-अंशु (अपन गप, गजल १-९०, हजल-१-६, रुबाइ- १-१६) (पृ. १७३-७७६)” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) नव-अंशु (अपन गप, गजल १-९०, हजल-१-६, रुबाइ- १-१६) (पृ. १७३-७७६)
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४०२. खण्ड 4272, सूचकांक पंक्ति 2963: अमित मिश्रक “नव-अंशु (अपन गप, गजल १-९०, हजल-१-६, रुबाइ- १-१६) (पृ. १७३-७७६)”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) पद्य
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४०३. खण्ड 4272, सूचकांक पंक्ति 2963: अमित मिश्रक “नव-अंशु (अपन गप, गजल १-९०, हजल-१-६, रुबाइ- १-१६) (पृ. १७३-७७६)”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) गजल/कविता/रुबाइ
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४०४. खण्ड 4272, सूचकांक पंक्ति 2963: अमित मिश्रक “नव-अंशु (अपन गप, गजल १-९०, हजल-१-६, रुबाइ- १-१६) (पृ. १७३-७७६)” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) नव-अंशु (अपन गप, गजल १-९०, हजल-१-६, रुबाइ- १-१६) (पृ. १७३-७७६)

४०५. खण्ड 4272, सूचकांक पंक्ति 2963: अमित मिश्रक “नव-अंशु (अपन गप, गजल १-९०, हजल-१-६, रुबाइ- १-१६) (पृ. १७३-७७६)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 33मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) नव-अंशु (अपन गप, गजल १-९०, हजल-१-६, रुबाइ- १-१६) (पृ. १७३-७७६)
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४०६. खण्ड 4272, सूचकांक पंक्ति 2963: अमित मिश्रक “नव-अंशु (अपन गप, गजल १-९०, हजल-१-६, रुबाइ- १-१६) (पृ. १७३-७७६)”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठकरे की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक अमित मिश्र, विधा पद्य, उप-विधा गजल/कविता/रुबाइ
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४०७. खण्ड 4272, सूचकांक पंक्ति 2963: अमित मिश्रक “नव-अंशु (अपन गप, गजल १-९०, हजल-१-६, रुबाइ- १-१६) (पृ. १७३-७७६)” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४०८. खण्ड 4272, सूचकांक पंक्ति 2963: अमित मिश्रक “नव-अंशु (अपन गप, गजल १-९०, हजल-१-६, रुबाइ- १-१६) (पृ. १७३-७७६)”क विदेह-सदेह 33क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ गजल/कविता/रुबाइक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

४०९. खण्ड 4272, सूचकांक पंक्ति 2963: अमित मिश्रक “नव-अंशु (अपन गप, गजल १-९०, हजल-१-६, रुबाइ- १-१६) (पृ. १७३-७७६)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 33क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४१०. खण्ड 4272, सूचकांक पंक्ति 2963: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 4272, सूचकांक पंक्ति 2963मे अमित मिश्रक “नव-अंशु (अपन गप, गजल १-९०, हजल-१-६, रुबाइ- १-१६) (पृ. १७३-७७६)” प्रविष्टि पद्य, गजल/कविता/रुबाइ आ “नव-अंशु (अपन गप, गजल १-९०, हजल-१-६, रुबाइ- १-१६) (पृ. १७३-७७६)” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 33क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 4273 : विदेह-सदेह 33 — चंदन कुमार झा: मोनक बात [अपन गप, गजल (१-६६), हजल (१-२), बाल गजल (१-१५), रुबाइ (१-३३), कता (१)] (पृ. ७७७- ८३९)

४११. खण्ड 4273, सूचकांक पंक्ति 2964: चंदन कुमार झाक “मोनक बात [अपन गप, गजल (१-६६), हजल (१-२), बाल गजल (१-१५), रुबाइ (१-३३), कता (१)] (पृ. ७७७- ८३९)” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) मोनक बात [अपन गप, गजल (१-६६), हजल (१-२), बाल गजल (१-१५), रुबाइ (१-३३), कता (१)] (पृ. ७७७- ८३९)
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४१२. खण्ड 4273, सूचकांक पंक्ति 2964: चंदन कुमार झाक “मोनक बात [अपन गप, गजल (१-६६), हजल (१-२), बाल गजल (१-१५), रुबाइ (१-३३), कता (१)] (पृ. ७७७- ८३९)”क मुख्य विधा कोन अछि?
- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
 (B) पद्य
 (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
 (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
४१३. खण्ड 4273, सूचकांक पंक्ति 2964: चंदन कुमार झाक “मोनक बात [अपन गप, गजल (१-६६), हजल (१-२), बाल गजल (१-१५), रुबाइ (१-३३), कता (१)] (पृ. ७७७- ८३९)”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?
- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
 (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
 (C) गजल/रुबाइ/कता
 (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
४१४. खण्ड 4273, सूचकांक पंक्ति 2964: चंदन कुमार झाक “मोनक बात [अपन गप, गजल (१-६६), हजल (१-२), बाल गजल (१-१५), रुबाइ (१-३३), कता (१)] (पृ. ७७७- ८३९)” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?
- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
 (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
 (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
 (D) मोनक बात [अपन गप, गजल (१-६६), हजल (१-२), बाल गजल (१-१५), रुबाइ (१-३३), कता (१)] (पृ. ७७७- ८३९)
४१५. खण्ड 4273, सूचकांक पंक्ति 2964: चंदन कुमार झाक “मोनक बात [अपन गप, गजल (१-६६), हजल (१-२), बाल गजल (१-१५), रुबाइ (१-३३), कता (१)] (पृ. ७७७- ८३९)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 33मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?
- (A) मोनक बात [अपन गप, गजल (१-६६), हजल (१-२), बाल गजल (१-१५), रुबाइ (१-३३), कता (१)] (पृ. ७७७- ८३९)
 (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
 (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
 (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
४१६. खण्ड 4273, सूचकांक पंक्ति 2964: चंदन कुमार झाक “मोनक बात [अपन गप, गजल (१-६६), हजल (१-२), बाल गजल (१-१५), रुबाइ (१-३३), कता (१)] (पृ. ७७७- ८३९)”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककें की मुख्य सूचना दैत अछि?
- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
 (B) लेखक चंदन कुमार झा, विधा पद्य, उप-विधा गजल/रुबाइ/कता
 (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
 (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
४१७. खण्ड 4273, सूचकांक पंक्ति 2964: चंदन कुमार झाक “मोनक बात [अपन गप, गजल (१-६६), हजल (१-२), बाल गजल (१-१५), रुबाइ (१-३३), कता (१)] (पृ. ७७७- ८३९)” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?
- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
 (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
 (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
 (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
४१८. खण्ड 4273, सूचकांक पंक्ति 2964: चंदन कुमार झाक “मोनक बात [अपन गप, गजल (१-६६), हजल (१-२), बाल गजल (१-१५), रुबाइ (१-३३), कता (१)] (पृ. ७७७- ८३९)”कें विदेह-सदेह 33क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?
- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
 (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
 (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
 (D) ई पाठ गजल/रुबाइ/कताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

४१९. खण्ड 4273, सूचकांक पंक्ति 2964: चंदन कुमार झाक “मोनक बात [अपन गप, गजल (१-६६), हजल (१-२), बाल गजल (१-१५), रुबाइ (१-३३), कता (१)] (पृ. ७७७- ८३९)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 33क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४२०. खण्ड 4273, सूचकांक पंक्ति 2964: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 4273, सूचकांक पंक्ति 2964मे चंदन कुमार झाक “मोनक बात [अपन गप, गजल (१-६६), हजल (१-२), बाल गजल (१-१५), रुबाइ (१-३३), कता (१)] (पृ. ७७७- ८३९)” प्रविष्टि पद्य, गजल/रुबाइ/कता आ “मोनक बात [अपन गप, गजल (१-६६), हजल (१-२), बाल गजल (१-१५), रुबाइ (१-३३), कता (१)] (पृ. ७७७- ८३९)” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 33क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 4274 : विदेह-सदेह 33 — विनीत उत्पल: हम पुछैत छी (अपन गप, ५० टा कविता) (प. ४००- ४९६)

४२१. खण्ड 4274, सूचकांक पंक्ति 2965: विनीत उत्पलक “हम पुछैत छी (अपन गप, ५० टा कविता) (प. ४००- ४९६)” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) हम पुछैत छी (अपन गप, ५० टा कविता) (प. ४००- ४९६)
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४२२. खण्ड 4274, सूचकांक पंक्ति 2965: विनीत उत्पलक “हम पुछैत छी (अपन गप, ५० टा कविता) (प. ४००- ४९६)”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) पद्य
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४२३. खण्ड 4274, सूचकांक पंक्ति 2965: विनीत उत्पलक “हम पुछैत छी (अपन गप, ५० टा कविता) (प. ४००- ४९६)”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) कविता
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४२४. खण्ड 4274, सूचकांक पंक्ति 2965: विनीत उत्पलक “हम पुछैत छी (अपन गप, ५० टा कविता) (प. ४००- ४९६)” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) जेओयूआरएनएएलआइएसटीआईसी डीईपीटीएच

४२५. खण्ड 4274, सूचकांक पंक्ति 2965: विनीत उत्पलक “हम पुछैत छी (अपन गप, ५० टा कविता) (प. ४००- ४९६)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 33मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) जेओयूआरएनएएलआइएसटीआईसी डीईपीटीएच
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४२६. खण्ड 4274, सूचकांक पंक्ति 2965: विनीत उत्पलक “हम पुछैत छी (अपन गप, ५० टा कविता) (प. ४००- ४९६)”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठकै की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक विनीत उत्पल, विधा पद्य, उप-विधा कविता
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४२७. खण्ड 4274, सूचकांक पंक्ति 2965: विनीत उत्पलक “हम पुछैत छी (अपन गप, ५० टा कविता) (प. ४००- ४९६)” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४२८. खण्ड 4274, सूचकांक पंक्ति 2965: विनीत उत्पलक “हम पुछैत छी (अपन गप, ५० टा कविता) (प. ४००- ४९६)”क विदेह-सदेह 33क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

४२९. खण्ड 4274, सूचकांक पंक्ति 2965: विनीत उत्पलक “हम पुछैत छी (अपन गप, ५० टा कविता) (प. ४००- ४९६)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 33क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकै एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४३०. खण्ड 4274, सूचकांक पंक्ति 2965: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 4274, सूचकांक पंक्ति 2965मे विनीत उत्पलक “हम पुछैत छी (अपन गप, ५० टा कविता) (प. ४००- ४९६)” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “जेओयूआरएनएएलआइएसटीआइसी डीईपीटीएच” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 33क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकै व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 4275 : विदेह-सदेह 33 — ओम प्रकाश झा: कियो बूझि नै सकल हमरा (अपन गप, गजल १- ८७, रुबाइ- १-८, कता- १-२) (पृ. ८९७-९८८)

४३१. खण्ड 4275, सूचकांक पंक्ति 2966: ओम प्रकाश झाक “कियो बूझि नै सकल हमरा (अपन गप, गजल १- ८७, रुबाइ- १-८, कता- १-२) (पृ. ८९७-९८८)” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) कियो बूझि नै सकल हमरा (अपन गप, गजल १- ८७, रुबाइ- १-८, कता- १-२) (पृ. ८९७-९८८)
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४३२. खण्ड 4275, सूचकांक पंक्ति 2966: ओम प्रकाश झाक “कियो बूझि नै सकल हमरा (अपन गप, गजल १- ८७, रुबाइ- १-८, कता- १-२) (पृ. ८९७-९८८)”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) पद्य
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४३३. खण्ड 4275, सूचकांक पंक्ति 2966: ओम प्रकाश झाक “कियो बूझि नै सकल हमरा (अपन गप, गजल १- ८७, रुबाइ- १-८, कता- १-२) (पृ. ८९७-९८८)”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) गजल/रुबाइ/कता
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४३४. खण्ड 4275, सूचकांक पंक्ति 2966: ओम प्रकाश झाक “कियो बूझि नै सकल हमरा (अपन गप, गजल १- ८७, रुबाइ- १-८, कता- १-२) (पृ. ८९७-९८८)” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) भावात्मक

४३५. खण्ड 4275, सूचकांक पंक्ति 2966: ओम प्रकाश झाक “कियो बूझि नै सकल हमरा (अपन गप, गजल १- ८७, रुबाइ- १-८, कता- १-२) (पृ. ८९७-९८८)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 33मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) भावात्मक
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४३६. खण्ड 4275, सूचकांक पंक्ति 2966: ओम प्रकाश झाक “कियो बूझि नै सकल हमरा (अपन गप, गजल १- ८७, रुबाइ- १-८, कता- १-२) (पृ. ८९७-९८८)”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक ओम प्रकाश झा, विधा पद्य, उप-विधा गजल/रुबाइ/कता
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४३७. खण्ड 4275, सूचकांक पंक्ति 2966: ओम प्रकाश झाक “कियो बूझि नै सकल हमरा (अपन गप, गजल १- ८७, रुबाइ- १-८, कता- १-२) (पृ. ८९७-९८८)” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४३८. खण्ड 4275, सूचकांक पंक्ति 2966: ओम प्रकाश झाक “कियो बूझि नै सकल हमरा (अपन गप, गजल १- ८७, रुबाइ- १-८, कता- १-२) (पृ. ८९७-९८८)”केँ विदेह-सदेह 33क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ गजल/रुबाइ/कताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

४३९. खण्ड 4275, सूचकांक पंक्ति 2966: ओम प्रकाश झाक “कियो बूझि नै सकल हमरा (अपन गप, गजल १- ८७, रुबाइ- १-८, कता- १-२) (पृ. ८९७-९८८)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 33क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४४०. खण्ड 4275, सूचकांक पंक्ति 2966: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 4275, सूचकांक पंक्ति 2966मे ओम प्रकाश झाक “कियो बूझि नै सकल हमरा (अपन गप, गजल १- ८७, रुबाइ- १-८, कता- १-२) (पृ. ८९७-९८८)” प्रविष्टि पद्य, गजल/रुबाइ/कता आ “भावात्मक” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 33क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 4276 : विदेह-सदेह 33 — उमेश मंडल: निश्चुकी (अपन गप, किछु कविता, हाइकू-टनका, आ दूटा गजल) (पृ. ९८९-१०८२)

४४१. खण्ड 4276, सूचकांक पंक्ति 2967: उमेश मंडलक “निश्चुकी (अपन गप, किछु कविता, हाइकू-टनका, आ दूटा गजल) (पृ. ९८९-१०८२)” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) निश्चुकी (अपन गप, किछु कविता, हाइकू-टनका, आ दूटा गजल) (पृ. ९८९-१०८२)
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४४२. खण्ड 4276, सूचकांक पंक्ति 2967: उमेश मंडलक “निश्चुकी (अपन गप, किछु कविता, हाइकू-टनका, आ दूटा गजल) (पृ. ९८९-१०८२)”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) पद्य
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४४३. खण्ड 4276, सूचकांक पंक्ति 2967: उमेश मंडलक “निश्चुकी (अपन गप, किछु कविता, हाइकू-टनका, आ दूटा गजल) (पृ. ९८९-१०८२)”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) कविता/हाइकू/गजल
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४४४. खण्ड 4276, सूचकांक पंक्ति 2967: उमेश मंडलक “निश्चुकी (अपन गप, किछु कविता, हाइकू-टनका, आ दूटा गजल) (पृ. ९८९-१०८२)” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) निश्चुकी (अपन गप, किछु कविता, हाइकू-टनका, आ दूटा गजल) (पृ. ९८९-१०८२)

४४५. खण्ड 4276, सूचकांक पंक्ति 2967: उमेश मंडलक “निश्चुकी (अपन गप, किछु कविता, हाइकू-टनका, आ दूटा गजल) (पृ. ९८९-१०८२)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 33मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) निश्चुकी (अपन गप, किछु कविता, हाइकू-टनका, आ दूटा गजल) (पृ. ९८९-१०८२)
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४४६. खण्ड 4276, सूचकांक पंक्ति 2967: उमेश मंडलक “निश्चुकी (अपन गप, किछु कविता, हाइकू-टनका, आ दूटा गजल) (पृ. ९८९-१०८२)”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक उमेश मंडल, विधा पद्य, उप-विधा कविता/हाइकू/गजल
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४४७. खण्ड 4276, सूचकांक पंक्ति 2967: उमेश मंडलक “निश्चुकी (अपन गप, किछु कविता, हाइकू-टनका, आ दूटा गजल) (पृ. १८९-१०८२)”

रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४४८. खण्ड 4276, सूचकांक पंक्ति 2967: उमेश मंडलक “निश्चुकी (अपन गप, किछु कविता, हाइकू-टनका, आ दूटा गजल) (पृ. १८९-१०८२)”कें

विदेह-सदेह 33क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ कविता/हाइकू/गजलक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

४४९. खण्ड 4276, सूचकांक पंक्ति 2967: उमेश मंडलक “निश्चुकी (अपन गप, किछु कविता, हाइकू-टनका, आ दूटा गजल) (पृ. १८९-१०८२)”

प्रविष्टि विदेह-सदेह 33क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४५०. खण्ड 4276, सूचकांक पंक्ति 2967: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 4276, सूचकांक पंक्ति 2967मे उमेश मंडलक “निश्चुकी (अपन गप, किछु कविता, हाइकू-टनका, आ दूटा गजल) (पृ. १८९-१०८२)” प्रविष्टि पद्य, कविता/हाइकू/गजल आ “निश्चुकी (अपन गप, किछु कविता, हाइकू-टनका, आ दूटा गजल) (पृ. १८९-१०८२)” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 33क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 4277 : विदेह-सदेह 33 — उमेश पासवान: वर्णित रस (आमुख, कागज, समाज, रावण-कंश, भरल घैल, कलजुग, उमर-अवस्था-मन, पियासल, हत्या, फाटल भविष्य, गेलहे घर छी, पलटन लाल, बादि, डेग डेगपर खतरा, कपुत, आशा, गामक चौअनियाँ, नेताजी नमस्कार, सतहिया, अज्ञानी, दलिदर, पोसिया, मैना, माछक तीमन, कवाडी, बरखाक मौसम, मिथिलाक नारी, रगडा, नेता, मनक बिसवास, केहेन विधना, अपनेकें की कही, फूसि-फट्टका, हकिकत, पावन भूमि, एना नै कर, भुतहा मोड, हमरो लेने चलू, अथाह, गारल मुर्ला, हाल-चाल, पथ ई केहेन, गृहस्थ सबहक हाल, मिथिला महान, हेराएल, दुभर, विडम्बना, दियादी बाँट, पुर्णिमा, रिश्ता, अज्ञानी, कनी देखू, मास्टरक बहाली, फागुनमे, श्यामल मोहे, जीतक झंडा, युवा, हम युवा, पथिक, हमहूँ कने छी, एना किएक, जितिया, डगर, रमल छी, संत, बन्हन, संघर्ष जारी रखब, भरदुतिया, गवहा संक्राति, किमती भोट, असली-

नकली, कोसी, मच्छर रानी, हरिजन, हम छी मैथिली, बौकी, चौके-चौक,टेंस, पेटक खातिर, जगदीश बाबू, उजरल घर, जीवनक नैया, डर, नटीन, बताह, ज्ञानक नव ज्योति, केहेन चालि, बसन्त, योद्धा) (पृ. १०६३-११६१)

४५१. खण्ड 4277, सूचकांक पंक्ति 2968: उमेश पासवानक “वर्णित रस (आमुख, कागज, समाज, रावण-कंश, भरल घैल, कलजुग, उमर-अवस्था-मन, पियासल, हत्या, फाटल भविष्य, गेलहे घर छी, पलटन लाल, बादि, डेग डेगपर खतरा, कपुत, आशा, गामक चौअनियाँ, नेताजी नमस्कार, सतहिया, अज्ञानी, दलिदर, पोसिया, मैना, माछक तीमन, कवाडी, बरखाक मौसम, मिथिलाक नारी, रगडा, नेता, मनक बिसवास, केहेन विधना, अपनेकेँ की कही, फूसि-फट्टका, हकिकत, पावन भूमि, एना नै कर, भुतहा मोड, हमरो लेने चलू, अथाह, गारल मुर्ला, हाल-चाल, पथ ई केहेन, गृहस्थ सबहक हाल, मिथिला महान, हेराएल, दुभर, विडम्बना, दियादी बाँट, पुर्णिमा, रिश्ता, अज्ञानी, कनी देखू, मास्टरक बहाली, फागुनमे, श्यामल मोहे, जीतक झंडा, युवा, हम युवा, पथिक, हमहूँ कने छी, एना किएक, जितिया, डगर, रमल छी, संत, बन्हन, संघर्ष जारी रखब, भरदुतिया, गवहा संक्राति, किमती भोट, असली-नकली, कोसी, मच्छर रानी, हरिजन, हम छी मैथिली, बौकी, चौके-चौक,टेंस, पेटक खातिर, जगदीश बाबू, उजरल घर, जीवनक नैया, डर, नटीन, बताह, ज्ञानक नव ज्योति, केहेन चालि, बसन्त, योद्धा) (पृ. १०६३-११६१)” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) वर्णित रस (आमुख, कागज, समाज, रावण-कंश, भरल घैल, कलजुग, उमर-अवस्था-मन, पियासल, हत्या, फाटल भविष्य, गेलहे घर छी, पलटन लाल, बादि, डेग डेगपर खतरा, कपुत, आशा, गामक चौअनियाँ, नेताजी नमस्कार, सतहिया, अज्ञानी, दलिदर, पोसिया, मैना, माछक तीमन, कवाडी, बरखाक मौसम, मिथिलाक नारी, रगडा, नेता, मनक बिसवास, केहेन विधना, अपनेकेँ की कही, फूसि-फट्टका, हकिकत, पावन भूमि, एना नै कर, भुतहा मोड, हमरो लेने चलू, अथाह, गारल मुर्ला, हाल-चाल, पथ ई केहेन, गृहस्थ सबहक हाल, मिथिला महान, हेराएल, दुभर, विडम्बना, दियादी बाँट, पुर्णिमा, रिश्ता, अज्ञानी, कनी देखू, मास्टरक बहाली, फागुनमे, श्यामल मोहे, जीतक झंडा, युवा, हम युवा, पथिक, हमहूँ कने छी, एना किएक, जितिया, डगर, रमल छी, संत, बन्हन, संघर्ष जारी रखब, भरदुतिया, गवहा संक्राति, किमती भोट, असली-नकली, कोसी, मच्छर रानी, हरिजन, हम छी मैथिली, बौकी, चौके-चौक,टेंस, पेटक खातिर, जगदीश बाबू, उजरल घर, जीवनक नैया, डर, नटीन, बताह, ज्ञानक नव ज्योति, केहेन चालि, बसन्त, योद्धा) (पृ. १०६३-११६१)
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४५२. खण्ड 4277, सूचकांक पंक्ति 2968: उमेश पासवानक “वर्णित रस (आमुख, कागज, समाज, रावण-कंश, भरल घैल, कलजुग, उमर-अवस्था-मन, पियासल, हत्या, फाटल भविष्य, गेलहे घर छी, पलटन लाल, बादि, डेग डेगपर खतरा, कपुत, आशा, गामक चौअनियाँ, नेताजी नमस्कार, सतहिया, अज्ञानी, दलिदर, पोसिया, मैना, माछक तीमन, कवाडी, बरखाक मौसम, मिथिलाक नारी, रगडा, नेता, मनक बिसवास, केहेन विधना, अपनेकेँ की कही, फूसि-फट्टका, हकिकत, पावन भूमि, एना नै कर, भुतहा मोड, हमरो लेने चलू, अथाह, गारल मुर्ला, हाल-चाल, पथ ई केहेन, गृहस्थ सबहक हाल, मिथिला महान, हेराएल, दुभर, विडम्बना, दियादी बाँट, पुर्णिमा, रिश्ता, अज्ञानी, कनी देखू, मास्टरक बहाली, फागुनमे, श्यामल मोहे, जीतक झंडा, युवा, हम युवा, पथिक, हमहूँ कने छी, एना किएक, जितिया, डगर, रमल छी, संत, बन्हन, संघर्ष जारी रखब, भरदुतिया, गवहा संक्राति, किमती भोट, असली-नकली, कोसी, मच्छर रानी, हरिजन, हम छी मैथिली, बौकी, चौके-चौक,टेंस, पेटक खातिर, जगदीश बाबू, उजरल घर, जीवनक नैया, डर, नटीन, बताह, ज्ञानक नव ज्योति, केहेन चालि, बसन्त, योद्धा) (पृ. १०६३-११६१)”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) पद्य
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४५३. खण्ड 4277, सूचकांक पंक्ति 2968: उमेश पासवानक “वर्णित रस (आमुख, कागज, समाज, रावण-कंश, भरल घैल, कलजुग, उमर-अवस्था-मन, पियासल, हत्या, फाटल भविष्य, गेलहे घर छी, पलटन लाल, बादि, डेग डेगपर खतरा, कपुत, आशा, गामक चौअनियाँ, नेताजी नमस्कार, सतहिया, अज्ञानी, दलिदर, पोसिया, मैना, माछक तीमन, कवाडी, बरखाक मौसम, मिथिलाक नारी, रगडा, नेता, मनक बिसवास, केहेन विधना, अपनेकेँ की कही, फूसि-फट्टका, हकिकत, पावन भूमि, एना नै कर, भुतहा मोड, हमरो लेने चलू, अथाह, गारल मुर्ला, हाल-चाल, पथ ई केहेन, गृहस्थ सबहक हाल, मिथिला महान, हेराएल, दुभर, विडम्बना, दियादी बाँट, पुर्णिमा, रिश्ता, अज्ञानी, कनी देखू, मास्टरक बहाली, फागुनमे, श्यामल मोहे, जीतक झंडा, युवा, हम युवा, पथिक, हमहूँ कने छी, एना किएक, जितिया, डगर, रमल छी, संत, बन्हन, संघर्ष जारी रखब, भरदुतिया, गवहा संक्राति, किमती भोट, असली-नकली, कोसी, मच्छर रानी, हरिजन, हम छी मैथिली, बौकी, चौके-चौक,टेंस, पेटक खातिर, जगदीश बाबू, उजरल घर, जीवनक नैया, डर, नटीन, बताह, ज्ञानक नव ज्योति, केहेन चालि, बसन्त, योद्धा) (पृ. १०६३-११६१)”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) कविता
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४५४. खण्ड 4277, सूचकांक पंक्ति 2968: उमेश पासवानक “वर्णित रस (आमुख, कागज, समाज, रावण-कंश, भरल घैल, कलजुग, उमर-अवस्था-मन, पियासल, हत्या, फाटल भविष्य, गेलहे घर छी, पलटन लाल, बादि, डेग डेगपर खतरा, कपुत, आशा, गामक चौअनियाँ, नेताजी नमस्कार, सतहिया, अज्ञानी, दलिदर, पोसिया, मैना, माछक तीमन, कवाडी, बरखाक मौसम, मिथिलाक नारी, रगडा, नेता, मनक बिसवास, केहेन विधना, अपनेकेँ की कही, फूसि-फट्टका, हकिकत, पावन भूमि, एना नै कर, भुतहा मोड, हमरो लेने चलू, अथाह, गारल मुर्ला, हाल-चाल, पथ ई केहेन, गृहस्थ सबहक हाल, मिथिला महान, हेराएल, दुभर, विडम्बना, दियादी बाँट, पुर्णिमा, रिश्ता, अज्ञानी, कनी देखू, मास्टरक बहाली, फागुनमे, श्यामल मोहे, जीतक झंडा, युवा, हम युवा, पथिक, हमहूँ कने छी, एना किएक, जितिया, डगर, रमल छी, संत, बन्हन, संघर्ष जारी रखब, भरदुतिया, गवहा संक्राति, किमती भोट, असली-नकली, कोसी, मच्छर रानी, हरिजन, हम छी मैथिली, बौकी, चौके-चौक,टेंस, पेटक खातिर, जगदीश बाबू, उजरल घर, जीवनक नैया, डर, नटीन, बताह, ज्ञानक नव ज्योति, केहेन चालि, बसन्त, योद्धा) (पृ. १०६३-११६१)” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

(D) वर्णित रस (आमुख, कागज, समाज, रावण-कंश, भरल घैल, कलजुग, उमर-अवस्था-मन, पियासल, हत्या, फाटल भविष्य, गेलहे घर छी, पलटन लाल, बादि, डेग डेगपर खतरा, कपुत, आशा, गामक चौअनियाँ, नेताजी नमस्कार, सतहिया, अज्ञानी, दलिदर, पोसिया, मैना, माछक तीमन, कवाडी, बरखाक मौसम, मिथिलाक नारी, रगडा, नेता, मनक बिसवास, केहेन विधना, अपनेकेँ की कही, फूसि-फट्टका, हकिकत, पावन भूमि, एना नै कर, भुतहा मोड, हमरो लेने चलू, अथाह, गारल मुर्ला, हाल-चाल, पथ ई केहेन, गृहस्थ सबहक हाल, मिथिला महान, हेराएल, दुभर, विडम्बना, दियादी बाँट, पुर्णिमा, रिश्ता, अज्ञानी, कनी देखू, मास्टरक बहाली, फागुनमे, श्यामल मोहे, जीतक झंडा, युवा, हम युवा, पथिक, हमहूँ कने छी, एना किएक, जितिया, डगर, रमल छी, संत, बन्हन, संघर्ष जारी रखब, भरदुतिया, गवहा संक्राति, किमती भोट, असली-नकली, कोसी, मच्छर रानी, हरिजन, हम छी मैथिली, बौकी, चौके-चौक,टेंस, पेटक खातिर, जगदीश बाबू, उजरल घर, जीवनक नैया, डर, नटीन, बताह, ज्ञानक नव ज्योति, केहेन चालि, बसन्त, योद्धा) (पृ. १०६३-११६१)

४५५. खण्ड 4277, सूचकांक पंक्ति 2968: उमेश पासवानक “वर्णित रस (आमुख, कागज, समाज, रावण-कंश, भरल घैल, कलजुग, उमर-अवस्था-मन, पियासल, हत्या, फाटल भविष्य, गेलहे घर छी, पलटन लाल, बादि, डेग डेगपर खतरा, कपुत, आशा, गामक चौअनियाँ, नेताजी नमस्कार, सतहिया, अज्ञानी, दलिदर, पोसिया, मैना, माछक तीमन, कवाडी, बरखाक मौसम, मिथिलाक नारी, रगडा, नेता, मनक बिसवास, केहेन विधना, अपनेकेँ की कही, फूसि-फट्टका, हकिकत, पावन भूमि, एना नै कर, भुतहा मोड, हमरो लेने चलू, अथाह, गारल मुर्ला, हाल-चाल, पथ ई केहेन, गृहस्थ सबहक हाल, मिथिला महान, हेराएल, दुभर, विडम्बना, दियादी बाँट, पुर्णिमा, रिश्ता, अज्ञानी, कनी देखू, मास्टरक बहाली, फागुनमे, श्यामल मोहे, जीतक झंडा, युवा, हम युवा, पथिक, हमहूँ कने छी, एना किएक, जितिया, डगर, रमल छी, संत, बन्हन, संघर्ष जारी रखब, भरदुतिया, गवहा संक्राति, किमती भोट, असली-नकली, कोसी, मच्छर रानी, हरिजन, हम छी मैथिली, बौकी, चौके-चौक,टेंस, पेटक खातिर, जगदीश बाबू, उजरल घर, जीवनक नैया, डर, नटीन, बताह, ज्ञानक नव ज्योति, केहेन चालि, बसन्त, योद्धा) (पृ. १०६३-११६१)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 33मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

(A) वर्णित रस (आमुख, कागज, समाज, रावण-कंश, भरल घैल, कलजुग, उमर-अवस्था-मन, पियासल, हत्या, फाटल भविष्य, गेलहे घर छी, पलटन लाल, बादि, डेग डेगपर खतरा, कपुत, आशा, गामक चौअनियाँ, नेताजी नमस्कार, सतहिया, अज्ञानी, दलिदर, पोसिया, मैना, माछक तीमन, कवाडी, बरखाक मौसम, मिथिलाक नारी, रगडा, नेता, मनक बिसवास, केहेन विधना, अपनेकेँ की कही, फूसि-फट्टका, हकिकत, पावन भूमि, एना नै कर, भुतहा मोड, हमरो लेने चलू, अथाह, गारल मुर्ला, हाल-चाल, पथ ई केहेन, गृहस्थ सबहक हाल, मिथिला महान, हेराएल, दुभर, विडम्बना, दियादी बाँट, पुर्णिमा, रिश्ता, अज्ञानी, कनी देखू, मास्टरक बहाली, फागुनमे, श्यामल मोहे, जीतक झंडा, युवा, हम युवा, पथिक, हमहूँ कने छी, एना किएक, जितिया, डगर, रमल छी, संत, बन्हन, संघर्ष जारी रखब, भरदुतिया, गवहा संक्राति, किमती भोट, असली-नकली, कोसी, मच्छर रानी, हरिजन, हम छी मैथिली, बौकी, चौके-चौक,टेंस, पेटक खातिर, जगदीश बाबू, उजरल घर, जीवनक नैया, डर, नटीन, बताह, ज्ञानक नव ज्योति, केहेन चालि, बसन्त, योद्धा) (पृ. १०६३-११६१)

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४५६. खण्ड 4277, सूचकांक पंक्ति 2968: उमेश पासवानक “वर्णित रस (आमुख, कागज, समाज, रावण-कंश, भरल घैल, कलजुग, उमर-अवस्था-मन, पियासल, हत्या, फाटल भविष्य, गेलहे घर छी, पलटन लाल, बादि, डेग डेगपर खतरा, कपुत, आशा, गामक चौअनियाँ, नेताजी नमस्कार, सतहिया, अज्ञानी, दलिदर, पोसिया, मैना, माछक तीमन, कवाडी, बरखाक मौसम, मिथिलाक नारी, रगडा, नेता, मनक बिसवास, केहेन विधना, अपनेकेँ की कही, फूसि-फट्टका, हकिकत, पावन भूमि, एना नै कर, भुतहा मोड, हमरो लेने चलू, अथाह, गारल मुर्ला, हाल-चाल, पथ ई केहेन, गृहस्थ सबहक हाल, मिथिला महान, हेराएल, दुभर, विडम्बना, दियादी बाँट, पुर्णिमा, रिश्ता, अज्ञानी, कनी देखू, मास्टरक बहाली, फागुनमे, श्यामल मोहे, जीतक झंडा, युवा, हम युवा, पथिक, हमहूँ कने छी, एना किएक, जितिया, डगर, रमल छी, संत, बन्हन, संघर्ष जारी रखब, भरदुतिया, गवहा संक्राति, किमती भोट, असली-नकली, कोसी, मच्छर रानी, हरिजन, हम छी मैथिली, बौकी, चौके-चौक, टेंस, पेटक खातिर, जगदीश बाबू, उजरल घर, जीवनक नैया, डर, नटीन, बताह, ज्ञानक नव ज्योति, केहेन चालि, बसन्त, योद्धा) (पृ. १०६३-११६१)”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक उमेश पासवान, विधा पद्य, उप-विधा कविता
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४५७. खण्ड 4277, सूचकांक पंक्ति 2968: उमेश पासवानक “वर्णित रस (आमुख, कागज, समाज, रावण-कंश, भरल घैल, कलजुग, उमर-अवस्था-मन, पियासल, हत्या, फाटल भविष्य, गेलहे घर छी, पलटन लाल, बादि, डेग डेगपर खतरा, कपुत, आशा, गामक चौअनियाँ, नेताजी नमस्कार, सतहिया, अज्ञानी, दलिदर, पोसिया, मैना, माछक तीमन, कवाडी, बरखाक मौसम, मिथिलाक नारी, रगडा, नेता, मनक बिसवास, केहेन विधना, अपनेकेँ की कही, फूसि-फट्टका, हकिकत, पावन भूमि, एना नै कर, भुतहा मोड, हमरो लेने चलू, अथाह, गारल मुर्ला, हाल-चाल, पथ ई केहेन, गृहस्थ सबहक हाल, मिथिला महान, हेराएल, दुभर, विडम्बना, दियादी बाँट, पुर्णिमा, रिश्ता, अज्ञानी, कनी देखू, मास्टरक बहाली, फागुनमे, श्यामल मोहे, जीतक झंडा, युवा, हम युवा, पथिक, हमहूँ कने छी, एना किएक, जितिया, डगर, रमल छी, संत, बन्हन, संघर्ष जारी रखब, भरदुतिया, गवहा संक्राति, किमती भोट, असली-नकली, कोसी, मच्छर रानी, हरिजन, हम छी मैथिली, बौकी, चौके-चौक, टेंस, पेटक खातिर, जगदीश बाबू, उजरल घर, जीवनक नैया, डर, नटीन, बताह, ज्ञानक नव ज्योति, केहेन चालि, बसन्त, योद्धा) (पृ. १०६३-११६१)” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४५८. खण्ड 4277, सूचकांक पंक्ति 2968: उमेश पासवानक “वर्णित रस (आमुख, कागज, समाज, रावण-कंश, भरल घैल, कलजुग, उमर-अवस्था-मन, पियासल, हत्या, फाटल भविष्य, गेलहे घर छी, पलटन लाल, बादि, डेग डेगपर खतरा, कपुत, आशा, गामक चौअनियाँ, नेताजी नमस्कार, सतहिया, अज्ञानी, दलिदर, पोसिया, मैना, माछक तीमन, कवाडी, बरखाक मौसम, मिथिलाक नारी, रगडा, नेता, मनक बिसवास, केहेन विधना, अपनेकेँ की कही, फूसि-फट्टका, हकिकत, पावन भूमि, एना नै कर, भुतहा मोड, हमरो लेने चलू, अथाह, गारल मुर्ला, हाल-चाल, पथ ई केहेन, गृहस्थ सबहक हाल, मिथिला महान, हेराएल, दुभर, विडम्बना, दियादी बाँट, पुर्णिमा, रिश्ता, अज्ञानी, कनी देखू, मास्टरक बहाली, फागुनमे, श्यामल मोहे, जीतक झंडा, युवा, हम युवा, पथिक, हमहूँ कने छी, एना किएक, जितिया, डगर, रमल छी, संत, बन्हन, संघर्ष जारी रखब, भरदुतिया, गवहा संक्राति, किमती भोट, असली-नकली, कोसी, मच्छर रानी, हरिजन, हम छी मैथिली, बौकी, चौके-चौक, टेंस, पेटक खातिर, जगदीश बाबू, उजरल घर, जीवनक नैया, डर, नटीन, बताह, ज्ञानक नव ज्योति, केहेन चालि, बसन्त, योद्धा) (पृ. १०६३-११६१)”केँ विदेह-सदेह 33क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

४५९. खण्ड 4277, सूचकांक पंक्ति 2968: उमेश पासवानक “वर्णित रस (आमुख, कागज, समाज, रावण-कंश, भरल घैल, कलजुग, उमर-अवस्था-मन, पियासल, हत्या, फाटल भविष्य, गेलहे घर छी, पलटन लाल, बादि, डेग डेगपर खतरा, कपुत, आशा, गामक चौअनियाँ, नेताजी नमस्कार, सतहिया, अज्ञानी, दलिदर, पोसिया, मैना, माछक तीमन, कवाडी, बरखाक मौसम, मिथिलाक नारी, रगडा, नेता, मनक बिसवास, केहेन विधना, अपनेकेँ की कही, फूसि-फट्टका, हकिकत, पावन भूमि, एना नै कर, भुतहा मोड, हमरो लेने चलू, अथाह, गारल मुर्ला, हाल-चाल, पथ ई केहेन, गृहस्थ सबहक हाल, मिथिला महान, हेराएल, दुभर, विडम्बना, दियादी बाँट, पुर्णिमा, रिश्ता, अज्ञानी, कनी देखू, मास्टरक बहाली, फागुनमे, श्यामल मोहे, जीतक झंडा, युवा, हम युवा, पथिक, हमहूँ कने छी, एना किएक, जितिया, डगर, रमल छी, संत, बन्हन, संघर्ष जारी रखब, भरदुतिया, गवहा संक्राति, किमती भोट, असली-नकली, कोसी, मच्छर रानी, हरिजन, हम छी मैथिली, बौकी, चौके-चौक, टेंस, पेटक खातिर, जगदीश बाबू, उजरल घर, जीवनक नैया, डर, नटीन, बताह, ज्ञानक नव ज्योति, केहेन चालि, बसन्त, योद्धा) (पृ. १०६३-११६१)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 33क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४६०. खण्ड 4277, सूचकांक पंक्ति 2968: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 4277, सूचकांक पंक्ति 2968मे उमेश पासवानक “वर्णित रस (आमुख, कागज, समाज, रावण-कंश, भरल घैल, कलजुग, उमर-अवस्था-मन, पियासल, हत्या, फाटल भविष्य, गेलहे घर छी, पलटन लाल, बादि, डेग डेगपर खतरा, कपुत, आशा, गामक चौअनियाँ, नेताजी नमस्कार, सतहिया, अज्ञानी, दलिदर, पोसिया, मैना, माछक तीमन, कवाडी, बरखाक मौसम, मिथिलाक नारी, रगडा, नेता, मनक बिसवास, केहेन विधना, अपनेकेँ की कही, फूसि-फट्टका, हकिकत, पावन भूमि, एना नै कर, भुतहा मोड, हमरो लेने चलू, अथाह, गारल मुर्ला, हाल-चाल, पथ ई केहेन, गृहस्थ सबहक हाल, मिथिला महान, हेराएल, दुभर, विडम्बना, दियादी बाँट, पुर्णिमा, रिश्ता, अज्ञानी, कनी देखू, मास्टरक बहाली, फागुनमे, श्यामल मोहे, जीतक झंडा, युवा, हम युवा, पथिक, हमहूँ कने छी, एना किएक, जितिया, डगर, रमल छी, संत, बन्हन, संघर्ष जारी रखब, भरदुतिया, गवहा संक्राति, किमती भोट, असली-नकली, कोसी, मच्छर रानी, हरिजन, हम छी मैथिली, बौकी, चौके-चौक, टेंस, पेटक खातिर, जगदीश बाबू, उजरल घर, जीवनक नैया, डर, नटीन, बताह, ज्ञानक नव ज्योति, केहेन चालि, बसन्त, योद्धा) (पृ. १०६३-११६१)” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “वर्णित रस (आमुख, कागज, समाज, रावण-कंश, भरल घैल, कलजुग, उमर-अवस्था-मन, पियासल, हत्या, फाटल भविष्य, गेलहे घर छी, पलटन लाल, बादि, डेग डेगपर खतरा, कपुत, आशा, गामक चौअनियाँ, नेताजी नमस्कार, सतहिया, अज्ञानी, दलिदर, पोसिया, मैना, माछक तीमन, कवाडी, बरखाक मौसम, मिथिलाक नारी, रगडा, नेता, मनक बिसवास, केहेन विधना, अपनेकेँ की कही, फूसि-फट्टका, हकिकत, पावन भूमि, एना नै कर, भुतहा मोड, हमरो लेने चलू, अथाह, गारल मुर्ला, हाल-चाल, पथ ई केहेन, गृहस्थ सबहक हाल, मिथिला महान, हेराएल, दुभर, विडम्बना, दियादी बाँट, पुर्णिमा, रिश्ता, अज्ञानी, कनी देखू, मास्टरक बहाली, फागुनमे, श्यामल मोहे, जीतक झंडा, युवा, हम युवा, पथिक, हमहूँ कने छी, एना किएक, जितिया, डगर, रमल छी, संत, बन्हन, संघर्ष जारी रखब, भरदुतिया, गवहा संक्राति, किमती भोट, असली-नकली, कोसी, मच्छर रानी, हरिजन, हम छी मैथिली, बौकी, चौके-चौक, टेंस, पेटक खातिर, जगदीश बाबू, उजरल घर, जीवनक नैया, डर, नटीन, बताह, ज्ञानक नव ज्योति, केहेन चालि, बसन्त, योद्धा) (पृ. १०६३-११६१)” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 33क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 4278 : विदेह-सदेह 33 — शिव कुमार झा “टिल्लू”: क्षणप्रभा (अपन गप, किष्ठ पद्य, दूटा गजल, तीन टा हाइकू) (पृ. ११६२-१३२५)

४६१. खण्ड 4278, सूचकांक पंक्ति 2969: शिव कुमार झा “टिल्लू”क “क्षणप्रभा (अपन गप, किष्ठ पद्य, दूटा गजल, तीन टा हाइकू) (पृ. ११६२-१३२५)” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) क्षणप्रभा (अपन गप, किष्ठ पद्य, दूटा गजल, तीन टा हाइकू) (पृ. ११६२-१३२५)
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४६२. खण्ड 4278, सूचकांक पंक्ति 2969: शिव कुमार झा “टिल्लू”क “क्षणप्रभा (अपन गप, किष्ठ पद्य, दूटा गजल, तीन टा हाइकू) (पृ. ११६२-१३२५)”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) पद्य
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४६३. खण्ड 4278, सूचकांक पंक्ति 2969: शिव कूमार झा “टिल्लू”क “क्षणप्रभा (अपन गप, किष्ठु पद्य, दूटा गजल, तीन टा हाइकू) (पृ. ११६२-१३२५)”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) गजल/हाइकू/कविता
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४६४. खण्ड 4278, सूचकांक पंक्ति 2969: शिव कूमार झा “टिल्लू”क “क्षणप्रभा (अपन गप, किष्ठु पद्य, दूटा गजल, तीन टा हाइकू) (पृ. ११६२-१३२५)” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) क्षणप्रभा (अपन गप, किष्ठु पद्य, दूटा गजल, तीन टा हाइकू) (पृ. ११६२-१३२५)

४६५. खण्ड 4278, सूचकांक पंक्ति 2969: शिव कूमार झा “टिल्लू”क “क्षणप्रभा (अपन गप, किष्ठु पद्य, दूटा गजल, तीन टा हाइकू) (पृ. ११६२-१३२५)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 33मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) क्षणप्रभा (अपन गप, किष्ठु पद्य, दूटा गजल, तीन टा हाइकू) (पृ. ११६२-१३२५)
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४६६. खण्ड 4278, सूचकांक पंक्ति 2969: शिव कूमार झा “टिल्लू”क “क्षणप्रभा (अपन गप, किष्ठु पद्य, दूटा गजल, तीन टा हाइकू) (पृ. ११६२-१३२५)”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक शिव कूमार झा “टिल्लू”, विधा पद्य, उप-विधा गजल/हाइकू/कविता
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४६७. खण्ड 4278, सूचकांक पंक्ति 2969: शिव कूमार झा “टिल्लू”क “क्षणप्रभा (अपन गप, किष्ठु पद्य, दूटा गजल, तीन टा हाइकू) (पृ. ११६२-१३२५)” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४६८. खण्ड 4278, सूचकांक पंक्ति 2969: शिव कूमार झा “टिल्लू”क “क्षणप्रभा (अपन गप, किष्ठु पद्य, दूटा गजल, तीन टा हाइकू) (पृ. ११६२-१३२५)”केँ विदेह-सदेह 33क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ गजल/हाइकू/कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

४६९. खण्ड 4278, सूचकांक पंक्ति 2969: शिव कूमार झा “टिल्लू”क “क्षणप्रभा (अपन गप, किष्ठु पद्य, दूटा गजल, तीन टा हाइकू) (पृ. ११६२-१३२५)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 33क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४७०. खण्ड 4278, सूचकांक पंक्ति 2969: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 4278, सूचकांक पंक्ति 2969मे शिव कुमार झा “टिल्लू”क “क्षणप्रभा (अपन गप, किछु पद्य, दूटा गजल, तीन टा हाइकू) (पृ. ११६२-१३२५)” प्रविष्टि पद्य, गजल/हाइकू/कविता आ “क्षणप्रभा (अपन गप, किछु पद्य, दूटा गजल, तीन टा हाइकू) (पृ. ११६२-१३२५)” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 33क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 4279 : विदेह-सदेह 33 — सन्दीप कुमार साफी (प्रसिद्ध किरण): बैशाखमे दलानपर- गद्य-पद्य मिश्रित [आत्मकथा खण्ड (मैथिलीक पहिल दलित आत्मकथा), कविता खण्ड, विहनि कथा खण्ड, लघुकथा खण्ड, विचार बिन्दु खण्ड] (पृ. १३२६-१४२०)

४७१. खण्ड 4279, सूचकांक पंक्ति 2970: सन्दीप कुमार साफी (प्रसिद्ध किरण)क “बैशाखमे दलानपर- गद्य-पद्य मिश्रित [आत्मकथा खण्ड (मैथिलीक पहिल दलित आत्मकथा), कविता खण्ड, विहनि कथा खण्ड, लघुकथा खण्ड, विचार बिन्दु खण्ड] (पृ. १३२६-१४२०)” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) बैशाखमे दलानपर- गद्य-पद्य मिश्रित [आत्मकथा खण्ड (मैथिलीक पहिल दलित आत्मकथा), कविता खण्ड, विहनि कथा खण्ड, लघुकथा खण्ड, विचार बिन्दु खण्ड] (पृ. १३२६-१४२०)
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४७२. खण्ड 4279, सूचकांक पंक्ति 2970: सन्दीप कुमार साफी (प्रसिद्ध किरण)क “बैशाखमे दलानपर- गद्य-पद्य मिश्रित [आत्मकथा खण्ड (मैथिलीक पहिल दलित आत्मकथा), कविता खण्ड, विहनि कथा खण्ड, लघुकथा खण्ड, विचार बिन्दु खण्ड] (पृ. १३२६-१४२०)”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) पद्य/गद्य
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४७३. खण्ड 4279, सूचकांक पंक्ति 2970: सन्दीप कुमार साफी (प्रसिद्ध किरण)क “बैशाखमे दलानपर- गद्य-पद्य मिश्रित [आत्मकथा खण्ड (मैथिलीक पहिल दलित आत्मकथा), कविता खण्ड, विहनि कथा खण्ड, लघुकथा खण्ड, विचार बिन्दु खण्ड] (पृ. १३२६-१४२०)”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) आत्मकथा/कविता/कथा
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४७४. खण्ड 4279, सूचकांक पंक्ति 2970: सन्दीप कुमार साफी (प्रसिद्ध किरण)क “बैशाखमे दलानपर- गद्य-पद्य मिश्रित [आत्मकथा खण्ड (मैथिलीक पहिल दलित आत्मकथा), कविता खण्ड, विहनि कथा खण्ड, लघुकथा खण्ड, विचार बिन्दु खण्ड] (पृ. १३२६-१४२०)” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) बैशाखमे दलानपर- गद्य-पद्य मिश्रित [आत्मकथा खण्ड (मैथिलीक पहिल दलित आत्मकथा), कविता खण्ड, विहनि कथा खण्ड, लघुकथा खण्ड, विचार बिन्दु खण्ड] (पृ. १३२६-१४२०)

४७५. खण्ड 4279, सूचकांक पंक्ति 2970: सन्दीप कुमार साफी (प्रसिद्ध किरण)क “बैशाखमे दलानपर- गद्य-पद्य मिश्रित [आत्मकथा खण्ड (मैथिलीक पहिल दलित आत्मकथा), कविता खण्ड, विहनि कथा खण्ड, लघुकथा खण्ड, विचार बिन्दु खण्ड] (पृ. १३२६-१४२०)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 33मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) बैशाखमे दलानपर- गद्य-पद्य मिश्रित [आत्मकथा खण्ड (मैथिलीक पहिल दलित आत्मकथा), कविता खण्ड, विहनि कथा खण्ड, लघुकथा खण्ड, विचार बिन्दु खण्ड] (पृ. १३२६-१४२०)
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४७६. खण्ड 4279, सूचकांक पंक्ति 2970: सन्दीप कुमार साफी (प्रसिद्ध किरण)क “बैशाखमे दलानपर- गद्य-पद्य मिश्रित [आत्मकथा खण्ड (मैथिलीक पहिल दलित आत्मकथा), कविता खण्ड, विहनि कथा खण्ड, लघुकथा खण्ड, विचार बिन्दु खण्ड] (पृ. १३२६-१४२०)”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक सन्दीप कुमार साफी (प्रसिद्ध किरण), विधा पद्य/गद्य, उप-विधा आत्मकथा/कविता/कथा
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४७७. खण्ड 4279, सूचकांक पंक्ति 2970: सन्दीप कुमार साफी (प्रसिद्ध किरण)क “बैशाखमे दलानपर- गद्य-पद्य मिश्रित [आत्मकथा खण्ड (मैथिलीक पहिल दलित आत्मकथा), कविता खण्ड, विहनि कथा खण्ड, लघुकथा खण्ड, विचार बिन्दु खण्ड] (पृ. १३२६-१४२०)” रचना/लेखककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४७८. खण्ड 4279, सूचकांक पंक्ति 2970: सन्दीप कुमार साफी (प्रसिद्ध किरण)क “बैशाखमे दलानपर- गद्य-पद्य मिश्रित [आत्मकथा खण्ड (मैथिलीक पहिल दलित आत्मकथा), कविता खण्ड, विहनि कथा खण्ड, लघुकथा खण्ड, विचार बिन्दु खण्ड] (पृ. १३२६-१४२०)”केँ विदेह-सदेह 33क पद्य/गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ आत्मकथा/कविता/कथाक रूपमे पद्य/गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

४७९. खण्ड 4279, सूचकांक पंक्ति 2970: सन्दीप कुमार साफी (प्रसिद्ध किरण)क “बैशाखमे दलानपर- गद्य-पद्य मिश्रित [आत्मकथा खण्ड (मैथिलीक पहिल दलित आत्मकथा), कविता खण्ड, विहनि कथा खण्ड, लघुकथा खण्ड, विचार बिन्दु खण्ड] (पृ. १३२६-१४२०)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 33क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४८०. खण्ड 4279, सूचकांक पंक्ति 2970: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 4279, सूचकांक पंक्ति 2970मे सन्दीप कुमार साफी (प्रसिद्ध किरण)क “बैशाखमे दलानपर- गद्य-पद्य मिश्रित [आत्मकथा खण्ड (मैथिलीक पहिल दलित आत्मकथा), कविता खण्ड, विहनि कथा खण्ड, लघुकथा खण्ड, विचार बिन्दु खण्ड] (पृ. १३२६-१४२०)” प्रविष्टि पद्य/गद्य, आत्मकथा/कविता/कथा आ “बैशाखमे दलानपर- गद्य-पद्य मिश्रित [आत्मकथा खण्ड (मैथिलीक पहिल दलित आत्मकथा), कविता खण्ड, विहनि कथा खण्ड, लघुकथा खण्ड, विचार बिन्दु खण्ड] (पृ. १३२६-१४२०)” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 33क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 4280 : विदेह-सदेह 33 — मुन्नाजी: माँझ आंगनमे कवतआएल छी (अपन गप, गजल- १-५०, रुबाइ- १-११) (प . १४२१-१५०१)

४८१. खण्ड 4280, सूचकांक पंक्ति 2971: मुन्नाजीक “माँझ आंगनमे कवतआएल छी (अपन गप, गजल- १-५०, रुबाइ- १-११) (प . १४२१-१५०१)” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) माँझ आंगनमे कवतआएल छी (अपन गप, गजल- १-५०, रुबाइ- १-११) (प . १४२१-१५०१)
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४८२. खण्ड 4280, सूचकांक पंक्ति 2971: मुन्नाजीक “माँझ आंगनमे कवतआएल छी (अपन गप, गजल- १-५०, रुबाइ- १-११) (प . १४२१-१५०१)”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) पद्य
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४८३. खण्ड 4280, सूचकांक पंक्ति 2971: मुन्नाजीक “माँझ आंगनमे कवतआएल छी (अपन गप, गजल- १-५०, रुबाइ- १-११) (प . १४२१-१५०१)”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) गजल/रुबाइ
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४८४. खण्ड 4280, सूचकांक पंक्ति 2971: मुन्नाजीक “माँझ आंगनमे कवतआएल छी (अपन गप, गजल- १-५०, रुबाइ- १-११) (प . १४२१-१५०१)” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) माँझ आंगनमे कवतआएल छी (अपन गप, गजल- १-५०, रुबाइ- १-११) (प . १४२१-१५०१)

४८५. खण्ड 4280, सूचकांक पंक्ति 2971: मुन्नाजीक “माँझ आंगनमे कवतआएल छी (अपन गप, गजल- १-५०, रुबाइ- १-११) (प . १४२१-१५०१)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 33मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) माँझ आंगनमे कवतआएल छी (अपन गप, गजल- १-५०, रुबाइ- १-११) (प . १४२१-१५०१)
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४८६. खण्ड 4280, सूचकांक पंक्ति 2971: मुन्नाजीक “माँझ आंगनमे कवतआएल छी (अपन गप, गजल- १-५०, रुबाइ- १-११) (प . १४२१-१५०१)”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककें की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक मुन्नाजी, विधा पद्य, उप-विधा गजल/रुबाइ
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४८७. खण्ड 4280, सूचकांक पंक्ति 2971: मुन्नाजीक “माँझ आंगनमे कवतआएल छी (अपन गप, गजल- १-५०, रुबाइ- १-११) (प . १४२१-१५०१)” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४८८. खण्ड 4280, सूचकांक पंक्ति 2971: मुन्नाजीक “माँझ आंगनमे कवतआएल छी (अपन गप, गजल- १-५०, रुबाइ- १-११) (प . १४२१-१५०१)”कें विदेह-सदेह 33क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ गजल/रुबाइक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

४८९. खण्ड 4280, सूचकांक पंक्ति 2971: मुन्नाजीक “माँझ आंगनमे कवतआएल छी (अपन गप, गजल- १-५०, रुबाइ- १-११) (प . १४२१-१५०१)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 33क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४९०. खण्ड 4280, सूचकांक पंक्ति 2971: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 4280, सूचकांक पंक्ति 2971मे मुन्नाजीक “माँझ आंगनमे कवतआएल छी (अपन गप, गजल- १-५०, रुबाइ- १-११) (प . १४२१-१५०१)” प्रविष्टि पद्य, गजल/रुबाइ आ “माँझ आंगनमे कवतआएल छी (अपन गप, गजल- १-५०, रुबाइ- १-११) (प . १४२१-१५०१)” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 33क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 4281 : विदेह-सदेह 33 — विन्देश्वर ठाकुर: नेपालक नोर मरूभूममे (अपन गप, गजल खण्ड, शोरो-शाइरी खण्ड, लघुकिा खण्ड, विहवन किा खण्ड, कविता खण्ड) (प . १५०२-१६४६)

४९१. खण्ड 4281, सूचकांक पंक्ति 2972: विन्देश्वर ठाकुरक “नेपालक नोर मरूभूममे (अपन गप, गजल खण्ड, शोरो-शाइरी खण्ड, लघुकिा खण्ड, विहवन किा खण्ड, कविता खण्ड) (प . १५०२-१६४६)” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) नेपालक नोर मरूभूममे (अपन गप, गजल खण्ड, शोरो-शाइरी खण्ड, लघुकिा खण्ड, विहवन किा खण्ड, कविता खण्ड) (प . १५०२-१६४६)
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४९२. खण्ड 4281, सूचकांक पंक्ति 2972: विन्देश्वर ठाकुरक “नेपालक नोर मरूभूममे (अपन गप, गजल खण्ड, शोरो-शाइरी खण्ड, लघुकिा खण्ड, विहवन किा खण्ड, कविता खण्ड) (प . १५०२-१६४६)”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) पद्य/गद्य
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४९३. खण्ड 4281, सूचकांक पंक्ति 2972: विन्देश्वर ठाकुरक “नेपालक नोर मरूभूममे (अपन गप, गजल खण्ड, शोरो-शाइरी खण्ड, लघुकिा खण्ड, विहवन किा खण्ड, कविता खण्ड) (प . १५०२-१६४६)”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) गजल/शायरी/कथा/कविता
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४९४. खण्ड 4281, सूचकांक पंक्ति 2972: विन्देश्वर ठाकुरक “नेपालक नोर मरूभूवममे (अपन गप, गजल खण्ड, शोरो-शाइरी खण्ड, लघुकिा खण्ड, विहवन किा खण्ड, कविता खण्ड) (प . १५०२-१६४६)” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?
- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
 (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
 (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
 (D) नेपालक नोर मरूभूवममे (अपन गप, गजल खण्ड, शोरो-शाइरी खण्ड, लघुकिा खण्ड, विहवन किा खण्ड, कविता खण्ड) (प . १५०२-१६४६)
४९५. खण्ड 4281, सूचकांक पंक्ति 2972: विन्देश्वर ठाकुरक “नेपालक नोर मरूभूवममे (अपन गप, गजल खण्ड, शोरो-शाइरी खण्ड, लघुकिा खण्ड, विहवन किा खण्ड, कविता खण्ड) (प . १५०२-१६४६)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 33मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?
- (A) नेपालक नोर मरूभूवममे (अपन गप, गजल खण्ड, शोरो-शाइरी खण्ड, लघुकिा खण्ड, विहवन किा खण्ड, कविता खण्ड) (प . १५०२-१६४६)
 (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
 (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
 (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
४९६. खण्ड 4281, सूचकांक पंक्ति 2972: विन्देश्वर ठाकुरक “नेपालक नोर मरूभूवममे (अपन गप, गजल खण्ड, शोरो-शाइरी खण्ड, लघुकिा खण्ड, विहवन किा खण्ड, कविता खण्ड) (प . १५०२-१६४६)”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककें की मुख्य सूचना दैत अछि?
- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
 (B) लेखक विन्देश्वर ठाकुर, विधा पद्य/गद्य, उप-विधा गजल/शायरी/कथा/कविता
 (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
 (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
४९७. खण्ड 4281, सूचकांक पंक्ति 2972: विन्देश्वर ठाकुरक “नेपालक नोर मरूभूवममे (अपन गप, गजल खण्ड, शोरो-शाइरी खण्ड, लघुकिा खण्ड, विहवन किा खण्ड, कविता खण्ड) (प . १५०२-१६४६)” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?
- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
 (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
 (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
 (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
४९८. खण्ड 4281, सूचकांक पंक्ति 2972: विन्देश्वर ठाकुरक “नेपालक नोर मरूभूवममे (अपन गप, गजल खण्ड, शोरो-शाइरी खण्ड, लघुकिा खण्ड, विहवन किा खण्ड, कविता खण्ड) (प . १५०२-१६४६)”कें विदेह-सदेह 33क पद्य/गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?
- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
 (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
 (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
 (D) ई पाठ गजल/शायरी/कथा/कविताक रूपमे पद्य/गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।
४९९. खण्ड 4281, सूचकांक पंक्ति 2972: विन्देश्वर ठाकुरक “नेपालक नोर मरूभूवममे (अपन गप, गजल खण्ड, शोरो-शाइरी खण्ड, लघुकिा खण्ड, विहवन किा खण्ड, कविता खण्ड) (प . १५०२-१६४६)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 33क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?
- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
 (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
 (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
 (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
५००. खण्ड 4281, सूचकांक पंक्ति 2972: एहि खण्डक सार की अछि?
- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
 (B) खण्ड 4281, सूचकांक पंक्ति 2972मे विन्देश्वर ठाकुरक “नेपालक नोर मरूभूवममे (अपन गप, गजल खण्ड, शोरो-शाइरी खण्ड, लघुकिा खण्ड, विहवन किा खण्ड, कविता खण्ड) (प . १५०२-१६४६)” प्रविष्टि पद्य/गद्य, गजल/शायरी/कथा/कविता आ “नेपालक नोर मरूभूवममे (अपन गप, गजल खण्ड, शोरो-शाइरी खण्ड, लघुकिा खण्ड, विहवन किा खण्ड, कविता खण्ड) (प . १५०२-१६४६)” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 33क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि।
 (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
 (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 4282 : विदेह-सदेह 33 — आशीष अनवचन्हारः मुन्नाजीक गजल, अनवचन्हार आखर (गजलक सृविप्त पवरचय, ७८ टा गजल, ३२ टा रुबाइ आ २ टा कता) (प . १६४७-१८९१)

५०१. खण्ड 4282, सूचकांक पंक्ति 2973: आशीष अनवचन्हारक “मुन्नाजीक गजल, अनवचन्हार आखर (गजलक सृविप्त पवरचय, ७८ टा गजल, ३२ टा रुबाइ आ २ टा कता) (प . १६४७-१८९१)” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) मुन्नाजीक गजल, अनवचन्हार आखर (गजलक सृविप्त पवरचय, ७८ टा गजल, ३२ टा रुबाइ आ २ टा कता) (प . १६४७-१८९१)
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

५०२. खण्ड 4282, सूचकांक पंक्ति 2973: आशीष अनवचन्हारक “मुन्नाजीक गजल, अनवचन्हार आखर (गजलक सृविप्त पवरचय, ७८ टा गजल, ३२ टा रुबाइ आ २ टा कता) (प . १६४७-१८९१)”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) पद्य
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

५०३. खण्ड 4282, सूचकांक पंक्ति 2973: आशीष अनवचन्हारक “मुन्नाजीक गजल, अनवचन्हार आखर (गजलक सृविप्त पवरचय, ७८ टा गजल, ३२ टा रुबाइ आ २ टा कता) (प . १६४७-१८९१)”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) गजल/रुबाइ/कता
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

५०४. खण्ड 4282, सूचकांक पंक्ति 2973: आशीष अनवचन्हारक “मुन्नाजीक गजल, अनवचन्हार आखर (गजलक सृविप्त पवरचय, ७८ टा गजल, ३२ टा रुबाइ आ २ टा कता) (प . १६४७-१८९१)” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) वीआइडीईएचए सहायक सम्पादक

५०५. खण्ड 4282, सूचकांक पंक्ति 2973: आशीष अनवचन्हारक “मुन्नाजीक गजल, अनवचन्हार आखर (गजलक सृविप्त पवरचय, ७८ टा गजल, ३२ टा रुबाइ आ २ टा कता) (प . १६४७-१८९१)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 33मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) वीआइडीईएचए सहायक सम्पादक
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

५०६. खण्ड 4282, सूचकांक पंक्ति 2973: आशीष अनवचन्हारक “मुन्नाजीक गजल, अनवचन्हार आखर (गजलक सृविप्त पवरचय, ७८ टा गजल, ३२ टा रुबाइ आ २ टा कता) (प . १६४७-१८९१)”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककें की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक आशीष अनवचन्हार, विधा पद्य, उप-विधा गजल/रुबाइ/कता
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

५०७. खण्ड 4282, सूचकांक पंक्ति 2973: आशीष अनवचन्हारक “मुन्नाजीक गजल, अनवचन्हार आखर (गजलक सृविप्त पवरचय, ७८ टा गजल, ३२ टा रुबाइ आ २ टा कता) (प . १६४७-१८९१)” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

५०८. खण्ड 4282, सूचकांक पंक्ति 2973: आशीष अनवचन्हारक “मुन्नाजीक गजल, अनवचन्हार आखर (गजलक सृविप्त पवरचय, ७८ टा गजल, ३२ टा रुबाइ आ २ टा कता) (प . १६४७-१८९१)” के विदेह-सदेह 33क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ गजल/रुबाइ/कताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

५०९. खण्ड 4282, सूचकांक पंक्ति 2973: आशीष अनवचन्हारक “मुन्नाजीक गजल, अनवचन्हार आखर (गजलक सृविप्त पवरचय, ७८ टा गजल, ३२ टा रुबाइ आ २ टा कता) (प . १६४७-१८९१)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 33क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

५१०. खण्ड 4282, सूचकांक पंक्ति 2973: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 4282, सूचकांक पंक्ति 2973मे आशीष अनवचन्हारक “मुन्नाजीक गजल, अनवचन्हार आखर (गजलक सृविप्त पवरचय, ७८ टा गजल, ३२ टा रुबाइ आ २ टा कता) (प . १६४७-१८९१)” प्रविष्टि पद्य, गजल/रुबाइ/कता आ “वीआइडीईएचए सहायक सम्पादक” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 33क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तरमाला — अध्याय ४ (उत्तर ओ व्याख्या / Answers & Explanations)

१. (A) जापान — हाइकू सौंदर्य आ भावक जापानी काव्य-विधा थिक।
२. (A) मात्सुओ बासो — मात्सुओ बासो (१६४४-१६९४) हाइकूकेँ काव्य-विधाक रूप देनिहार जापानी कवि छथि।
३. (A) १७ अक्षर (५-७-५) — हाइकू १७ अक्षरमे, तीन पंक्तिमे ५-७-५ क्रममे लिखल जाइत अछि।
४. (A) मैथिली (आ भारतीय संस्कृताश्रित लिपि) — गजेन्द्र ठाकुर अनुसार हाइकू लेल मैथिली भाषा आ भारतीय संस्कृताश्रित लिपि-व्यवस्था सर्वाधिक उपयुक्त अछि।
५. (A) ५-७-५-७-७ — जापानमे ईश्वरक आह्वान टनका/वाका प्रार्थना ५-७-५-७-७ स्वरूपमे होइत छल।
६. (A) रेन्गा — जखन ५-७-५ आ ७-७ क भाग दू भिन्न लेखक द्वारा लिखल जाए लागल, तँ ओ नव स्वरूप ‘रेन्गा’ कहल गेल।
७. (A) एक गानू — हाइकूक वार्णिक गणना नियम अनुसार संयुक्ताक्षरकेँ एक गानू आ हलन्त/बिकारी/इकार-आकार आदिक गणना नहि करबाक चाही।
८. (A) अक्षररूपी स्तम्भ बिना काव्यरूपी मंच नहि बान्हल जा सकैत — ‘अक्खर खम्भारम्भ जउ मज्यो बन्धि न देइ’ क भाव अछि जे अक्षररूपी स्तम्भ निर्माण बिना काव्यरूपी मंच नहि बान्हल जा सकैत, आ कीर्तिरूपी लता नहि पसरि सकैत।
९. (A) गद्य आ पद्य — आलेख अनुसार साहित्यिक दू मूल विधा गद्य आ पद्य थिक — छन्दोबद्ध रचना पद्य कहबैत अछि, अन्यथा ओ गद्य थीक।
१०. (A) दू (मात्रिक आ वार्णिक) — छन्द दू प्रकारक अछि — मात्रिक आ वार्णिक।
११. (A) वार्णिक — आलेख अनुसार वेदमे वार्णिक छन्द अछि।
१२. (A) मैथिली हाइकू/हैकू/क्षणिका/शेनर्यू/टनका/हैबून — विदेह-सदेह ३३ क समग्र विषय मैथिली हाइकू, हैकू, क्षणिका, शेनर्यू, टनका आ हैबून सन जापानी-प्रेरित पद्य-शैली थिक।
१३. (A) अपाला (ऋग्वैदिक ऋचाक लेखिका) — ‘अपाला आत्रेयी’ नाटकक मुख्य पात्र अपाला छथि, जिनका पात्र-परिचयमे ‘ऋग्वैदिक ऋचाक लेखिका’ कहल गेल अछि।
१४. (A) ऋषि अत्रि — नाटक अनुसार अपालाक पिता ऋषि अत्रि छथि।
१५. (A) कृशाश्व — नाटक अनुसार अपालाक पति कृशाश्व छथि।

१६. (A) आमक गाछीक मध्य (सहकार-कुञ्ज) — नाटकक आरम्भिक दृश्य आमक गाछीक मध्य (सहकार-कुञ्ज) मे स्थापित अछि।
१७. (A) त्वचा रोग (श्वेत कुष्ठ) — नाटकमे अपालाक शरीरपर त्वक् रोगक लक्षण आ श्वेत कुष्ठक चिह्न देखाइ पड़ैत अछि।
१८. (A) ऋत्विजगणक मंत्र-संग्रहमे आधिकारिक रूपेँ सम्मिलित कएल जाइत अछि — नाटकक अन्तिम भाग (ब्रह्मोदय-दृश्य) मे अपालाक स्वतःस्फुटित ऋचाकेँ ऋषिगण ऋक्क आधिकारिक भागक रूपमे स्वीकार करैत छथि।
१९. (A) एक वैदिक-कालीन नारी-ऋषिकाक जीवन आ साहित्यिक मान्यता — नाटक एक वैदिक-कालीन नारी-ऋषिका (अपाला) क जीवन, संघर्ष आ अन्ततः साहित्यिक मान्यताक पुनर्कथन करैत अछि, जे प्राचीन भारतमे नारी-साहित्यिक भूमिकाकेँ इंगित करैत अछि।
२०. (A) वेदी, हविर्गन्ध, साही-गोहि-गिरगिट — नाटकक मंच-सज्जामे वेदी, हविर्गन्ध आ वनक प्राणी (साही, गोहि, गिरगिट) सन प्रतीकात्मक तत्त्वक उल्लेख अछि, जे वैदिक-कालीन आश्रम-परिवेशकेँ देखबैत अछि।
२१. (A) दध्यङ्ग आथर्वन दधीची — एहि नाटकक मुख्य ऋषि-पात्र दध्यङ्ग आथर्वन दधीची छथि।
२२. (B) आश्विनौ (दुनू) — नाटकमे दधीची प्रारम्भमे इन्द्रकेँ मधु-विद्याक शिक्षा देबाक प्रसंग अछि, मुदा बादमे आश्विनौ (दुनू अश्विनीकुमार) केँ ई विद्या देल जाइत अछि।
२३. (A) हुनकर मस्तक काटि कऽ घोड़ाक मस्तक लगाएब — आश्विनौ दधीचीकेँ प्रस्ताव दैत छथि जे शल्यक्रियाद्वारा हुनकर मस्तक काटि कऽ ओकर स्थानपर घोड़ाक मस्तक लगा देल जाएत, जे इन्द्रक क्रोधसँ हुनका बचाएत।
२४. (A) वज्रसँ गरदन काटि दैत छथि — क्रोधित इन्द्र वज्रसँ दधीचीक गरदन काटि दैत छथि, मुदा बादमे अपन अपराधक लेल क्षमा माँगैत छथि।
२५. (A) वृत्र आ शम्बर — नाटकक अन्तिम दृश्यमे इन्द्र वृत्र आ शम्बरक स्वर्गभूमिपर आक्रमणक विरुद्ध दधीचीसँ सहायता माँगैत छथि।
२६. (A) शर्यणा (कुरुक्षेत्र लग एक जलाशय) — दधीची इन्द्रकेँ कुरुक्षेत्र लगक शर्यणा जलाशयक उल्लेख करैत छथि, जतय घोड़ाक मूड़ी राखल छल, जाहिसँ वज्र आदि शस्त्र बनाओल जाइत अछि।
२७. (A) वैदिक कथाकेँ बादमे पौराणिक लोकनि अर्थ-परिवर्तन कऽ देलनि — नाटकक अन्त्यमे सूत्रधार टिप्पणी करैत छथि जे ई मूलतः वैदिक नाटक छल, जकरा बादमे पौराणिक लोकनि अर्थ-परिवर्तन कऽ देलनि — एक ऐतिहासिक-साहित्यिक टिप्पणी।
२८. (A) ज्ञान-दान, बलिदान आ सत्यनिष्ठाक वैदिक आख्यानक नाट्य-रूपान्तरण — नाटकक समग्र विषय ज्ञान-दान, बलिदान आ सत्यनिष्ठाक वैदिक आख्यान (दधीची-मधुविद्या-वज्र कथा) क नाट्य-रूपान्तरण थिक।
२९. (A) शुक्ल यजुर्वेद, अध्याय २२, मंत्र २२ — दूर्वाक्षत आशीर्वचन मंत्र शुक्ल यजुर्वेदक अध्याय २२ केर मंत्र २२ सँ लेल गेल अछि।
३०. (A) देशभक्ति गीतक रूपमे — यजुर्वेदीय २२/२२ मंत्र सौंसे भारतमे देशभक्ति गीतक रूपमे मंत्रोच्चारित होइत अछि।
३१. (A) “मंत्रार्था सिद्धयः संतु मनोरथाः। शत्रूणां बुद्धिनाशोऽस्तु मित्राणामुदयस्तव” आदि — मिथिलामे एहि मंत्रक संग अन्तमे “ॐ मंत्रार्था सिद्धयः संतु मनोरथाः। शत्रूणां बुद्धिनाशोऽस्तु मित्राणामुदयस्तव। ॐ दीर्घायुर्भव। ॐ सौभाग्यवती भव” जोड़ल जाइत अछि।
३२. (A) वाचकलुप्तोपमालङ्कार — समीक्षा अनुसार दूर्वाक्षत मंत्रमे वाचकलुप्तोपमालङ्कार अछि।
३३. (A) नीक धार्मिक विद्या बला ब्राह्मण, वीर राजन्य, तीरंदाज, दूध दैबाली गाय, उद्यमी नारी — ग्रिफिथक अनुवाद अनुसार मंत्रमे कामना अछि जे राज्यमे नीक धार्मिक विद्या बला ब्राह्मण, वीर राजन्य-तीरंदाज, दूध दैबाली गाय, दौगयबला जन्तु, आ उद्यमी नारी होथि।
३४. (A) तेरह सर्ग — ‘पुरोहित’ तेरह टा सर्गमे विभक्त अछि आ एकर अन्त उपसंहारसँ होइत अछि।
३५. (A) दक्षिण पांचालक कांपिल्य नगरसँ — समीक्षा अनुसार ‘पुरोहित’ क प्रथम सर्ग दक्षिण पांचालक कांपिल्य नगरसँ शुरू होइत अछि, जतय अथर्वणपल्लीक पशुशालाक वर्णन अछि।
३६. (A) शेरक दुनू पाँतिमे कौमन (समान) शब्द — आलेख अनुसार गजलक पहिल शेरक अंतिमसँ देखलासँ जे कोनो एहन शब्द जे शेरक दुनू पाँतिमे कौमन होइ, ओकरा गजलक रदीफ कहल जाइत अछि। गजलक सभ शेरक दोसर पाँतिमे ई रदीफ रहबाक चाही।
३७. (A) तुकान्त शब्द, जकर तुक शब्दक अंतिमसँ पता लागैत अछि — आलेख अनुसार काफिया तुकान्त शब्द थिक, जकर तुक ओहि शब्दक अंतिमसँ पता लागैत अछि। जे तुकान्त गजलक पहिल पाँतिमे अछि, सएह आन सभ पाँतिमे हेबाक चाही।
३८. (A) गजलक पहिल शेर, जेकर दुनू पाँतिमे रदीफ आ काफिया दुनू हो — आलेख अनुसार गजलक पहिल शेर जेकर दुनू पाँतिमे रदीफ आ काफिया क्रमशः अंतिमसँ होइ, एकरा ‘मतला’ कहल जाइत अछि।
३९. (A) गजलक अंतिम शेर, जाहिमे शाइर अपन नाम-उपनाम (तखल्लुस) क प्रयोग करथि — आलेख अनुसार मकता गजलक ओहि अंतिम शेरकेँ कहल जाइत छैक जाहिमे शाइर अपन नाम-उपनाम (तखल्लुस) क प्रयोग करथि। बिना मकताक गजल सेहो होइत छैक।

- ४०. (A) सभ गजलमे अपन नाम वा उपनाममेसँ एकेटाक प्रयोग करब** — आलेख अनुसार शाइर अपन सभ गजलमे या तँ अपन नामक प्रयोग करथि वा अपन उपनामक — दुनूमेसँ कोनो एकेटाक, किछुमे एक आ किछुमे दोसर नहि।
- ४१. (A) ‘इ’** — आलेख अनुसार काफियामे वर्ण ‘र’ केर उच्चारण ‘इ’ क बराबर मानल जाइत अछि, संगहि ‘स’, ‘श’ आ ‘ष’ केर उच्चारण सेहो समान मानल जाइत अछि।
- ४२. (A) दस पीढ़ी पहिने** — समीक्षा अनुसार पञ्जीमे उपलब्ध लिखित अभिलेखन गोनु झाकेँ विद्यापतिसँ दस पीढ़ी पहिने अभिलेखित करैत अछि, जखन कि विभिन्न लेखक हुनका भिन्न-भिन्न काल (५००, ३००, १४म शताब्दी) क मानैत छथि।
- ४३. (A) ५०० साल पहिने** — समीक्षा अनुसार वीरेन्द्र झा कहैत छथि जे गोनु झा ५०० साल पहिने भेला।
- ४४. (A) ३०० साल पहिने** — समीक्षा अनुसार तारानन्द वियोगी गोनु झाकेँ ३०० साल पहिने भेल मानैत छथि।
- ४५. (A) भव सिंहक राज्यमे (१४म शताब्दी)** — समीक्षा अनुसार विभा रानीक गोनु झापर हिन्दी पोथी (वाणी प्रकाशन) मे कुणाल गोनु झाकेँ भव सिंहक राज्यमे (१४म शताब्दी) भेल मानैत छथि।
- ४६. (A) साम्प्रदायिक लेखक गोनुक कथामे मुस्लिम तहसीलदारक अत्याचार घोंसिया रहल छथि, जखन कि गोनुक समयमे मुस्लिम मिथिलामे रहबे नहि करथि** — समीक्षा अनुसार साम्प्रदायिक लेखक लोकनि गोनु झाक कथामे मुस्लिम तहसीलदारक अत्याचार घोंसिया रहल छथि, जखन कि मुस्लिम लोकनि मिथिलामे गोनुक समयमे रहबे नहि करथि — ई एक ऐतिहासिक भ्रम थिक।
- ४७. (A) २०म शताब्दी आ २१म शताब्दीक पहिल दशक** — प्रेमशंकर सिंहक निबन्ध-प्रबन्ध-समालोचना संग्रह ‘मैथिली भाषा साहित्य : बीसम शताब्दी’ मे मैथिली साहित्यक २०म शताब्दी आ एकैसम शताब्दीक पहिल दशकक विभिन्न पक्षपर चर्चा भेल अछि।
- ४८. (A) मणिपद्म (हुनकासँ भेंट भेल छल)** — प्रेमशंकर सिंहक संग्रहमे ‘संस्मरण साहित्य’ खण्डमे मणिपद्मक ‘हुनकासँ भेंट भेल छल’ क सन्दर्भमे संस्मरण साहित्यपर चर्चा भेल अछि।
- ४९. (A) “जगदीश प्रसाद मण्डलसँ पूर्व” आ “जगदीश प्रसाद मण्डलसँ”** — समीक्षा अनुसार जगदीश प्रसाद मण्डलक योगदान एहन स्थानपर स्थापित करैत अछि जे मैथिली साहित्यक इतिहास “जगदीश प्रसाद मण्डलसँ पूर्व” आ “जगदीश प्रसाद मण्डलसँ” एहि दू खण्डमे पाठित होएत।
- ५०. (A) पाँचटा उपन्यास, एकटा नाटक, दू दर्जनसँ बेशी कथा** — समीक्षा अनुसार विदेहमे जगदीश प्रसाद मण्डलक पाँचटा उपन्यास, एकटा नाटक आ दू दर्जनसँ बेशी कथा, संगहि सएसँ ऊपर बाल-प्रेरक कथा ई-प्रकाशित भेल अछि।
- ५१. (A) मैथिली हाइकू/ हैकू/ क्षणिका/ शेनयू/ टनका, हैबून, अपाला आत्रेयी, दानवीर दधीची, बालकथा- ब्राह्मण आ ठाकूरक कथा, राजा अनसारी, राजा ढोलन, बगियाक गाछ, ज्योति पँजियार, राजा सलहसे, बहुरा गोद्विन नटूआदयाल, महुआ घटवारिन, डाकू रौहिण्य, मूर्खाधिराज, कौवा आ पूढ़ूदी, नैका बनिजारा, डोकी डोका, रघुनी मरर, जट-जटिन, बचू, भाट-भाटिन, गांगोदेवीक भगता, बड़ सुख सार पाओल तुअ तीरे, छेछन, गरीबन बाबा, लालमैन बाबा, गोनु झा आ दस ठोप बाबा, संकर्षण (नाटक), सर-समाज, काल-स्थान विस्थापन, सर्वशिक्षा अभियान, जातिवादी मराठी, थेथर मनुक्ख, बहुपत्नी विवाह आ हिजड़ा, स्त्री-बेटी, बिआह आ गोरलगाड़, प्रतिभा, जाति- पाति, अनुकम्पाक नोकरी, नूतन मीडिआ, मिथिलाक उद्योग, मिथिलाक उद्योग-२, बादि, भूख आ प्रवास, नव-सामन्त, बाणवीर, तस्कर, सिद्ध महावीर, शब्दशास्त्रम्, दिल्ली, सहस्रबाद्विन (उपन्यास), मायानन्द** — सूचकांक पंक्ति 2928मे गजेन्द्र ठाकूरक प्रविष्टि “मैथिली हाइकू/ हैकू/ क्षणिका/ शेनयू/ टनका, हैबून, अपाला आत्रेयी, दानवीर दधीची, बालकथा- ब्राह्मण आ ठाकूरक कथा, राजा अनसारी, राजा ढोलन, बगियाक गाछ, ज्योति पँजियार, राजा सलहसे, बहुरा गोद्विन नटूआदयाल, महुआ घटवारिन, डाकू रौहिण्य, मूर्खाधिराज, कौवा आ पूढ़ूदी, नैका बनिजारा, डोकी डोका, रघुनी मरर, जट-जटिन, बचू, भाट-भाटिन, गांगोदेवीक भगता, बड़ सुख सार पाओल तुअ तीरे, छेछन, गरीबन बाबा, लालमैन बाबा, गोनु झा आ दस ठोप बाबा, संकर्षण (नाटक), सर-समाज, काल-स्थान विस्थापन, सर्वशिक्षा अभियान, जातिवादी मराठी, थेथर मनुक्ख, बहुपत्नी विवाह आ हिजड़ा, स्त्री-बेटी, बिआह आ गोरलगाड़, प्रतिभा, जाति- पाति, अनुकम्पाक नोकरी, नूतन मीडिआ, मिथिलाक उद्योग, मिथिलाक उद्योग-२, बादि, भूख आ प्रवास, नव-सामन्त, बाणवीर, तस्कर, सिद्ध महावीर, शब्दशास्त्रम्, दिल्ली, सहस्रबाद्विन (उपन्यास), मायानन्द” रूपमे देल अछि।
- ५२. (B) गद्य** — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।
- ५३. (C) हाइकू/कथा/नाटक/निबन्ध/उपन्यास** — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “हाइकू/कथा/नाटक/निबन्ध/उपन्यास” अछि।
- ५४. (D) मैथिली हाइकू/ हैकू/ क्षणिका/ शेनयू/ टनका, हैबून, अपाला आत्रेयी, दानवीर दधीची, बालकथा- ब्राह्मण आ ठाकूरक कथा, राजा अनसारी, राजा ढोलन, बगियाक गाछ, ज्योति पँजियार, राजा सलहसे, बहुरा गोद्विन नटूआदयाल, महुआ घटवारिन, डाकू रौहिण्य, मूर्खाधिराज, कौवा आ पूढ़ूदी, नैका बनिजारा, डोकी डोका, रघुनी मरर, जट-जटिन, बचू, भाट-भाटिन, गांगोदेवीक भगता, बड़ सुख सार पाओल तुअ तीरे, छेछन, गरीबन बाबा, लालमैन बाबा, गोनु झा आ दस ठोप बाबा, संकर्षण (नाटक), सर-समाज, काल-स्थान विस्थापन, सर्वशिक्षा अभियान, जातिवादी मराठी, थेथर मनुक्ख, बहुपत्नी विवाह आ हिजड़ा, स्त्री-बेटी, बिआह आ गोरलगाड़, प्रतिभा, जाति- पाति, अनुकम्पाक नोकरी, नूतन मीडिआ, मिथिलाक उद्योग, मिथिलाक उद्योग-२, बादि, भूख आ प्रवास, नव-सामन्त, बाणवीर, तस्कर, सिद्ध महावीर, शब्दशास्त्रम्, दिल्ली, सहस्रबाद्विन (उपन्यास), मायानन्द** — टिप्पणीक पहिल संकेत “मैथिली हाइकू/ हैकू/ क्षणिका/ शेनयू/ टनका, हैबून, अपाला आत्रेयी, दानवीर दधीची, बालकथा- ब्राह्मण आ ठाकूरक कथा, राजा अनसारी, राजा ढोलन, बगियाक गाछ, ज्योति पँजियार, राजा सलहसे, बहुरा गोद्विन नटूआदयाल, महुआ घटवारिन, डाकू रौहिण्य, मूर्खाधिराज, कौवा आ पूढ़ूदी, नैका बनिजारा, डोकी

डोका, रघुनी मरर, जट-जटिन, बचू, भाट-भाटिन, गांगोदेवीक भगता, बड़ सुख सार पाओल तुअ तीरे, छेछन, गरीबन बाबा, लालमैन बाबा, गोनू झा आ दस ठोप बाबा, संकर्षण (नाटक), सर-समाज, काल-स्थान विस्थापन, सर्वशिक्षा अभियान, जातिवादी मराठी, थेथर मनुक्ख, बहुपत्नी विवाह आ हिजड़ा, स्त्री-बेटी, बिआह आ गोरलगाइ, प्रतिभा, जाति- पाति, अनुकम्पाक नोकरी, नूतन मीडिआ, मिथिलाक उद्योग, मिथिलाक उद्योग-२, बादि, भूख आ प्रवास, नव-सामन्त, बाणवीर, तस्कर, सिद्ध महावीर, शब्दशास्त्रम्, दिल्ली, सहस्रबाद्विन (उपन्यास), मायानन्द” अछि।

५५. (A) मैथिली हाइकू/ हैकू/ क्षणिका/ शेनयू/ टनका, हैबून, अपाला आत्रेयी, दानवीर दधीची, बालकथा- ब्राह्मण आ ठाकूरक कथा, राजा अनसारी, राजा ढोलन, बगियाक गाछ, ज्योति पँजियार, राजा सलहसे, बहुरा गोद्विन नटूआदयाल, महुआ घटवारिन, डाकू रौहिण्य, मूर्खाधिराज, कौवा आ पूढूँदी, नैका बनिजारा, डोकी डोका, रघुनी मरर, जट-जटिन, बचू, भाट-भाटिन, गांगोदेवीक भगता, बड़ सुख सार पाओल तुअ तीरे, छेछन, गरीबन बाबा, लालमैन बाबा, गोनू झा आ दस ठोप बाबा, संकर्षण (नाटक), सर-समाज, काल-स्थान विस्थापन, सर्वशिक्षा अभियान, जातिवादी मराठी, थेथर मनुक्ख, बहुपत्नी विवाह आ हिजड़ा, स्त्री-बेटी, बिआह आ गोरलगाइ, प्रतिभा, जाति- पाति, अनुकम्पाक नोकरी, नूतन मीडिआ, मिथिलाक उद्योग, मिथिलाक उद्योग-२, बादि, भूख आ प्रवास, नव-सामन्त, बाणवीर, तस्कर, सिद्ध महावीर, शब्दशास्त्रम्, दिल्ली, सहस्रबाद्विन (उपन्यास), मायानन्द — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “मैथिली हाइकू/ हैकू/ क्षणिका/ शेनयू/ टनका, हैबून, अपाला आत्रेयी, दानवीर दधीची, बालकथा- ब्राह्मण आ ठाकूरक कथा, राजा अनसारी, राजा ढोलन, बगियाक गाछ, ज्योति पँजियार, राजा सलहसे, बहुरा गोद्विन नटूआदयाल, महुआ घटवारिन, डाकू रौहिण्य, मूर्खाधिराज, कौवा आ पूढूँदी, नैका बनिजारा, डोकी डोका, रघुनी मरर, जट-जटिन, बचू, भाट-भाटिन, गांगोदेवीक भगता, बड़ सुख सार पाओल तुअ तीरे, छेछन, गरीबन बाबा, लालमैन बाबा, गोनू झा आ दस ठोप बाबा, संकर्षण (नाटक), सर-समाज, काल-स्थान विस्थापन, सर्वशिक्षा अभियान, जातिवादी मराठी, थेथर मनुक्ख, बहुपत्नी विवाह आ हिजड़ा, स्त्री-बेटी, बिआह आ गोरलगाइ, प्रतिभा, जाति- पाति, अनुकम्पाक नोकरी, नूतन मीडिआ, मिथिलाक उद्योग, मिथिलाक उद्योग-२, बादि, भूख आ प्रवास, नव-सामन्त, बाणवीर, तस्कर, सिद्ध महावीर, शब्दशास्त्रम्, दिल्ली, सहस्रबाद्विन (उपन्यास), मायानन्द” रूपमे देखाइत अछि।

५६. (B) लेखक गजेन्द्र ठाकूर, विधा गद्य, उप-विधा हाइकू/कथा/नाटक/निबन्ध/उपन्यास — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

५७. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

५८. (D) ई पाठ हाइकू/कथा/नाटक/निबन्ध/उपन्यासक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

५९. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

६०. (B) खण्ड 4237, सूचकांक पंक्ति 2928मे गजेन्द्र ठाकूरक “मैथिली हाइकू/ हैकू/ क्षणिका/ शेनयू/ टनका, हैबून, अपाला आत्रेयी, दानवीर दधीची, बालकथा- ब्राह्मण आ ठाकूरक कथा, राजा अनसारी, राजा ढोलन, बगियाक गाछ, ज्योति पँजियार, राजा सलहसे, बहुरा गोद्विन नटूआदयाल, महुआ घटवारिन, डाकू रौहिण्य, मूर्खाधिराज, कौवा आ पूढूँदी, नैका बनिजारा, डोकी डोका, रघुनी मरर, जट-जटिन, बचू, भाट-भाटिन, गांगोदेवीक भगता, बड़ सुख सार पाओल तुअ तीरे, छेछन, गरीबन बाबा, लालमैन बाबा, गोनू झा आ दस ठोप बाबा, संकर्षण (नाटक), सर-समाज, काल-स्थान विस्थापन, सर्वशिक्षा अभियान, जातिवादी मराठी, थेथर मनुक्ख, बहुपत्नी विवाह आ हिजड़ा, स्त्री-बेटी, बिआह आ गोरलगाइ, प्रतिभा, जाति- पाति, अनुकम्पाक नोकरी, नूतन मीडिआ, मिथिलाक उद्योग, मिथिलाक उद्योग-२, बादि, भूख आ प्रवास, नव-सामन्त, बाणवीर, तस्कर, सिद्ध महावीर, शब्दशास्त्रम्, दिल्ली, सहस्रबाद्विन (उपन्यास), मायानन्द” प्रविष्टि गद्य, हाइकू/कथा/नाटक/निबन्ध/उपन्यास आ “मैथिली हाइकू/ हैकू/ क्षणिका/ शेनयू/ टनका, हैबून, अपाला आत्रेयी, दानवीर दधीची, बालकथा- ब्राह्मण आ ठाकूरक कथा, राजा अनसारी, राजा ढोलन, बगियाक गाछ, ज्योति पँजियार, राजा सलहसे, बहुरा गोद्विन नटूआदयाल, महुआ घटवारिन, डाकू रौहिण्य, मूर्खाधिराज, कौवा आ पूढूँदी, नैका बनिजारा, डोकी डोका, रघुनी मरर, जट-जटिन, बचू, भाट-भाटिन, गांगोदेवीक भगता, बड़ सुख सार पाओल तुअ तीरे, छेछन, गरीबन बाबा, लालमैन बाबा, गोनू झा आ दस ठोप बाबा, संकर्षण (नाटक), सर-समाज, काल-स्थान विस्थापन, सर्वशिक्षा अभियान, जातिवादी मराठी, थेथर मनुक्ख, बहुपत्नी विवाह आ हिजड़ा, स्त्री-बेटी, बिआह आ गोरलगाइ, प्रतिभा, जाति- पाति, अनुकम्पाक नोकरी, नूतन मीडिआ, मिथिलाक उद्योग, मिथिलाक उद्योग-२, बादि, भूख आ प्रवास, नव-सामन्त, बाणवीर, तस्कर, सिद्ध महावीर, शब्दशास्त्रम्, दिल्ली, सहस्रबाद्विन (उपन्यास), मायानन्द” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 33क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

६१. (A) मिश्रक इतिहास बोध-प्रथमं शैल पुत्री च/ मंत्रपुत्र/ पुरोहित आ स्त्री-धन करे संदर्भमे, कृषि-मत्स्य शब्दावली (फील्ड-वर्कपर आधारित), विद्यापतिक बिदेसिया- पिआ देसाँतर, रमेश नारायणक “पाथरक नाव”- विनोद बिहारी वर्माक “बलानक बोनिहार ओ पल्लवी (तथा अन्य कथा)”, दूर्वाक्षत, मैथिली- सुरजापुरी- राजबंशी, बूच जीक कविताक -मार्क्सवाद, ऐतिहासिक दृष्टि, संरचनावाद, जादू-वास्तविकतावाद, उत्तर-आधुनिक, नारीवादी आ विखण्डनवाद दृष्टिसँ अध्ययन संगमे भारतीय सौन्दर्यशास्त्रक दृष्टिसँ सेहो अध्ययन, स्व. श्री वैद्यनाथ मिश्र “यात्री” (१९११-१९९८), जगदीश प्रसाद मण्डल, प्रेमशंकर सिंह, सिद्ध सरहपाद आ तिब्बती लिपि (पृ. २-२१३) — सूचकांक पंक्ति 2929मे गजेन्द्र ठाकूरक प्रविष्टि “मिश्रक इतिहास बोध-प्रथमं शैल पुत्री च/ मंत्रपुत्र/ पुरोहित आ स्त्री-धन करे संदर्भमे, कृषि-मत्स्य शब्दावली (फील्ड-वर्कपर आधारित), विद्यापतिक बिदेसिया- पिआ देसाँतर, रमेश नारायणक “पाथरक नाव”- विनोद बिहारी वर्माक “बलानक बोनिहार ओ पल्लवी (तथा अन्य कथा)”, दूर्वाक्षत, मैथिली- सुरजापुरी- राजबंशी, बूच जीक कविताक -मार्क्सवाद, ऐतिहासिक दृष्टि, संरचनावाद, जादू-वास्तविकतावाद, उत्तर-आधुनिक, नारीवादी आ विखण्डनवाद दृष्टिसँ अध्ययन संगमे भारतीय सौन्दर्यशास्त्रक दृष्टिसँ

सेहो अध्ययन, स्व. श्री वैद्यनाथ मिश्र “यात्री” (१९११-१९९८), जगदीश प्रसाद मण्डल, प्रेमशंकर सिंह, सिद्ध सरहपाद आ तिब्बती लिपि (पृ. २-२१३)” रूपमे देल अछि।

६२. (B) गद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

६३. (C) समालोचना/शोध-लेख/शब्दावली — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “समालोचना/शोध-लेख/शब्दावली” अछि।

६४. (D) मिश्रक इतिहास बोध-प्रथमं शैल पुत्री च/ मंत्रपुत्र/ पुरोहित आ स्त्री-धन करे संदर्भमे, कृषि-मत्स्य शब्दावली (फील्ड-वर्कपर आधारित), विद्यापतिक बिदेसिया- पिआ देसाँतर, रमेश नारायणक “पाथरक नाव”- विनोद बिहारी वर्माक “बलानक बोनिहार ओ पल्लवी (तथा अन्य कथा)”, दूर्वाक्षत, मैथिली- सुरजापुरी- राजवंशी, बूच जीक कविताक -मार्क्सवाद, ऐतिहासिक दृष्टि, संरचनावाद, जादू-वास्तविकतावाद, उत्तर-आधुनिक, नारीवादी आ विखण्डनवाद दृष्टिसँ अध्ययन संगमे भारतीय सौन्दर्यशास्त्रक दृष्टिसँ सेहो अध्ययन, स्व. श्री वैद्यनाथ मिश्र “यात्री” (१९११-१९९८), जगदीश प्रसाद मण्डल, प्रेमशंकर सिंह, सिद्ध सरहपाद आ तिब्बती लिपि (पृ. २-२१३) — टिप्पणीक पहिल संकेत “मिश्रक इतिहास बोध-प्रथमं शैल पुत्री च/ मंत्रपुत्र/ पुरोहित आ स्त्री-धन करे संदर्भमे, कृषि-मत्स्य शब्दावली (फील्ड-वर्कपर आधारित), विद्यापतिक बिदेसिया- पिआ देसाँतर, रमेश नारायणक “पाथरक नाव”- विनोद बिहारी वर्माक “बलानक बोनिहार ओ पल्लवी (तथा अन्य कथा)”, दूर्वाक्षत, मैथिली- सुरजापुरी- राजवंशी, बूच जीक कविताक -मार्क्सवाद, ऐतिहासिक दृष्टि, संरचनावाद, जादू-वास्तविकतावाद, उत्तर-आधुनिक, नारीवादी आ विखण्डनवाद दृष्टिसँ अध्ययन संगमे भारतीय सौन्दर्यशास्त्रक दृष्टिसँ सेहो अध्ययन, स्व. श्री वैद्यनाथ मिश्र “यात्री” (१९११-१९९८), जगदीश प्रसाद मण्डल, प्रेमशंकर सिंह, सिद्ध सरहपाद आ तिब्बती लिपि (पृ. २-२१३)” अछि।

६५. (A) मिश्रक इतिहास बोध-प्रथमं शैल पुत्री च/ मंत्रपुत्र/ पुरोहित आ स्त्री-धन करे संदर्भमे, कृषि-मत्स्य शब्दावली (फील्ड-वर्कपर आधारित), विद्यापतिक बिदेसिया- पिआ देसाँतर, रमेश नारायणक “पाथरक नाव”- विनोद बिहारी वर्माक “बलानक बोनिहार ओ पल्लवी (तथा अन्य कथा)”, दूर्वाक्षत, मैथिली- सुरजापुरी- राजवंशी, बूच जीक कविताक -मार्क्सवाद, ऐतिहासिक दृष्टि, संरचनावाद, जादू-वास्तविकतावाद, उत्तर-आधुनिक, नारीवादी आ विखण्डनवाद दृष्टिसँ अध्ययन संगमे भारतीय सौन्दर्यशास्त्रक दृष्टिसँ सेहो अध्ययन, स्व. श्री वैद्यनाथ मिश्र “यात्री” (१९११-१९९८), जगदीश प्रसाद मण्डल, प्रेमशंकर सिंह, सिद्ध सरहपाद आ तिब्बती लिपि (पृ. २-२१३) — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “मिश्रक इतिहास बोध-प्रथमं शैल पुत्री च/ मंत्रपुत्र/ पुरोहित आ स्त्री-धन करे संदर्भमे, कृषि-मत्स्य शब्दावली (फील्ड-वर्कपर आधारित), विद्यापतिक बिदेसिया- पिआ देसाँतर, रमेश नारायणक “पाथरक नाव”- विनोद बिहारी वर्माक “बलानक बोनिहार ओ पल्लवी (तथा अन्य कथा)”, दूर्वाक्षत, मैथिली- सुरजापुरी- राजवंशी, बूच जीक कविताक -मार्क्सवाद, ऐतिहासिक दृष्टि, संरचनावाद, जादू-वास्तविकतावाद, उत्तर-आधुनिक, नारीवादी आ विखण्डनवाद दृष्टिसँ अध्ययन संगमे भारतीय सौन्दर्यशास्त्रक दृष्टिसँ सेहो अध्ययन, स्व. श्री वैद्यनाथ मिश्र “यात्री” (१९११-१९९८), जगदीश प्रसाद मण्डल, प्रेमशंकर सिंह, सिद्ध सरहपाद आ तिब्बती लिपि (पृ. २-२१३)” रूपमे देखाइत अछि।

६६. (B) लेखक गजेन्द्र ठाकूर, विधा गद्य, उप-विधा समालोचना/शोध-लेख/शब्दावली — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

६७. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

६८. (D) ई पाठ समालोचना/शोध-लेख/शब्दावलीक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

६९. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

७०. (B) खण्ड 4238, सूचकांक पंक्ति 2929मे गजेन्द्र ठाकूरक “मिश्रक इतिहास बोध-प्रथमं शैल पुत्री च/ मंत्रपुत्र/ पुरोहित आ स्त्री-धन करे संदर्भमे, कृषि-मत्स्य शब्दावली (फील्ड-वर्कपर आधारित), विद्यापतिक बिदेसिया- पिआ देसाँतर, रमेश नारायणक “पाथरक नाव”- विनोद बिहारी वर्माक “बलानक बोनिहार ओ पल्लवी (तथा अन्य कथा)”, दूर्वाक्षत, मैथिली- सुरजापुरी- राजवंशी, बूच जीक कविताक -मार्क्सवाद, ऐतिहासिक दृष्टि, संरचनावाद, जादू-वास्तविकतावाद, उत्तर-आधुनिक, नारीवादी आ विखण्डनवाद दृष्टिसँ अध्ययन संगमे भारतीय सौन्दर्यशास्त्रक दृष्टिसँ सेहो अध्ययन, स्व. श्री वैद्यनाथ मिश्र “यात्री” (१९११-१९९८), जगदीश प्रसाद मण्डल, प्रेमशंकर सिंह, सिद्ध सरहपाद आ तिब्बती लिपि (पृ. २-२१३)” प्रविष्टि गद्य, समालोचना/शोध-लेख/शब्दावली आ “मिश्रक इतिहास बोध-प्रथमं शैल पुत्री च/ मंत्रपुत्र/ पुरोहित आ स्त्री-धन करे संदर्भमे, कृषि-मत्स्य शब्दावली (फील्ड-वर्कपर आधारित), विद्यापतिक बिदेसिया- पिआ देसाँतर, रमेश नारायणक “पाथरक नाव”- विनोद बिहारी वर्माक “बलानक बोनिहार ओ पल्लवी (तथा अन्य कथा)”, दूर्वाक्षत, मैथिली- सुरजापुरी- राजवंशी, बूच जीक कविताक -मार्क्सवाद, ऐतिहासिक दृष्टि, संरचनावाद, जादू-वास्तविकतावाद, उत्तर-आधुनिक, नारीवादी आ विखण्डनवाद दृष्टिसँ अध्ययन संगमे भारतीय सौन्दर्यशास्त्रक दृष्टिसँ सेहो अध्ययन, स्व. श्री वैद्यनाथ मिश्र “यात्री” (१९११-१९९८), जगदीश प्रसाद मण्डल, प्रेमशंकर सिंह, सिद्ध सरहपाद आ तिब्बती लिपि (पृ. २-२१३)” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 33क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

७१. (A) आऊ कनेक प्रेम करी माने बुझौँअल जिनगीक (पृ. २१४- २२२) — सूचकांक पंक्ति 2930मे विभा रानीक प्रविष्टि “आऊ कनेक प्रेम करी माने बुझौँअल जिनगीक (पृ. २१४- २२२)” रूपमे देल अछि।

७२. (B) गद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

७३. (C) कथा — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “कथा” अछि।

७४. (D) नारी-दृष्टि — टिप्पणीक पहिल संकेत “नारी-दृष्टि” अछि।

७५. (A) नारी-दृष्टि — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “नारी-दृष्टि” रूपमे देखाइत अछि।

७६. (B) लेखक विभा रानी, विधा गद्य, उप-विधा कथा — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

७७. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

७८. (D) ई पाठ कथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

७९. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

८०. (B) खण्ड 4239, सूचकांक पंक्ति 2930मे विभा रानीक “आऊ कनेक प्रेम करी माने बुझौँअल जिनगीक (पृ. २१४- २२२)” प्रविष्टि गद्य, कथा आ “नारी-दृष्टि” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 33क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

८१. (A) बीहिन कथा- गंगाप्रसादक स्वायतता, हुगली पर बहैत गंगा (पृ. २२३-२२६) — सूचकांक पंक्ति 2931मे रामभरोस कापिड “भ्रमर”क प्रविष्टि “बीहिन कथा- गंगाप्रसादक स्वायतता, हुगली पर बहैत गंगा (पृ. २२३-२२६)” रूपमे देल अछि।

८२. (B) गद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

८३. (C) कथा — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “कथा” अछि।

८४. (D) ईसीओएलओजीआइसीएएल डब्ल्यूआरआइटीआइएनजी — टिप्पणीक पहिल संकेत “ईसीओएलओजीआइसीएएल डब्ल्यूआरआइटीआइएनजी” अछि।

८५. (A) ईसीओएलओजीआइसीएएल डब्ल्यूआरआइटीआइएनजी — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “ईसीओएलओजीआइसीएएल डब्ल्यूआरआइटीआइएनजी” रूपमे देखाइत अछि।

८६. (B) लेखक रामभरोस कापिड “भ्रमर”, विधा गद्य, उप-विधा कथा — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

८७. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

८८. (D) ई पाठ कथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

८९. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

९०. (B) खण्ड 4240, सूचकांक पंक्ति 2931मे रामभरोस कापिड “भ्रमर”क “बीहिन कथा- गंगाप्रसादक स्वायतता, हुगली पर बहैत गंगा (पृ. २२३-२२६)” प्रविष्टि गद्य, कथा आ “ईसीओएलओजीआइसीएएल डब्ल्यूआरआइटीआइएनजी” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 33क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

९१. (A) अन्तर्राष्ट्रिय मैथिली परिषद, कोना बचाएब संस्कृतिक विरासत?, संस्कृति बचाएबाक अभियान (पृ. २२७-२३०) — सूचकांक पंक्ति 2932मे जितेन्द्र झाक प्रविष्टि “अन्तर्राष्ट्रिय मैथिली परिषद, कोना बचाएब संस्कृतिक विरासत?, संस्कृति बचाएबाक अभियान (पृ. २२७-२३०)” रूपमे देल अछि।

९२. (B) गद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

९३. (C) लेख/रिपोर्ताज — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “लेख/रिपोर्ताज” अछि।

९४. (D) जनकपुर, नेपाल — टिप्पणीक पहिल संकेत “जनकपुर, नेपाल” अछि।

९५. (A) जनकपुर, नेपाल — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “जनकपुर, नेपाल” रूपमे देखाइत अछि।

९६. (B) लेखक जितेन्द्र झा, विधा गद्य, उप-विधा लेख/रिपोर्ताज — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

९७. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

९८. (D) ई पाठ लेख/रिपोर्ताजक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

९९. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

१००. (B) खण्ड 4241, सूचकांक पंक्ति 2932मे जितेन्द्र झाक “अन्तर्राष्ट्रिय मैथिली परिषद, कोना बचाएब संस्कृतिक विरासत?, संस्कृति बचाएबाक अभियान (पृ. २२७-२३०)” प्रविष्टि गद्य, लेख/रिपोर्ताज आ “जनकपुर, नेपाल” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 33क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकें प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

१०१. (A) बहादुरगंज स’ रिपोर्ट (पृ. २३१-२३१) — सूचकांक पंक्ति 2933मे उमेश कुमार महतोक प्रविष्टि “बहादुरगंज स’ रिपोर्ट (पृ. २३१-२३१)” रूपमे देल अछि।

१०२. (B) गद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकें “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

१०३. (C) रिपोर्ताज — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “रिपोर्ताज” अछि।

१०४. (D) ओबीसी/एसयूबीएलटीईआरएन वीओआइसीई — टिप्पणीक पहिल संकेत “ओबीसी/एसयूबीएलटीईआरएन वीओआइसीई” अछि।

१०५. (A) ओबीसी/एसयूबीएलटीईआरएन वीओआइसीई — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “ओबीसी/एसयूबीएलटीईआरएन वीओआइसीई” रूपमे देखाइत अछि।

१०६. (B) लेखक उमेश कुमार महतो, विधा गद्य, उप-विधा रिपोर्ताज — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकें एक साथ रखैत अछि।

१०७. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककें केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

१०८. (D) ई पाठ रिपोर्ताजक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकें स्पष्ट करैत अछि।

१०९. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

११०. (B) खण्ड 4242, सूचकांक पंक्ति 2933मे उमेश कुमार महतो “बहादुरगंज स’ रिपोर्ट (पृ. २३१-२३१)” प्रविष्टि गद्य, रिपोर्ताज आ “ओबीसी/एसयूबीएलटीईआरएन वीओआइसीई” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 33क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकें प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

१११. (A) कबइ-इच्छा, एत’ आ ओत’, असोथकित (पृ. २३२- २५२) — सूचकांक पंक्ति 2934मे अनलकान्तक प्रविष्टि “कबइ-इच्छा, एत’ आ ओत’, असोथकित (पृ. २३२- २५२)” रूपमे देल अछि।

११२. (B) गद्य/पद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकें “गद्य/पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

११३. (C) कविता/लघुकथा — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “कविता/लघुकथा” अछि।

११४. (D) एमआइएनआइएमएलआइएसएम — टिप्पणीक पहिल संकेत “एमआइएनआइएमएलआइएसएम” अछि।

११५. (A) एमआइएनआइएमएलआइएसएम — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “एमआइएनआइएमएलआइएसएम” रूपमे देखाइत अछि।

११६. (B) लेखक अनलकान्त, विधा गद्य/पद्य, उप-विधा कविता/लघुकथा — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकें एक साथ रखैत अछि।

११७. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककें केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

११८. (D) ई पाठ कविता/लघुकथाक रूपमे गद्य/पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकें स्पष्ट करैत अछि।

११९. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

१२०. (B) खण्ड 4243, सूचकांक पंक्ति 2934मे अनलकान्तक “कबइ-इच्छा, एत’ आ ओत’, असोथकित (पृ. २३२- २५२)” प्रविष्टि गद्य/पद्य, कविता/लघुकथा आ “एमआइएनआइएमएलआइएसएम” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 33क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकें प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

१२१. (A) अवैद्य नागरिकता: सिक्कमीकरणक प्रयास, मनोज झा मुक्ति संग अन्तर्वाता ...आभाष लाभ, तराई/मधेशक आन्दोलन: लूटमे लट्वा नफ्फा (पृ. २५३-२५७) — सूचकांक पंक्ति 2935मे मनोज झा मुक्तिक प्रविष्टि “अवैद्य नागरिकता: सिक्कमीकरणक प्रयास, मनोज झा मुक्ति संग अन्तर्वाता ...आभाष लाभ, तराई/मधेशक आन्दोलन: लूटमे लट्वा नफ्फा (पृ. २५३-२५७)” रूपमे देल अछि।

१२२. (B) गद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकें “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

१२३. (C) लेख/अन्तर्वाता — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “लेख/अन्तर्वाता” अछि।

१२४. (D) एसईएलएफ-डीआइजीएनआइटीवाई एनएआरआरएटीआइवीई — टिप्पणीक पहिल संकेत “एसईएलएफ-डीआइजीएनआइटीवाई एनएआरआरएटीआइवीई” अछि।

१२५. (A) एसईएलएफ-डीआइजीएनआइटीवाई एनएआरआरएटीआइवीई — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “एसईएलएफ-डीआइजीएनआइटीवाई एनएआरआरएटीआइवीई” रूपमे देखाइत अछि।

१२६. (B) लेखक मनोज झा मुक्ति, विधा गद्य, उप-विधा लेख/अन्तर्वाता — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

१२७. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

१२८. (D) ई पाठ लेख/अन्तर्वाताक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

१२९. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

१३०. (B) खण्ड 4244, सूचकांक पंक्ति 2935मे मनोज झा मुक्ति “अवैद्य नागरिकता: सिक्कमीकरणक प्रयास, मनोज झा मुक्ति संग अन्तर्वाता ...आभाष लाभ, तराई/मधेशक आन्दोलन: लूटमे लट्वा नफ्फा (पृ. २५३-२५७)” प्रविष्टि गद्य, लेख/अन्तर्वाता आ “एसईएलएफ-डीआइजीएनआइटीवाई एनएआरआरएटीआइवीई” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 33क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

१३१. (A) छोटकी काकी (प. २५८-२५९) — सूचकांक पंक्ति 2936मे कुमार शुशान्तक प्रविष्टि “छोटकी काकी (प. २५८-२५९)” रूपमे देल अछि।

१३२. (B) गद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

१३३. (C) कथा — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “कथा” अछि।

१३४. (D) नव पीढ़ी — टिप्पणीक पहिल संकेत “नव पीढ़ी” अछि।

१३५. (A) नव पीढ़ी — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “नव पीढ़ी” रूपमे देखाइत अछि।

१३६. (B) लेखक कुमार शुशान्त, विधा गद्य, उप-विधा कथा — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

१३७. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

१३८. (D) ई पाठ कथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

१३९. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

१४०. (B) खण्ड 4245, सूचकांक पंक्ति 2936मे कुमार शुशान्तक “छोटकी काकी (प. २५८-२५९)” प्रविष्टि गद्य, कथा आ “नव पीढ़ी” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 33क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

१४१. (A) आह उमा ! वाह उमा ! , विचार- मिशिलाक तवाही,सरकारी षडयन्त्र त ने अछि ??, दुलहा बनल श्रीराम हे एसएसएस (सन्दर्भ: राम-जानकी विवाह महोत्सव) (पृ. २६०-२६४) — सूचकांक पंक्ति 2937मे श्यामसुन्दर शशिक प्रविष्टि “आह उमा ! वाह उमा ! , विचार- मिशिलाक तवाही,सरकारी षडयन्त्र त ने अछि ??, दुलहा बनल श्रीराम हे एसएसएस (सन्दर्भ: राम-जानकी विवाह महोत्सव) (पृ. २६०-२६४)” रूपमे देल अछि।

१४२. (B) गद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

१४३. (C) निबन्ध — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “निबन्ध” अछि।

१४४. (D) शृंगार+वियोग — टिप्पणीक पहिल संकेत “शृंगार+वियोग” अछि।

१४५. (A) शृंगार+वियोग — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “शृंगार+वियोग” रूपमे देखाइत अछि।

१४६. (B) लेखक श्यामसुन्दर शशि, विधा गद्य, उप-विधा निबन्ध — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

१४७. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

१४८. (D) ई पाठ निबन्धक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

१४९. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

१५०. (B) खण्ड 4246, सूचकांक पंक्ति 2937मे श्यामसुन्दर शशिक “आह उमा ! वाह उमा ! , विचार- मिशिलाक तवाही,सरकारी षडयन्त्र त ने अछि ??, दुलहा बनल श्रीराम हे एसएसएस (सन्दर्भ: राम-जानकी विवाह महोत्सव) (पृ. २६०-२६४)” प्रविष्टि गद्य, निबन्ध आ “शृंगार+वियोग” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 33क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

- १५१. (A) नेताजी पर तामश कियैक उठैत अछि (प. २६५-२६६) —** सूचकांक पंक्ति 2938मे अंकुर काशीनाथ झाक प्रविष्टि “नेताजी पर तामश कियैक उठैत अछि (प. २६५-२६६)” रूपमे देल अछि।
- १५२. (B) गद्य —** विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।
- १५३. (C) लेख —** उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “लेख” अछि।
- १५४. (D) नव पीढ़ी —** टिप्पणीक पहिल संकेत “नव पीढ़ी” अछि।
- १५५. (A) नव पीढ़ी —** समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “नव पीढ़ी” रूपमे देखाइत अछि।
- १५६. (B) लेखक अंकुर काशीनाथ झा, विधा गद्य, उप-विधा लेख —** सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।
- १५७. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। —** टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।
- १५८. (D) ई पाठ लेखक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। —** विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।
- १५९. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। —** प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।
- १६०. (B) खण्ड 4247, सूचकांक पंक्ति 2938मे अंकुर काशीनाथ झाक “नेताजी पर तामश कियैक उठैत अछि (प. २६५-२६६)” प्रविष्टि गद्य, लेख आ “नव पीढ़ी” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 33क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि। —** ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।
- १६१. (A) (पू.२६७-२७४) — रचनाक नाम स्पष्ट नै अछि —** सूचकांक पंक्ति 2939मे लललन ठाकूरक प्रविष्टि “(पू.२६७-२७४) — रचनाक नाम स्पष्ट नै अछि” रूपमे देल अछि।
- १६२. (B) गद्य —** विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।
- १६३. (C) मिश्रित —** उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “मिश्रित” अछि।
- १६४. (D) (पू.२६७-२७४) — रचनाक नाम स्पष्ट नै अछि —** टिप्पणीक पहिल संकेत “(पू.२६७-२७४) — रचनाक नाम स्पष्ट नै अछि” अछि।
- १६५. (A) (पू.२६७-२७४) — रचनाक नाम स्पष्ट नै अछि —** समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “(पू.२६७-२७४) — रचनाक नाम स्पष्ट नै अछि” रूपमे देखाइत अछि।
- १६६. (B) लेखक लललन ठाकूर, विधा गद्य, उप-विधा मिश्रित —** सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।
- १६७. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। —** टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।
- १६८. (D) ई पाठ मिश्रितक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। —** विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।
- १६९. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। —** प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।
- १७०. (B) खण्ड 4248, सूचकांक पंक्ति 2939मे लललन ठाकूरक “(पू.२६७-२७४) — रचनाक नाम स्पष्ट नै अछि” प्रविष्टि गद्य, मिश्रित आ “(पू.२६७-२७४) — रचनाक नाम स्पष्ट नै अछि” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 33क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि। —** ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।
- १७१. (A) कालरात्रिश्च दारुणा (पृ. २१५-२१६) —** सूचकांक पंक्ति 2940मे साकेतानन्दक प्रविष्टि “कालरात्रिश्च दारुणा (पृ. २१५-२१६)” रूपमे देल अछि।
- १७२. (B) गद्य —** विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।
- १७३. (C) कथा —** उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “कथा” अछि।
- १७४. (D) कालरात्रिश्च दारुणा (पृ. २१५-२१६) —** टिप्पणीक पहिल संकेत “कालरात्रिश्च दारुणा (पृ. २१५-२१६)” अछि।
- १७५. (A) कालरात्रिश्च दारुणा (पृ. २१५-२१६) —** समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “कालरात्रिश्च दारुणा (पृ. २१५-२१६)” रूपमे देखाइत अछि।
- १७६. (B) लेखक साकेतानन्द, विधा गद्य, उप-विधा कथा —** सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।
- १७७. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। —** टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।
- १७८. (D) ई पाठ कथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। —** विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

१७९. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।
१८०. (B) खण्ड 4249, सूचकांक पंक्ति 2940मे साकेतानन्दक “कालरात्रिश्च दारुणा (पृ. २१५-२१६)” प्रविष्टि गद्य, कथा आ “कालरात्रिश्च दारुणा (पृ. २१५-२१६)” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 33क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकें प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।
१८१. (A) आ ओ मारिल गिल !, एकदन्त हाथी आ नौलखा हार (पृ. २७९-२६६) — सूचकांक पंक्ति 2941मे बूषेश चन्द्र लालक प्रविष्टि “आ ओ मारिल गिल !, एकदन्त हाथी आ नौलखा हार (पृ. २७९-२६६)” रूपमे देल अछि।
१८२. (B) गद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकें “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।
१८३. (C) कथा — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “कथा” अछि।
१८४. (D) एनईपीएल — टिप्पणीक पहिल संकेत “एनईपीएल” अछि।
१८५. (A) एनईपीएल — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “एनईपीएल” रूपमे देखाइत अछि।
१८६. (B) लेखक बूषेश चन्द्र लाल, विधा गद्य, उप-विधा कथा — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकें एक साथ रखैत अछि।
१८७. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककें केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।
१८८. (D) ई पाठ कथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकें स्पष्ट करैत अछि।
१८९. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।
१९०. (B) खण्ड 4250, सूचकांक पंक्ति 2941मे बूषेश चन्द्र लालक “आ ओ मारिल गिल !, एकदन्त हाथी आ नौलखा हार (पृ. २७९-२६६)” प्रविष्टि गद्य, कथा आ “एनईपीएल” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 33क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकें प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।
१९१. (A) (प्रबोध सम्मान २००९) सँ िवनीत उत्पलक साक्षात्कार- (पृ. २८७-२९३) — सूचकांक पंक्ति 2942मे राजमोहन झाक प्रविष्टि “(प्रबोध सम्मान २००९) सँ िवनीत उत्पलक साक्षात्कार- (पृ. २८७-२९३)” रूपमे देल अछि।
१९२. (B) गद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकें “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।
१९३. (C) साक्षात्कार — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “साक्षात्कार” अछि।
१९४. (D) साहित्य अकादेमी — 'आई-काइल-परसू' — टिप्पणीक पहिल संकेत “साहित्य अकादेमी — 'आई-काइल-परसू'” अछि।
१९५. (A) साहित्य अकादेमी — 'आई-काइल-परसू' — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “साहित्य अकादेमी — 'आई-काइल-परसू'” रूपमे देखाइत अछि।
१९६. (B) लेखक राजमोहन झा, विधा गद्य, उप-विधा साक्षात्कार — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकें एक साथ रखैत अछि।
१९७. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककें केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।
१९८. (D) ई पाठ साक्षात्कारक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकें स्पष्ट करैत अछि।
१९९. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।
२००. (B) खण्ड 4251, सूचकांक पंक्ति 2942मे राजमोहन झाक “(प्रबोध सम्मान २००९) सँ िवनीत उत्पलक साक्षात्कार- (पृ. २८७-२९३)” प्रविष्टि गद्य, साक्षात्कार आ “साहित्य अकादेमी — 'आई-काइल-परसू'” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 33क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकें प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।
२०१. (A) प्रसिद्ध अभिनव भातखण्डे जी सँ साक्षात्कार डॉ. गगेश गुंजन द्वारा (पृ. २९४-२९८) — सूचकांक पंक्ति 2943मे रामाश्रय झा “रामरंग”क प्रविष्टि “प्रसिद्ध अभिनव भातखण्डे जी सँ साक्षात्कार डॉ. गगेश गुंजन द्वारा (पृ. २९४-२९८)” रूपमे देल अछि।
२०२. (B) गद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकें “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।
२०३. (C) साक्षात्कार — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “साक्षात्कार” अछि।

२०४. (D) वीआइडीवाईएपीएटीआइ एमयूएसआइसी टीआरएडीआइटीआइओएन — टिप्पणीक पहिल संकेत “वीआइडीवाईएपीएटीआइ एमयूएसआइसी टीआरएडीआइटीआइओएन” अछि।
२०५. (A) वीआइडीवाईएपीएटीआइ एमयूएसआइसी टीआरएडीआइटीआइओएन — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “वीआइडीवाईएपीएटीआइ एमयूएसआइसी टीआरएडीआइटीआइओएन” रूपमे देखाइत अछि।
२०६. (B) लेखक रामाश्रय झा “रामरंग”, विधा गद्य, उप-विधा साक्षात्कार — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकें एक साथ रखैत अछि।
२०७. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककें केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।
२०८. (D) ई पाठ साक्षात्कारक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकें स्पष्ट करैत अछि।
२०९. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।
२१०. (B) खण्ड 4252, सूचकांक पंक्ति 2943मे रामाश्रय झा “रामरंग”क “प्रसिद्ध अभिनव भातखण्डे जी सँ साक्षात्कार डो. गगेश गुंजन द्वारा (पृ. २९४-२९८)” प्रविष्टि गद्य, साक्षात्कार आ “वीआइडीवाईएपीएटीआइ एमयूएसआइसी टीआरएडीआइटीआइओएन” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 33क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकें प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।
२११. (A) हरिमोहन झा- द्विरागमन (पृ.२९९-३०१) — सूचकांक पंक्ति 2944मे शिव कुमार झा ‘टिल्लू’क प्रविष्टि “हरिमोहन झा- द्विरागमन (पृ.२९९-३०१)” रूपमे देल अछि।
२१२. (B) गद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकें “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।
२१३. (C) समीक्षा/निबन्ध — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “समीक्षा/निबन्ध” अछि।
२१४. (D) हरिमोहन झा- द्विरागमन (पृ.२९९-३०१) — टिप्पणीक पहिल संकेत “हरिमोहन झा- द्विरागमन (पृ.२९९-३०१)” अछि।
२१५. (A) हरिमोहन झा- द्विरागमन (पृ.२९९-३०१) — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “हरिमोहन झा- द्विरागमन (पृ.२९९-३०१)” रूपमे देखाइत अछि।
२१६. (B) लेखक शिव कुमार झा ‘टिल्लू’, विधा गद्य, उप-विधा समीक्षा/निबन्ध — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकें एक साथ रखैत अछि।
२१७. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककें केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।
२१८. (D) ई पाठ समीक्षा/निबन्धक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकें स्पष्ट करैत अछि।
२१९. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।
२२०. (B) खण्ड 4253, सूचकांक पंक्ति 2944मे शिव कुमार झा ‘टिल्लू’क “हरिमोहन झा- द्विरागमन (पृ.२९९-३०१)” प्रविष्टि गद्य, समीक्षा/निबन्ध आ “हरिमोहन झा- द्विरागमन (पृ.२९९-३०१)” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 33क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकें प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।
२२१. (A) साक्षात्कार- हम पुष्टीत छी (१.रवीन्द्र कुमार दास २.योगेन्द्र प्रसाद यादव ३.गोविन्द झा ४.राजेन्द्र बिमल ५.रामभरोस कापडि “भ्रमर” ६.रमेश रंजन ७.बृषेश चन्द्र लाल ८.धीरेन्द्र प्रेमर्षि ९.अनलकान्त १०.कुमार शैलेन्द्र ११.अमरनाथ १२.तारानन्द वियोगी १३.अनमोल झा १४.दुर्गानन्द मंडल १५.मिथिलेश कुमार झा १६.बेचन ठाकुर १७.धीरेन्द्र कुमार १८.सोमदेव १९.अशोक २०.ज्योति सुनीत चौधरी २१.जगदीश प्रसाद मण्डल २२.राजदेव मण्डल २३.देवशंकर नवीन २४.गजेन्द्र ठाकुर) — सूचकांक पंक्ति 2945मे मुत्राजीक प्रविष्टि “साक्षात्कार- हम पुष्टीत छी (१.रवीन्द्र कुमार दास २.योगेन्द्र प्रसाद यादव ३.गोविन्द झा ४.राजेन्द्र बिमल ५.रामभरोस कापडि “भ्रमर” ६.रमेश रंजन ७.बृषेश चन्द्र लाल ८.धीरेन्द्र प्रेमर्षि ९.अनलकान्त १०.कुमार शैलेन्द्र ११.अमरनाथ १२.तारानन्द वियोगी १३.अनमोल झा १४.दुर्गानन्द मंडल १५.मिथिलेश कुमार झा १६.बेचन ठाकुर १७.धीरेन्द्र कुमार १८.सोमदेव १९.अशोक २०.ज्योति सुनीत चौधरी २१.जगदीश प्रसाद मण्डल २२.राजदेव मण्डल २३.देवशंकर नवीन २४.गजेन्द्र ठाकुर)” रूपमे देल अछि।
२२२. (B) गद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकें “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।
२२३. (C) साक्षात्कार — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “साक्षात्कार” अछि।
२२४. (D) साक्षात्कार- हम पुष्टीत छी (१.रवीन्द्र कुमार दास २.योगेन्द्र प्रसाद यादव ३.गोविन्द झा ४.राजेन्द्र बिमल ५.रामभरोस कापडि “भ्रमर” ६.रमेश रंजन ७.बृषेश चन्द्र लाल ८.धीरेन्द्र प्रेमर्षि ९.अनलकान्त १०.कुमार शैलेन्द्र ११.अमरनाथ १२.तारानन्द वियोगी १३.अनमोल झा १४.दुर्गानन्द मंडल १५.मिथिलेश कुमार झा १६.बेचन ठाकुर १७.धीरेन्द्र कुमार १८.सोमदेव १९.अशोक २०.ज्योति सुनीत चौधरी २१.जगदीश प्रसाद मण्डल २२.राजदेव मण्डल २३.देवशंकर नवीन २४.गजेन्द्र ठाकुर) — टिप्पणीक पहिल संकेत “साक्षात्कार- हम पुष्टीत छी (१.रवीन्द्र कुमार दास २.योगेन्द्र प्रसाद यादव ३.गोविन्द झा ४.राजेन्द्र बिमल ५.रामभरोस कापडि “भ्रमर” ६.रमेश रंजन ७.बृषेश चन्द्र लाल ८.धीरेन्द्र प्रेमर्षि ९.अनलकान्त १०.कुमार शैलेन्द्र ११.अमरनाथ १२.तारानन्द वियोगी

१३.अनमोल झा १४.दुर्गानन्द मंडल १५.मिथिलेश कुमार झा १६.बेचन ठाकुर १७.धीरेन्द्र कुमार १८.सोमदेव १९.अशोक २०.ज्योति सुनीत चौधरी २१.जगदीश प्रसाद मण्डल २२.राजदेव मण्डल २३.देवशंकर नवीन २४.गजेन्द्र ठाकुर)” अछि।

२२५. (A) साक्षात्कार- हम पुष्टीत छी (१.रवीन्द्र कुमार दास २.योगेन्द्र प्रसाद यादव ३.गोविन्द झा ४.राजेन्द्र बिमल ५.रामभरोस कापडि “भ्रमर” ६.रमेश रंजन ७.बृषेश चन्द्र लाल ८.धीरेन्द्र प्रेमर्षि ९.अनलकान्त १०.कुमार शैलेन्द्र ११.अमरनाथ १२.तारानन्द वियोगी १३.अनमोल झा १४.दुर्गानन्द मंडल १५.मिथिलेश कुमार झा १६.बेचन ठाकुर १७.धीरेन्द्र कुमार १८.सोमदेव १९.अशोक २०.ज्योति सुनीत चौधरी २१.जगदीश प्रसाद मण्डल २२.राजदेव मण्डल २३.देवशंकर नवीन २४.गजेन्द्र ठाकुर) — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “साक्षात्कार- हम पुष्टीत छी (१.रवीन्द्र कुमार दास २.योगेन्द्र प्रसाद यादव ३.गोविन्द झा ४.राजेन्द्र बिमल ५.रामभरोस कापडि “भ्रमर” ६.रमेश रंजन ७.बृषेश चन्द्र लाल ८.धीरेन्द्र प्रेमर्षि ९.अनलकान्त १०.कुमार शैलेन्द्र ११.अमरनाथ १२.तारानन्द वियोगी १३.अनमोल झा १४.दुर्गानन्द मंडल १५.मिथिलेश कुमार झा १६.बेचन ठाकुर १७.धीरेन्द्र कुमार १८.सोमदेव १९.अशोक २०.ज्योति सुनीत चौधरी २१.जगदीश प्रसाद मण्डल २२.राजदेव मण्डल २३.देवशंकर नवीन २४.गजेन्द्र ठाकुर)” रूपमे देखाइत अछि।

२२६. (B) लेखक मुत्राजी, विधा गद्य, उप-विधा साक्षात्कार — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकें एक साथ रखैत अछि।

२२७. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककें केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

२२८. (D) ई पाठ साक्षात्कारक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकें स्पष्ट करैत अछि।

२२९. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

२३०. (B) खण्ड 4254, सूचकांक पंक्ति 2945मे मुत्राजीक “साक्षात्कार- हम पुष्टीत छी (१.रवीन्द्र कुमार दास २.योगेन्द्र प्रसाद यादव ३.गोविन्द झा ४.राजेन्द्र बिमल ५.रामभरोस कापडि “भ्रमर” ६.रमेश रंजन ७.बृषेश चन्द्र लाल ८.धीरेन्द्र प्रेमर्षि ९.अनलकान्त १०.कुमार शैलेन्द्र ११.अमरनाथ १२.तारानन्द वियोगी १३.अनमोल झा १४.दुर्गानन्द मंडल १५.मिथिलेश कुमार झा १६.बेचन ठाकुर १७.धीरेन्द्र कुमार १८.सोमदेव १९.अशोक २०.ज्योति सुनीत चौधरी २१.जगदीश प्रसाद मण्डल २२.राजदेव मण्डल २३.देवशंकर नवीन २४.गजेन्द्र ठाकुर)” प्रविष्टि गद्य, साक्षात्कार आ “साक्षात्कार- हम पुष्टीत छी (१.रवीन्द्र कुमार दास २.योगेन्द्र प्रसाद यादव ३.गोविन्द झा ४.राजेन्द्र बिमल ५.रामभरोस कापडि “भ्रमर” ६.रमेश रंजन ७.बृषेश चन्द्र लाल ८.धीरेन्द्र प्रेमर्षि ९.अनलकान्त १०.कुमार शैलेन्द्र ११.अमरनाथ १२.तारानन्द वियोगी १३.अनमोल झा १४.दुर्गानन्द मंडल १५.मिथिलेश कुमार झा १६.बेचन ठाकुर १७.धीरेन्द्र कुमार १८.सोमदेव १९.अशोक २०.ज्योति सुनीत चौधरी २१.जगदीश प्रसाद मण्डल २२.राजदेव मण्डल २३.देवशंकर नवीन २४.गजेन्द्र ठाकुर)” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 33क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकें प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

२३१. (A) प्रतीक- बीहिन कथा (अपन गप, अपन कहब रेवाज पडौआ टकटकी नियंत्रण गहना डोपिंग टेस्ट विनिमय सेजौट परमेश्वर पजेबा सफाई प्रिमियम मुखियैती लक्ष्य कौनचर आत्मानुभूति जनवाणी चश्मा उपहार काँट ओकाति जीवन चक्र रक्षक जमाना निर्धन आरक्षित नवयुग अवाक लिलसा खानदानी कूल्हड्या दानक बौस्त जुनुन विजेता हरियर बत्ती- लाल बत्ती लगाम देखाउँस माँ विजातीय स्वरूप आ संभावना विकल्प रीलीफ जिनगी सेवक (पृ.३०२-४६५) — सूचकांक पंक्ति 2946मे मुत्राजीक प्रविष्टि “प्रतीक- बीहिन कथा (अपन गप, अपन कहब रेवाज पडौआ टकटकी नियंत्रण गहना डोपिंग टेस्ट विनिमय सेजौट परमेश्वर पजेबा सफाई प्रिमियम मुखियैती लक्ष्य कौनचर आत्मानुभूति जनवाणी चश्मा उपहार काँट ओकाति जीवन चक्र रक्षक जमाना निर्धन आरक्षित नवयुग अवाक लिलसा खानदानी कूल्हड्या दानक बौस्त जुनुन विजेता हरियर बत्ती- लाल बत्ती लगाम देखाउँस माँ विजातीय स्वरूप आ संभावना विकल्प रीलीफ जिनगी सेवक (पृ.३०२-४६५)” रूपमे देल अछि।

२३२. (B) गद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकें “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

२३३. (C) कथा/लघुकथा — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “कथा/लघुकथा” अछि।

२३४. (D) प्रतीक- बीहिन कथा (अपन गप, अपन कहब रेवाज पडौआ टकटकी नियंत्रण गहना डोपिंग टेस्ट विनिमय सेजौट परमेश्वर पजेबा सफाई प्रिमियम मुखियैती लक्ष्य कौनचर आत्मानुभूति जनवाणी चश्मा उपहार काँट ओकाति जीवन चक्र रक्षक जमाना निर्धन आरक्षित नवयुग अवाक लिलसा खानदानी कूल्हड्या दानक बौस्त जुनुन विजेता हरियर बत्ती- लाल बत्ती लगाम देखाउँस माँ विजातीय स्वरूप आ संभावना विकल्प रीलीफ जिनगी सेवक (पृ.३०२-४६५) — टिप्पणीक पहिल संकेत “प्रतीक- बीहिन कथा (अपन गप, अपन कहब रेवाज पडौआ टकटकी नियंत्रण गहना डोपिंग टेस्ट विनिमय सेजौट परमेश्वर पजेबा सफाई प्रिमियम मुखियैती लक्ष्य कौनचर आत्मानुभूति जनवाणी चश्मा उपहार काँट ओकाति जीवन चक्र रक्षक जमाना निर्धन आरक्षित नवयुग अवाक लिलसा खानदानी कूल्हड्या दानक बौस्त जुनुन विजेता हरियर बत्ती- लाल बत्ती लगाम देखाउँस माँ विजातीय स्वरूप आ संभावना विकल्प रीलीफ जिनगी सेवक (पृ.३०२-४६५)” अछि।

२३५. (A) प्रतीक- बीहिन कथा (अपन गप, अपन कहब रेवाज पडौआ टकटकी नियंत्रण गहना डोपिंग टेस्ट विनिमय सेजौट परमेश्वर पजेबा सफाई प्रिमियम मुखियैती लक्ष्य कौनचर आत्मानुभूति जनवाणी चश्मा उपहार काँट ओकाति जीवन चक्र रक्षक जमाना निर्धन आरक्षित नवयुग अवाक लिलसा खानदानी कूल्हड्या दानक बौस्त जुनुन विजेता हरियर बत्ती- लाल बत्ती लगाम देखाउँस माँ विजातीय स्वरूप आ संभावना विकल्प रीलीफ जिनगी सेवक (पृ.३०२-४६५) — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “प्रतीक- बीहिन कथा (अपन गप, अपन कहब रेवाज पडौआ टकटकी नियंत्रण गहना डोपिंग टेस्ट विनिमय सेजौट परमेश्वर पजेबा सफाई प्रिमियम मुखियैती लक्ष्य कौनचर आत्मानुभूति जनवाणी चश्मा उपहार काँट ओकाति जीवन चक्र रक्षक जमाना निर्धन

आरक्षित नवयुग अवाक लिलसा खानदानी कूल्हड्या दानक बौस्त जुनुन विजेता हरियर बत्ती- लाल बत्ती लगाम देखाउँस माँ विजातीय स्वरूप आ संभावना विकल्प रीलीफ जिनगी सेवक (पृ.३०२-४६५)” रूपमे देखाइत अछि।

२३६. (B) लेखक मुत्राजी, विधा गद्य, उप-विधा कथा/लघुकथा — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

२३७. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

२३८. (D) ई पाठ कथा/लघुकथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

२३९. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

२४०. (B) खण्ड 4255, सूचकांक पंक्ति 2946मे मुत्राजीक “प्रतीक- बीहिन कथा (अपन गप, अपन कहब रेवाज पडौआ टकटकी नियंत्रण गहना डोपिंग टेस्ट विनिमय सेजौट परमेश्वर पजेबा सफाई प्रिमियम मुखियैती लक्ष्य कौनचर आत्मानुभूति जनवाणी चश्मा उपहार काँट ओकाति जीवन चक्र रक्षक जमाना निर्धन आरक्षित नवयुग अवाक लिलसा खानदानी कूल्हड्या दानक बौस्त जुनुन विजेता हरियर बत्ती- लाल बत्ती लगाम देखाउँस माँ विजातीय स्वरूप आ संभावना विकल्प रीलीफ जिनगी सेवक (पृ.३०२-४६५)” प्रविष्टि गद्य, कथा/लघुकथा आ “प्रतीक- बीहिन कथा (अपन गप, अपन कहब रेवाज पडौआ टकटकी नियंत्रण गहना डोपिंग टेस्ट विनिमय सेजौट परमेश्वर पजेबा सफाई प्रिमियम मुखियैती लक्ष्य कौनचर आत्मानुभूति जनवाणी चश्मा उपहार काँट ओकाति जीवन चक्र रक्षक जमाना निर्धन आरक्षित नवयुग अवाक लिलसा खानदानी कूल्हड्या दानक बौस्त जुनुन विजेता हरियर बत्ती- लाल बत्ती लगाम देखाउँस माँ विजातीय स्वरूप आ संभावना विकल्प रीलीफ जिनगी सेवक (पृ.३०२-४६५)” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 33क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

२४१. (A) बडद करैए दाउन ने यौ, बाल गजल, बेसी छुट्टी कम इसकूल, शामिल बाजाक दुन्दभी वादक, मोनक रंगक अदृश्य देबाल, मन्दाकिनी जे आकाश मध्य, पक्काक जादि, निन्नक जीवन विचित्र, गंगा ब्रिज, हर आ बडद, बिसरलहूँ फेर कर्णक मृत्युक छोट- छीन रूप, बडका सडक छह लेन बला, मिथिलाक ध्वज गीत, ट्रेनक गाडी, राजा श्री अनुरन्दज सिंह, दीयाबाती, क्रिकेट-फील्डिंग, त्वज्वाहज्य, असज्जाति मन (पृ. ४६७-५७४) — सूचकांक पंक्ति 2947मे गजेन्द्र ठाकुरक प्रविष्टि “बडद करैए दाउन ने यौ, बाल गजल, बेसी छुट्टी कम इसकूल, शामिल बाजाक दुन्दभी वादक, मोनक रंगक अदृश्य देबाल, मन्दाकिनी जे आकाश मध्य, पक्काक जादि, निन्नक जीवन विचित्र, गंगा ब्रिज, हर आ बडद, बिसरलहूँ फेर कर्णक मृत्युक छोट- छीन रूप, बडका सडक छह लेन बला, मिथिलाक ध्वज गीत, ट्रेनक गाडी, राजा श्री अनुरन्दज सिंह, दीयाबाती, क्रिकेट-फील्डिंग, त्वज्वाहज्य, असज्जाति मन (पृ. ४६७-५७४)” रूपमे देल अछि।

२४२. (B) पद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

२४३. (C) गजल/कविता — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “गजल/कविता” अछि।

२४४. (D) बडद करैए दाउन ने यौ, बाल गजल, बेसी छुट्टी कम इसकूल, शामिल बाजाक दुन्दभी वादक, मोनक रंगक अदृश्य देबाल, मन्दाकिनी जे आकाश मध्य, पक्काक जादि, निन्नक जीवन विचित्र, गंगा ब्रिज, हर आ बडद, बिसरलहूँ फेर कर्णक मृत्युक छोट- छीन रूप, बडका सडक छह लेन बला, मिथिलाक ध्वज गीत, ट्रेनक गाडी, राजा श्री अनुरन्दज सिंह, दीयाबाती, क्रिकेट-फील्डिंग, त्वज्वाहज्य, असज्जाति मन (पृ. ४६७-५७४) — टिप्पणीक पहिल संकेत “बडद करैए दाउन ने यौ, बाल गजल, बेसी छुट्टी कम इसकूल, शामिल बाजाक दुन्दभी वादक, मोनक रंगक अदृश्य देबाल, मन्दाकिनी जे आकाश मध्य, पक्काक जादि, निन्नक जीवन विचित्र, गंगा ब्रिज, हर आ बडद, बिसरलहूँ फेर कर्णक मृत्युक छोट- छीन रूप, बडका सडक छह लेन बला, मिथिलाक ध्वज गीत, ट्रेनक गाडी, राजा श्री अनुरन्दज सिंह, दीयाबाती, क्रिकेट-फील्डिंग, त्वज्वाहज्य, असज्जाति मन (पृ. ४६७-५७४)” अछि।

२४५. (A) बडद करैए दाउन ने यौ, बाल गजल, बेसी छुट्टी कम इसकूल, शामिल बाजाक दुन्दभी वादक, मोनक रंगक अदृश्य देबाल, मन्दाकिनी जे आकाश मध्य, पक्काक जादि, निन्नक जीवन विचित्र, गंगा ब्रिज, हर आ बडद, बिसरलहूँ फेर कर्णक मृत्युक छोट- छीन रूप, बडका सडक छह लेन बला, मिथिलाक ध्वज गीत, ट्रेनक गाडी, राजा श्री अनुरन्दज सिंह, दीयाबाती, क्रिकेट-फील्डिंग, त्वज्वाहज्य, असज्जाति मन (पृ. ४६७-५७४) — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “बडद करैए दाउन ने यौ, बाल गजल, बेसी छुट्टी कम इसकूल, शामिल बाजाक दुन्दभी वादक, मोनक रंगक अदृश्य देबाल, मन्दाकिनी जे आकाश मध्य, पक्काक जादि, निन्नक जीवन विचित्र, गंगा ब्रिज, हर आ बडद, बिसरलहूँ फेर कर्णक मृत्युक छोट- छीन रूप, बडका सडक छह लेन बला, मिथिलाक ध्वज गीत, ट्रेनक गाडी, राजा श्री अनुरन्दज सिंह, दीयाबाती, क्रिकेट-फील्डिंग, त्वज्वाहज्य, असज्जाति मन (पृ. ४६७-५७४)” रूपमे देखाइत अछि।

२४६. (B) लेखक गजेन्द्र ठाकुर, विधा पद्य, उप-विधा गजल/कविता — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

२४७. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

२४८. (D) ई पाठ गजल/कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

२४९. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

२५०. (B) खण्ड 4256, सूचकांक पंक्ति 2947मे गजेन्द्र ठाकूरक “बडद करैए दाउन ने यौ, बाल गजल, बेसी छुट्टी कम इसकूल, शामिल बाजाक दुन्दभी वादक, मोनक रंगक अदृश्य देबाल, मन्दाकिनी जे आकाश मध्य, पक्काक जादि, निन्नक जीवन विचित्र, गंगा ब्रिज, हर आ बडद, बिसरलहूँ फेर कर्णक मृत्युक छोट- छीन रूप, बडका सडक छह लेन बला, मिथिलाक ध्वज गीत, ट्रेनक गाडी, राजा श्री अनुरन्दज सिंह, दीयाबाती, क्रिकेट-फील्डिंग, त्वज्याहज्य, असज्जाति मन (पृ. ४६७-५७४)” प्रविष्टि पद्य, गजल/कविता आ “बडद करैए दाउन ने यौ, बाल गजल, बेसी छुट्टी कम इसकूल, शामिल बाजाक दुन्दभी वादक, मोनक रंगक अदृश्य देबाल, मन्दाकिनी जे आकाश मध्य, पक्काक जादि, निन्नक जीवन विचित्र, गंगा ब्रिज, हर आ बडद, बिसरलहूँ फेर कर्णक मृत्युक छोट- छीन रूप, बडका सडक छह लेन बला, मिथिलाक ध्वज गीत, ट्रेनक गाडी, राजा श्री अनुरन्दज सिंह, दीयाबाती, क्रिकेट-फील्डिंग, त्वज्याहज्य, असज्जाति मन (पृ. ४६७-५७४)” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 33क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकें प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।
२५१. (A) कोसी लोकगीत १-३ (प. ५७५-५७७) — सूचकांक पंक्ति 2948मे कोसी लोकगीतक प्रविष्टि “कोसी लोकगीत १-३ (प. ५७५-५७७)” रूपमे देल अछि।
२५२. (B) पद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकें “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।
२५३. (C) लोकगीत — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “लोकगीत” अछि।
२५४. (D) ईसीओएलओजीआइसीएएल डब्ल्यूआरआइटीआइएनजी — टिप्पणीक पहिल संकेत “ईसीओएलओजीआइसीएएल डब्ल्यूआरआइटीआइएनजी” अछि।
२५५. (A) ईसीओएलओजीआइसीएएल डब्ल्यूआरआइटीआइएनजी — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “ईसीओएलओजीआइसीएएल डब्ल्यूआरआइटीआइएनजी” रूपमे देखाइत अछि।
२५६. (B) लेखक कोसी लोकगीत, विधा पद्य, उप-विधा लोकगीत — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकें एक साथ रखैत अछि।
२५७. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककें केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।
२५८. (D) ई पाठ लोकगीतक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकें स्पष्ट करैत अछि।
२५९. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।
२६०. (B) खण्ड 4257, सूचकांक पंक्ति 2948मे कोसी लोकगीतक “कोसी लोकगीत १-३ (प. ५७५-५७७)” प्रविष्टि पद्य, लोकगीत आ “ईसीओएलओजीआइसीएएल डब्ल्यूआरआइटीआइएनजी” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 33क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकें प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।
२६१. (A) चलू देखैब अपन गाम अय, सिनेमा, दहेज, परदेश, सडक, दुनियाँ (पृ. ५७८-५८३) — सूचकांक पंक्ति 2949मे बैकुण्ठ झाक प्रविष्टि “चलू देखैब अपन गाम अय, सिनेमा, दहेज, परदेश, सडक, दुनियाँ (पृ. ५७८-५८३)” रूपमे देल अछि।
२६२. (B) पद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकें “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।
२६३. (C) कविता — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “कविता” अछि।
२६४. (D) परम्परावादी विमर्श — टिप्पणीक पहिल संकेत “परम्परावादी विमर्श” अछि।
२६५. (A) परम्परावादी विमर्श — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “परम्परावादी विमर्श” रूपमे देखाइत अछि।
२६६. (B) लेखक बैकुण्ठ झा, विधा पद्य, उप-विधा कविता — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकें एक साथ रखैत अछि।
२६७. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककें केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।
२६८. (D) ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकें स्पष्ट करैत अछि।
२६९. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।
२७०. (B) खण्ड 4258, सूचकांक पंक्ति 2949मे बैकुण्ठ झाक “चलू देखैब अपन गाम अय, सिनेमा, दहेज, परदेश, सडक, दुनियाँ (पृ. ५७८-५८३)” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “परम्परावादी विमर्श” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 33क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकें प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।
२७१. (A) हाल बचपनसँ पचपन तक (पृ. ५८४-५८६) — सूचकांक पंक्ति 2950मे प्रकाश झाक प्रविष्टि “हाल बचपनसँ पचपन तक (पृ. ५८४-५८६)” रूपमे देल अछि।

२७२. (B) पद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।
२७३. (C) कविता — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “कविता” अछि।
२७४. (D) सामाजिक रिपोर्टिंग — टिप्पणीक पहिल संकेत “सामाजिक रिपोर्टिंग” अछि।
२७५. (A) सामाजिक रिपोर्टिंग — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “सामाजिक रिपोर्टिंग” रूपमे देखाइत अछि।
२७६. (B) लेखक प्रकाश झा, विधा पद्य, उप-विधा कविता — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।
२७७. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।
२७८. (D) ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।
२७९. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।
२८०. (B) खण्ड 4259, सूचकांक पंक्ति 2950मे प्रकाश झाक “हाल बचपनसँ पचपन तक (पृ. ५८४-५८६)” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “सामाजिक रिपोर्टिंग” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 33क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।
२८१. (A) दिलक कलमसँ शैरो शायरी, जखन जनता जागि जाइत अछि! (पृ. ६२२-६२४) — सूचकांक पंक्ति 2951मे जितमोहन झाक प्रविष्टि “दिलक कलमसँ शैरो शायरी, जखन जनता जागि जाइत अछि! (पृ. ६२२-६२४)” रूपमे देल अछि।
२८२. (B) पद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।
२८३. (C) शायरी/कविता — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “शायरी/कविता” अछि।
२८४. (D) मुम्बई — टिप्पणीक पहिल संकेत “मुम्बई” अछि।
२८५. (A) मुम्बई — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “मुम्बई” रूपमे देखाइत अछि।
२८६. (B) लेखक जितमोहन झा, विधा पद्य, उप-विधा शायरी/कविता — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।
२८७. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।
२८८. (D) ई पाठ शायरी/कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।
२८९. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।
२९०. (B) खण्ड 4260, सूचकांक पंक्ति 2951मे जितमोहन झाक “दिलक कलमसँ शैरो शायरी, जखन जनता जागि जाइत अछि! (पृ. ६२२-६२४)” प्रविष्टि पद्य, शायरी/कविता आ “मुम्बई” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 33क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।
२९१. (A) एक दिन (पृ. ६२५-६२५) — सूचकांक पंक्ति 2952मे कृष्णमोहन झाक प्रविष्टि “एक दिन (पृ. ६२५-६२५)” रूपमे देल अछि।
२९२. (B) पद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।
२९३. (C) कविता — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “कविता” अछि।
२९४. (D) भावात्मक — टिप्पणीक पहिल संकेत “भावात्मक” अछि।
२९५. (A) भावात्मक — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “भावात्मक” रूपमे देखाइत अछि।
२९६. (B) लेखक कृष्णमोहन झा, विधा पद्य, उप-विधा कविता — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।
२९७. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।
२९८. (D) ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।
२९९. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।
३००. (B) खण्ड 4261, सूचकांक पंक्ति 2952मे कृष्णमोहन झाक “एक दिन (पृ. ६२५-६२५)” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “भावात्मक” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 33क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

३०१. (A) टमटमियाँ घोडा (पृ. ६२६-६२६) — सूचकांक पंक्ति 2953मे अमरेन्द्र यादवक प्रविष्टि “टमटमियाँ घोडा (पृ. ६२६-६२६)” रूपमे देल अछि।
३०२. (B) पद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।
३०३. (C) कविता — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “कविता” अछि।
३०४. (D) ओबीसी आइडीईएनटीआइटीवाई — टिप्पणीक पहिल संकेत “ओबीसी आइडीईएनटीआइटीवाई” अछि।
३०५. (A) ओबीसी आइडीईएनटीआइटीवाई — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “ओबीसी आइडीईएनटीआइटीवाई” रूपमे देखाइत अछि।
३०६. (B) लेखक अमरेन्द्र यादव, विधा पद्य, उप-विधा कविता — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।
३०७. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।
३०८. (D) ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।
३०९. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।
३१०. (B) खण्ड 4262, सूचकांक पंक्ति 2953मे अमरेन्द्र यादवक “टमटमियाँ घोडा (पृ. ६२६-६२६)” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “ओबीसी आइडीईएनटीआइटीवाई” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 33क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।
३११. (A) जीवन एकटा दुरुह कविता, चिरिचिरी भेल मोन, वेदनाक तरङ्ग, असमर्पित उन्माद, किछु हाइकू (पृ. ६२७-६३७) — सूचकांक पंक्ति 2954मे निमिष झाक प्रविष्टि “जीवन एकटा दुरुह कविता, चिरिचिरी भेल मोन, वेदनाक तरङ्ग, असमर्पित उन्माद, किछु हाइकू (पृ. ६२७-६३७)” रूपमे देल अछि।
३१२. (B) पद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।
३१३. (C) कविता/हाइकू — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “कविता/हाइकू” अछि।
३१४. (D) वीर+रौद्र रस — टिप्पणीक पहिल संकेत “वीर+रौद्र रस” अछि।
३१५. (A) वीर+रौद्र रस — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “वीर+रौद्र रस” रूपमे देखाइत अछि।
३१६. (B) लेखक निमिष झा, विधा पद्य, उप-विधा कविता/हाइकू — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।
३१७. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।
३१८. (D) ई पाठ कविता/हाइकूक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।
३१९. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।
३२०. (B) खण्ड 4263, सूचकांक पंक्ति 2954मे निमिष झाक “जीवन एकटा दुरुह कविता, चिरिचिरी भेल मोन, वेदनाक तरङ्ग, असमर्पित उन्माद, किछु हाइकू (पृ. ६२७-६३७)” प्रविष्टि पद्य, कविता/हाइकू आ “वीर+रौद्र रस” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 33क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।
३२१. (A) अपन अस्तीत्वक असली मोल, हमर माय (पृ. ६३८- ६४०) — सूचकांक पंक्ति 2955मे भालचन्द्र झाक प्रविष्टि “अपन अस्तीत्वक असली मोल, हमर माय (पृ. ६३८- ६४०)” रूपमे देल अछि।
३२२. (B) पद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।
३२३. (C) कविता — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “कविता” अछि।
३२४. (D) रंगमञ्च परम्परा — टिप्पणीक पहिल संकेत “रंगमञ्च परम्परा” अछि।
३२५. (A) रंगमञ्च परम्परा — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “रंगमञ्च परम्परा” रूपमे देखाइत अछि।
३२६. (B) लेखक भालचन्द्र झा, विधा पद्य, उप-विधा कविता — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।
३२७. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।
३२८. (D) ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।
३२९. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

३३०. (B) खण्ड 4264, सूचकांक पंक्ति 2955मे भालचन्द्र झाक “अपन अस्तीत्वक असली मोल, हमर माय (पृ. ६३८- ६४०)” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “रंगमञ्च परम्परा” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 33क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकें प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

३३१. (A) पञ्चाताप (पृ. ६४१-६४१) — सूचकांक पंक्ति 2956मे अंकुर काशीनाथ झाक प्रविष्टि “पञ्चाताप (पृ. ६४१-६४१)” रूपमे देल अछि।

३३२. (B) पद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकें “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

३३३. (C) कविता — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “कविता” अछि।

३३४. (D) नव पीढ़ी — टिप्पणीक पहिल संकेत “नव पीढ़ी” अछि।

३३५. (A) नव पीढ़ी — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “नव पीढ़ी” रूपमे देखाइत अछि।

३३६. (B) लेखक अंकुर काशीनाथ झा, विधा पद्य, उप-विधा कविता — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकें एक साथ रखैत अछि।

३३७. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककें केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

३३८. (D) ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकें स्पष्ट करैत अछि।

३३९. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

३४०. (B) खण्ड 4265, सूचकांक पंक्ति 2956मे अंकुर काशीनाथ झाक “पञ्चाताप (पृ. ६४१-६४१)” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “नव पीढ़ी” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 33क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकें प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

३४१. (A) बाल-बुदरकक लेल कविता (पृ. ६४२-६४२) — सूचकांक पंक्ति 2957मे प्रकाश झाक प्रविष्टि “बाल-बुदरकक लेल कविता (पृ. ६४२-६४२)” रूपमे देल अछि।

३४२. (B) पद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकें “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

३४३. (C) बाल-कविता — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “बाल-कविता” अछि।

३४४. (D) सामाजिक रिपोर्टिंग — टिप्पणीक पहिल संकेत “सामाजिक रिपोर्टिंग” अछि।

३४५. (A) सामाजिक रिपोर्टिंग — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “सामाजिक रिपोर्टिंग” रूपमे देखाइत अछि।

३४६. (B) लेखक प्रकाश झा, विधा पद्य, उप-विधा बाल-कविता — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकें एक साथ रखैत अछि।

३४७. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककें केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

३४८. (D) ई पाठ बाल-कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकें स्पष्ट करैत अछि।

३४९. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

३५०. (B) खण्ड 4266, सूचकांक पंक्ति 2957मे प्रकाश झाक “बाल-बुदरकक लेल कविता (पृ. ६४२-६४२)” प्रविष्टि पद्य, बाल-कविता आ “सामाजिक रिपोर्टिंग” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 33क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकें प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

३५१. (A) मनक तरंग, केना होएत मिथिलाक जीणोद्धार, शब्दक वाण चलेबए- नहि सहबए आब अत्याचार, पिया हमर परदेशिया, हम गामेमे रहबइ (पृ. ६४३-६४८) — सूचकांक पंक्ति 2958मे सुबोध ठाकूरक प्रविष्टि “मनक तरंग, केना होएत मिथिलाक जीणोद्धार, शब्दक वाण चलेबए- नहि सहबए आब अत्याचार, पिया हमर परदेशिया, हम गामेमे रहबइ (पृ. ६४३-६४८)” रूपमे देल अछि।

३५२. (B) पद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकें “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

३५३. (C) कविता — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “कविता” अछि।

३५४. (D) मनक तरंग, केना होएत मिथिलाक जीणोद्धार, शब्दक वाण चलेबए- नहि सहबए आब अत्याचार, पिया हमर परदेशिया, हम गामेमे रहबइ (पृ. ६४३-६४८) — टिप्पणीक पहिल संकेत “मनक तरंग, केना होएत मिथिलाक जीणोद्धार, शब्दक वाण चलेबए- नहि सहबए आब अत्याचार, पिया हमर परदेशिया, हम गामेमे रहबइ (पृ. ६४३-६४८)” अछि।

३५५. (A) मनक तरंग, केना होएत मिथिलाक जीणोद्धार, शब्दक वाण चलेबए- नहि सहबए आब अत्याचार, पिया हमर परदेशिया, हम गामेमे रहबइ (पृ. ६४३-६४८) — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “मनक तरंग, केना होएत मिथिलाक जीणोद्धार, शब्दक वाण चलेबए- नहि सहबए आब अत्याचार,

पिया हमर परदेशिया, हम गामेमे रहबइ (पृ. ६४३-६४८)” रूपमे देखाइत अछि।

३५६. (B) लेखक सुबोध ठाकुर, विधा पद्य, उप-विधा कविता — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

३५७. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

३५८. (D) ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

३५९. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

३६०. (B) खण्ड 4267, सूचकांक पंक्ति 2958मे सुबोध ठाकुरक “मनक तरंग, केना होएत मिथिलाक जीणोद्धार, शब्दक वाण चलेबए- नहि सहबए आब अत्याचार, पिया हमर परदेशिया, हम गामेमे रहबइ (पृ. ६४३-६४८)” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “मनक तरंग, केना होएत मिथिलाक जीणोद्धार, शब्दक वाण चलेबए- नहि सहबए आब अत्याचार, पिया हमर परदेशिया, हम गामेमे रहबइ (पृ. ६४३-६४८)” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 33क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

३६१. (A) आयल फेरो समय लगनक, जंगल दिस !, मैथिल के? (पृ. ६४९-६५२) — सूचकांक पंक्ति 2959मे रुपेश कुमार झा 'त्योँथ'क प्रविष्टि “आयल फेरो समय लगनक, जंगल दिस !, मैथिल के? (पृ. ६४९-६५२)” रूपमे देल अछि।

३६२. (B) पद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

३६३. (C) कविता — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “कविता” अछि।

३६४. (D) आयल फेरो समय लगनक, जंगल दिस !, मैथिल के? (पृ. ६४९-६५२) — टिप्पणीक पहिल संकेत “आयल फेरो समय लगनक, जंगल दिस !, मैथिल के? (पृ. ६४९-६५२)” अछि।

३६५. (A) आयल फेरो समय लगनक, जंगल दिस !, मैथिल के? (पृ. ६४९-६५२) — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “आयल फेरो समय लगनक, जंगल दिस !, मैथिल के? (पृ. ६४९-६५२)” रूपमे देखाइत अछि।

३६६. (B) लेखक रुपेश कुमार झा 'त्योँथ', विधा पद्य, उप-विधा कविता — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

३६७. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

३६८. (D) ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

३६९. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

३७०. (B) खण्ड 4268, सूचकांक पंक्ति 2959मे रुपेश कुमार झा 'त्योँथ'क “आयल फेरो समय लगनक, जंगल दिस !, मैथिल के? (पृ. ६४९-६५२)” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “आयल फेरो समय लगनक, जंगल दिस !, मैथिल के? (पृ. ६४९-६५२)” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 33क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

३७१. (A) माय (पृ. ६५४-६५५) — सूचकांक पंक्ति 2960मे मनीष झा “बौआभाई”क प्रविष्टि “माय (पृ. ६५४-६५५)” रूपमे देल अछि।

३७२. (B) पद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

३७३. (C) कविता — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “कविता” अछि।

३७४. (D) माय (पृ. ६५४-६५५) — टिप्पणीक पहिल संकेत “माय (पृ. ६५४-६५५)” अछि।

३७५. (A) माय (पृ. ६५४-६५५) — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “माय (पृ. ६५४-६५५)” रूपमे देखाइत अछि।

३७६. (B) लेखक मनीष झा “बौआभाई”, विधा पद्य, उप-विधा कविता — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

३७७. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

३७८. (D) ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

३७९. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

३८०. (B) खण्ड 4269, सूचकांक पंक्ति 2960मे मनीष झा “बौआभाई”क “माय (पृ. ६५४-६५५)” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “माय (पृ. ६५४-६५५)” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 33क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

- ३८१. (A) मध्य वर्गक सपना, भ्रमित शब्द, नाव आ जीवन, मौनक शब्द, चुनाव, शब्द, हमर स्वतंत्रता, ई जीवन, अपन भाषा (पृ. ६५६-६७०) —** सूचकांक पंक्ति 2961मे सतीश चन्द्र झाक प्रविष्टि “मध्य वर्गक सपना, भ्रमित शब्द, नाव आ जीवन, मौनक शब्द, चुनाव, शब्द, हमर स्वतंत्रता, ई जीवन, अपन भाषा (पृ. ६५६-६७०)” रूपमे देल अछि।
- ३८२. (B) पद्य —** विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।
- ३८३. (C) कविता —** उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “कविता” अछि।
- ३८४. (D) जीवन-कविता —** टिप्पणीक पहिल संकेत “जीवन-कविता” अछि।
- ३८५. (A) जीवन-कविता —** समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “जीवन-कविता” रूपमे देखाइत अछि।
- ३८६. (B) लेखक सतीश चन्द्र झा, विधा पद्य, उप-विधा कविता —** सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।
- ३८७. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। —** टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।
- ३८८. (D) ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। —** विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।
- ३८९. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। —** प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।
- ३९०. (B) खण्ड 4270, सूचकांक पंक्ति 2961मे सतीश चन्द्र झाक “मध्य वर्गक सपना, भ्रमित शब्द, नाव आ जीवन, मौनक शब्द, चुनाव, शब्द, हमर स्वतंत्रता, ई जीवन, अपन भाषा (पृ. ६५६-६७०)” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “जीवन-कविता” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 33क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि। —** ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।
- ३९१. (A) सिंगरहार (पृ. ६७१-६७२) —** सूचकांक पंक्ति 2962मे विवेकानंद झाक प्रविष्टि “सिंगरहार (पृ. ६७१-६७२)” रूपमे देल अछि।
- ३९२. (B) पद्य —** विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।
- ३९३. (C) कविता —** उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “कविता” अछि।
- ३९४. (D) सिंगरहार (पृ. ६७१-६७२) —** टिप्पणीक पहिल संकेत “सिंगरहार (पृ. ६७१-६७२)” अछि।
- ३९५. (A) सिंगरहार (पृ. ६७१-६७२) —** समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “सिंगरहार (पृ. ६७१-६७२)” रूपमे देखाइत अछि।
- ३९६. (B) लेखक विवेकानंद झा, विधा पद्य, उप-विधा कविता —** सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।
- ३९७. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। —** टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।
- ३९८. (D) ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। —** विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।
- ३९९. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। —** प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।
- ४००. (B) खण्ड 4271, सूचकांक पंक्ति 2962मे विवेकानंद झाक “सिंगरहार (पृ. ६७१-६७२)” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “सिंगरहार (पृ. ६७१-६७२)” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 33क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि। —** ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।
- ४०१. (A) नव-अंशु (अपन गप, गजल १-९०, हजल-१-६, रुबाइ- १-१६) (पृ. १७३-७७६) —** सूचकांक पंक्ति 2963मे अमित मिश्रक प्रविष्टि “नव-अंशु (अपन गप, गजल १-९०, हजल-१-६, रुबाइ- १-१६) (पृ. १७३-७७६)” रूपमे देल अछि।
- ४०२. (B) पद्य —** विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।
- ४०३. (C) गजल/कविता/रुबाइ —** उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “गजल/कविता/रुबाइ” अछि।
- ४०४. (D) नव-अंशु (अपन गप, गजल १-९०, हजल-१-६, रुबाइ- १-१६) (पृ. १७३-७७६) —** टिप्पणीक पहिल संकेत “नव-अंशु (अपन गप, गजल १-९०, हजल-१-६, रुबाइ- १-१६) (पृ. १७३-७७६)” अछि।
- ४०५. (A) नव-अंशु (अपन गप, गजल १-९०, हजल-१-६, रुबाइ- १-१६) (पृ. १७३-७७६) —** समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “नव-अंशु (अपन गप, गजल १-९०, हजल-१-६, रुबाइ- १-१६) (पृ. १७३-७७६)” रूपमे देखाइत अछि।
- ४०६. (B) लेखक अमित मिश्र, विधा पद्य, उप-विधा गजल/कविता/रुबाइ —** सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।
- ४०७. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। —** टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।
- ४०८. (D) ई पाठ गजल/कविता/रुबाइक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। —** विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

४०९. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।
४१०. (B) खण्ड 4272, सूचकांक पंक्ति 2963मे अमित मिश्रक “नव-अंशु (अपन गप, गजल १-१०, हजल-१-६, रुबाइ- १-१६) (पृ. १७३-७७६)” प्रविष्टि पद्य, गजल/कविता/रुबाइ आ “नव-अंशु (अपन गप, गजल १-१०, हजल-१-६, रुबाइ- १-१६) (पृ. १७३-७७६)” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 33क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।
४११. (A) मोनक बात [अपन गप, गजल (१-६६), हजल (१-२), बाल गजल (१-१५), रुबाइ (१-३३), कता (१)] (पृ. ७७७- ८३९) — सूचकांक पंक्ति 2964मे चंदन कुमार झाक प्रविष्टि “मोनक बात [अपन गप, गजल (१-६६), हजल (१-२), बाल गजल (१-१५), रुबाइ (१-३३), कता (१)] (पृ. ७७७- ८३९)” रूपमे देल अछि।
४१२. (B) पद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।
४१३. (C) गजल/रुबाइ/कता — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “गजल/रुबाइ/कता” अछि।
४१४. (D) मोनक बात [अपन गप, गजल (१-६६), हजल (१-२), बाल गजल (१-१५), रुबाइ (१-३३), कता (१)] (पृ. ७७७- ८३९) — टिप्पणीक पहिल संकेत “मोनक बात [अपन गप, गजल (१-६६), हजल (१-२), बाल गजल (१-१५), रुबाइ (१-३३), कता (१)] (पृ. ७७७- ८३९)” अछि।
४१५. (A) मोनक बात [अपन गप, गजल (१-६६), हजल (१-२), बाल गजल (१-१५), रुबाइ (१-३३), कता (१)] (पृ. ७७७- ८३९) — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “मोनक बात [अपन गप, गजल (१-६६), हजल (१-२), बाल गजल (१-१५), रुबाइ (१-३३), कता (१)] (पृ. ७७७- ८३९)” रूपमे देखाइत अछि।
४१६. (B) लेखक चंदन कुमार झा, विधा पद्य, उप-विधा गजल/रुबाइ/कता — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।
४१७. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।
४१८. (D) ई पाठ गजल/रुबाइ/कताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।
४१९. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।
४२०. (B) खण्ड 4273, सूचकांक पंक्ति 2964मे चंदन कुमार झाक “मोनक बात [अपन गप, गजल (१-६६), हजल (१-२), बाल गजल (१-१५), रुबाइ (१-३३), कता (१)] (पृ. ७७७- ८३९)” प्रविष्टि पद्य, गजल/रुबाइ/कता आ “मोनक बात [अपन गप, गजल (१-६६), हजल (१-२), बाल गजल (१-१५), रुबाइ (१-३३), कता (१)] (पृ. ७७७- ८३९)” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 33क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।
४२१. (A) हम पुछैत छी (अपन गप, ५० टा कविता) (प. ४००- ४९६) — सूचकांक पंक्ति 2965मे विनीत उत्पलक प्रविष्टि “हम पुछैत छी (अपन गप, ५० टा कविता) (प. ४००- ४९६)” रूपमे देल अछि।
४२२. (B) पद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।
४२३. (C) कविता — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “कविता” अछि।
४२४. (D) जेओयूआरएनएएलआइएसटीआईसी डीईपीटीएच — टिप्पणीक पहिल संकेत “जेओयूआरएनएएलआइएसटीआईसी डीईपीटीएच” अछि।
४२५. (A) जेओयूआरएनएएलआइएसटीआईसी डीईपीटीएच — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “जेओयूआरएनएएलआइएसटीआईसी डीईपीटीएच” रूपमे देखाइत अछि।
४२६. (B) लेखक विनीत उत्पल, विधा पद्य, उप-विधा कविता — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।
४२७. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।
४२८. (D) ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।
४२९. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।
४३०. (B) खण्ड 4274, सूचकांक पंक्ति 2965मे विनीत उत्पलक “हम पुछैत छी (अपन गप, ५० टा कविता) (प. ४००- ४९६)” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “जेओयूआरएनएएलआइएसटीआईसी डीईपीटीएच” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 33क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

४३१. (A) कियो बूझि नै सकल हमरा (अपन गप, गजल १- ८७, रुबाइ- १-८, कता- १-२) (पृ. ८९७-९८८) — सूचकांक पंक्ति 2966मे ओम प्रकाश झाक प्रविष्टि “कियो बूझि नै सकल हमरा (अपन गप, गजल १- ८७, रुबाइ- १-८, कता- १-२) (पृ. ८९७-९८८)” रूपमे देल अछि।
४३२. (B) पद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।
४३३. (C) गजल/रुबाइ/कता — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “गजल/रुबाइ/कता” अछि।
४३४. (D) भावात्मक — टिप्पणीक पहिल संकेत “भावात्मक” अछि।
४३५. (A) भावात्मक — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “भावात्मक” रूपमे देखाइत अछि।
४३६. (B) लेखक ओम प्रकाश झा, विधा पद्य, उप-विधा गजल/रुबाइ/कता — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।
४३७. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।
४३८. (D) ई पाठ गजल/रुबाइ/कताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।
४३९. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।
४४०. (B) खण्ड 4275, सूचकांक पंक्ति 2966मे ओम प्रकाश झाक “कियो बूझि नै सकल हमरा (अपन गप, गजल १- ८७, रुबाइ- १-८, कता- १-२) (पृ. ८९७-९८८)” प्रविष्टि पद्य, गजल/रुबाइ/कता आ “भावात्मक” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 33क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।
४४१. (A) निश्चुकी (अपन गप, किछु कविता, हाइकू-टनका, आ दूटा गजल) (पृ. ९८९-१०८२) — सूचकांक पंक्ति 2967मे उमेश मंडलक प्रविष्टि “निश्चुकी (अपन गप, किछु कविता, हाइकू-टनका, आ दूटा गजल) (पृ. ९८९-१०८२)” रूपमे देल अछि।
४४२. (B) पद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।
४४३. (C) कविता/हाइकू/गजल — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “कविता/हाइकू/गजल” अछि।
४४४. (D) निश्चुकी (अपन गप, किछु कविता, हाइकू-टनका, आ दूटा गजल) (पृ. ९८९-१०८२) — टिप्पणीक पहिल संकेत “निश्चुकी (अपन गप, किछु कविता, हाइकू-टनका, आ दूटा गजल) (पृ. ९८९-१०८२)” अछि।
४४५. (A) निश्चुकी (अपन गप, किछु कविता, हाइकू-टनका, आ दूटा गजल) (पृ. ९८९-१०८२) — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “निश्चुकी (अपन गप, किछु कविता, हाइकू-टनका, आ दूटा गजल) (पृ. ९८९-१०८२)” रूपमे देखाइत अछि।
४४६. (B) लेखक उमेश मंडल, विधा पद्य, उप-विधा कविता/हाइकू/गजल — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।
४४७. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।
४४८. (D) ई पाठ कविता/हाइकू/गजलक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।
४४९. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।
४५०. (B) खण्ड 4276, सूचकांक पंक्ति 2967मे उमेश मंडलक “निश्चुकी (अपन गप, किछु कविता, हाइकू-टनका, आ दूटा गजल) (पृ. ९८९-१०८२)” प्रविष्टि पद्य, कविता/हाइकू/गजल आ “निश्चुकी (अपन गप, किछु कविता, हाइकू-टनका, आ दूटा गजल) (पृ. ९८९-१०८२)” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 33क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।
४५१. (A) वर्णित रस (आमुख, कागज, समाज, रावण-कंश, भरल घैल, कलजुग, उमर-अवस्था-मन, पियासल, हत्या, फाटल भविष्य, गेलहे घर छी, पलटन लाल, बादि, डेग डेगपर खतरा, कपुत, आशा, गामक चौअनियाँ, नेताजी नमस्कार, सतहिया, अज्ञानी, दलिदर, पोसिया, मैना, माछक तीमन, कवाडी, बरखाक मौसम, मिथिलाक नारी, रगडा, नेता, मनक बिसवास, केहेन विधना, अपनेकेँ की कही, फूसि-फट्टका, हकिकत, पावन भूमि, एना नै कर, भुतहा मोड, हमरो लेने चलू, अथाह, गारल मुर्ला, हाल-चाल, पथ ई केहेन, गृहस्थ सबहक हाल, मिथिला महान, हेराएल, दुभर, विडम्बना, दियादी बाँट, पुर्णिमा, रिश्ता, अज्ञानी, कनी देखू, मास्टरक बहाली, फागुनमे, श्यामल मोहे, जीतक झंडा, युवा, हम युवा, पथिक, हमहूँ कने छी, एना किएक, जितिया, डगर, रमल छी, संत, बन्हन, संघर्ष जारी रखब, भरदुतिया, गवहा संक्राति, किमती भोट, असली-नकली, कोसी, मच्छर रानी, हरिजन, हम छी मैथिली, बौकी, चौके-चौक, टेंस, पेटक खातिर, जगदीश बाबू, उजरल घर, जीवनक नैया, डर, नटीन, बताह, ज्ञानक नव ज्योति, केहेन चालि, बसन्त, योद्धा) (पृ. १०६३-११६१) — सूचकांक पंक्ति 2968मे उमेश पासवानक प्रविष्टि “वर्णित रस (आमुख, कागज, समाज, रावण-कंश, भरल घैल, कलजुग, उमर-अवस्था-मन, पियासल, हत्या, फाटल भविष्य, गेलहे घर छी, पलटन लाल, बादि, डेग डेगपर खतरा, कपुत, आशा, गामक चौअनियाँ, नेताजी नमस्कार, सतहिया, अज्ञानी, दलिदर, पोसिया, मैना, माछक तीमन, कवाडी, बरखाक मौसम, मिथिलाक नारी, रगडा, नेता, मनक बिसवास, केहेन विधना, अपनेकेँ की कही, फूसि-फट्टका, हकिकत, पावन भूमि, एना नै कर, भुतहा मोड, हमरो लेने चलू, अथाह, गारल मुर्ला, हाल-चाल, पथ ई केहेन, गृहस्थ सबहक हाल, मिथिला महान, हेराएल, दुभर,

विडम्बना, दियादी बाँट, पुर्णिमा, रिश्ता, अज्ञानी, कनी देखू, मास्टरक बहाली, फागुनमे, श्यामल मोहे, जीतक झंडा, युवा, हम युवा, पथिक, हमहूँ कने छी, एना किएक, जितिया, डगर, रमल छी, संत, बन्हन, संघर्ष जारी रखब, भरदुतिया, गवहा संक्राति, किमती भोट, असली-नकली, कोसी, मच्छर रानी, हरिजन, हम छी मैथिली, बौकी, चौके-चौक, टेंस, पेटक खातिर, जगदीश बाबू, उजरल घर, जीवनक नैया, डर, नटीन, बताह, ज्ञानक नव ज्योति, केहेन चालि, बसन्त, योद्धा) (पृ. १०६३-११६१) रूपमे देल अछि।

४५२. (B) पद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकें “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

४५३. (C) कविता — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “कविता” अछि।

४५४. (D) वर्णित रस (आमुख, कागज, समाज, रावण-कंश, भरल घैल, कलजुग, उमर-अवस्था-मन, पियासल, हत्या, फाटल भविष्य, गेलहे घर छी, पलटन लाल, बादि, डेग डेगपर खतरा, कपुत, आशा, गामक चौअनियाँ, नेताजी नमस्कार, सतहिया, अज्ञानी, दलिदर, पोसिया, मैना, माछक तीमन, कवाडी, बरखाक मौसम, मिथिलाक नारी, रगडा, नेता, मनक बिसवास, केहेन विधना, अपनेकें की कही, फूसि-फट्टका, हकिकत, पावन भूमि, एना नै कर, भुतहा मोड, हमरो लेने चलू, अथाह, गारल मुर्ला, हाल-चाल, पथ ई केहेन, गृहस्थ सबहक हाल, मिथिला महान, हेराएल, दुभर, विडम्बना, दियादी बाँट, पुर्णिमा, रिश्ता, अज्ञानी, कनी देखू, मास्टरक बहाली, फागुनमे, श्यामल मोहे, जीतक झंडा, युवा, हम युवा, पथिक, हमहूँ कने छी, एना किएक, जितिया, डगर, रमल छी, संत, बन्हन, संघर्ष जारी रखब, भरदुतिया, गवहा संक्राति, किमती भोट, असली-नकली, कोसी, मच्छर रानी, हरिजन, हम छी मैथिली, बौकी, चौके-चौक, टेंस, पेटक खातिर, जगदीश बाबू, उजरल घर, जीवनक नैया, डर, नटीन, बताह, ज्ञानक नव ज्योति, केहेन चालि, बसन्त, योद्धा) (पृ. १०६३-११६१) — टिप्पणीक पहिल संकेत “वर्णित रस (आमुख, कागज, समाज, रावण-कंश, भरल घैल, कलजुग, उमर-अवस्था-मन, पियासल, हत्या, फाटल भविष्य, गेलहे घर छी, पलटन लाल, बादि, डेग डेगपर खतरा, कपुत, आशा, गामक चौअनियाँ, नेताजी नमस्कार, सतहिया, अज्ञानी, दलिदर, पोसिया, मैना, माछक तीमन, कवाडी, बरखाक मौसम, मिथिलाक नारी, रगडा, नेता, मनक बिसवास, केहेन विधना, अपनेकें की कही, फूसि-फट्टका, हकिकत, पावन भूमि, एना नै कर, भुतहा मोड, हमरो लेने चलू, अथाह, गारल मुर्ला, हाल-चाल, पथ ई केहेन, गृहस्थ सबहक हाल, मिथिला महान, हेराएल, दुभर, विडम्बना, दियादी बाँट, पुर्णिमा, रिश्ता, अज्ञानी, कनी देखू, मास्टरक बहाली, फागुनमे, श्यामल मोहे, जीतक झंडा, युवा, हम युवा, पथिक, हमहूँ कने छी, एना किएक, जितिया, डगर, रमल छी, संत, बन्हन, संघर्ष जारी रखब, भरदुतिया, गवहा संक्राति, किमती भोट, असली-नकली, कोसी, मच्छर रानी, हरिजन, हम छी मैथिली, बौकी, चौके-चौक, टेंस, पेटक खातिर, जगदीश बाबू, उजरल घर, जीवनक नैया, डर, नटीन, बताह, ज्ञानक नव ज्योति, केहेन चालि, बसन्त, योद्धा) (पृ. १०६३-११६१)” अछि।

४५५. (A) वर्णित रस (आमुख, कागज, समाज, रावण-कंश, भरल घैल, कलजुग, उमर-अवस्था-मन, पियासल, हत्या, फाटल भविष्य, गेलहे घर छी, पलटन लाल, बादि, डेग डेगपर खतरा, कपुत, आशा, गामक चौअनियाँ, नेताजी नमस्कार, सतहिया, अज्ञानी, दलिदर, पोसिया, मैना, माछक तीमन, कवाडी, बरखाक मौसम, मिथिलाक नारी, रगडा, नेता, मनक बिसवास, केहेन विधना, अपनेकें की कही, फूसि-फट्टका, हकिकत, पावन भूमि, एना नै कर, भुतहा मोड, हमरो लेने चलू, अथाह, गारल मुर्ला, हाल-चाल, पथ ई केहेन, गृहस्थ सबहक हाल, मिथिला महान, हेराएल, दुभर, विडम्बना, दियादी बाँट, पुर्णिमा, रिश्ता, अज्ञानी, कनी देखू, मास्टरक बहाली, फागुनमे, श्यामल मोहे, जीतक झंडा, युवा, हम युवा, पथिक, हमहूँ कने छी, एना किएक, जितिया, डगर, रमल छी, संत, बन्हन, संघर्ष जारी रखब, भरदुतिया, गवहा संक्राति, किमती भोट, असली-नकली, कोसी, मच्छर रानी, हरिजन, हम छी मैथिली, बौकी, चौके-चौक, टेंस, पेटक खातिर, जगदीश बाबू, उजरल घर, जीवनक नैया, डर, नटीन, बताह, ज्ञानक नव ज्योति, केहेन चालि, बसन्त, योद्धा) (पृ. १०६३-११६१) — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “वर्णित रस (आमुख, कागज, समाज, रावण-कंश, भरल घैल, कलजुग, उमर-अवस्था-मन, पियासल, हत्या, फाटल भविष्य, गेलहे घर छी, पलटन लाल, बादि, डेग डेगपर खतरा, कपुत, आशा, गामक चौअनियाँ, नेताजी नमस्कार, सतहिया, अज्ञानी, दलिदर, पोसिया, मैना, माछक तीमन, कवाडी, बरखाक मौसम, मिथिलाक नारी, रगडा, नेता, मनक बिसवास, केहेन विधना, अपनेकें की कही, फूसि-फट्टका, हकिकत, पावन भूमि, एना नै कर, भुतहा मोड, हमरो लेने चलू, अथाह, गारल मुर्ला, हाल-चाल, पथ ई केहेन, गृहस्थ सबहक हाल, मिथिला महान, हेराएल, दुभर, विडम्बना, दियादी बाँट, पुर्णिमा, रिश्ता, अज्ञानी, कनी देखू, मास्टरक बहाली, फागुनमे, श्यामल मोहे, जीतक झंडा, युवा, हम युवा, पथिक, हमहूँ कने छी, एना किएक, जितिया, डगर, रमल छी, संत, बन्हन, संघर्ष जारी रखब, भरदुतिया, गवहा संक्राति, किमती भोट, असली-नकली, कोसी, मच्छर रानी, हरिजन, हम छी मैथिली, बौकी, चौके-चौक, टेंस, पेटक खातिर, जगदीश बाबू, उजरल घर, जीवनक नैया, डर, नटीन, बताह, ज्ञानक नव ज्योति, केहेन चालि, बसन्त, योद्धा) (पृ. १०६३-११६१)” रूपमे देखाइत अछि।

४५६. (B) लेखक उमेश पासवान, विधा पद्य, उप-विधा कविता — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकें एक साथ रखैत अछि।

४५७. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककें केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

४५८. (D) ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकें स्पष्ट करैत अछि।

४५९. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

४६०. (B) खण्ड 4277, सूचकांक पंक्ति 2968मे उमेश पासवानक “वर्णित रस (आमुख, कागज, समाज, रावण-कंश, भरल घैल, कलजुग, उमर-अवस्था-मन, पियासल, हत्या, फाटल भविष्य, गेलहे घर छी, पलटन लाल, बादि, डेग डेगपर खतरा, कपुत, आशा, गामक चौअनियाँ, नेताजी नमस्कार, सतहिया, अज्ञानी, दलिदर, पोसिया, मैना, माछक तीमन, कवाडी, बरखाक मौसम, मिथिलाक नारी, रगडा, नेता, मनक बिसवास, केहेन विधना, अपनेकें की कही, फूसि-फट्टका, हकिकत, पावन भूमि, एना नै कर, भुतहा मोड, हमरो लेने चलू, अथाह, गारल मुर्ला, हाल-चाल, पथ ई केहेन, गृहस्थ सबहक

हाल, मिथिला महान, हेराएल, दुभर, विडम्बना, दियादी बाँट, पुर्णिमा, रिश्ता, अज्ञानी, कनी देखू, मास्टरक बहाली, फागुनमे, श्यामल मोहे, जीतक झंडा, युवा, हम युवा, पथिक, हमहूँ कने छी, एना किएक, जितिया, डगर, रमल छी, संत, बन्हन, संघर्ष जारी रखब, भरदुतिया, गवहा संक्राति, किमती भोट, असली-नकली, कोसी, मच्छर रानी, हरिजन, हम छी मैथिली, बौकी, चौके-चौक, टेंस, पेटक खातिर, जगदीश बाबू, उजरल घर, जीवनक नैया, डर, नटीन, बताह, ज्ञानक नव ज्योति, केहेन चालि, बसन्त, योद्धा) (पृ. १०६३-११६१)” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “वर्णित रस (आमुख, कागज, समाज, रावण-कंश, भरल घैल, कलजुग, उमर-अवस्था-मन, पियासल, हत्या, फाटल भविष्य, गेलहे घर छी, पलटन लाल, बादि, डेग डेगपर खतरा, कपुत, आशा, गामक चौअनियाँ, नेताजी नमस्कार, सतहिया, अज्ञानी, दलिदर, पोसिया, मैना, माछक तीमन, कवाडी, बरखाक मौसम, मिथिलाक नारी, रगडा, नेता, मनक बिसवास, केहेन विधना, अपनेकें की कही, फूसि-फट्टका, हकिकत, पावन भूमि, एना नै कर, भुतहा मोड, हमरो लेने चलू, अथाह, गारल मुर्ला, हाल-चाल, पथ ई केहेन, गृहस्थ सबहक हाल, मिथिला महान, हेराएल, दुभर, विडम्बना, दियादी बाँट, पुर्णिमा, रिश्ता, अज्ञानी, कनी देखू, मास्टरक बहाली, फागुनमे, श्यामल मोहे, जीतक झंडा, युवा, हम युवा, पथिक, हमहूँ कने छी, एना किएक, जितिया, डगर, रमल छी, संत, बन्हन, संघर्ष जारी रखब, भरदुतिया, गवहा संक्राति, किमती भोट, असली-नकली, कोसी, मच्छर रानी, हरिजन, हम छी मैथिली, बौकी, चौके-चौक, टेंस, पेटक खातिर, जगदीश बाबू, उजरल घर, जीवनक नैया, डर, नटीन, बताह, ज्ञानक नव ज्योति, केहेन चालि, बसन्त, योद्धा) (पृ. १०६३-११६१)” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 33क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकें प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

४६१. (A) क्षणप्रभा (अपन गप, किष्ठ पद्य, दूटा गजल, तीन टा हाइकू) (पृ. ११६२-१३२५) — सूचकांक पंक्ति 2969मे शिव कुमार झा “टिल्लू”क प्रविष्टि “क्षणप्रभा (अपन गप, किष्ठ पद्य, दूटा गजल, तीन टा हाइकू) (पृ. ११६२-१३२५)” रूपमे देल अछि।

४६२. (B) पद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकें “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

४६३. (C) गजल/हाइकू/कविता — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “गजल/हाइकू/कविता” अछि।

४६४. (D) क्षणप्रभा (अपन गप, किष्ठ पद्य, दूटा गजल, तीन टा हाइकू) (पृ. ११६२-१३२५) — टिप्पणीक पहिल संकेत “क्षणप्रभा (अपन गप, किष्ठ पद्य, दूटा गजल, तीन टा हाइकू) (पृ. ११६२-१३२५)” अछि।

४६५. (A) क्षणप्रभा (अपन गप, किष्ठ पद्य, दूटा गजल, तीन टा हाइकू) (पृ. ११६२-१३२५) — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “क्षणप्रभा (अपन गप, किष्ठ पद्य, दूटा गजल, तीन टा हाइकू) (पृ. ११६२-१३२५)” रूपमे देखाइत अछि।

४६६. (B) लेखक शिव कुमार झा “टिल्लू”, विधा पद्य, उप-विधा गजल/हाइकू/कविता — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकें एक साथ रखैत अछि।

४६७. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककें केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

४६८. (D) ई पाठ गजल/हाइकू/कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकें स्पष्ट करैत अछि।

४६९. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

४७०. (B) खण्ड 4278, सूचकांक पंक्ति 2969मे शिव कुमार झा “टिल्लू”क “क्षणप्रभा (अपन गप, किष्ठ पद्य, दूटा गजल, तीन टा हाइकू) (पृ. ११६२-१३२५)” प्रविष्टि पद्य, गजल/हाइकू/कविता आ “क्षणप्रभा (अपन गप, किष्ठ पद्य, दूटा गजल, तीन टा हाइकू) (पृ. ११६२-१३२५)” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 33क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकें प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

४७१. (A) बैशाखमे दलानपर- गद्य-पद्य मिश्रित [आत्मकथा खण्ड (मैथिलीक पहिल दलित आत्मकथा), कविता खण्ड, विहनि कथा खण्ड, लघुकथा खण्ड, विचार बिन्दु खण्ड] (पृ. १३२६-१४२०) — सूचकांक पंक्ति 2970मे सन्दीप कुमार साफी (प्रसिद्ध किरण)क प्रविष्टि “बैशाखमे दलानपर- गद्य-पद्य मिश्रित [आत्मकथा खण्ड (मैथिलीक पहिल दलित आत्मकथा), कविता खण्ड, विहनि कथा खण्ड, लघुकथा खण्ड, विचार बिन्दु खण्ड] (पृ. १३२६-१४२०)” रूपमे देल अछि।

४७२. (B) पद्य/गद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकें “पद्य/गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

४७३. (C) आत्मकथा/कविता/कथा — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “आत्मकथा/कविता/कथा” अछि।

४७४. (D) बैशाखमे दलानपर- गद्य-पद्य मिश्रित [आत्मकथा खण्ड (मैथिलीक पहिल दलित आत्मकथा), कविता खण्ड, विहनि कथा खण्ड, लघुकथा खण्ड, विचार बिन्दु खण्ड] (पृ. १३२६-१४२०) — टिप्पणीक पहिल संकेत “बैशाखमे दलानपर- गद्य-पद्य मिश्रित [आत्मकथा खण्ड (मैथिलीक पहिल दलित आत्मकथा), कविता खण्ड, विहनि कथा खण्ड, लघुकथा खण्ड, विचार बिन्दु खण्ड] (पृ. १३२६-१४२०)” अछि।

४७५. (A) बैशाखमे दलानपर- गद्य-पद्य मिश्रित [आत्मकथा खण्ड (मैथिलीक पहिल दलित आत्मकथा), कविता खण्ड, विहनि कथा खण्ड, लघुकथा खण्ड, विचार बिन्दु खण्ड] (पृ. १३२६-१४२०) — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “बैशाखमे दलानपर- गद्य-पद्य मिश्रित [आत्मकथा खण्ड (मैथिलीक पहिल दलित आत्मकथा), कविता खण्ड, विहनि कथा खण्ड, लघुकथा खण्ड, विचार बिन्दु खण्ड] (पृ. १३२६-१४२०)” रूपमे देखाइत अछि।

४७६. (B) लेखक सन्दीप कुमार साफी (प्रसिद्ध किरण), विधा पद्य/गद्य, उप-विधा आत्मकथा/कविता/कथा — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाक एक साथ रखैत अछि।
४७७. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककें केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।
४७८. (D) ई पाठ आत्मकथा/कविता/कथाक रूपमे पद्य/गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकें स्पष्ट करैत अछि।
४७९. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।
४८०. (B) खण्ड 4279, सूचकांक पंक्ति 2970मे सन्दीप कुमार साफी (प्रसिद्ध किरण)क “बैशाखमे दलानपर- गद्य-पद्य मिश्रित [आत्मकथा खण्ड (मैथिलीक पहिल दलित आत्मकथा), कविता खण्ड, विहनि कथा खण्ड, लघुकथा खण्ड, विचार बिन्दु खण्ड] (पृ. १३२६-१४२०)” प्रविष्टि पद्य/गद्य, आत्मकथा/कविता/कथा आ “बैशाखमे दलानपर- गद्य-पद्य मिश्रित [आत्मकथा खण्ड (मैथिलीक पहिल दलित आत्मकथा), कविता खण्ड, विहनि कथा खण्ड, लघुकथा खण्ड, विचार बिन्दु खण्ड] (पृ. १३२६-१४२०)” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 33क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकें प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।
४८१. (A) माँझ आंगनमे कवतआएल छी (अपन गप, गजल- १-५०, रुबाइ- १-११) (प . १४२१-१५०१) — सूचकांक पंक्ति 2971मे मुन्नाजीक प्रविष्टि “माँझ आंगनमे कवतआएल छी (अपन गप, गजल- १-५०, रुबाइ- १-११) (प . १४२१-१५०१)” रूपमे देल अछि।
४८२. (B) पद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकें “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।
४८३. (C) गजल/रुबाइ — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “गजल/रुबाइ” अछि।
४८४. (D) माँझ आंगनमे कवतआएल छी (अपन गप, गजल- १-५०, रुबाइ- १-११) (प . १४२१-१५०१) — टिप्पणीक पहिल संकेत “माँझ आंगनमे कवतआएल छी (अपन गप, गजल- १-५०, रुबाइ- १-११) (प . १४२१-१५०१)” अछि।
४८५. (A) माँझ आंगनमे कवतआएल छी (अपन गप, गजल- १-५०, रुबाइ- १-११) (प . १४२१-१५०१) — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “माँझ आंगनमे कवतआएल छी (अपन गप, गजल- १-५०, रुबाइ- १-११) (प . १४२१-१५०१)” रूपमे देखाइत अछि।
४८६. (B) लेखक मुन्नाजी, विधा पद्य, उप-विधा गजल/रुबाइ — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकें एक साथ रखैत अछि।
४८७. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककें केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।
४८८. (D) ई पाठ गजल/रुबाइक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकें स्पष्ट करैत अछि।
४८९. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।
४९०. (B) खण्ड 4280, सूचकांक पंक्ति 2971मे मुन्नाजीक “माँझ आंगनमे कवतआएल छी (अपन गप, गजल- १-५०, रुबाइ- १-११) (प . १४२१-१५०१)” प्रविष्टि पद्य, गजल/रुबाइ आ “माँझ आंगनमे कवतआएल छी (अपन गप, गजल- १-५०, रुबाइ- १-११) (प . १४२१-१५०१)” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 33क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकें प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।
४९१. (A) नेपालक नोर मरुभूममे (अपन गप, गजल खण्ड, शेर-शाइरी खण्ड, लघुकिा खण्ड, विहवन किा खण्ड, कविता खण्ड) (प . १५०२-१६४६) — सूचकांक पंक्ति 2972मे विन्देश्वर ठाकुरक प्रविष्टि “नेपालक नोर मरुभूममे (अपन गप, गजल खण्ड, शेर-शाइरी खण्ड, लघुकिा खण्ड, विहवन किा खण्ड, कविता खण्ड) (प . १५०२-१६४६)” रूपमे देल अछि।
४९२. (B) पद्य/गद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकें “पद्य/गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।
४९३. (C) गजल/शायरी/कथा/कविता — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “गजल/शायरी/कथा/कविता” अछि।
४९४. (D) नेपालक नोर मरुभूममे (अपन गप, गजल खण्ड, शेर-शाइरी खण्ड, लघुकिा खण्ड, विहवन किा खण्ड, कविता खण्ड) (प . १५०२-१६४६) — टिप्पणीक पहिल संकेत “नेपालक नोर मरुभूममे (अपन गप, गजल खण्ड, शेर-शाइरी खण्ड, लघुकिा खण्ड, विहवन किा खण्ड, कविता खण्ड) (प . १५०२-१६४६)” अछि।
४९५. (A) नेपालक नोर मरुभूममे (अपन गप, गजल खण्ड, शेर-शाइरी खण्ड, लघुकिा खण्ड, विहवन किा खण्ड, कविता खण्ड) (प . १५०२-१६४६) — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “नेपालक नोर मरुभूममे (अपन गप, गजल खण्ड, शेर-शाइरी खण्ड, लघुकिा खण्ड, विहवन किा खण्ड, कविता खण्ड) (प . १५०२-१६४६)” रूपमे देखाइत अछि।
४९६. (B) लेखक विन्देश्वर ठाकुर, विधा पद्य/गद्य, उप-विधा गजल/शायरी/कथा/कविता — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकें एक साथ रखैत अछि।

४९७. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककें केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

४९८. (D) ई पाठ गजल/शायरी/कथा/कविताक रूपमे पद्य/गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकें स्पष्ट करैत अछि।

४९९. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

५००. (B) खण्ड 4281, सूचकांक पंक्ति 2972मे विन्देश्वर ठाकुरक “नेपालक नोर मरूभूममे (अपन गप, गजल खण्ड, शेर-शाइरी खण्ड, लघुकिा खण्ड, विहवन किा खण्ड, कविता खण्ड) (प . १५०२-१६४६)” प्रविष्टि पद्य/गद्य, गजल/शायरी/कथा/कविता आ “नेपालक नोर मरूभूममे (अपन गप, गजल खण्ड, शेर-शाइरी खण्ड, लघुकिा खण्ड, विहवन किा खण्ड, कविता खण्ड) (प . १५०२-१६४६)” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 33क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकें प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

५०१. (A) मुन्नाजीक गजल, अनवचन्हार आखर (गजलक सृविप्त पवरचय, ७८ टा गजल, ३२ टा रुबाइ आ २ टा कता) (प . १६४७-१८९१) — सूचकांक पंक्ति 2973मे आशीष अनवचन्हारक प्रविष्टि “मुन्नाजीक गजल, अनवचन्हार आखर (गजलक सृविप्त पवरचय, ७८ टा गजल, ३२ टा रुबाइ आ २ टा कता) (प . १६४७-१८९१)” रूपमे देल अछि।

५०२. (B) पद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकें “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

५०३. (C) गजल/रुबाइ/कता — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “गजल/रुबाइ/कता” अछि।

५०४. (D) वीआइडीईएचए सहायक सम्पादक — टिप्पणीक पहिल संकेत “वीआइडीईएचए सहायक सम्पादक” अछि।

५०५. (A) वीआइडीईएचए सहायक सम्पादक — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “वीआइडीईएचए सहायक सम्पादक” रूपमे देखाइत अछि।

५०६. (B) लेखक आशीष अनवचन्हार, विधा पद्य, उप-विधा गजल/रुबाइ/कता — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकें एक साथ रखैत अछि।

५०७. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककें केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

५०८. (D) ई पाठ गजल/रुबाइ/कताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकें स्पष्ट करैत अछि।

५०९. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

५१०. (B) खण्ड 4282, सूचकांक पंक्ति 2973मे आशीष अनवचन्हारक “मुन्नाजीक गजल, अनवचन्हार आखर (गजलक सृविप्त पवरचय, ७८ टा गजल, ३२ टा रुबाइ आ २ टा कता) (प . १६४७-१८९१)” प्रविष्टि पद्य, गजल/रुबाइ/कता आ “वीआइडीईएचए सहायक सम्पादक” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 33क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकें प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

अध्याय ५ : विदेह-सदेह ३४ — विस्तृत अध्ययन

खण्ड २६ : विदेह-सदेह ३४ — बेचन ठाकुरक नाटक आ प्रेमशंकर सिंह

१. विदेह-सदेह ३४ मे बेचन ठाकुर कतेक वर्षसँ मैथिली नाटक-लेखन आ निर्देशनमे जुटल छथि, स्रोत अनुसार?

- (A) पचीस वर्ष
- (B) दस वर्ष
- (C) पचास वर्ष
- (D) कोनो नहि

२. बेचन ठाकुरक नाटक 'अधिकार' कोन विषयपर आधारित अछि?

- (A) सूचनाक अधिकार (आर.टी.आइ.)
- (B) प्रेम
- (C) युद्ध
- (D) कोनो नहि

३. 'अधिकार' नाटकमे 'मंजूर' कोन प्रकारक चरित्र छथि?

- (A) वास्तविक चरित्र, इन्दिरा आवास योजनाक अनियमितता आर.टी.आइ.सँ देखारनिहार
- (B) काल्पनिक खलनायक
- (C) विदेशी पात्र
- (D) कोनो नहि

४. 'अधिकार' नाटकक एक संस्करण किएक डिलीट कएल गेल मुदा बचि गेल?

- (A) कएक टा बैकप विभिन्न संगणकपर उपलब्ध छल
- (B) कोनो कारण नहि
- (C) ओ नाटक कहियो डिलीट नहि भेल
- (D) कोनो नहि

५. डॉ. प्रेमशंकर सिंहक जन्म कहिया भेल?

- (A) १९४२
- (B) १९५२
- (C) १९३२
- (D) कोनो नहि

६. डॉ. प्रेमशंकर सिंहक मौलिक मैथिली कृति 'मैथिली नाटक ओ रंगमंच' कोन प्रकाशनसँ आएल?

- (A) मैथिली अकादमी, पटना (१९७८)
- (B) श्रुति प्रकाशन
- (C) ऑक्सफोर्ड
- (D) कोनो नहि

७. डॉ. प्रेमशंकर सिंहक हिन्दी कृति 'विद्यापति अनुशीलन और मूल्यांकन' कतेक खण्डमे अछि?

- (A) दू खण्ड
- (B) एक खण्ड
- (C) तीन खण्ड
- (D) कोनो नहि

८. डा. ब्रजकिशोर वर्मा 'मणिपद्म' क जीवन-काल की छल?

- (A) १९१८-१९८६
- (B) १९२०-१९९०
- (C) १९१०-१९८०
- (D) कोनो नहि

९. डा. जयकांत मिश्रक अंग्रेजी इतिहास-ग्रन्थक नाम की?

- (A) A History Of Maithili Literature
- (B) Maithili Drama
- (C) कोनो नहि
- (D) Tirhuta Script

खण्ड ६६ : विदेह-सदेह ३४ — मणिपद्मक कथा-यात्रा (इतिहासकारक समीक्षा)

१०. डॉ. ब्रजकिशोर वर्मा 'मणिपद्म'क जीवन-काल की छल?

- (A) १९१८-१९८६
- (B) १९२०-१९९०
- (C) १९१०-१९८०
- (D) कोनो नहि

११. डा. जयकांत मिश्रक जीवन-काल की छल?

- (A) १९२२-२००९
- (B) १९३०-२०१०
- (C) १९१५-१९९५
- (D) कोनो नहि

१२. डा. जयकांत मिश्रक अंग्रेजी ग्रन्थ 'A History Of Maithili Literature' कोन संस्थासँ प्रकाशित भेल?

- (A) साहित्य अकादेमी, नई दिल्ली (१९७६)
- (B) मैथिली अकादमी, पटना
- (C) ऑक्सफोर्ड
- (D) कोनो नहि

१३. राधाकृष्ण चौधरीक जीवन-काल की छल?

- (A) १९२४-१९८४
- (B) १९३०-१९९०
- (C) १९१५-१९७५
- (D) कोनो नहि

१४. राधाकृष्ण चौधरीक अंग्रेजी ग्रन्थक नाम की?

- (A) A Survey Of Maithili Literature
- (B) A History Of Maithili Literature
- (C) Maithili Drama History
- (D) कोनो नहि

१५. डा. जयधारी सिंहक जीवन-काल की छल?

- (A) १९२९-२०००
- (B) १९३५-२००५
- (C) १९२०-१९९०
- (D) कोनो नहि

१६. डा. दुर्गानाथ झा श्रीशक ग्रन्थ 'मैथिली साहित्यक इतिहास' कोन सालमे प्रकाशित भेल?

- (A) १९९१
- (B) १९८५
- (C) २०००
- (D) कोनो नहि

१७. डा. दिनेश कुमार झाक ग्रन्थ 'मैथिली साहित्यक आलोचनात्मक इतिहास' कोन संस्थासँ प्रकाशित भेल?

- (A) मैथिली अकादमी, पटना (१९७९)
- (B) साहित्य अकादेमी
- (C) भारती पुस्तक केन्द्र
- (D) कोनो नहि

१८. मणिपद्म-श्रद्धांजलि अंक 'हाल चाल' (१९८६) मे कतेक कथाक शीर्षक-चर्चा भेल, आ ओहिपर लेखकक टिप्पणी की?

- (A) मात्र पैंतीस कथा, जे उपहास्य कहल गेल
- (B) सभटा कथा, सम्पूर्ण कहल गेल
- (C) दस कथा
- (D) कोनो नहि

खण्ड ६७ : विदेह-सदेह ३४ — प्रेमशंकर सिंहक कृति-सूची आ बेचन ठाकुरक नाटक (विस्तार)

१९. डॉ. प्रेमशंकर सिंहक जन्म कहिया भेल?

- (A) १९४२
- (B) १९५२
- (C) १९३२
- (D) कोनो नहि

२०. डॉ. प्रेमशंकर सिंहक गाम कतय अछि?

- (A) जोगियारा, थाना जाले, दरभंगा
- (B) दरभंगा शहर
- (C) पटना
- (D) कोनो नहि

२१. डॉ. प्रेमशंकर सिंहक मौलिक मैथिली कृति 'मैथिली नाटक ओ रंगमंच' कोन सालमे प्रकाशित भेल?

- (A) १९७८
- (B) १९८५
- (C) १९९०
- (D) कोनो नहि

२२. डॉ. प्रेमशंकर सिंहक अनुवाद-कार्यमे कोन-कोन भाषाक रचना सम्मिलित अछि?

- (A) हिन्दी आ मैथिली अनुवाद
- (B) केवल अंग्रेजी
- (C) केवल संस्कृत
- (D) कोनो नहि

२३. डॉ. प्रेमशंकर सिंह कोन पत्रिकाक सम्पादन केने छथि?

- (A) भूमिजा (२००२)
- (B) विदेह
- (C) सदेह
- (D) कोनो नहि

२४. बेचन ठाकुर कतेक वर्षसँ मैथिली नाटक-लेखन आ निर्देशनमे जुटल छथि, गजेन्द्र ठाकुरक आलेख अनुसार?

- (A) पचीस वर्ष
- (B) दस वर्ष
- (C) पचास वर्ष
- (D) कोनो नहि

२५. बेचनजीक कतेक नाटक ग्रामीण लोकक मोन मोहलक, आलेख अनुसार?

- (A) एक दर्जन
- (B) पाँच
- (C) बीस
- (D) कोनो नहि

२६. बेचन ठाकुरक नाटक 'अधिकार' क मुख्य चरित्र मंजूर कोन समस्या आर.टी.आइ. द्वारा देखार करैत छथि?

- (A) इन्दिरा आवास योजनाक अनियमितता
- (B) भूमि-विवाद
- (C) शिक्षा-समस्या
- (D) कोनो नहि

खण्ड ७३ : विदेह-सदेह ३४ — हरिमोहन झाक हास्य-व्यंग्य परम्परा

२७. हरिमोहन झाक काव्य-संग्रह 'बूढ़ानाथ' कोन सालमे आएल, आ ओकर विषय की?

- (A) १९६० साल, अत्याधुनिक फैशनपरस्त युवक-युवतीपर व्यंग्य
- (B) १९४० साल, ऐतिहासिक विषय
- (C) १९८० साल, प्रेम-कविता
- (D) कोनो नहि

२८. हरिमोहन झाक 'टी पार्टी' रचना कोन सालक थिक?

- (A) २००५ साल
- (B) १९६० साल
- (C) १९४० साल
- (D) कोनो नहि

२९. हरिमोहन झाक निबन्धक प्रमुख विषय की रहल अछि?

- (A) वेद-पुराण, कर्मकाण्ड, धर्मशास्त्र, ज्योतिष, आयुर्वेद आदि
- (B) केवल आधुनिक विज्ञान
- (C) केवल राजनीति
- (D) कोनो नहि

३०. पटनासँ प्रकाशित कोन पत्रिका हास्य-व्यंग्य निबन्धक विधामे नव प्रतिभाकेँ प्रोत्साहित करबामे महत्वपूर्ण रहल?

- (A) मिथिला मिहिर
- (B) विदेह
- (C) सदेह
- (D) कोनो नहि

३१. हरिमोहन झाक परम्पराकेँ आगाँ बढ़ाओनिहार रचनाकारमे के-के सम्मिलित छथि?

- (A) परमेश्वर मिश्र, हरिश्चन्द्र झा, रूपकान्त ठाकुर, चन्द्रकान्त झा
- (B) केवल एक रचनाकार
- (C) विदेशी रचनाकार
- (D) कोनो नहि

३२. रूपकान्त ठाकुरक रचना 'वचन वैष्णव' कोन सालक थिक?

- (A) १९६५
- (B) १९६०
- (C) १९७०
- (D) कोनो नहि

३३. रूपकान्त ठाकुरक दोसर रचना 'लगाम' कोन सालक थिक?

- (A) १९६६
- (B) १९६५
- (C) १९७०
- (D) कोनो नहि

३४. मिथिलेश कुमार झाक जन्म-तिथि की?

- (A) १२-०१-१९७०
- (B) १-१-१९६५
- (C) १५-८-१९७५
- (D) कोनो नहि

३५. मिथिलेश कुमार झाक पैतृक गाम कतय अछि?

- (A) जगति, पोस्ट-बेनीपट्टी, जिला-मधुबनी
- (B) दरभंगा
- (C) समस्तीपुर
- (D) कोनो नहि

३६. मिथिलेश कुमार झाक माध्यमिक शिक्षा कतयसँ भेल?

- (A) श्री लीलाधर उच्च विद्यालय, बेनीपट्टी
- (B) दरभंगा हाई स्कूल
- (C) पटना कॉलेज
- (D) कोनो नहि

खण्ड ८६ : विदेह-सदेह ३४ — हरिमोहन झाक 'कन्यादान' आ 'खट्टर ककाक तरंग'

३७. हरिमोहन झाक उपन्यास 'कन्यादान' क मूल स्वर की थिक?

- (A) स्त्री-शिक्षा आ अनमेल विवाहक समस्या
- (B) केवल हास्य-विनोद
- (C) नाटक-समीक्षा
- (D) कोनो नहि

३८. 'कन्यादान' क नायक के छथि?

- (A) सी.बी. मिश्र
- (B) टुन्नी झा
- (C) झारखण्डीनाथ
- (D) कोनो नहि

३९. 'कन्यादान' क घटकराज टुन्नी झा कथाकेँ कतेक प्रकारेँ स्थिर करैत छथि?

- (A) तीन प्रकारेँ (खनखनौआ, टनटनौआ, ठनठनौआ)
- (B) दू प्रकारेँ
- (C) पाँच प्रकारेँ
- (D) कोनो नहि

४०. 'द्विरागमन' मे बुच्ची दाइक शिक्षिकाक नाम/उपाधि की अछि?

- (A) मेम साहेब
- (B) लाल काकी
- (C) चमेली दाइ
- (D) कोनो नहि

४१. 'खट्टर ककाक तरंग' क मुख्य कथा-नायक के छथि?

- (A) खट्टर कका
- (B) ढाला झा
- (C) झारखण्डीनाथ
- (D) कोनो नहि

४२. खट्टर कका अनुसार असली पंडित आ नकली पंडितमे की भेद अछि?

- (A) असली विद्याक अन्वेषण करैत छथि, नकली विदाइक अन्वेषणमे रहैत छथि
- (B) दुनू समान छथि
- (C) नकली बेसी ज्ञानी छथि
- (D) कोनो नहि

४३. खट्टर ककाक दावा अनुसार ओ केकर वंशज छथि?

- (A) गोनू आ गंगेश दुनूक वंशज
- (B) केवल गोनूक वंशज
- (C) केवल गंगेशक वंशज
- (D) कोनो नहि

४४. हरिमोहन झाक 'ढाला झा' कविता मे ढाला झा केकर 'प्रणेत्र' (वंशज) कहल गेल छथि?

- (A) लुट्टी झाक
- (B) खट्टर ककाक
- (C) टुन्नी झाक
- (D) कोनो नहि

खण्ड १० : विदेह-सदेह ३४ — जनकपुरमे मिथिला महोत्सवक आयोजन

४५. नेपाल सरकारक संस्कृति मंत्रालय द्वारा गठित संस्था जे 'मिथिला महोत्सव'क आयोजन करैत अछि, ओकर नाम की?

- (A) वृहत्तर जनकपुर क्षेत्र विकास परिषद्
- (B) मिथिला सांस्कृतिक परिषद्
- (C) जनकपुर नगरपालिका
- (D) कोनो नहि

४६. आलेख अनुसार प्राचीन मिथिलाक स्थापना केकर द्वारा भेल मानल जाइत अछि?

- (A) माधव विदेह द्वारा
- (B) नान्यदेव द्वारा
- (C) कामेश्वर ठाकुर द्वारा
- (D) कोनो नहि

४७. जनक वंश समाप्त भेलाक बाद कोन सालमे नान्यदेव मिथिला राजक नओ ठाढ़ केलनि, आलेख अनुसार?

- (A) १०९७ ई.मे
- (B) १५५६ ई.मे
- (C) १३५० ई.मे
- (D) कोनो नहि

४८. हेरायल मिथिला कोन सालमे ओइनवार वंशक संग पुनः उजागर भेल, आलेख अनुसार?

- (A) १५५६ ई.मे
- (B) १०९७ ई.मे
- (C) १८०० ई.मे
- (D) कोनो नहि

४९. 'मिथिला महोत्सव' क नारा की रहल, आलेख अनुसार?

- (A) "हम्मर संस्कृति हम्मर पहिचान : समृद्ध मिथिला हम्मर अभियान"
- (B) "एक मिथिला, एक पहिचान"
- (C) "मैथिली बचाउ आन्दोलन"
- (D) कोनो नहि

५०. मिथिला महोत्सवक आयोजन स्थल कोन प्राचीन स्थानकेँ बनाओल गेल छल, आलेख अनुसार?

- (A) प्राचीन तिरहुतिया गाछी
- (B) जानकी मंदिर परिसर
- (C) विश्वविद्यालय परिसर
- (D) कोनो नहि

५१. मिथिला महोत्सवमे लोकमंचक प्रस्तुतिकरणमे कोन-कोन लोकगाथाक नायकक नाच देखाओल जेबाक योजना छल?

- (A) राजा सलहेस, दीनाभदी, लोरिक, दुलरा दयाल, जया विसहर
- (B) केवल राजा जनक
- (C) केवल विद्यापति
- (D) कोनो नहि

५२. मिथिला महोत्सवक कुल खर्च अनुमानतः कतेक छल, आलेख अनुसार?

- (A) लगभग ५० लाख टाका
- (B) लगभग १० लाख टाका
- (C) लगभग एक करोड़ टाका
- (D) कोनो नहि

खण्ड ११ : विदेह-सदेह ३४ — राजदेव मण्डलक उपन्यास 'हमर टोल'

५३. राजदेव मण्डलकेँ कोन कृति लेल विदेह भाषा सम्मान २०१२-१३ क मूल पुरस्कार भेटल छन्हि?

- (A) अम्बरा (कविता संग्रह)
- (B) हमर टोल (उपन्यास)
- (C) निशुकी
- (D) कोनो नहि

५४. राजदेव मण्डलक उपन्यास 'हमर टोल' केकरा समर्पित अछि?

- (A) समस्त मिथिलांचलकेँ
- (B) हुनक माता-पिताकेँ
- (C) केवल अपन गामकेँ
- (D) कोनो नहि

५५. राजदेव मण्डल अपन उपन्यास 'हमर टोल'क प्रति आभार केकरा प्रति व्यक्त करैत छथि?

- (A) श्री गजेन्द्र ठाकुर एवं उमेश मण्डलजी
- (B) केवल गजेन्द्र ठाकुर
- (C) केवल उमेश मण्डल
- (D) कोनो नहि

५६. 'हमर टोल' उपन्यासक आरम्भमे लेखक स्वयं की स्पष्ट करैत छथि?

- (A) नाओं, स्थान, घटना आदि कल्पनापर आधारित अछि
- (B) ई सम्पूर्ण रूपेँ आत्मकथात्मक अछि
- (C) ई एकटा ऐतिहासिक दस्तावेज अछि
- (D) कोनो नहि

५७. 'हमर टोल' उपन्यासमे 'गहवर घर' किनका सम्बद्ध एक पारम्परिक मैथिल लोक-रिवाज देखाओल गेल अछि?

- (A) भगत/ओझा द्वारा देवी-देवताक आवाहन आ पूजा-विधि
- (B) केवल विवाह-रिवाज
- (C) केवल फसल-उत्सव
- (D) कोनो नहि

खण्ड 4283 : विदेह-सदेह 34 — गजेन्द्र ठाकुर: बेचन ठाकुरक नाटक

५८. खण्ड 4283, सूचकांक पंक्ति 2974: गजेन्द्र ठाकुरक "बेचन ठाकुरक नाटक" प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) बेचन ठाकुरक नाटक
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

५९. खण्ड 4283, सूचकांक पंक्ति 2974: गजेन्द्र ठाकुरक "बेचन ठाकुरक नाटक"क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) गद्य
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

६०. खण्ड 4283, सूचकांक पंक्ति 2974: गजेन्द्र ठाकुरक "बेचन ठाकुरक नाटक"क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) नाटक-समीक्षा/प्रस्तुति
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

६१. खण्ड 4283, सूचकांक पंक्ति 2974: गजेन्द्र ठाकुरक "बेचन ठाकुरक नाटक" पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) विदेह पत्रिकाक सम्पादक

६२. खण्ड 4283, सूचकांक पंक्ति 2974: गजेन्द्र ठाकुरक "बेचन ठाकुरक नाटक" प्रविष्टि विदेह-सदेह 34मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) विदेह पत्रिकाक सम्पादक
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

६३. खण्ड 4283, सूचकांक पंक्ति 2974: गजेन्द्र ठाकुरक "बेचन ठाकुरक नाटक"क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककें की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक गजेन्द्र ठाकुर, विधा गद्य, उप-विधा नाटक-समीक्षा/प्रस्तुति
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

६४. खण्ड 4283, सूचकांक पंक्ति 2974: गजेन्द्र ठाकुरक "बेचन ठाकुरक नाटक" रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

६५. खण्ड 4283, सूचकांक पंक्ति 2974: गजेन्द्र ठाकुरक “बेचन ठाकुरक नाटक” के विदेह-सदेह 34क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ नाटक-समीक्षा/प्रस्तुतिक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

६६. खण्ड 4283, सूचकांक पंक्ति 2974: गजेन्द्र ठाकुरक “बेचन ठाकुरक नाटक” प्रविष्टि विदेह-सदेह 34क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

६७. खण्ड 4283, सूचकांक पंक्ति 2974: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 4283, सूचकांक पंक्ति 2974मे गजेन्द्र ठाकुरक “बेचन ठाकुरक नाटक” प्रविष्टि गद्य, नाटक-समीक्षा/प्रस्तुति आ “विदेह पत्रिकाक सम्पादक” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 34क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 4284 : विदेह-सदेह 34 — डॉ. प्रेमशंकर सिंह: मणिपद्मक कथा--यात्रा

६८. खण्ड 4284, सूचकांक पंक्ति 2975: डॉ. प्रेमशंकर सिंहक “मणिपद्मक कथा--यात्रा” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) मणिपद्मक कथा--यात्रा
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

६९. खण्ड 4284, सूचकांक पंक्ति 2975: डॉ. प्रेमशंकर सिंहक “मणिपद्मक कथा--यात्रा”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) गद्य
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

७०. खण्ड 4284, सूचकांक पंक्ति 2975: डॉ. प्रेमशंकर सिंहक “मणिपद्मक कथा--यात्रा”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) आध्यात्मिक/शोध-निबन्ध
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

७१. खण्ड 4284, सूचकांक पंक्ति 2975: डॉ. प्रेमशंकर सिंहक “मणिपद्मक कथा--यात्रा” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) भक्ति परम्परा

७२. खण्ड 4284, सूचकांक पंक्ति 2975: डॉ. प्रेमशंकर सिंहक “मणिपद्मक कथा--यात्रा” प्रविष्टि विदेह-सदेह 34मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) भक्ति परम्परा
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

७३. खण्ड 4284, सूचकांक पंक्ति 2975: डॉ. प्रेमशंकर सिंहक “मणिपद्मक कथा--यात्रा”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठकर्के की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक डॉ. प्रेमशंकर सिंह, विधा गद्य, उप-विधा आध्यात्मिक/शोध-निबन्ध
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

७४. खण्ड 4284, सूचकांक पंक्ति 2975: डॉ. प्रेमशंकर सिंहक “मणिपद्मक कथा--यात्रा” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

७५. खण्ड 4284, सूचकांक पंक्ति 2975: डॉ. प्रेमशंकर सिंहक “मणिपद्मक कथा--यात्रा”केँ विदेह-सदेह 34क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ आध्यात्मिक/शोध-निबन्धक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

७६. खण्ड 4284, सूचकांक पंक्ति 2975: डॉ. प्रेमशंकर सिंहक “मणिपद्मक कथा--यात्रा” प्रविष्टि विदेह-सदेह 34क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

७७. खण्ड 4284, सूचकांक पंक्ति 2975: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 4284, सूचकांक पंक्ति 2975मे डॉ. प्रेमशंकर सिंहक “मणिपद्मक कथा--यात्रा” प्रविष्टि गद्य, आध्यात्मिक/शोध-निबन्ध आ “भक्ति परम्परा” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 34क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तरमाला — अध्याय ५ (उत्तर ओ व्याख्या / Answers & Explanations)

१. (A) पचीस वर्ष — स्रोत अनुसार बेचन ठाकुर विगत पचीस वर्षसँ मैथिली नाटकक लेखन आ निर्देशनमे जुटल छथि।

२. (A) सूचनाक अधिकार (आर.टी.आइ.) — ‘अधिकार’ नाटक सूचनाक अधिकार (आर.टी.आइ.) विषयपर आधारित अछि।

३. (A) वास्तविक चरित्र, इन्दिरा आवास योजनाक अनियमितता आर.टी.आइ.सँ देखारनिहार — मंजूर एकटा असली चरित्र छथि जे इन्दिरा आवास योजनाक अनियमितता आर.टी.आइ.सँ देखार करैत छथि आ रिक्शासँ झंझारपुरसँ दिल्ली जाइत छथि।

४. (A) कएक टा बैकप विभिन्न संगणकपर उपलब्ध छल — ‘अधिकार’ नाटक डिलीट कएल गेल मुदा बचि गेल किएक तँ एकर कएक टा बैकप कतेक संगणकपर उपलब्ध छल।

५. (A) १९४२ — डॉ. प्रेमशंकर सिंहक जन्म सन् १९४२ ई.मे भेल।

६. (A) मैथिली अकादमी, पटना (१९७८) — ‘मैथिली नाटक ओ रंगमंच’ मैथिली अकादमी, पटनासँ सन् १९७८ मे प्रकाशित भेल।

७. (A) दू खण्ड — ‘विद्यापति अनुशीलन और मूल्यांकन’ दू खण्डमे (प्रथम आ द्वितीय) बिहार हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, पटनासँ प्रकाशित भेल।

८. (A) १९१८-१९८६ — डा. ब्रजकिशोर वर्मा ‘मणिपद्म’ क जीवन-काल १९१८ सँ १९८६ धरि रहल।

१. (A) **A History Of Maithili Literature** — डा. जयकांत मिश्र (१९२२-२००९) क ग्रन्थ 'A History Of Maithili Literature' साहित्य अकादेमी, नई दिल्लीसँ १९७६ मे प्रकाशित भेल।
१०. (A) १९१८-१९८६ — डॉ. व्रजकिशोर वर्मा 'मणिपद्म'क जीवन-काल १९१८ सँ १९८६ धरि रहल।
११. (A) १९२२-२००९ — डा. जयकांत मिश्रक जीवन-काल १९२२ सँ २००९ धरि रहल।
१२. (A) **साहित्य अकादेमी, नई दिल्ली (१९७६)** — डा. जयकांत मिश्रक 'A History Of Maithili Literature' साहित्य अकादेमी, नई दिल्लीसँ १९७६ मे प्रकाशित भेल।
१३. (A) १९२४-१९८४ — राधाकृष्ण चौधरीक जीवन-काल १९२४ सँ १९८४ धरि रहल।
१४. (A) **A Survey Of Maithili Literature** — राधाकृष्ण चौधरीक अंग्रेजी ग्रन्थक नाम 'A Survey Of Maithili Literature' थिक, जे १९७६ मे प्रकाशित भेल।
१५. (A) १९२९-२००० — डा. जयधारी सिंहक जीवन-काल १९२९ सँ २००० धरि रहल।
१६. (A) १९९१ — डा. दुर्गानाथ झा श्रीशक ग्रन्थ 'मैथिली साहित्यक इतिहास' भारती पुस्तक केन्द्र, दरभंगासँ १९९१ मे प्रकाशित भेल।
१७. (A) **मैथिली अकादमी, पटना (१९७९)** — डा. दिनेश कुमार झाक ग्रन्थ 'मैथिली साहित्यक आलोचनात्मक इतिहास' मैथिली अकादमी, पटनासँ १९७९ मे प्रकाशित भेल।
१८. (A) **मात्र पैतीस कथा, जे उपहास्यद कहल गेल** — 'हाल चाल' (१९८६) क मणिपद्म-श्रद्धांजलि अंकमे मणिपद्मक मात्र पैतीस कथाक शीर्षक-चर्चा भेल, जकरा लेखक उपहास्यद (अपर्याप्त) कहैत छथि।
१९. (A) १९४२ — डॉ. प्रेमशंकर सिंहक जन्म सन् १९४२ ई.मे भेल।
२०. (A) **जोगियारा, थाना जाले, दरभंगा** — डॉ. प्रेमशंकर सिंहक गाम जोगियारा, थाना जाले, जिला दरभंगा अछि।
२१. (A) १९७८ — 'मैथिली नाटक ओ रंगमंच' मैथिली अकादमी, पटनासँ १९७८ मे प्रकाशित भेल।
२२. (A) **हिन्दी आ मैथिली अनुवाद** — डॉ. प्रेमशंकर सिंह हिन्दी आ मैथिली दुनू भाषामे अनुवाद-कार्य केने छथि, जेना श्रीपादकृष्ण कोल्हटकरक रचनाक अनुवाद साहित्य अकादेमीसँ प्रकाशित भेल।
२३. (A) **भूमिजा (२००२)** — डॉ. प्रेमशंकर सिंह 'भूमिजा' पत्रिकाक सम्पादन सन् २००२ मे केने छथि।
२४. (A) **पचीस वर्ष** — गजेन्द्र ठाकुरक आलेख अनुसार बेचन ठाकुर विगत पचीस वर्षसँ मैथिली नाटकक लेखन आ निर्देशनमे जुटल छथि।
२५. (A) **एक दर्जन** — आलेख अनुसार बेचनजीक एक दर्जन नाटक ग्रामीण सबहक मोन मोहने छल।
२६. (A) **इन्दिरा आवास योजनाक अनियमितता** — 'अधिकार' नाटकमे मंजूर इन्दिरा आवास योजनाक अनियमितताकेँ आर.टी.आइ. (सूचनाक अधिकार) सँ देखार करैत छथि, आ रिक्शासँ झंझारपुरसँ दिल्ली धरि जाइत छथि।
२७. (A) १९६० साल, **अत्याधुनिक फैशनपरस्त युवक-युवतीपर व्यंग्य** — हरिमोहन झाक काव्य 'बूढ़ानाथ' सन् १९६० मे आएल, जाहिमे अत्याधुनिक फैशनपरस्त युवक-युवतीपर व्यंग्य कएल गेल अछि।
२८. (A) २००५ साल — हरिमोहन झाक रचना 'टी पार्टी' सन् २००५ क थिक, जे विशुद्ध हास्य-व्यंग्यसँ अनुप्राणित अछि।
२९. (A) **वेद-पुराण, कर्मकाण्ड, धर्मशास्त्र, ज्योतिष, आयुर्वेद आदि** — हरिमोहन झाक निबन्धक प्रमुख स्वर वेद-पुराण, कर्मकाण्ड, धर्मशास्त्र, रामायण-महाभारत, ज्योतिष, आयुर्वेद, तन्त्र-मन्त्र आदि विषयक चारुपासि घूमैत अछि।
३०. (A) **मिथिला मिहिर** — पटनासँ प्रकाशित 'मिथिला मिहिर' पत्रिका हास्य-व्यंग्य निबन्धक विधामे नव-नव प्रतिभा सम्पन्न निबन्धकार उपस्थित करबाक दिशामे अत्यधिक प्रोत्साहित केने छल।
३१. (A) **परमेश्वर मिश्र, हरिश्चन्द्र झा, रूपकान्त ठाकुर, चन्द्रकान्त झा** — हरिमोहन झाक परम्पराकेँ आगाँ बढ़ाओनिहार रचनाकारमे परमेश्वर मिश्र (त्रिवेणी), हरिश्चन्द्र झा (छोंक), रूपकान्त ठाकुर (वचन वैष्णव १९६५, लगाम १९६६) आ चन्द्रकान्त झा सम्मिलित छथि।
३२. (A) १९६५ — रूपकान्त ठाकुरक रचना 'वचन वैष्णव' सन् १९६५ क थिक।
३३. (A) १९६६ — रूपकान्त ठाकुरक दोसर रचना 'लगाम' सन् १९६६ क थिक।
३४. (A) १२-०१-१९७० — मिथिलेश कुमार झाक जन्म १२-०१-१९७० केँ भेल।
३५. (A) **जगति, पोस्ट-बेनीपट्टी, जिला-मधुबनी** — मिथिलेश कुमार झाक पैतृक गाम जगति, पोस्ट-बेनीपट्टी, जिला मधुबनी अछि।

३६. (A) श्री लीलाधर उच्च विद्यालय, बेनीपट्टी — मिथिलेश कुमार झाक माध्यमिक शिक्षा श्री लीलाधर उच्च विद्यालय, बेनीपट्टीसँ इतिहास-प्रतिष्ठाक संग भेल।
३७. (A) स्त्री-शिक्षा आ अनमेल विवाहक समस्या — ‘कन्यादान’ मे अनमेल विवाहक समस्याकेँ उठाओल गेल अछि — पति-पत्नीक बेमेलपन अवस्था वा रूपक कारणे नहि अपितु शिक्षा-दीक्षाकेँ लऽ कऽ अछि, अतः स्त्री-शिक्षा एकर प्रमुख स्वर थिक।
३८. (A) सी.बी. मिश्र — ‘कन्यादान’ क नायक सी.बी. मिश्र अत्याधुनिक पाश्चात्य सभ्यताक प्रतीक छथि, जे ग्रामीण परिवेशसँ अनभिज्ञ रहलाक कारणे अपन मातृभाषा पर्यन्तसँ अपरिचित भऽ जाइत छथि।
३९. (A) तीन प्रकारेँ (खनखनौआ, टनटनौआ, ठनठनौआ) — टुन्नी झा कथा तीन प्रकारेँ स्थिर करैत छथि — खनखनौआ (टाका हँसोथि लेनिहार), टनटनौआ (नगद गनबैनिहार) आ ठनठनौआ (दुह ठनठन गोपाल भए काज करनिहार)।
४०. (A) मेम साहेब — ‘द्विरागमन’ मे झारखण्डीनाथ लाल ककाक ओतय बुच्ची दाइक शिक्षिका ‘मेम साहेब’ क स्वागत करबाक हेतु प्रस्तुत होइत छथि।
४१. (A) खट्टर कका — ‘खट्टर ककाक तरंग’ क कथा-नायक खट्टर कका पूर्णतः विनोदी प्रकृतिक व्यक्ति छथि, जे काव्य-शास्त्र-विनोदक धारा प्रवाहित करैत रहैत छथि।
४२. (A) असली विद्याक अन्वेषण करैत छथि, नकली विदाइक अन्वेषणमे रहैत छथि — खट्टर कका अनुसार असली पंडित विद्याक अन्वेषणमे रहैत छथि जखन कि नकली पंडित विदाइक (दान-दक्षिणाक) अन्वेषणमे रहैत छथि।
४३. (A) गोनू आ गंगेश दुनूक वंशज — खट्टर ककाक दावा छनि जे ओ गोनू आ गंगेश दुनूक वंशज थिकाह, तँ हुनका पाश्चात्य सभ्यताक प्रतीक बूझब भ्रम थीक।
४४. (A) लुट्टी झाक — ‘ढाला झा’ कविता मे ढाला झाकेँ लुट्टी झाक प्रणेत्र, नरहा पौजि, ककड़ौड़क वासी एवं बेलौंचेक वंशज कहल गेल अछि।
४५. (A) वृहत्तर जनकपुर क्षेत्र विकास परिषद् — आलेख अनुसार नेपाल सरकारक संस्कृति मंत्रालय द्वारा २०५५ सालक ऐन द्वारा गठित वृहत्तर जनकपुर क्षेत्र विकास परिषद् ‘मिथिला महोत्सव’क आयोजन करैत अछि।
४६. (A) माधव विदेह द्वारा — आलेख अनुसार प्राचीन मिथिलाक स्थापना माधव विदेह द्वारा आइसँ पाँच हजार वर्ष पूर्व भेल इतिहास सत्य मानल जाइत अछि।
४७. (A) १०९७ ई.मे — आलेख अनुसार राजा जनकक वंश समाप्त भेलाक बाद १०९७ ई.मे नान्यदेव मिथिला राजक नओ ठाढ़ केलनि, जे २२७ वर्ष धरि चलल।
४८. (A) १५५६ ई.मे — आलेख अनुसार हेरायल मिथिला पुनः १५५६ ई.मे ओइनवार वंशक संग उजागर भेल, जे दरभंगा महाराजक राजपाट गेला धरि चलल।
४९. (A) “हम्मर संस्कृति हम्मर पहिचान : समृद्ध मिथिला हम्मर अभियान” — आलेख अनुसार महोत्सवक नारा छल “हम्मर संस्कृति हम्मर पहिचान : समृद्ध मिथिला हम्मर अभियान”।
५०. (A) प्राचीन तिरहुतिया गाछी — आलेख अनुसार महोत्सवक आयोजन स्थल प्राचीन तिरहुतिया गाछीकेँ बनाओल गेल छल, जकरालेल ४९ गोटा उपसमिति बनाओल गेल छल।
५१. (A) राजा सलहेस, दीनाभदी, लोरिक, दुलरा दयाल, जया विसहर — आलेख अनुसार लोकमंचक प्रस्तुतिकरण क्रममे राजा सलहेस, दीनाभदी, लोरिक, दुलरा दयाल, जया विसहरक नाचक संगहि जट-जटिन, समा चकेबा, झिझिया नृत्य देखाओल जेबाक योजना छल।
५२. (A) लगभग ५० लाख टाका — आलेख अनुसार लगभग ५० लाख टाकाक खर्चसँ सम्पन्न होबएबला ‘मिथिला महोत्सव’ सम्पूर्ण मैथिली भाषीक हेतु दर्शनीय हएब तय छल।
५३. (A) अम्बरा (कविता संग्रह) — राजदेव मण्डलकेँ अम्बरा (कविता संग्रह) लेल विदेह भाषा सम्मान २०१२-१३ (वैकल्पिक साहित्य अकादेमी पुरस्कार रूपेँ प्रसिद्ध) क मूल पुरस्कार भेटल छन्हि।
५४. (A) समस्त मिथिलांचलकेँ — ‘हमर टोल’ उपन्यास समस्त मिथिलांचलकेँ समर्पित अछि।
५५. (A) श्री गजेन्द्र ठाकुर एवं उमेश मण्डलजी — ‘हमर टोल’ उपन्यासमे राजदेव मण्डल अपन आभार श्री गजेन्द्र ठाकुर एवं उमेश मण्डलजी प्रति व्यक्त करैत छथि।
५६. (A) नाओं, स्थान, घटना आदि कल्पनापर आधारित अछि — ‘हमर टोल’ उपन्यासक आरम्भमे लेखक स्पष्ट करैत छथि जे नाओं, स्थान, घटना आदि कल्पनापर आधारित अछि।
५७. (A) भगत/ओझा द्वारा देवी-देवताक आवाहन आ पूजा-विधि — ‘हमर टोल’ उपन्यासमे गहवर घरक दृश्यमे भगत (खेलाबन भगत/रामखेलाबन) द्वारा देवी-देवताक आवाहन आ पूजा-विधिक पारम्परिक मैथिल लोक-रिवाजक विस्तृत वर्णन अछि।
५८. (A) बेचन ठाकुरक नाटक — सूचकांक पंक्ति २९७४मे गजेन्द्र ठाकुरक प्रविष्टि “बेचन ठाकुरक नाटक” रूपमे देल अछि।
५९. (B) गद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

६०. (C) नाटक-समीक्षा/प्रस्तुति — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “नाटक-समीक्षा/प्रस्तुति” अछि।
६१. (D) विदेह पत्रिकाक सम्पादक — टिप्पणीक पहिल संकेत “विदेह पत्रिकाक सम्पादक” अछि।
६२. (A) विदेह पत्रिकाक सम्पादक — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “विदेह पत्रिकाक सम्पादक” रूपमे देखाइत अछि।
६३. (B) लेखक गजेन्द्र ठाकुर, विधा गद्य, उप-विधा नाटक-समीक्षा/प्रस्तुति — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकें एक साथ रखैत अछि।
६४. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककें केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।
६५. (D) ई पाठ नाटक-समीक्षा/प्रस्तुतिक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकें स्पष्ट करैत अछि।
६६. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।
६७. (B) खण्ड 4283, सूचकांक पंक्ति 2974मे गजेन्द्र ठाकुरक “बेचन ठाकुरक नाटक” प्रविष्टि गद्य, नाटक-समीक्षा/प्रस्तुति आ “विदेह पत्रिकाक सम्पादक” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 34क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकें प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।
६८. (A) मणिपद्मक कथा-यात्रा — सूचकांक पंक्ति 2975मे डॉ. प्रेमशंकर सिंहक प्रविष्टि “मणिपद्मक कथा-यात्रा” रूपमे देल अछि।
६९. (B) गद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकें “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।
७०. (C) आध्यात्मिक/शोध-निबन्ध — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “आध्यात्मिक/शोध-निबन्ध” अछि।
७१. (D) भक्ति परम्परा — टिप्पणीक पहिल संकेत “भक्ति परम्परा” अछि।
७२. (A) भक्ति परम्परा — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “भक्ति परम्परा” रूपमे देखाइत अछि।
७३. (B) लेखक डॉ. प्रेमशंकर सिंह, विधा गद्य, उप-विधा आध्यात्मिक/शोध-निबन्ध — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकें एक साथ रखैत अछि।
७४. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककें केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।
७५. (D) ई पाठ आध्यात्मिक/शोध-निबन्धक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकें स्पष्ट करैत अछि।
७६. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।
७७. (B) खण्ड 4284, सूचकांक पंक्ति 2975मे डॉ. प्रेमशंकर सिंहक “मणिपद्मक कथा-यात्रा” प्रविष्टि गद्य, आध्यात्मिक/शोध-निबन्ध आ “भक्ति परम्परा” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 34क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकें प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।